जय बापू दी

जगतस्वामी बापू श्रद्धाराम जी द्वारा रचित

भगतमाल

हिंदी अनुवाद

मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी, सत्संग सभा,
ओम मंदिर मार्ग, ढक्का साहिब, दिल्ली :110009

रचनाकार

जगत स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज

श्री भगतमाल ग्रन्थ जी

भूमिका

जगत नियन्ता परमपिता परमात्मा ने सम्पूर्ण जगत के कल्याण एवं उद्धार के विशेष प्रयोजन से "जगत स्वामी" बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी को इस संसार में भेजा।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी प्रेम, प्यार, भक्ति, सेवा, सिमरन, त्याग, तपस्या तथा परोपकार की एक सजीव प्रतिमूर्ति स्वरूप बनकर इस धरती पर अवतरित हुए।

दीन, दुखी और निराश लोगों के लिए बापू जी उनके दुखहर्त्ता बने। विकट एवं असाध्य रोगों से पीड़ित हताश लोगों के लिए बापू जी उनके नवजीवन दाता बने।

भूले-भटके, अज्ञानी, पथ भ्रष्ट मनुष्यों के लिए सच्चे मार्ग-दर्शक बने।

निराश्रित, असहाय और पीड़ित जनों के लिए उनके सच्चे आश्रय दाता बने। सभी सांसारिक प्राणियों को संसार रूपी भवसागर से पार ले जाने वाली प्रेमा भक्ति एवं सुगम सरल मार्ग दर्शाने वाले तारनहार और उद्धारक बने।

एक सच्चा संत और सन्यासी वास्तव में आध्यात्मिक उत्थान के साथ-साथ समाज के विकास और उत्थान के लिए भी सदैव तत्पर रहता है। ऐसे ही थे हमारे बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी। उस समय जब लोग नन्दाचौर जैसे एक गाँव में लड़कों को भी शिक्षित करना आवश्यक नहीं समझते थे। उस समय बापू जी ने नन्दाचौर में लड़कियों को शिक्षित करने के लिए कन्या विद्यालय की स्थापना करवाई।

तत्कालीन समाज में फैली छुआछूत, जातिगत भेदभाव तथा दहेज प्रथा जैसी कुरीतियों का भी काफी हद तक उन्मूलन किया।

बापू जी ने लंगर प्रथा को आरम्भ किया। ताकि सभी छोटे-बड़े, अमीर-गरीब, प्रत्येक जाति के लोग एकसाथ बैठकर एक सा ही भोजन करते हुए, समभाव का अनुभव करें।

दरबार नन्दाचौर में गुरबाणी, श्रीरामचरित मानस, श्रीमद् भगवद् गीता, हवन यज्ञ, शक्ति पूजन - सभी का पावन समन्वय करके एक आदर्श धर्म-निरपेक्षता का ज्वलन्त उदाहरण संसार के लिए प्रस्तुत किया जो कि अन्यत्र कहीं मिलना कठिन है।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने दरबार नन्दाचौर में पावन माघ मास को एक अनूठे पर्व का रूप देकर उसे हमारी मुक्ति के लिए एक अति सुगम मार्ग प्रशस्त कर दिया।

त्याग की मूर्ति बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने जीवन पर्यन्त दरबार की सेवा करते हुए कभी भी ना तो वहाँ का पानी ही पिया और ना नमक ही खाया। अपनी आजीविका चलाने के लिए बापू जी अपनें हाथों से 'प्रेम अंजन' सूरमा पीसते थे, जो कि नेत्र रोगियों के लिए विशेष रूप से संजीवनी सदृश बापू जी का आशीर्वाद है।

संगत और दरबार की अनथक सेवा करते हुए बापू जी प्रत्येक श्वास-श्वास से उस परमात्मा की भक्ति में तल्लीन रहते थे। उनकी ऐसी कठिन प्रभु भक्ति व तप से प्रसन्न होकर परमात्मा ने उन्हें वरदान दिया कि जहाँ पर उनका साया भी पड़ जाएगा तो सांसारिक दुखों और कष्टों का वहाँ से स्वतः ही नाश हो जाएगा।

सन् 1952 में बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने भारत की राजधानी दिल्ली में श्री ओम दरबार ढक्का साहिब की स्थापना की और सर्वप्रथम झण्डा साहिब का आरोपन भी अपने कर कमलों द्वारा किया।

जिस प्रकार राजा भागीरथ ने स्वर्ग से धरती पर अति पावन गंगा लाकर सम्पूर्ण संसार का परोपकार किया था, उसी प्रकार कल्प वृक्ष समान झण्डा साहिब को श्री ओम दरबार ढक्का साहिब में आरोपित कर बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने भी सबकी इच्छा पूर्ति और सुख-समृद्धि के लिए सुगम सा प्रावधान बना दिया।

अपने परम पूज्नीय सतगुरु महाबली बापू हरनाम जी की विशेष कृपा और प्रेरणा पाकर हमारे कल्याण और मार्ग दर्शन के लिए बापू जी ने 'श्री भगतमाल ग्रन्थ जी' की रचना भी की। बापू जी ने इसमें कुछ उच्च कोटि के प्रभु भक्तों के जीवन, कर्मों, भावों और प्रेमा भक्ति का गुरबाणी के सामजंस्य से बहुत सुन्दर सजीव वर्णन किया है।

इन सभी भक्तों के माध्यम से बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी हमें यही संदेश देते हैं

कि यदि हम भी इन्हीं भक्तों की भाँति शुद्ध भाव और निर्मल हृदय से निरन्तर श्री हरि की भक्ति और सिमरन करेंगे तो इन सभी की भाँति हमारा भी कल्याण होना सर्वथा निश्चित है।

परम पूज्य बापू हरभगवान जी महाराज जी के कथानुसार बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने कभी भी सांसारिक दृष्टि से किसी भी प्रकार की उच्च शिक्षा प्राप्त नहीं की थी। किन्तु अपनी अनूठी भक्ति, अलौकिक ज्ञान और अद्वितीय योग साधना के कारण परम पिता परमात्मा की कृपा से इस श्री भगतमाल ग्रन्थ जी की रचना की। बापू जी द्वारा आशीष स्वरूप मिली इस अनुठी श्री भगतमाल ग्रन्थ जी का एक एक शब्द गागर में सागर भरता है ।

इसी कड़ी को आगे बढ़ाते हुए, बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी द्वारा रचित श्री भगतमाल ग्रंथ जी से प्रेमाभक्ति की इस महत्वपूर्ण, अनमोल कृति को अर्थ सहित और भी सरल रूप में जन-जन तक पहुँचाने का यह एक प्रयास सबसे पहले बापू श्री भानुदत्त जी महाराज जी द्वारा पंजाबी भाषा में कराया गया।

हमें बापू जी द्वारा वरदान स्वरूप मिली इस 'श्री भगतमाल ग्रन्थ जी' का अवश्य ही पठन एवं मनन करना चाहिए क्योंकि यह हमारे उद्धार के लिए ही बापू जी की अमूल्य देन है।

इसी कारण बापू हरभगवान जी महाराज जी ने श्री ओम दरबार नन्दाचौर धाम में पावन माघ मास में श्री सुखदेव जी (दरबारी रागी श्री ओम दरबार नन्दाचौर) द्वारा श्री भगतमाल ग्रन्थ जी का पठन और गायन प्रारम्भ करवाया गया था जो आज भी चल रहा है।

अब श्री ओम नारायण हरनाम जी मन्दिर, श्री ओम दरबार ढक्का साहिब, दिल्ली में श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा द्वारा बापू श्री रविंद्र कुमार जी महाराज जी, गद्धीनशीन श्री ओम दरबार नन्दाचौर धाम के आर्शीवाद से 'श्री भगतमाल ग्रन्थ जी' का पंजाबी भाषा से हिन्दी अनुवाद सरल व्याख्या सहित किया जा रहा है।

यदि इस प्रस्तुति में किसी प्रकार की कोई त्रुटि रह गई हो तो हम, बापू जी और उनकी लाडली संगत के क्षमाप्रार्थी है।

जय बापू दी!!

भगतमाल संगीत

आदि पुरख सत्त चित्त अभय अविनाशी जो है।

सरब का है साखी ऐ निर्लेप है कहांवदा।।1।।

परम पूज्य स्वामी श्रद्धाराम जी महाराज जी *ने सर्वप्रथम अपने इस ग्रंथ श्री भगतमाल का शुभारम्भ उस परम पिता परमात्मा की वन्दना एवं स्तुतिगान द्वारा किया है।*

भावार्थ : परमात्मा सदा ही सत्-चित्त-आनन्द है। ईश्वर हमेशा से ही सत्य स्वरूप है। उनका चिन्तन एवम् मनन हम सबके चित्त को अभूतपूर्व आनन्द से भर देता है। वह परमपिता किसी भी प्रकार के भय से रहित है और हम सब को भी निर्भय बनाने में सक्षम है। वह सर्वव्यापी सदा-सदा ही रहने वाला है। कोई भी सांसारिक एवम् दैविक शक्ति इनके आस्तित्व को नहीं मिटा सकती। परमात्मा सर्वज्ञाता है। वह घट-घट के अंतर की जानने वाले हैं। वह शक्तिमान तीनों लोकों की किसी भी वस्तु में लिप्त भाव नहीं रखते हैं, अलिप्त रहते हैं।

निर्गुण अकाल और सर्व-शक्तिमान जो है।

अपनी सत्ता से सर्व जगत को है रचावंदा।।2।।

बापू जी ने जगत नियन्ता परमेश्वर को ही समस्त सृष्टि का रचियता, सृष्टिकर्त्ता एवं सच्चिदानन्द बताया है।

भावार्थ : ईश्वर सभी गुणों से न्यारे हैं, वह सदैव रहने वाले हैं और समय की सभी सीमाओं से दूर हैं। परमेश्वर असीम एवम् शक्तियों के स्वामी हैं। अपनी शक्तियों के

द्वारा ही उन्होंने सारे संसार को रचा है। संसार के सारे जीव उन परमपिता के ही अंश हैं।

ब्रह्मा विष्णु शिव ध्यान रात-दिन लगाते हैं।
न आदि है, न अंत है वेद यश गाते हैं।।3।।

संसार के जन्मदाता, पालनकर्त्ता और संहारकर्त्ता ब्रह्मा, विष्णु एवं महेश भी निरन्तर उसी प्रकाशस्वरूप परमात्मा की स्तुति एवं वन्दना करते हैं। वेद भी नेति-नेति कहकर उस ज्योतिपुंज परमेश्वर का निरंतर गुणगान करते हैं।

दासन का दास ऐसा पारब्रह्म जानकर।
दोनों हाथ जोड़कर शीश है निवावंदा।।4।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने उन परम शक्ति, पारब्रह्म परमात्मा के श्री चरणों में नतमस्तक होते हुए बड़े दीन और विनम्र भाव से स्वयं को उनके दासों का भी दास बताया है।

श्री गुरुनानक देव कलयुग में अवतार धार।
सतनाम चक्र फिर पाप को हटाया है।।5।।

उन अकाल पुरख श्री गुरु नानक देव जी ने इस कलयुग में अवतरित होकर सभी प्राणियों के उद्धार और पापों के नाश के लिए सतनाम जाप का सुगम मार्ग दिखाया है।

श्री गुरु अंगद, अमरदास, रामदास।
पातशाही पंचम गुरु अर्जुन कहाया है ।।6।।
हरगोबिन्द, हरि राय, हरिकिशन एक जोत।
तेग बहादुर, गोबिन्द सिन्घ नाम सदाया है।।7।।

बापू जी के अनुसार श्री गुरु नानक देव जी की अलौकिक ज्योत ही सभी दसों गुरुओं के रूप में ही प्रज्वलित एवं प्रकट हुई है।

श्री गुरु ग्रन्थ साहिब पापियां दे तारने नूं।
नाम दा जहाज शीश दास ने निवायां है।। 8।। इति।।

संसार रुपी भवसागर से पार लगाने वाले परम पवित्र श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के चरणों में बापू जी अपना शीश निवाते हुए कोटि कोटि प्रणाम करते है। सभी दसों गुरुओं की अमृतवाणी एवं मार्गदर्शन हमें श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के रूप में संकलित प्राप्त हुआ है। भवसागर रूपी संसार में भटकते हुए प्राणियों के लिए मानो श्री गुरु ग्रंथ साहिब हमें नाम के जहाज के रूप में मिले हैं। समस्त गुरुओं की असीम कृपा और वरदान के रूप में मिले पवित्र पावन श्री गुरु ग्रंथ साहिब जी के समक्ष बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी उनका नमन एवं वन्दन करते हैं।

बेंत : गुरु सदा ही दीनदयाल है जी,
संकट दासां दे गुरु ही तारदें हैं।
गुरु बख्शदे चार पदारथां नूं,
शरण आए नूं गुरु ही तारदे हैं।।

भगतमाल में वर्णित सभी महान भक्तों के गुणगान से पूर्व जगत स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने उस परम पिता परमात्मा की वंदना के उपरान्त अपने महान गुरु की स्तुति की है।

भावार्थ : बापू जी के अनुसार गुरु ही एकमात्र ऐसी शक्ति है जो दीनबन्धु होने के कारण सभी भक्तों के सारे दुःख और संकट हरते हैं। गुरु सदैव है दयालु और कृपालू होते है

गुरु देवदे थां निथावयां नूं,

गुरु सिख दा भरम निवारदे हैं।
गुरु मुक्त ऐ भुगत है बख्श देंदे,
गुरु मुक्ति हृदय जो धारते हैं।।

गुरु शरणागत वत्सल हैं, तारनहार हैं और सभी दैविक, दैहिक तथा भौतिक सुखों के दाता हैं। गुरु निराश्रितों के आश्रय दाता है। एकमात्र गुरु ही अपने भक्तों के सभी प्रकार के संदेहों को दूर कर सकते हैं। जो भी मन में मुक्ति की इच्छा लेकर गुरु शरण में आते हैं, तो दयालु एवम् कृपालु सदगुरु उन्हें मुक्ति का सच्चा मार्ग बताते हैं।

मेरी बुद्धि नूं शुद्ध कर दयो गुरु जी,
डिग पया मैं तेरे दरबार गुरु जी मंगल करो ते विघ्न सब हरो जल्दी,
महिमा आपकी अपरम्पार गुरु जी भगत माल मैं चाहां संगीत रचना,
मेरे आप होवों मददगार गुरु जी दासन दास बे इल्म नूं इल्म बख्शो,
छन्द : रचना दी नहीं है सार गुरु जी।

बापू जी सद्गुरू के चरणों में प्रार्थना करते हुए कह रहे हैं कि आप मुझे सद्बुद्धि प्रदान करें, मुझ पर कृपा करके सभी विघ्नों को दूर करते हुए 'भगत माल संगीत' की रचना करने में मेरी सहायता करें और मुझ पर ज्ञान की वर्षा करें।

ਭਗਤ ਮਾਲ ਸੰਗੀਤ ਕਰਨ ਦਾ ਕਾਰਣ

कवित्त : तुलसी रामायण विख्यात सारे जग माहीं,
राम जी दा यश कई कवियां ने गाया है।

भावार्थ : मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान श्री राम जी का जीवन वर्णन एवं यश गान अनेकानेक कवियों ने गाया है। गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा रचित श्री रामचरित मानस तो पूरे विश्व में विख्यात है।

बांस बरेली विच राधे श्याम कवि होया,
तर्ज निराली कंढ यश प्रगटाया है।

इसके अतिरिक्त बांस बरेली के कवि श्री राधे श्याम जी ने एक अनोखी धुन में भगवान का गुणगान करके यश प्राप्त किया है।

बाजा, हारमोनियम बजे तबला भी साथ सजे,
शेर वांगू गजे सब आलस भजाया है।

कवि बाजे, हारमोनियम और तबले के साथ अपनी ओज भरी आवाज़ में श्री राम जी का गुणगान करते हैं और सभी के मनों में सुखद उत्तेजना भर देते हैं।

पद रचे है सुखाले अर्थ समझदा है नाले,
सुंदर देखो ऐ चाले मन चाव मेरे आया है।

अनेक सुन्दर अर्थपूर्ण पदों की रचना ने मेरे मन को भी प्रेरित किया है।

मन कीती मैं विचार भगत माल है जो सार,
यश कहां कि उच्चार अंत किसे नहीं पाया है।

मैं जानता हूँ कि मैं इन सभी महान भक्तों के यश का गुणगान करने में समर्थ नहीं हूँ क्योंकि इनकी महिमा का अंत किसी ने नहीं पाया है।

मेरी बुद्धि तो है थोड़ी आवे नहीं ऐ मरोड़ी,
चित्त चाहे तर्ज जोड़ी मन बड़ा ललचाया है।

हालांकि मैं अल्पमत हूँ लेकिन फिर भी अपने गुरु के आशीर्वाद और कृपा से मैंने प्रयत्न किया है।

भगत प्रसंग कहा नाल मैं उमंग,
पवे कोई ना जे भंग, गुरू आसरा तकाया है।

बहुत उत्साह और उमंग से इन भक्तों की महिमा का वर्णन करना चाहता हूँ, इस रचना की निर्विघ्नता पूर्वक पूर्णता के लिए गुरू जी से प्रार्थना की है।

जितनी है बुद्धि करो गुरू जी इसनूं शुद्ध,
फतह करो गुरू युद्ध बीड़ा दास ने उठाया है।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी अपने गुरुदेव से विनती कर रहे हैं कि वे उनकी बुद्धि को शुद्धता एवम् सक्षमता प्रदान करें ताकि वह अपने इस ध्येय को पूरा कर सकें।

परमात्मा के समक्षविनती –

कवित्त : अजामल पापी जिसनूं जग सारा जानदा है,
एक बार नाम लिया उसनूं वी तारया।

बाल्मीक गणका ते बन्धक नूं तार दीता,
करे होए पापां तरफ आप ना निहारिया।

भावार्थ : इस कवित्त के माध्यम से बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी बताना चाह रहे हैं कि वह परमपिता परमात्मा अत्यंत दयालु और कृपालु है। बड़े से बड़ा पापी भी यदि सच्चे मन से उन्हें एक बार भी पुकार ले तो वह पापी के सभी पापों-अवगुणों-कृत्यों को भूलकर उसकी मदद के लिए दौड़े आते हैं।

पूरा संसार जानता है कि अजामिल ने अपने पूरे जीवन में अनेकों घोर पाप किए थे। किंतु अंत समय उसने एक बार उस नारायण का स्मरण किया तो वह भी तर गया।

इसी प्रकार डाकू बाल्मीकि को महर्षि बाल्मीकि बना दिया। गणिका और बन्धक की जाति और कृत्यों को भुलाकर प्रभु ने उन्हें भी तार दिया। ऐसे कृपालु, दयालु और करुणानिधि है वह जगत नियंता परमात्मा।

ध्रुव जी सुदामा विदुर तारयां प्रहलाद ताइ,
धन्ना बेड़ी सी भी तारे नाम जो उच्चारयां।
कबीर रविदास नामदेव भी तार दिए,
कुब्जा दा कुॅब प्रभु आपने निकालया।

जिन्होंने भी सच्चे मन से भगवान का नाम स्मरण किया - चाहे ध्रुव, सुदामा, विदुर या प्रहलाद हो अथवा धन्ना जाट। सभी को उन्होंने भवसागर से पार उतारकर अमर बना दिया।

इसी प्रकार भक्त कबीर, भक्त रविदास, भक्त नामदेव का भी बेड़ा पार किया और कुरूप कुब्जा के कुबड़ को हटा कर अत्यंत सुंदर बना दिया। ऐसा है प्रभु नाम का प्रताप!

गजिन्द्र को दु:ख पड़ा तेंदुऐ ने पकड़ लिया,
जल्दी ही छुट गया नाम जो उच्चारयां।
द्रोपदा को भीड़ पड़ी आप जी की शरण लई,
इज्जत ना गई पापी जोर लाके हारयां।

तेंदुए की गिरफ्त में पड़े गजराज की आर्त्त पुकार सुनकर भगवान ने उसे जल्दी ही पीड़ा से मुक्त किया।

भरी सभा में अपमानित हो रही द्रोपदी ने जब सच्चे मन से उन श्रीकृष्ण को याद करके पुकारा तो भगवान ने उनका चीर बढ़ाकर द्रोपदी की लाज बचाई। एड़ी-चोटी का जोर लगाने पर भी पापी उनका कुछ नहीं बिगाड़ सके।

नरसी दी हुण्डी तार सदनें नूं किया पार,
मीरां बाई बिख निवार भरम सब टारया।
दास आया है शरण काटो जन्म मरण,
नाम संकट हरण वेद विच है पुकारया।

इसी प्रकार सच्चे मन से पुकारे जाने पर उस परमपिता ने नरसिंह भक्त की हुण्डी तारी और सदने कसाई का भी उद्धार किया।

मीरा बाई की सच्ची लगन और भक्ति देखकर विष को भी अमृत बना दिया और उसके सभी दु:खों और कष्टों का भी अंत किया।

हे प्रभु! वेदों ने भी आपको दु:खहर्त्ता और संकटमोचन कहकर पुकारा है। हे प्रभो! मैं भी आपका दीन हीन दास आपकी शरण में आया हूँ। मुझ पर भी अपनी असीम कृपा कीजिए और मुझे इस संसार रूपी भव से पार कीजिए।

दोहरा :

शब्द गुरां ने लिख्या, विच श्री दरबार।

भगतों की जो साखियां, कहया है उच्चार।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी के अनुसार उन्होंने इस भगतमाल में प्रभु के अनन्य भक्तों की कथाओं का जो भी वर्णन किया है उसमें उनका कोई भी योगदान नहीं है। वास्तव में सारी कृपा और श्रेय उनके महान गुरुदेव की है जिन्होंने सच्चे दरबार में स्वयं हाज़िर-नाज़िर रहकर उन्हें इस रचना को रचने का माध्यम बनाया है।

बसंत महल्ला 5 घर 1 दुतुकीआ

ੴ सतिगुरु प्रसादि।।

सुन साखी मन जप प्यार। अजामल उधरया कह एक बार।।

बाल्मीके होया साधसंग। ध्रुव को मिलया हरि निसंग।।1।।

तेरया संता जयो चारन रेन। ले मस्तक लाबड़कर किरपा

देन।।रहाउ।।1।।

गणिका उधरी हरि कह तोत।। गजिन्द्र ध्यायंऊ हरि कीओ मोख।।

विप्र सुदामें दालद भंज।। रे मन मेरे तू भी भज गोबिन्द।।2।।

बांधक उधारयो खम्ब प्रहार।। कुब उधरी अंगुसट धार।।

विदुर उधरयो दासत भाई।। रे मन सेव तूं भी हरि ध्याय ।।3।।

प्रहलाद रखी हरि पैज आप।। बस्तु छीनत द्रोपदी रखी लाज।।

जिन-जिन सेवया अंत बार।। रे मन सेव तूं पर हीं पार।।4।।

धन्ने सेवया बाल बुद्धि।। त्रिलोचन गुरु मिल भई सिद्धि।।

बेड़ी को गुरु कियो प्रकाश।। रे मन तूं भी होय दास।।5।।

जय देव त्यागो एहम देव।। नाई उधरयो सैन सेव।।

मन डीग ना डोल जाए।। मन तूं भी तरसई सरण पाए।।6।।

जे अनुग्रह ठाकुर कीओ आप।। से तै लीने भगत राखि।।

तिन का गुण अवगुण ना विचारयों कोई।। इह विधि देख मन लगा

सेव।।7।।

कबीर ध्याइयों एक रंग।। नामदेव जी हरि बसिहूं संग।।

रविदास ध्यान प्रभु अनुप।। गुरु नानक देव गोबिन्द रूप।।8।।

बड़ी श्रद्धा, भक्ति और प्रेम भाव से परमात्मा का नाम जपते हुए इस साखी (कथा) का श्रवण करें। बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने प्रभु नाम की महिमा को समझाने के लिए अजामिल का उदाहरण दिया है। जिसने मात्र एक बार नारायण नाम लिया और उस प्रभु ने अजामिल जैसे घोर पापी का भी उद्धार कर दिया।

बाल्मीकि ने साधु संतों का संग किया और प्रभु को पा लिया। इसी प्रकार ध्रुव ने केवल हरि नाम सिमरन को ही अपना लक्ष्य बनाया और नाम जपते-जपते ही उन्हें परमात्मा के दुर्लभ रूप के दर्शन हो गए।

आपके सच्चे संतो को किसी भी सांसारिक वस्तु की इच्छा नहीं होती। वह केवल आपके चरणों की धूल ही चाहते हैं। उसे ही वह आपकी सच्ची कृपा और अनुकंपा जानकर अपने मस्तक पर धारण करते हैं।

गणिका वेश्या ने तोते को हरिनाम रटवाते हुए अपना स्वयं का भी उद्धार कर लिया। इसी प्रकार गज पर भी जब संकट आन पड़ा तो उसने सच्चे मन से केवल उस परमपिता को याद किया और मोक्ष को प्राप्त कर लिया।

मित्र सुदामा की सादगी, सरलता, भक्ति और विश्वास ने उस करूणानिधान भगवान कृष्ण के हृदय को भी द्रवित कर दिया। प्रसन्न होकर उस प्रभु ने उसकी सारी दरिद्रता दूर कर दी। इसलिए हे मन तू भी निरंतर हर क्षण, हर श्वास से उस प्रभु का नाम सिमरन कर, जिससे तेरा भी कल्याण हो जाएगा।

अधम बंधक को प्रभु ने बाण से प्रहार करने के बावजूद भी क्षमा करते हुए उसका उद्धार कर दिया। कुरूप कुबड़ा को भी प्रभु ने अपने अँगूठे के स्पर्श मात्र से ही एक अद्वितीय सुंदरी बना दिया। यह सब संभव हुआ-केवल प्रभु नाम के सिमरन और अटूट विश्वास के कारण।

एक दासी पुत्र विदुर को उसके निरंतर सिमरन और प्रभु भक्ति के कारण ही संसार एक विद्वान और महात्मा विदुर के नाम से जानता है।

इन सब भक्तों के माध्यम से बापू जी हमारा मार्गदर्शन कर रहे हैं कि हम सभी प्राणियों को भी प्रभु सेवा और सिमरन में ध्यानरत रहना चाहिए।

प्रहलाद भक्त की रक्षा स्वयं परमात्मा ने अनेकों बार की। द्रोपदी की आर्त्त और करुण पुकार सुनकर कृष्ण ने स्वयं भरी सभा में उसकी लाज बचाई।

जिस प्रकार गोस्वामी तुलसीदास जी ने कहा है कि - कलयुग केवल नाम आधारा। सिमर सिमर नर उतरहिं पारा।। बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी भी हमें बार-बार यही समझाना चाह रहे हैं कि इस भवसागर रूपी संसार से पार उतरने का एकमात्र सरल उपाय है निरंतर उस प्रभु नाम का स्मरण एवं चिन्तन।

धन्ना जाट ने अपने भोलेपन से उस प्रभु को याद किया और प्रभु ने उसकी सादगी पर प्रसन्न होकर उसे जगत विख्यात धन्ना भक्त बना दिया।

हे मन तू सदैव अपने सच्चे गुरू का दास बनकर उनकी सेवा में रह। केवल सच्चे गुरू ही अपने ज्ञान और भक्ति के आलौकिक प्रकाश द्वारा हमारी इस अज्ञान रूपी अंधकार से भरी जीवन नैय्या को इस संसार रूपी भवसागर से पार उतार सकते हैं।

हे प्रभो! हमें अहंकार रहित करते हुए हम पर अपनी करूणादृष्टि बनाए रखें। भक्त सदना और सैन की तरह हमारा भी उद्धार करें।

हे प्रभु! हमारा मन कभी किसी भी संकट-रुकावट के समय डाँवाडोल ना हो। आपके चरणों में हमारा अटूट विश्वास और श्रद्धा निरंतर बनी रहे।

जिस पर वह प्रभु अपनी कृपा दृष्टि कर देते हैं उसकी सब प्रकार से प्रभु स्वयं रक्षा करते हैं। परमात्मा बख्शनहार है अपने नाम को सार्थक करते हुए वह किसी का भी गुण-अवगुण ना देखते हुए उन पर अपनी समदृष्टि रखते हैं। बापू जी समझा रहे हैं कि समदर्शी प्रभु के इस गुण को देखते हुए हमेशा अपने चित्त को प्रभु सेवा और सिमरन में लगाकर रखें।

भक्त कबीर जी परमात्मा को एक आलौकिक शक्ति के रूप में ही पूजते थे। भक्त

नामदेव जी भी हर समय अपने साथ उस ईश्वर के संग का अनुभव करते थे।

रविदास जी भी हर क्षण उस परम पिता की भक्ति में लीन रहते थे। गुरू नानक देव जी भी स्वयं साक्षात उस परमात्मा के अंश थे।

दोहरा :

अब साखी में कहत हूं, गुरु शब्द अनुसार।
भगतों की जो साखियां, कहूं मति अनुसार।।

अब मैं अपनी बुद्धि अनुसार सभी महान भक्तों की जीवन साखियों का वर्णन प्रारंभ करने जा रहा हूँ जो कि केवल मेरे महान पूज्नीय गुरु देव की कृपा और प्रेरणा के कारण ही संभव हो पाया है।

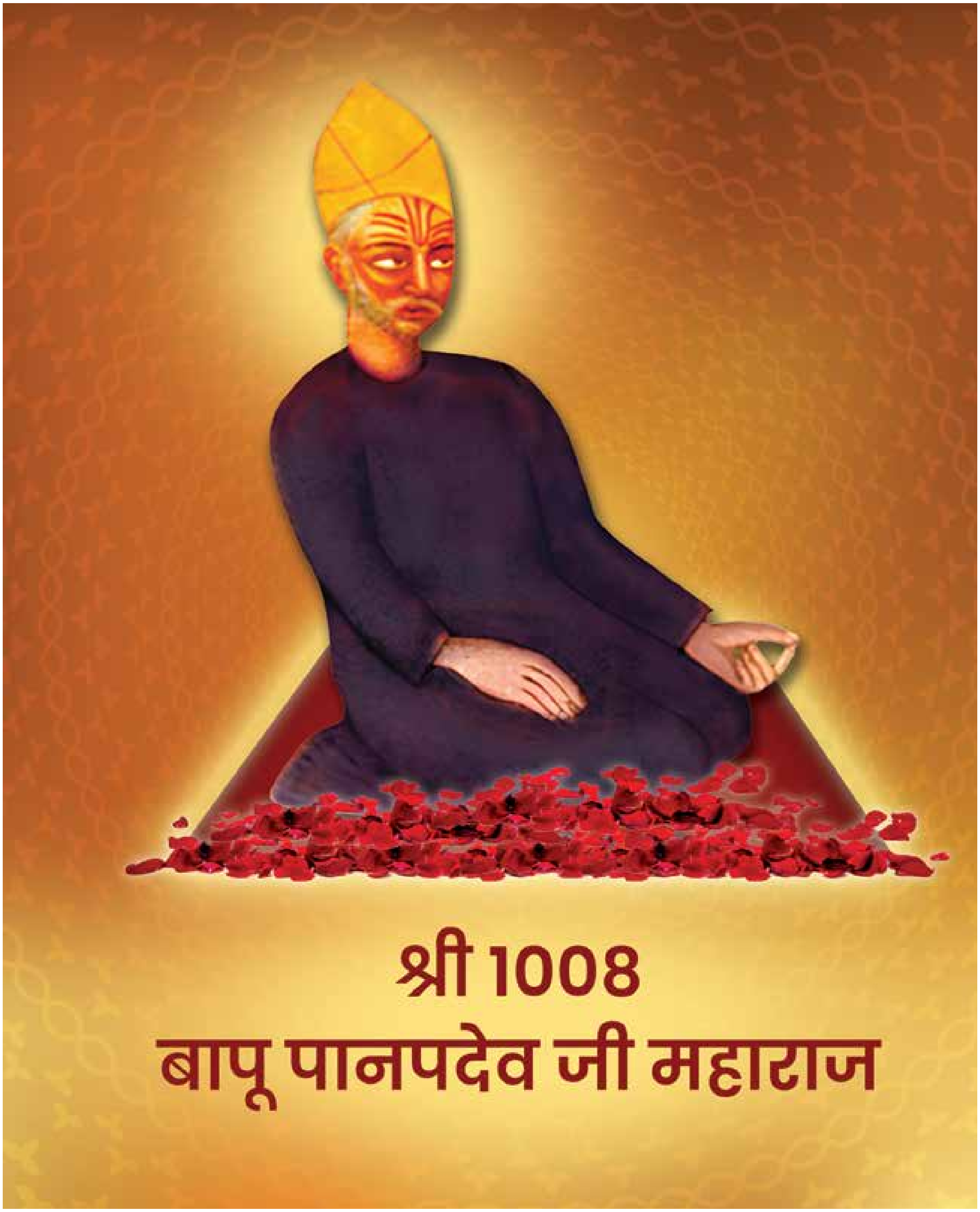
श्री 1008
बापू पानपदेव जी महाराज

विषय तालिका

साखी अजामल की 9
अथ बाल्मीक जी का प्रसंग 24
अथ बाल्मीक जी का दूसरा प्रसंग 36
अथ ध्रुव जी का प्रसंग 58
अथ साखी संत रेन व लाला चारज जी 95
अथ गणिका का प्रसंग 123
अथ गजिन्द्र दा प्रसंग 136
अथ सुदामा जी का प्रसंग 147
अथ बँधक का प्रसंग 171
अथ कुब्जा का प्रसंग 189
अथ विदुर जी का प्रसंग 202
अथ प्रहलाद भगत जी का प्रसंग 234
अथ नरसिंघ अवतार जी का प्रसंग 253
अथ द्रोपदा जी का प्रसंग 292

भजन

टेक : हाए ओए धिक्कार, धिक्कार तेरे मनां,
ऐवं बिरधा गवां लया ऐहो तनां।.. 15

टेक : जे तो पार होना प्यारे गुण हरि के गाए जाना,
परमात्मा की भक्ति दिन में जमाई जाना। 34

आज भाग्य भरा दिन आया है,
मुरली वाले दा दर्शन पाया है।... 51

टेक : जपो मन नाम ईश्वर का,
वो ही मुक्ति का दाता है। 54

टेक : फड़के जी बांहो ध्रुव नूं गोदियों उतारया
जोर नाल थप्पड़ इक मुख उत्ते मारयां 62

जा के जंगल में तूं नाम ध्या लै बेटा
प्रभु मालक जो तेरा ध्यान लगा लै बेटा.. 68

टेक : मेरे सतुगुरू करो उपकार जरा,
बिगड़ी हालत को दीजो सुधार जरा 70

टेक : गर बे निशां को पाना, तूं वी बे निशान हो जा हस्ती
मिटा के अपनी, ईश्वर समान हो जा... 72

टेक : भगवन तूं है दयाल, दुख दूर कर हमारा
तेरी शरण में आया, अब दीजिए सहारा 80

टेक : मेरे भगवान जी दरश दिखाया करो,
अपने भगतों को ना तरसाया करो 86

टेक : रक्षा करो गुरू जी, आया हूं तेरे द्वारे चरणी
हूं शीश धरता, तुझ पर जाऊं बलिहारे 99

टेक : ओम तेरे विच वसदा,
जंगल काहंनू जाणा 102

टेक : छोड़ दयो मूर्ख का संग,
भजन में पा देता है भंग 107

टेक : तेरे आ गए भगत ही द्वारे,
बख्शो हुण औगुण सारे 117

टेक : मिलकर साधुआं,
साधुआं धुणी कर इश्नान 120

टेक : मेरे ऊपर करो उपकार जरा जी,
मैंनू पापन नूं देना तार जरा जी 126

टेक : कह तूं गंगाराम राम-राम,
राम बिना सब झूठे काम 128

टेक : भगवान जी पापियां नूं तूं ही तारदा,
तेरा नाम पतित है पावन 134

टेक : पहुंचा जब निर्धन ब्राह्मण, कृष्ण के दरबार में,
मस्त ऐसा हो गया भौंरा ज्यों खुश गुलजार में 152

टेक : सुदामा को भगवान पूछने लगे,
भेंट मेरी क्यों मुझको चढ़ाता नहीं,
घर से आए हो जो कुछ हमारे लिए,
देर क्या है जो अब पकड़ाता नहीं 159

झूठा है सब जगत व्यवहारा
हम ना किसी के कोई ना हमारा।। 165

टेक : प्रभु जी तार-तार-तार आया तेरी शरण
आया तेरी शरण मिटे जन्म मरण.. 183

टेक : भगवन तूं है दयालु सुनो बेनती हमारी
गॅल फूल माला सोहे सिर मोर मुकुट धारी 192

टेक : किरपा करके गुंसाई,
तराईं जी जिवें सारयां नूं तारया.. 195

चित्त मेरा लगा रहे गुरू चरणां दे नाल,
मन मेरा लगा रहे.. 198

टेक : वन में तुझे स्वामी बंसी बजाते देखा ग्वालों के संग
मिलकर गऊए चराते देखा 206

टेक : उठो, जागो वीरों
प्रमा भक्ति दी लोण.. 215

टेक : छूट जाए जान अजाबां तो,
जिन्द हो जाए पाक हिसाबां तों 222

शाम सुन्दर बृजवासी,
रहां चरणा दी मैं दासी। 223

टेक : बंसी वाले मेरे शाम जी,
दर्शन है तेरा पावनां 229

उठ जाग तूं प्यारेया
प्रेम कर लै। 232

टेक : प्रभु जी
तेरी महिमा अपरम्पार 246

टेक : दर्श अपना है परमात्म
दिखा दोगे तो क्या होगा.... 249

टेक : राम नाम सार जग में,
चाहिए जी ध्यान लगावनां.... 260

टेक : मेरे वीरों जी कर लो विचार जरा,
श्री राम का नाम दिल धार जरा 264

टेक : बला से जान यह जाए,
ना कोई ऊजर लावांगा 270

टेक : जल डोबदा न अग्नि साणे,
जिन्हां तेरा नाम जपया। 274

टेक : मेरे प्रभु जी स्वामी
मैंनू दिया दीदार 287

टेक : जुआ खेलो ना आ जाऊंगी हार,
कर देंगी खुआर, सोचविचार मनों विसा 297

टेक : आवो जी आकर शाम दर्श दिखावनां
तेरे बांझो धीर होर किसे ना धरावनां 300

गुरु दर्शन तालिका

बापू पानप देव जी महाराज 1
बापू परमहंस ठाकुर जी महाराज 8
बापू ज्वाला सिंह जी महाराज 57
बापू ओम नारायण दत्त जी महाराज 94
बापू हरनाम जी महाराज 122
बापू श्रद्धाराम जी महाराज 135
बापू गुरदास राम जी महाराज 146
बापू भानु दत्त जी महाराज 170
बापू हरभगवान जी महाराज 188
बापू रविंदर जी महाराज 201

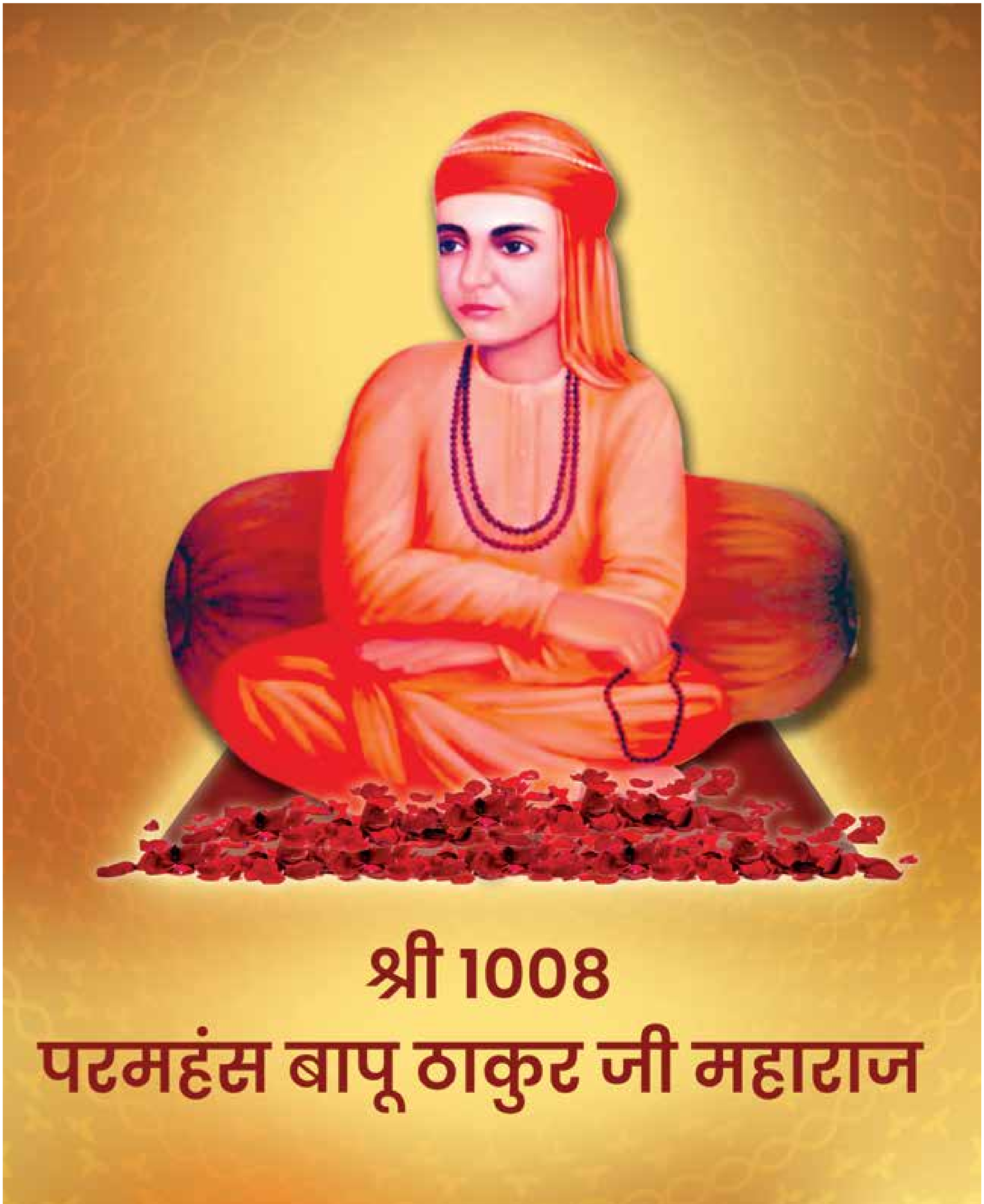
श्री 1008
परमहंस बापू ठाकुर जी महाराज

੧ਓ सतिगुरु प्रसादि।

साखी अजामल की

जय श्री नानक देव जी, जै श्री गुरु हरनाम।
विद्या शक्ति दीजिए, करता हूं प्रणाम।।
चरण कंवल का आसरा, होवो आप सहाई।
अजामल की गाथ जो, अब मैं कहुं, सुनाय।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी, श्री गुरु नानक देव जी और श्री गुरु हरनाम जी के पावन चरण कमलों में प्रणाम करते हुए उनसे प्रार्थना कर रहे हैं कि अब मैं भक्त अजामिल की कथा का प्रारंभ करने जा रहा हूँ। इसके लिए कृपा करके मुझे यथोचित बुद्धि और शक्ति दें।

भाई गुरुदास जी का कथन ।। वार 10 पउडी 20
सिअजामल उधरण कह एक बारपि

छन्द :

अजामल ब्राह्मण जाति था, आचार जो सारे भ्रष्ट हुए।
संग वेश्या चोरी कर, शुभ गुण तो सारे नष्ट हुए।।1।।
राही जनों को दुख देंवें और खेलता था जुआ।
एक दिन जीवों को मारन को वो जंगल में था गया हुआ।।2।।
चार संत पीछे से आए लोगों से पूछने लगे।
सदा व्रत बतलाओ कोई भूख से घबराता है जीआ।।3।।
एक मस्करा बोल उठा तुम अजामल के घर जाओ।
सदाव्रत घर मिलता उसके जो इच्छा हो भोजन पाओ।।4।।
सीधे स्वभाव होते हैं संत झट अजामल के घर गए।
भूखे को तुम भोजन देते इसलिए हम चले आए।।5।।

स्त्री बोली महाराज हम सदा व्रत क्या देते हैं।
चोरी ठगी पति करे हम सभी पेट भर लेते हैं।।6।।
पर अच्छा हे हमारे घर आए खाली नहीं अब तुम जाओ।
ये चार रुपये नगद लीजिए जाकर बाज़ार से कुछ खाओ।।7।।

अजामिल जाति से तो ब्राह्मण था लेकिन उसका व्यवहार दुर्गुणों से भरा था। वेश्यागामी होने के साथ चोरी करने की बुरी आदत भी थी। वह सदाचार और सद्गुणों से पूरी तरह से विहीन हो चुका था।

जुआ खेलने के साथ-साथ रास्ते में हर आने-जाने वालों को अपने र्दुव्यवहार से दुःखी और परेशान करता था। एक दिन वह शिकार करने के लिए जंगल में गया हुआ था।

अजामिल की अनुपस्थिति में भूख से व्याकुल चार संतों ने किसी से दानी व्यक्ति क बारे में पूछा जो उन्हें भोजन करवा दे।

तभी एक शरारती व्यक्ति ने मजाक में उन्हें अजामिल के घर जाने को कहा। उन्हें आवश्स्त भी किया कि वहाँ उन्हें भरपेट भोजन खाने को मिल जाएगा।

सरल स्वभाव संत शरारती व्यक्ति के कहने पर अजामिल के घर भोजन के लिए चले गए। वहाँ पर उसकी स्त्री से बोले कि हम तुम्हारी प्रशंसा सुनकर यहाँ भोजन के लिए आए हैं।

अजामिल की पत्नी ने जवाब में कहा कि हम दान देने के योग्य हैं या नहीं मैं कुछ नहीं जानती। पति तो चोरी, ठगी का काम करते है और हम इसी कमाई से अपना गुजारा करते हैं।

अजामिल की पत्नी संतों के घर आने से खुश होकर बोल रही है कि अब वह उन्हें खाली हाथ नहीं जाने देगी। स्त्री ने चार रुपये नगद देकर संतों को बाज़ार से कुछ भोजन कर लेने की प्रार्थना की।

दोहरा :

चार रुपये संत ले, हुए जभी तैयार,
वेश्या तब बोली, हमारा करो उद्धार।।

संत जब दक्षिणा लेकर जाने लगे तभी अजामिल की वेश्या पत्नी ने उनसे अपने उद्धार के लिए प्रार्थना की।

छन्द ::

तुम सन्त दयालु कृपालु हो, जिस पर किरपा आप करो।
लोहा वजन में होता भारी, काठ के संग आसान चले।
कोई युक्ति हमको बतलावो, हम पापी यमपुर ना जाए।
संसार समुन्दर तरने को कोई, तरीका गुरु जी बतलाओ।

अजामिल की पत्नी संतो से प्रार्थना कर रही है कि आप दयालु और कृपालु हैं। दया कर के हमें हर प्रकार की यम यातनाओं से बचाते हुए इस संसार रूपी भवसागर से पार उतरने का कोई उपाय बताएँ। जैसे भारी लोहा, लकड़ी के साथ से पानी में तैर जाता है उसी प्रकार अपने आशीर्वाद से हमारा भी उद्धार कीजिए।

दोहरा :

संत बहुत खुश होवदे है, वेश्या पूछने कीन।
पुत्र है कितने पेट के, नाम तिने क्या चीन।।

वेश्या की प्रार्थना को सुनकर संत बहुत खुश हुए और उससे उनके पुत्रों के नाम पूछे।

छन्दः

हे महराज तीन पुत्र हैं मेरे, चौथे ने गर्भ में वास किया।
जब उनके नाम सुनाती हूं, लीए नाम मेरा खुश होए जिया।।
खुदाई बख्श है नाम बड़े का, छोटे का अल्लाह यार।
तीसरे का नाम अली खाँ, चौथा होने को तैयार।।
जब संतों ने नाम सुने तो, मुख से बोले राम ही राम।
कैसी दुर्बुद्ध भई इनकी, मलेछों के हो राखे नाम।।
संत दयाल पर उपकारी, वेश्या को सुनाने लगे।
चौथे का नाम नारायण रखो, बन्धन जो छुड़ावन लगे।।
तुम दोनों का होगा उद्धार, इतना कर संत पधार गए।
संत की महिमा वेद ना जाने, सतुगुरु आप उच्चार गए।।
चौथा पुत्र पैदा हुआ, नाम सिनारायणपि रख लिया।
उससे ज्यादा प्यार हो गया, हरदम नाम को भाख लिया।।
समय आने पर अजामल की, मृत्यु नजदीक आ गई।
यम कंकर लेने को आए, स्याही मुंह पर छाई गई।।
सिअमल सिरानों लेखा देना, आए कठिन दूत जम लेनेपि – गुरबाणी (पृ. सं. 792)

संतों के पूछने पर वेश्या ने खुदाई बख्श, अल्लाहयार और अली खाँ नाम तीन पुत्रों के बारे में बोलकर बताया कि चौथा बालक गर्भ में है। इतना सुनकार संतों ने कहा कि आने वाले इस चौथे बालक का नाम सिनारायणपि रखना, जो कि आपके लिए हर प्रकार से कल्याणकारी होगा।

संत तो परोपकारी होते हैं। उनका यशोगान करने में वेद भी असमर्थ हैं। नारायण नाम रखकर वह अजामिल के परिवार की मुक्ति का आसान रास्ता बता गए। समय आने पर पुत्र नारायण से उनका अति प्रेम हो गया और अक्सर वे पुत्र नारायण का नाम ही पुकारा करते थे। मृत्यु का समय निकट आने पर अजामिल को उसके द्वारा किए गए जीवन भर में पाप कर्मों का लेखा-जोखा लिए यमदूत खड़े दिखाई दिए।

छन्द :

महा भयानक मुख टेढ़े हैं, ऊपर को हैं बाल खड़े।
हाथ में संगल मोहले छबीआं,बरछें जिनके बदन बड़े।।
देख भयानक रूप अजामल, दिल में बहुत घबराता है।
अब अपने काम बुरे किए पर, मन को लानत पाता है।।

यमदूतों के महा डरावने रूप देखकर अजामिल बहुत घबरा गया। अपने द्वारा जीवन भर किए गए पाप कर्मों के विषय में याद करके पछताने लगा।

भजन

टेक : हाए ओए धिक्कार, धिक्कार तेरे मनां,
ऐवं बिरधा गवां लया ऐहो तनां।

सारे अंगों का राजा तुम्हें थापया, मानते थे हुक्म जो तेरा भाखया,
शुभ कर्मों को फिर क्यों नहीं आखया, ना कराया वी है संग संत जना।
विषयों में रहा सदा तूं जोड़ता, हॅथ तेरे सी वांगा ऐन्हां नूं मोड़दा,
हार अपनी जो शक्ति है क्यों तोड़ता, हो के बलवान, कायर क्यों तूं बना।
घर अपना तूं आप ही है भुल गया, लाल माटी में है गफलत से रुल गया।
ऐंवें कौढ़ी के बदले में है तुॅल गया, ना कमाई करी तुमने कुछ भी धनां।
दासन दास कहे बहुता अफसोस है, करनी मेरी किसे दा वी की दोष है,
हार ॲजे वी ना आई मैनूं होश है, ब्रह्म से जीव ताहीं तो गनां है मना।

छन्द :

यमदूतों को देखकर, अजामल घबराने लगा।
पेश नहीं कुछ चलती है, ले पुत्र का नाम बुलाने लगा।।
हे राम नारायण प्यार तेरे में, इनको यहां से दयो भगा।
यमदूत लेने आए मुझको, आवे खौफ मुझे लवो छुड़ा।।
ऊंची सुर में राम नारायण, राम नारायण करने लगा।
आए पारखद हरि जी के, यम का दूत तब डरने लगा।।
पारखदों का तेज देखकर, यम के दूत तभी बोलते हैं।

इस पापी को हमने ले जाना, हाल दिलों का खोलते हैं।।
जे कोई धर्म करे नर देही, उसको तुम ले जाते हो।
जे कोई पाप करे खुश होकर, काबू हमारे आते हैं।।
इस अजामल ने पाप किए बहुत , इसको हम ले जाएंगे।
करके पेश धर्मराज के, सभी नरक भुगतवाएंगे।।
शास्त्र के अनुसार जीव जो, शुद्ध काम नहीं करते हैं।
अपने मन अनुसार जो चलते, चेता का दुख भरते हैं।।
यह जीव आप ही कर्म करे, आप ही फल फिर पाता है।
शास्त्र से विरुद्ध चलने का, मगरों चेता आता है।।
अपने नाश का हेत जीव पिआ, आप ही खुश हो करता है।
जैसे रेशम कीट अपनी, करतूतों से मरता है।।
अब अजामल को ले जाते हैं, देरी का कुछ काम नहीं।
उमर आजादी इसने गंवाई, जपया सच्चा नाम नहीं।।

अजामिल सामने आए यमदूतों को देखकर घबराकर अपने छोटे पुत्र राम नारायणको जोर-जोर से पुकारने लगा। अपने नारायण पुत्र को अजामिल बार-बार बोल रहे हैं कि मुझे इन यमदूतों के चंगुल से छुड़ा लो। नारायण-नारायण नाम बोलने से विष्णु भगवान के पार्षद आ गए। उनके आलौकिक तेज को देखकर यमदूत घबरा गए और पार्षदों से कहने लगे कि इस अजामिल ने जीवन पर्यन्त घोर पाप किए हैं इसलिए इन्हें हम ही अपने लोक ले जाएंगे, आप तो पुण्यात्माओं को ही ले जाने के अधिकारी हैं। अजामिल ने कोई भी पुण्य ना करके बुद्धि अनुसार कुकर्म ही किए हैं। जैसे रेशम का कीड़ा स्वयं अपनी मृत्यु का कारण बनता है इसी प्रकार अजामिल ने भी सारा जीवन अपनी इच्छा अनुसार पाप कर्म करते हुए व्यतीत किया है। ऐसे पापी जीव पर हमारा ही अधिकार है।

दोहरा :

पारखदों ने कहा, इसको ले जाएंगे हम।
मरती बार इस नाम लिया, पापों का नहीं गम।।

श्री हरि के पार्षद बोले अजामिल ने अंत समय में हरि का नाम लिया है। जिस कारण से इसके घोर पाप कर्म भी क्षीण हो गए हैं, अतः इस जीवात्मा पर हमारा अधिकार है।

छन्द :

हे यमदूतों छोड़ दयों, इसको हम ले जाएंगे।
स्वर्ग दे सुख जो कई तरह दे, शनै-शनै भुगतावेंगे।।
जेकर कहो कि मरती बारी, इसने तो पुत्र का नाम लिया।
तब सुनिए कान लगाकर के, गुरबाणी में जो लिख है दिया।।

पार्षदों के अनुसार अजामिल को अंत समय में नारायण नाम लेने के कारण अब इसे स्वर्ग के सुख दिए जाएंगे। यदि अब आप यह तर्क दें कि इसने अंत समय में भगवान नारायण का नहीं बल्कि अपने पुत्र नारायण को पुकारा था तो इसकी पुष्टि हम गुरबाणी के अंग से कर सकते हैं।

गुरुबाणी

अंत काल नारायण सिमरै, ऐसी चिंता में जो मरे
बदत त्रिलोचन ते नर मुक्ता, पीतम्बर ता के हृदय बसे ।।5।।2।।

(गुरबाणी पृ. स. 525)

अपने जीवन के अंत समय में प्राण त्यागते हुए जो भी उस परमपिता का नाम उच्चारण करता है वह इस संसार के आवागमन से मुक्त हो जाता है और पीताम्बरधारी भगवान

विष्णु के हृदय एवं उनके लोक में सदैव निवास करता है।

छन्द :

यदि पुरुष पुत्र से प्यार करे, हंसी भाव से प्यार करे।
पर वासुदेव का नाम लए तो, सभी पाप उसके हैं टरे।।
चाहे गिरती बार ये पैर खिसकते, सर्प भांत के मुख आवे।
जम्हाई लेते और छींकते, नाम लए और तुरया जाए।।
खाते-पीते बैठा हो चाहे, किसी काल में याद करे।
फौरन पापों का नाश होवे, जो करते हैं नर हरे-हरे।।

यदि कोई व्यक्ति अपनी संतान का नाम उस परम शक्ति के नाम पर रखता है फिर चाहे किसी भी अवस्था में किए गए उस नाम उच्चारण से उसके पापों का नाश होता है। भले ही फिर वो नाम हँसते हुए, क्रोध में, गिरते हुए, सुस्ताते हुए, छींकते हुए, खाते-पीते हुए, सोते-जागते हुए कभी भी लिया जाए वह जीव पुण्यात्मा ही कहलाते हैं।

पारखदों ने इतना कहकर, दूतों को भी ताड़ते हैं।
विमान सुनहरी सुन्दर ऊपर , अजामल को चढ़ाते हैं।।
शर्मिंदा यमदूत हो गए, पेश ना कोई चलती है।
धर्मराज पास जा रोए, ये ज्वाला दिल में जलती है।
हुक्म आपका हुआ था, अजामल पापी को ले आओ।
संगल गले में डालकर, ज्यादा खौफ उसको दिखलावो।।

हरि के पार्षद, यमदूतों को ऐसा समझाते हुए अजामिल को सम्मानपूर्वक सुन्दर, सुनहरी विमान द्वारा श्री हरि लोक में ले गए। अपमानित यमदूत धर्मराज के पास जाकर बोले कि

आपकी आज्ञा से ही हम अजामिल के पास उसे डराने, धमकाने और यमलोक में लाने के लिए गए थे।

पारखदों ने आकर, हमारा बहुत है अपमान किया।
ले गए छुड़ाकर अजामल को, क्या उसने है दान किया।।
धर्म राज जी कहने लगे, ये अच्छे तुम्हारे काम हुए।
जान तुम्हारी बच गई है, क्या हुआ जो तुम बदनाम हुए।।
आगे से सोच समझकर चलना, जो नाम नारायण कहत है।
तुम उसके निकट ना भूल जाओं, वो सब पापों को दहता है।।

हरि पार्षदों ने हमारा बहुत अपमान किया और न जाने किस पुण्य से अजामिल को अपने लोक में ले गए। धर्मराज ने यमदूतों को समझाया जो हुआ अच्छे के लिए हुआ।अपमान भले ही हुआ लेकिन प्राण बच गए। अब आगे के लिए यह समझ ले लो कि जो भी नारायण का पवित्र-पावन नाम का उच्चारण और स्मरण करे तुम उनके निकट भी नहीं जाओगे क्योंकि वह जीवात्मा वास्तव में केवल उस नारायण के परम धाम की ही अधिकारी है।

गुरबाणी

जह साधु गोबिन्द भजन कीरतन नानक नीत।।
हउणा तूं छुटहिं निकट ना जाइहं दूत।।1।।

(गुरबाणी पृ .सं. 256)

गुरू नानक जी गुरुबाणी में फरमाते हैं कि जहाँ पर भी साधु संग होता है, प्रभु का नाम सिमरन होता है, भजन संकीर्तन होता है। प्रभु के ऐसे प्रिय स्थान से, ऐसे भक्तों से, ऐसे सेवकों से यम कोसों दूर रहते हैं।

छन्द :

प्रताप देख लउ नाम का ऐसा, अजामल अधम जो तार दिया।
मरती बार ही नाम लिया, इक क्षण विच प्रभु ने पार किया।।
सबसे उत्तम नाम हरि का, वेद शास्त्र बतलाते हैं।
जो भजन हरि का करते हैं, शीघ्र ही मुक्ति पाते हैं।।

प्रभु नाम की ऐसी महत्ता है कि अंत समय में केवल एक बार एक पल उस नारायण नाम के उच्चारण से ही प्रभु ने पापी अजामिल को भी तार दिया।

वेद और शास्त्र भी यही बताते हैं कि मुक्ति का सबसे सरल और सर्वोत्तम उपाय प्रभु का नाम स्मरण ही है।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी की यह हम सब पर असीम कृपा है कि उन्होंने अजामिल की इस साखी के माध्यम से हमें नाम स्मरण के रूप में मुक्ति का सुगम और सरल उपाय बताया है। बापू जी हम सभी पर अपनी कृपा और आशीर्वाद बनाए रखें ताकि हम इस मार्ग पर चल सकें।

गुरबाणी : सोधत, तॅत विचारा, बिन हरि भजन नहीं छुटकारा।।

(गुरबाणी, पृ. सं.188)

बड़ी खोज कर, सोच समझ कर, विचार-विमर्श कर यह निष्कर्ष निकाला गया है कि हरि भजन के बिना कोई ऐसा अन्य मार्ग नहीं है जो हमें सांसारिक दुःखों, विपत्तियों या कठिनाईयां से छुटकारा दिला सके।

छन्द :

हरि नाम बड़ा सुखदाई है, जो नरों के बंधन कटता है।
उसकी तारीफ तो नहीं होती, जो सच्चे मन से जपता है।।
देखो जो कोई भुल-भुलकर, नाम हरि का ले लेवे।
तब भी प्रभु जी खुश होते हैं, बंद खलासी कर देवे।।
इसमें एक छोटी साखी है, जो साहुकार की सुन लीजै।
पुत्र का किया विवाह, खुशी से खान पान सब को दीजै।।
वेश्या संग प्रीत बढ़ी, तब वो उसको भोजन देने गया।
सबसे चोरी गया घर उसके, अपनी मौत को लेने गया।।
सीढ़ी पर लाला चढ़ने लगे, डण्डा एक जो टूट गया।
अरी ले, कहने को तैयार हुआ, हरि ले कहते हुए तन छुट गया।।
तब उसी काल में वासुदेव ने, पारखदों को फरमाया।
मेरा नाम लेकर मरा है, ले आओ क्यों समय लगाया है।
प्रताप नाम का देख लो कैसा, मन अपने विचार करो।
आओ नाम जपो दिल ला के, डुबदा बेड़ा पार करो।।
संत बड़े उपकारी होते, नुस्खा ठीक बताया है।
अजामल को पार किया, जो किस विधि से समझाया है।।

सच्चे नाम को जपने वालों की प्रशंसा करना तो मानो सूर्य को दीपक दिखाने के समान है। हरि नाम की इतनी महिमा है कि अन्जाने में भी यदि उसका नाम ले लिया जाए तो वह सभी प्रकार के सुखों को देने वाला तथा समस्त दुःखों और बन्धनों से मुक्त करने वाला सिद्ध होता है। इस तथ्य को प्रमाणित करने के लिए बापू जी ने एक साहूकार की छोटी

सी साखी का वर्णन किया है।

एक साहूकार जिसकी एक वेश्या के प्रति आसक्ति थी। अपने पुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में साहूकार उस वेश्या के घर चोरी छिपे भोजन देने के लिए गया। किन्तु वह नहीं जानता था वहाँ साहुकार की मृत्यु उसकी प्रतीक्षा कर रही थी। जब लाला जी (साहूकार) सीढ़ी चढ़ रहे थे तो सीढ़ी का एक डंडा टूट गया। गिरते हुए उनके मुँह 'अरी ले' कहने की बजाए 'हरि ले' निकल गया। उसी समय श्री हरि अपने पार्षदों से बोले कि साहूकार ने अंत समय में, भले ही गलती से मेरा नाम लिया है तो वह मेरे लोक का अधिकारी है। आप बिना देर किए विष्णु लोक में ले आओ। बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी इस साखी के माध्यम से हमें हरि नाम की महिमा बताते हुए सचेत कर रहे हैं कि यदि हम भी मुक्ति चाहते हैं तो अपने अंतःकरण से सदा उस प्रभु का नाम जप एवंध्यान करना चाहिए।

संत बड़े दयालु होते हैं। सत्यमार्ग पर चलने की सद्बुद्धि देते हैं। अजामिल पापी को मुक्ति का कितना सरल तरीका बताया है।

दोहरा :

इस प्रसंग को सुनने का ऐहो मतलब जान।

नाम जपो सत्संग करो, हो जावे कल्याण।।

अजामिल और साहूकार के प्रसंग हमें यही शिक्षा देते हैं। यदि अपना कल्याण चाहते हो तो निरंतर अजपा जाप करो, संकीर्तन करो।

दोहरा :

भुल चुक सब बख्श दो, हे गुरु बख्शनहार।

साखी पूरी हो गई, यथा मति अनुसार।।

अंत में इस साखी का समापन करते हुए बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने अपने गुरुदेव

से प्रार्थना की है कि मतानुसार इस साखी वर्णन में यदि कोई भूल-चूक हो गई हो तो आप कृपा करके बख्श दें।

गुरबाणी

पत राखी गुरु पारब्रह्म, तज प्रपंच मोह विकार।
नानक सोई आराधिए, जा का अन्त ना पारावार।।

(गुरबाणी, पृ. सं. 261)

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी गुरबाणी के माध्यम से गुरु वन्दन करते हुए कह रहे हैं गुरु जो स्वयं गोबिन्द रूप है वही हमें सभी प्रकार के मोह, विकारों, अवगुणों और व्यर्थ के प्रपचों से विहीन करके हमारा उद्धार करते हैं। एक गुरू ही है जो हर समय, हर स्थिति में हमारी रक्षा करते हैं, हमारी लाज रखते हैं। गुरू की महिमा अपरम्पार है। वह अनन्त, असीम, विराट शान्ति पुंज हैं। ऐसे गुरु को बारम्बार प्रणाम।

इती श्री भगत माल संगीत अजामल की
साखी वर्णन नाम प्रथमो अध्याय की समाप्तम्।।1।।
सति करतार

ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

अथ बाल्मीक जी का प्रसंग

श्लोक : धरि जीअरे एक टेक तूं, लाह बिड़ानी आस।।
नानक नाम ध्याइये, कारज आवे रास।।1।।

(गुरबाणी पृ. सं. 257)

बाल्मीकि जी की साखी का शुभारंभ बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने गुरुबाणी के श्लोक से किया है।

रे मन! तूं इस संसार के झूठे रिश्तों और पदार्थों से अपना मोह और नाता कम से कम रखने का प्रयत्न कर। सब जीवों का एकमात्र सच्चा सहारा परमात्मा ही है। तूं बस एक उस पर ही विश्वास रख। यदि हम पूर्ण रूप से उस परम शक्ति के प्रति समर्पण भाव रखेंगे तो हमारे सभी कार्य उसकी कृपा से स्वतः ही होते चले जाएंगे। इसलिए हमारा कर्तव्य बनता है कि हम अधिक से अधिक समय उस प्रभु के ध्यान और नाम सिमरन में व्यतीत करें।

श्लोक : छाती सीतल मन सुखी, छंद गोबिन्द गुण गाए।
ऐसी किरपा करहुं प्रभ नानक दास दसाए।।

इस श्लोक के माध्यम से गुरुनानक देव जी प्रभु से प्रार्थना कर रहे हैं कि हे गोबिन्द! आप मुझ पर ऐसी कृपा करो कि मैं दिन-रात हर समय आप ही का गुणगान करूँ। जिससे कि मेरा रोम-रोम एक आलौकिक और दिव्य आनन्द व शीतलता से भर जाए।

दोहरा :

चरण वन्दना गुरू को करता हूं सिर निवाए।
बाल्मीक प्रसंग जो अब मैं कहा सुनाए।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी बाल्मीकि जी का प्रसंग बखान करने से पूर्व अपने गुरुदेव के नतमस्तक होकर चरण वन्दना कर रहे हैं।

गुरबाणी सिबाल्मीके होया साध-संगपि

भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी 19

वाटे मानस मारदा बैठा बाल्मीकि वटवाणा।

पूरा सतिगुरु भेटया मन विच ओआ खिंजो ताणा।।

बाल्मीकि जी अपना जीवन बिना किसी ध्येय के सभी प्राणियों को दु:खी और परेशान करते हुए व्यतीत कर रहे थे। अचानक जब उनकी भेंट पूर्ण गुरुदेव से हुई तो उनका मन अजीब सी कुण्ठा और ग्लानि से भर गया।

दोहरा :

तरेते युग में बाल्मीकि जात भील की जान।

साध संग जब ते हुआ, होई गई कल्याण।।

त्रेतायुग में पूर्ण गुरू से मिलने पर भील जाति के बाल्मीकि भी गुरु कृपा से महर्षि बाल्मीकि बन गए।

छन्द :

ऐ मन मेरे ख्याल करी तूं, साध संग प्रताप हुआ।
बाल्मीकि ने मिलकर संता, कैसे मुख से जाप किया।।
सच्चे मन से नाम हरि का, जो मुख अपने जपता है।
नरकां दी जो अग्न तेज है, उसके बीच ना तपता है।।
बन्द खलासी जल्दी होवे, मन शुद्धि हो जाती है।
सुबह उठकर नाम जपो, वह गुरबाणी फरमाती है।

यह चमत्कार सच्चे गुरू की कृपा से ही संभव हो पाया। उच्च कोटि के संत समाज के परिणाम स्वरूप ही उन्हें हरि नाम सिमरण की युक्ति और मार्ग का ज्ञान हुआ। यही सच्चा ज्ञान वास्तव में सच्चे गुरू की ही देन है। सच्चे गुरू द्वारा बताया गया गुरू मंत्र का निरंतर जाप घोर नरकों की यात्नाओं से सहज ही मुक्ति दिलवा देता है। सब दु:ख स्वत: ही नष्ट हो जाते हैं और अंत:करण निर्मल, शुद्ध हो जाता है। अमृत काल में उठकर किया गया हरि नाम सिमरन तो सोने पर सुहागे का काम करता है। ऐसा गुरबाणी में भी बताया गया है।

श्लोक :

झालाखे उठ नाम जप निसिबासुर आराध।।
कारा तुझे न ब्यापहि नानक मिटे उपाध।।1।।

(गुरुबाणी, पृ. सं. 255)

सब प्रकार के आलस को त्याग कर दिनरात निरंतर उस सृष्टि रचियता की आराधना करो। ऐसा करने से सभी दु:ख, रोग, भय संकट स्वत: ही दूर हो जाएंगे।

छन्द :

बाल्मीक ने नाम जो जपया तो संतों का संग हुआ,
साक्षात फिर मिले राम जी, जन्म मरण सब भंग हुआ।
श्री रामचन्द्र पिता आज्ञा मानी बनों के बीच जब फिरते थे,
जन्म-जन्म के पापी भारे दर्शन करके उद्धरते थे।
फिरते-फिरते बाल्मीक की कुटिया चरण जा पाए हैं
कर प्रणाम प्रदक्षिणा कीनी, मुख से उस्तुति गाए हैं।
पहले से आखिरी तक वो अपना हाल सुनाता है,

हे राम आपका नाम पवित्र सार बस्तु कहलाता है।

(अध्ययन रामायण में से)

सच्चे मन से बाल्मीकि जी ने निरंतर प्रभु नाम सिमरन किया और साधुओं का संग किया। जिसके फलस्वरूप भगवान श्री रामचन्द्र जी ने उन्हें अपने दर्शन देकर कृतार्थ किया और साथ ही जीवन के आवागमन से मुक्त भी कर दिया।

अपने पिता की आज्ञा पाकर वनों में भ्रमण करते हुए श्री रामचन्द्र जी ने अपने पावन दर्शनों द्वारा बड़े-बड़े घोर पापियों का भी उद्धार कर दिया।

भ्रमण करते हुए जब श्री रामचन्द्र जी ऋषि बाल्मीकि जी की कुटिया में पधारे तो बाल्मीकि जी ने भगवान की प्रदक्षिणा करते हुए उनका स्तुति गान किया।

श्री रामचन्द्र जी को बाल्मीकि जी अपना संपूर्ण जीवन वृतांत सुनाकर कहते हैं कि हे प्रभो! इस संसार में सर्वाधिक पवित्र पावन केवल एक आपका ही नाम है।

दोहरा :

राम तुम्हारे नाम की, महिमा कही ना जाए।
जा प्रभाव ते मैं ऋषि, भयो राम सुखदाई।।

हे राम आपके नाम की महिमा अपरम्पार है। इसी सुखदायी नाम जाप के कारण ही मुझे आज यह अवस्था प्राप्त हुई है।

चौपाई

प्रथमे मैं सो करातन भाहीं।। करातन संग बसिहु जग माहीं।।
जन्म मात्र में दिज ते भयो।। और अचारज सुन्दर कीयो।।
बहु सुत सुन्दर मैं उपजाए।। चोरन मिल पर दरब चुराए।।

धनुष बाण कर भीतर धरो।। जीवन को अंतक सम्हरो।।

बाल्मीकि जी अपने जीवन का वृतांत सुनाते हुए कहते हैं कि मैं अपने परिवार के भरण पोषण के लिए चोरी-चकारी जैसे अन्य कर्म करने से भी नहीं कतराता था। धनुष-बाण हाथ में धारण किए सर्वत्र आतंक मचाने से भी नहीं हिचकता था।

एक समय सुन सपत उधारे।। कानन माहीं सो मोह निहारे।।
तत ज्ञानी दीपत मान।। अग्न अर्क सी प्रभा महान।।
लोभ बड़ो मेरे उर आइयो।। तिनके पाछे मैं उठ धाइयो।।
ताके वे तन बसतर जेते।। उरमै चहो उतारे तेते।।

एक दिन जंगल में विचरण करते हुए मुझे एक तत्वज्ञानी और तेजस्वी से व्यक्ति दिखाई दिए। उन्हें देखकर मेरे मन में लालच आ गया कि मैं उनके वस्त्र भी उतार लूं जिस कारण मैंने उनका पीछा करना शुरू कर दिया।

तृष्ट तृष्ट कर जाहि सो भागो।। मोको ऋषि मुनि पूछन लागै।।
दिज अधम तूं क्यों आवे धाइ।। तब मैं तिन प्रति दयो सुनाइ।।
मुनीश्वर मैं कुछ तुम ते लेवो।। सुत द्वारा प्रति मैं गाहि देवो।।
बहुते है सुत मेरे दारा। भुखे करे सो भवन पुकारा।।

तभी रुककर ऋषि मुझसे पूछने लगे कि हे नीच तुम मेरा पीछा क्यों कर रहे हो। तब मैंने उत्तर दिया कि मैं आपके पास जो कुछ भी है उसे लेना चाहता हूँ। जिससे मैं अपने परिवार का भरण-पोषण कर सकूँ जो कि मुझ पर ही निर्भर है।

तिनकी रक्षा घर उर माहीं।। विचरों मुनि मैं कानन माही।।
तब मेरे प्रति मुनि वे बोले।। सावधान नहीं अन्तर डोले।।

जाई कुंटुब पूछो तुम नीच।। जो जो पाप करो दिन बीच।।
तुम दिन भागी होउ कि नाहीं।। भिन्न-भिन्न पूछो घर माहीं।।

अपनी पत्नी और बच्चों के लिए ही मैं जंगल में भटकता हूँ। तब निडर होकर मुनि ने मुझे सावधान करते हुए कहा कि जिन पत्नी और बच्चों के लिए तुम दिन-रात यह दुष्कर्म कर रहे हो उन सबसे अलग-अलग जाकर पूछो कि क्या वे भी तुम्हारे पापों के भागीदार बनेंगे कि नहीं। तब तक मैं यहीं इसी स्थान पर तुम्हारी प्रतीक्षा करूँगा।

हम नहीं याह ठोरते जावो।। पूछन सबन को घर ते आवो।।
सुत दारा मैं पूछे जबही।। मो प्रति कहिउं राम तिन तबहीं।।
हम नहीं कहते पाप कमावो।। आपन कीआ आप तुम पावो।।
सो सुन मो उर बड़ो विराग।। जागिउ को पुरब किरत भाग।।

घर जाकर जब मैंने यह प्रश्न सबसे पूछा तो हे राम उन सभी ने यही एक जवाब दिया कि तुम स्वेच्छा से ही सब पाप कर्म कर रहे हो। हम किसी भी प्रकार से तुम्हारे इन बुरे कर्मों के भागीदार नहीं हैं। यह सुनकर मुझे ऐसा प्रतीत हुआ कि यह घटना भी मेरे किसी पूर्व जन्म के पुण्य कर्मों का ही फल है। मैं जिनके लिए दिन रात जंगल मे भटककर दुष्कर्म करता था उनमें से कोई एक भी मेरे इन कर्मों का भागीदार बनने को तैयार नहीं है। यह सच्चाई जानकर मेरे मन में अचानक से ही वैराग्य उत्पन्न हो गया।

कर विचार मन तही चल आइउ।। जह ते मोको मुनन पठाइउ।।
करूणा पूरण मन मुन सारे।। तंह ठाणे मुन मोह निहार।।
मुन को दरशन पाइओ जब ही।। सुध भयो मेरो मन तक ही।।
करते त्याग मैं धन बान।। मुन पद परिउ सो दंभ समान।।

मन में विचार करते हुए मैं वापिस मुनि के पास आ गया। पूर्ण ऋषि संत सदैव

करूणामयी होते हैं, इस कारण उन्होंने मुझ पथ-भ्रष्ट को सही मार्ग दिखा दिया। उसी समय मैंने अपने झुठे अहंकार के प्रतीक धनुष-बाण को उतारकर मुनि के चरणों में रख दिया।

नरक सामुंद गिरिउ मैं भारी।। हे मुन ली जौ मोह उबारी।।
आगे क्यों देख मुन दियाल।। मो प्रति बोले वचन रसाल।।
उठो उठो तेरी कल्याण।। सफल भयो सत्संग महान।।
कुछ तोंको हम मन्तर बतावे।। ताहीं कर तूं मुक्त सो पावै।।
जा विधि काल बहु बीत गए।। मेरे तन मन निहचल भए।।
जन संगत मेरी मिट गई।। बाल्मीक मम ऊपर भई।।

उनके निर्देशानुसार ही मैं निरंतर एकाग्रचित्त होकर और भौतिक दुनिया को भूलकर तन्मयता से वह जाप करता रहा।

युग हजार सौ बीतउ जब ही। आए मुन करूणा कर तब ही।।
निकसे यै भाखिउ मुनि जब ही।। मुन के वेग उठउ मैं तब ही।।
बाल्मीक ते निकसिउ ऐसे।। फेर कुहीर तरन खी जैसे।।
मोको पेख बहुर मुन भारिवउ।। बालमीक मम नाम सो राखिउ।।

जैसे-जैसे समय बीतता गया, मेरा तन-मन स्थिर होता चला गया। मुझे बाहरी दुनिया की कोई सुधबुध नहीं रही। मेरे शरीर के ऊपर बाल्मीक-बॉबी (दीमक कीड़ों द्वारा बनाया गया मिट्टी का छोटा सा पहाड़) बन गई।

बाल्मीक ते निकसिउ जाते।। दूसर जनम भयो तब तांते।।
यो मम भाख गए सुर लोक।। रघुवंश उत्तम मुनि अशोक।।

मैं तो राम नाम इस लइउ।। जा प्रभाव ते ऐसे भइउ।।
अब साक्षात निहारो राम।। सानुज सीय सम सुख धाम।।
वारज नैन मुक्त मैं भयो।। जाहिं विखे नहीं संसा रहिउ।।

कई हजार युग घोर तपस्या करने के बाद करूणावश मुनि ने मुझे पुनः दर्शन दिए। मुनि के आगमन और पुकार से मैं तुरंत ही उस बाल्मीक रूपी कवच से बाहर आ गया। मेरी इस दशा को देखकर प्रेमपूर्वक भाव-विभोर होकर मुनि ने मुझे नया नाम 'बाल्मीकि' दे दिया।

बाल्मीक से निकलते ही मुझे नए नाम के साथ-साथ मानो मुझे एक नया जन्म ही मिल गया। राम का नाम ही सर्वोत्तम है और शोक रहित करने वाला है। ऐसा समझाकर मुनि देवलोक को चले गए। मैंने तो और कुछ विशेष नहीं किया केवल श्री राम नाम का जाप ही किया था। जिसका परिणाम इतना शुभ और प्रभावशाली हुआ। जिसके फलस्वरूप आज मैं सभी सुखों को देने वाले साक्षात प्रभु राम और अनुज लक्ष्मण के साथ-साथ माता सीता के दर्शन कर रहा हूँ। आपके पावन दर्शन पाकर आज मेरे यह नयन और जीवन धन्य हो गए। इसमें कोई संदेह नहीं है।

दोहरा :

साध संग ऐ नाम का, ऐसा है प्रताप।
कथा रामायण में लिखी गुलाब सिंघ विख्यात।।

साधुओं गुरूओं की संगति, सच्चे मन से राम नाम का निरंतर जाप बाल्मीकि जी को इतना महान बना गया कि उन्होंने अपने इष्ट राम की संपूर्ण जीवन गाथा को रामायण के रूप में विश्व विख्यात कर दिया।

छन्द :

ऐ मन मेरे नाम जपी, जिस नाम का यह प्रताप हुआ।
थी जाति भील की सबसे अधम, सब मुनियों में विख्यात हुआ।।
आत्म शक्ति में बाल्मीक जी, देखों कैसे सार हुए।
दस हजार वर्ष के पीछे, राम चन्द्र अवतार हुए।।
अवतार होने की बालमीक ने, पहल ही कथा लिख दी।
बाल्मीक रामायण नाम जो, सारी वार्त्ता कह डाली।।
नाम प्रभु का जप ले मन तूं, अब देरी का काम नहीं।
वेद महात्मा यही है कहते, होवे मुक्त बिन नाम नहीं।।

बाल्मीकि जी की इस साखी के माध्यम से बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी हम सभी का मार्गदर्शन करते हुए यही बता रहे हैं कि लौकिक एवं पारलौकिक सुखों का एकमात्र सरल उपाय है प्रभु का नाम सिमरन। उसी नाम का जाप करते हुए भील जाति के बाल्मीकि मुनि श्रेष्ठ बन

गए। निरंतर वर्षों तक नाम जाप के प्रभाव से उनकी आत्मशक्ति इतनी प्रबल हो गई कि त्रेतायुग में भी राम अवतार के दस हजार वर्ष पूर्व ही राम जी के जीवन के सभी घटनाक्रमों का सार और वर्णन उन्होंने अपने ग्रंथ 'रामायण' में वर्णित कर दिया था। बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी समझा रहे हैं क शीघ्रातिशीघ्र प्रभु नाम के जाप में संलग्न हो जाओ। सभी महान साधु संत तथा वेद आदि सभी ग्रंथ सही कहते हैं कि बिना नाम सिमरन के मुक्ति संभव नहीं है।

भजन

टेक : जे तो पार होना प्यारे गुण हरि के गाए जाना,
परमात्मा की भक्ति दिन में जमाई जाना।

1. नितनेम रोज करना, बुरे कामों से है डरना
   हरदम तरफ सच्चाई, पांव बढ़ाए जाना
2. सोहबत बुरी ना जाओ, सत्संग में मन लगाओ
   नज़दीक आनके (संतों) के नित, फेरा पाई जाना
3. पुस्तक धर्म की पढ़ना, किसी साथ नहीं लड़ना
   दुनिया है झूठ समझो, दिल को हटाई जाना।
4. शास्त्र और वेद चारों, सभी है इन्हें पुकारे
   जपो नाम होवे मुक्ति, बिना नाम आई-जाना

दोहरा :

साखी पूरी हो गई मन तूं करी विचार।
वासदेव का नाम रट बेड़ा हो जाए पार।।
भुल चुक सब बख्शयों हे गुरु बख्शनहार।
मैं अन्जान बेइल्म हूं ना छंद रचन दी सार।।

इस साखी को पूर्ण रूप देते हुए अंततः बापू जी यही कह रहे है कि इस सारी साखी का यही सार निकलता है कि निरंतर प्रतिदिन हम उस (ईश्वर) का नाम जपते रहे। तभी इस

संसार रूपी भवसागर से हमारा बेड़ा पार हो पाएगा। हे गुरुदेव! मैं अन्जान और अज्ञानी हूँ। मुझे कोई भी कवित्त या छन्द रचना का ज्ञान नहीं है। आपकी कृपा से जो भी रचना रची गई है उसकी भूलचूक क्षमा करें और आगे के लिए सही मार्गदर्शन करते रहें।

गुरबाणी :

पत राखी गुरू पारब्रह्म तज प्रपंच मोह विकार।

नानक सोई आरधिए जा का अंत ना पारावार।।

(गुरबाणी पृ. सं. 258)

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी का पूरा जीवन ही गुरबाणी के रंग में रंगा हुआ था। इस साखी का समापन गुरबाणी के इस श्लोक के द्वारा किया है। वह परमपिता परमात्मा बहुत दयालु हैं। वह हम सबकी लाज रखने वाले हैं। हमें निर्विकार होकर, प्रपंच हीन होकर बिना किसी दिखावे के शुद्ध अंतःकरण से उस अनन्त, असीम और दयालु, कृपालु ईश्वर की आराधना और वन्दना में लीन रहना चाहिए।

इति श्री भगत माल संगीत बाल्मीक

साखी वर्णन नाम द्वितीय अध्याय समाप्तम।।2।।

सति करतार।

ੴ सतिगुरु प्रसादि।

अथ बाल्मीक जी का दूसरा प्रसंग

श्लोक : धरि जीअरे एक टेक तूं, लाह बिड़ानी आस।।
नानक नाम ध्याइये, कारज आवे रास।।1।।

(गुरबाणी पृ. सं. 257)

बाल्मीकि जी की दूसरी साखी भी बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी गुरुबाणी के श्लोक से ही शुरू कर रहे है। हे मन! तूं इस संसार रूपी भवसागर में तैरना सीख ले। इस संसार में अपने मोह से फंस मत। सब जीव उस परम पिता परमात्मा की ही संतान हैं। तूं एक उस परम शक्ति का ही सहारा ले। जैसे-जैसे हमारा विश्वास और श्रद्धाभाव बढ़ता जाएगा वैसे-वैसे हमारे सब काम निर्विघ्नता से होते जाएंगे। सभी को अधिक से अधिक समय एकरस होकर प्रभु नाम की आराधना करनी चाहिए।

श्लोक : छाती सीतल मन सुखी, छंद गोबिन्द गुण गाए।
ऐसी किरपा करहुं प्रभ नानक दास दसाए।।

इस श्लोक के माध्यम से गुरुनानक देव जी परमात्मा के आगे अरदास कर रहे हैं कि हे गोबिन्द! आप मुझ पर प्रसन्न होकर मुझे अपनी शरण में ले और अधिक से अधिक अपने गुणगान करवाएँ। जिस कारण मन और बुद्धि हमेशा ही शुद्ध भाव में रहे।

दोहरा :

नमो नमो गुरुदेव को होवो आप सहाय।
प्रसंग कहुं बाल्मीक का होवो आप सहाय।।

सर्वप्रथम बापू जी अपने गुरुदेव के चरण कमलों में सादर नमन करते हुए उनका आह्वान कर रहे हैं कि मैं जो बाल्मीक प्रसंग की रचना प्रारंभ करने जा रहा हूँ। आपकी कृपा और सहायता के बिना संभव नहीं है।

गुरबाणी :

सुआन सत्त अजात सब ते किशन लावे हेत।
लोग बपुरा क्या सरा है तीन लोक पर वेष।।

(बाणी भगत रविदास जी पृ. 1124)

सोते-जागते, उठते-बैठते सभी काम करते हुए हर क्षण उस मुरलीधर कृष्ण को ही अपने मन में बसाए रखो। जो अजन्मा, हर काल, हर स्थान पर मौजूद है। इस झूठे संसार के बंधनों से स्वयं को जितना विरक्त कर सकें, करते जाएं और उस त्रिलोकीनाथ भगवान के निमित्त अपने जीवन को समर्पित कर दें।

छन्द :

जब कृष्णि चन्द्र भुमि का भार उतारन को अवतार हुए,
अधर्मी कंस के मारन को जिससे बहु लोक लाचार हुए।
उसी काल में बाल्मिीकि जी सुपचों के गृह में जन्में,
जन्म तो नीच की जाति में था पर भगती भाव भरा मन में।
भग्वान कृष्ण की किरपा से यदि पांडवों ने कौरव मारे,
कहन लगे युधिष्ठर जी हम हुए कुल के हत्यारे।
हे महराज कोई ऐसी युक्ति हम को जल्दी बतलाओ,
पाप कुल हत्या का दूर होवे मेरे मन का संशय चुकावो।
अवश्मेध यज्ञ कीजे राजन प्रतिज्ञा यही कर लेवो,
ऊँची जगह शंख एक रख दो जब अपने आप बजा यह जान लो।
बस यज्ञ संपूर्ण हो जाएगा, संशय सारा मुक जाएगा,
कुल हत्या का पाप जो होया उसी वक्त चुक जावेगा।

जब अधर्मी कंस के अत्याचार से सभी प्राणी बेबस, लाचार और दुःखी थे उस समय प्राणियों के उद्धार तथा पापों और पापियों का अन्त करने के लिए भगवान कृष्ण ने भूलोक पर अवतार किया। उसी काल में बाल्मीकि जी ने नीच जाति में जन्म लिया परन्तु अनका मन प्रभु भक्ति से भरपूर था।

महाभारत की युद्ध की समापन पर पाँडव, कौरवों को मारकर विजयी हुए। ज्येष्ठ पाँडव युधिष्ठिर का मन पश्चाताप और ग्लानि से भरा हुआ था - उन्हें बार-बार यही विचार परेशान कर रहा था कि हम पाँडव अपने कुल के हत्यारे हैं। युधिष्ठिर भगवान कृष्ण के पास जाकर प्रार्थना करते हैं कि हे भगवान! कोई ऐसा उपाय बताएं जिससे मेरे मन का बोझ, संशय और ग्लानि दूर हो।

भगवान ने उन्हें अश्वमेध यज्ञ करने की सलाह दी और कहा कि एक शंख किसी ऊँचे स्थान पर स्थापित कर दो जब शंख स्वतः ही बज उठेगा तो वह यज्ञ की पूर्णता का संकेत होगा। शंखनाद के साथ ही सारा संशय और कुल हत्या का पाप मिट जाएगा।

दोहरा :

युधिष्ठर जी ने यज्ञ रचा करी प्रातिज्ञा आए।
यज्ञ संपूर्ण तब होवे आप शंख बज जाए।।

शंखनाद की पूर्णता के साथ यज्ञ समाप्ति की प्रतिज्ञा करके युधिष्ठिर जी ने यज्ञ प्रारंभ कर दिया।

छन्द :

सब ऋषि मुनि बुला लिए जो ऊँची कुल कहलाते थे।
पंडित ब्राह्मण भी आए जो जाति का तान दिखाते थे।
सबको भोजन बड़े प्रेम से भांति-भांति पकवान दिए।
संतुष्ट किया बहुत ऋषियों को ब्राह्मणों को बहुत दान दिए।

ऋषि ब्राह्मण अपने अपने आश्रम को पधार गए।
किंचत वी वो शंख ना बजया पांडव जोर लगा हार गए।
यधिष्ठर जी निराश हो गए पेश ना कोई चलती है।
यज्ञ संपूर्ण नहीं हुआ, यह ज्वाला दिल में जलती है।
जाए कृष्ण चन्द्र के आगे अपना माथा तो झुकाए दिया।
हे महाराज यज्ञ हुआ ना पूर्ण सारा हाल सुनाए दिया।

ऊँची जाति के सभी ऋषि-मुनियों और ब्राह्मणों को आमंत्रित करके पाँडवों ने प्रेमपूर्वक व आदर सहित सभी को भोजन करवाया और भरपूर दान-दक्षिणा देकर विदा किया। किंतु फिर भी वो शंख नहीं बजा। शंख ना बजने से युधिष्ठिर निराश और हताश हो गए। मन में बार-बार शंख ना बजने की और यज्ञ संपूर्ण ना हो पाने की पीड़ा उठती है। कृष्ण जी के पास प्रणाम किया और यज्ञ पूर्ण ना होने का सारा हाल सुना दिया।

दोहरा :

इतनी किरपा कीजिए दुखियों के रक्षपाल।
शरणागतों की राखिए लज्जा दीन दयाल।।

हे शरणागत वत्सल, हे दीनदयाल आप दुखियों की रक्षा करने वाले हैं। हम आपकी शरण में आए हैं, अब हमारी लाज आपके ही हाथ है।

छन्द :

चिन्ता ना करो धीरज धर लो, सब काम शुद्ध हो जाएंगे।
एक महा ऋषि नहीं आया, यज्ञ में जब उसको बुलवाओगे।।
है बाल्मीकि जी नाम उनका, जाति तरफ ना ध्यान करो।

हो जिस भी तरह से ले आओ उनको, आदर बहुत सम्मान करो।।
यज्ञ संपूर्ण हो जाएगा, दिल में फिक्र कुछ करो नहीं।
हे राजा युधिष्ठिर हम कहते हैं, नैनों में जल भरो नहीं।।

भगवान श्री कृष्ण ने पाँडवों को दिलासा देते हुए कहा कि आप तनिक भी चिन्ता ना करें। यज्ञ अवश्य संपूर्ण हो जाएगा। इसके लिए आप जात-पात का ध्यान दिए बिना, उच्च कोटि के महर्षि बाल्मीकि जी को पूरे मान-सम्मान के साथ सादर आमंत्रित कीजिए। उनके आगमन से सारे कार्य शुद्ध और संपूर्ण हो जाएंगें।

दोहरा :

ये सुनकर हो गया राजा खुश आपार।
जिसके मन आनन्द का कुछ ना पारावार।।
राजा जी फरमाते हैं भीम और अर्जुन को बुलाए।
बाल्मीकि को ले आना प्रेम से जैसे आए।।
भीम और अर्जुन हुक्म मान फौरन हुए तैयार।
नमस्कार कर चरण में मन में करने लगे विचार।।

भगवान श्री कृष्ण का आश्वासन पाकर राजा युधिष्ठिर बहुत प्रसन्न और आनंदित हुए। युधिष्ठिर जी ने भीम और अर्जुन को प्रेमपूर्वक महर्षि बाल्मीकि जी लिवा लाने का आदेश दिया। राजा की नमस्कार करते हुए भीम और अर्जुन ऋषि जी को लाने के लिए तुरंत तैयार हो गाए।

छन्द :

जिस तरह भी होए बाल्मीकि को, मिन्नत करके लाएंगें।
भ्राता जी का हुक्म जो हुआ, कर तामील सुख पावेंगे।।
दर्शन जा कर किया ऋषि जी, राजा ने फरमाया है।।
एक बार चल दर्शन दे दो, बिनती यह स्वीकार करो।
चिन्ता हमारे दिल में भारी, किरपा कर सब दूर करो।।

वे दोनों अपने मन में विचार करने लगे कि वह अपने ज्येष्ठ भ्राता और राजा के आदेश को मानते हुए ऋषि जी को अवश्य ही आदरपूर्णक लेकर आएंगे और उन्हें सुखी करेंगे। उन दोनों ने जाकर ऋषि बाल्मीकि जी के चरणों में प्रणाम किया और अपनी सारी चिन्ता का बखान करते हुए उन्हें राजा युधिष्ठिर के पास जाकर दर्शन देने की विनती की।

दोहरा :

नीची मेरी जाति है क्यो मुझको अधिकार।
किसी से मेरा तन छुए करते बहुत विचार।।

ऋषि बल्मीकि जी ने उत्तर दिया कि मैं तो नीच जाति का हूँ। मुझे किसी यज्ञ स्थल पर जाने का क्या अधिकार है। यदि मेरा तन भी किसी को छू जाए तो उसे शुभ नहीं माना जाता।

छन्द :

यज्ञ संपूर्ण तब होवे जब महापुरुष कोई चल आव
ऊँची कुल कोई भगती वाला अपने चरण महलों पे पावे।।

मैं नीच जाति तुम जानत हो, राज महल की सेव करां।
देखो तो मेरी किरत है कैसी, कूड़ा साफ कर उदर भरां।।
आपके राज में बसता हूं, पर यह कहना नहीं मानुंगा।
बेशक राजा क्रोध करे मैं अपना भला ही जानूंगा।।

ऋषि जी आगे कहते हैं कि यज्ञ तो किसी ऊँची जाति के महापुरुषों द्वारा महलों में चरण डालने पर ही संपूर्ण होगा। मैं तो नीच जाति का हूँ जो कूड़ा-करकट साफ़ करके अपना जीवन यापन करता हूँ। मैं तो राजमहल का एक अदना सा सेवक हूँ। चाहे मैं आपके राज्य की ही प्रजा हूँ लेकिन फिर भी आपका यह अनुरोध मानने में असमर्थ हूँ भले ही राजा कितना भी क्रोधित हो जाएं किंतु मेरी ना जाने में ही भलाई है।

चौपाई :

मुझ पर राजा कोप कराए। देश छोड़ हम कहीं को जावे।।
भगवन मुझको विदत कराते। इतना मान नहीं हम चाहते।।
सबसे नीची जाति हमारी। छॅज छानड़ी करते तैयारी।।
मेरे गए से यज्ञ की हानि। है संपूर्ण कहां से ठानी।।

चाहे राजा मुझ पर कितना भी क्रोध करे अथवा देशनिकाला ही क्यों ना दे दें। लेकिन भगवान ही शायद मुझे यह संकेत दे रहे हैं कि मैं इतने मान-सम्मान के योग्य नहीं हूँ। मेरे जैसे नीच जाति के व्यक्ति के जाने से यज्ञ की हानि ही होगी। आपके मन में यज्ञ संपूर्णता का विचार आना सर्वथा निरर्थक है।

दोहरा :

सुनकर अर्जुन, भीम ने दोनों जोड़े हाथ।

ऋषि जी कृपा कीजिए चलो हमारे साथ।।

इतना सुनकर भीम और अर्जुन दोनों ने फिर से हाथ जोड़कर प्रार्थना की कि है ऋषिवर, आप कृपा करके हमारे साथ अवश्य चलिए।

दोहरा :

हे स्वामी जी दया करो, जो संतन की रीत।

पर उपकार कमावदे, सबसे करते प्रीत।।

उन्होंने विनती करते हुए फिर से कहा, हे ऋषिवर! संतों का हृदय तो बहुत ही दया और करुणा से परिपूर्ण होता है। वह संपूर्ण संसार से प्रीति रखते हैं और सदैव सबका भला और परोपकार ही करते हैं।

छंन्द :

है संत सदा दयाल मूर्ति शुभ काम शीश पर धरते हैं।।
चाहे कितनी कोई तकलीफों से नहीं डरते हैं।।
अपनी जान तो चली जावे पर काम पराया करते हैं।।
चाहे बुरी करे कोई दिल ला के, यह सबकी विपदा हरते हैं।।
किसी के औगुण ना देख, गुण करना इनकी शर्तें है।
दागीच ऋषि की ओर ख्याल करो पर काम के हित में मरते हैं।
किसी संग वैर नहीं होता है सबके हित में अती बरते हैं।
सबमें परमात्मा देखते हैं जो जीव जंतु और नर है।

संत तो दया की मूर्ति होते हैं। सदैव सबका शुभ और कल्याण करने के लिए तत्पर रहते हैं। अपने पर कितना भी संकट आ जाए लेकिन दूसरों की सहायता ही करते हैं। चाहे उनके साथ कोई कितना भी बुरा कर ले वह फिर भी सबका भला ही चाहते हैं। किसी का भी अवगुण ना देखकर अपने गुणों द्वारा सबका हित ही करते हैं। फिर वह दधीचि ऋषि का उदाहरण देते हुए कहते हैं कि जिस प्रकार देवताओं और संसार के हित और रक्षा के लिए दधीचि ऋषि ने हंसते-हंसते अपना अस्थि दान कर दिया था। इसी प्रकार सभी संतों का जन्म और काम परोपकार के लिए ही होता है। संत किसी के साथ वैर-विरोध नहीं रखते। संसार के सभी मनुष्य और जीव-जंतुओं में उस परमात्मा का ही रूप देखते हुए सबसे प्रेम करते हैं।

दोहरा :

उपकारी प्यारी गिरा करे अकिरत प्रीत,
संतन ऐसो स्वभाव है सस सीतल कीत।।

संतों का स्वभाव ही यही है कि वे अपनी मधुर, प्यारी, प्रेमभरी वाणी द्वारा सबके मन को सुख और शीतलता प्रदान करते हैं।

दोहरा :

भीम अर्जुन की बेनती सुनकर हुए दयाल,
आवेंगे हम कल को चले ना तुम्हरे साथ।।

भीम और अर्जुन की विनय भरी प्रार्थना सुनकर ऋषि जी को उन पर करुणा आ गई। वह बोले हम आपके साथ आज नहीं आएंगे, कल स्वयं पहुँच जाएंगे।

दोहरा :

खुशी स्नेहा आन के प्रभु को दिया सुनाए,
किरपा हो गई आपकी सुबह ऋषि आ जाए।।

दोनों ने युधिष्ठिर जी के पास जाकर प्रसन्नतापूर्वक अगले दिन ऋषि जी के आगमन का शुभ समाचार सुनाया।

छन्द :

द्रोपदा को तब हुक्म दिया भोजन सुबह तैयार करो।
कई तरह के खाने सुन्दर जिनका रस अपार धरो।।
बनाइयों भोजन शुद्ध मन होकर भगत जी आकर खावेंगे।
यदि फुर्रे ग्लानि कोई अधूरे काम रह जाएंगे।

युधिष्ठिर जी ने रानी द्रोपदी को अगले दिन ऋषि बाल्मीकि जी के लिए श्रद्धा एवं प्रेमपूर्वक बिना किसी ग्लानि और संदेह के पूर्ण विश्वास के साथ अनेक प्रकार के स्वादिष्ट एवं रसभरे व्यंजन बनाने का आदेश दिया। साथ ही समझाया कि किसी प्रकार का संशय या कमी रहे जाने पर हमारा यज्ञ अधूरा ना रह जाए।

दोहरा :

आप कृष्ण भगवान जी, सब कुछ कहा समझाए।
चौकस होकर करो काज, दिल में कुछ ना ल्याए।।

भगवान श्री कृष्ण जी ने भी समझाया कि मन में किसी प्रकार का विचार लाए बिना पूरी सावधानी और सतर्कता से यह काम करना ताकि किसी भी प्रकार की कोई त्रुटि ना रहने पाए।

चौपाई :

सुबह हुई ऋषि ध्यान लगाया। नितनेम कर प्रेम बधाया।।
बाल्मीक जी हुए तैयार। पहुंच गए राज दरबार।।
कृष्ण कृष्ण का जप रहे नाम। दिल में कोई चीज ना आम।।
प्रभु ने देखा भगत जी आए। उठकर आप जो लेने आए।।
चरण धोए आसन बिठलाए। थाल परोस कर राजा लाए।।
भगत जी भोजन कण्ठे कीने। भोग लगाओ सभी छॅक लीने।।
मन्द-मन्द धुन शंख की होई। ऋषि चले गए कर रसोई।।
युधिष्ठिर जी हुए उदास। पूरी हुई ना उनकी आस।।
हे महाराज ये विघ्न की ऐंश। जिस कर बजा नहीं शंख।।
भगवान अपने मुख से फरमाते। हे नृप जी तुम क्यों घबराते।।
भगत के ऊपर करी ग्लानि। पूछ लवो तुम द्रोपदा रानी।।
तब राजा ने पूछन किया। साफ साफ रानी कह दिया।।
मेरे दिल में था ये आया। जाति स्वभाव कभी ना जाइ।।
बड़े पदार्थ सुंदर कीने। खट्टे मीठे जो रस भीने।।
सबको इक जगह लिया रलाइ। की स्वाद रसा दे पाए।।
पत्तलों की जूठ खाने वाला। क्या जाने यह स्वाद विचारा।।
महाराज मैं सच बतलाया। माफ करो मैं बुरा कमाया।।

अगले दिन अपने नितनेम से निवृत्त होकर, बिना कोई और विचार मन लाए हुए कृष्ण-कृष्ण का जाप करते-करते राजमहल में पहुँच गए। भगवान श्री कृष्ण ने उनके आगमन पर स्वयं उठकर उनका सादर-सत्कार किया। उनके चरण धोकर, उन्हें आसन

पर बिठाया तत्पश्चात् राजा युधिष्ठिर स्वयं भोजन का थाल परोसकार ऋषि जी के लिए ले आए। ऋषि जी ने सभी व्यंजनों को एक साथ इकट्ठा कर दिया और फिर उसे ग्रहण करने लगे। धीमे-धीमे शंख बजने लगा और ऋषि जी भोजन करने के उपरांत अपने स्थान को प्रस्थान कर गए। युधिष्ठिर शंख की मंद ध्वनि सुनकर उदास हो गए और उन्होंने कृष्ण जी से शंख ऊँची आवाज़ में ना बजने का कारण पूछा। भगवान ने ग्लानि ना करके द्रोपदी से शंख ना बजने का कारण पूछने को कहा। राजा के पूछने पर रानी ने यह स्पष्ट बताया कि ऋषि जी को इस तरीके से भोजन करते देखकर मन में यह विचार आया कि जाति अनुसार मनुष्य का स्वभाव बना रहता है। उसे बदला नहीं जा सकता। इतने परिश्रम और लग्न से बनाए हुए स्वादिष्ट व्यजंनों (खट्टे, मीठे, रसीले) को एकसाथ मिलाकर खाने से क्या ही स्वाद आया होगा। इनका सारा ही जीवन जूठे पत्तलों में खाने में बीता होगा। इन्हें राजसी व्यजनों के स्वाद का क्या पता होगा। राजन् मैंने अपने मन में आए भावों को बिल्कुल सच-सच बता दिया है। इसके लिए आप मुझे क्षमा करें।

दोहरा :

नृप जी को कहने लगे, किरपा के जो निधान।
फिर से ऋषि को ले आओ, हो के निर अभिमान।।

कृपानिधान श्री कृष्ण ने युधिष्ठिर से कहा फिर से जाकर प्रार्थना करके ऋषि जी को पुनः ले आइए।

छन्द :

त्तॅत वेत्ता जो संत महात्मा वेद भी यश गाते हैं।
रात दिन मैं फिरूं ढूंढता तब ही दर्श दिखाते हैं।।
मैं जा सबका पूज्य हुआ हूं, ये प्रताप है संतों का।
ऐसे संतों की धुर मिले तो पाप दूर हो जंतो का।।

जाति मुझको नहीं प्यारी मैं हूं प्रेम के होता वश।
जो कोई प्रेम से मुझको सेवे मैं जाता हूं वहां पर हँस।।
बाल्मीक जी तॅत ज्ञानी जाति की तरफ ना ध्यान करो।
हे नृप ऋषि को ले आओ राज का ना अभिमान करो।।

भगवान कृष्ण युधिष्ठिर को समझाते हुए कहते हैं कि तत्व ज्ञानी संत महात्माओं का वेद भी सदा यशोगान करते हैं और मैं भी उनकी तलाश में रहता हूँ। ऐसे महान संतों की चरण धूली पाकर सभी जीव पाप रहित हो जाते हैं और इन्हीं के प्रताप के कारण ही मैं भी पूज्नीय बना हुआ हूँ। मैं तो केवल प्रेम का भूखा हूँ। जाति-पाति से मुझे कोई सरोकार नहीं है। जो भी कोई मुझे सच्चे भाव से पुकारता है मैं उसके पास पहुंच जाता हूँ। बाल्मीक जी ऐसे ही तत्व ज्ञानी महान संत हैं। उनकी जाति का विचार किए बिना आप राज अभिमान त्याग कर विनम्र भाव से आप उन्हें दोबारा ले आइए।

दोहरा :

कोल ऋषि दे जावंदे युधिष्ठर जी आप।
किरपा करके फिर चलो शुद्ध हो मेरा काज।।
हाथ जोड़कर ऋषि जी कहते वचन पुकार
इतने तुम निरमान हो आए नीच के द्वार।

अब युधिष्ठिर जी स्वयं भगवान कृष्ण के वचनों को मानकर ऋषि जी को बुलाने के लिए उनके स्थान पर पहुँच गए ताकि उनके सभी रुके हुए कार्य शुद्ध और सफल हो पाएं। ऋषि जी बोले, हे राजन तुम अपना मान-सम्मान भूलकर एक नीच के पास आ गए हो।

छन्द :

हे महाराज क्यों खेचल कीती आप जो चलकर आए हैं।
अपनी प्रभता को त्याग दिया चरण मेरे गृह पाए हैं।।
चलो आप अब महलों को, मैं कल सुबह ही आऊंगा।
श्री कृष्ण भगवान जी के मैं आकर दर्शन पाऊंगा।।
नृप जी बोले सुनो ऋषि जी, साथ ही तुम्हें ले जाना है।
किरपा करो और साथ चलो तब ही मन पतिआना है।।
नृप जी का सब वाक सुना तब बाल्मीक जी जाने लगे।
कृष्ण कृष्ण का नाम हैं रटते महल में चरण जा डालने लगे।।
मुरली वाले का दर्शन किया प्रेम से शीश झुकाया है।
प्रभु जी बड़े प्यार से अपने गले लगाया है।।
प्रेम मगन फिर हुए ऋषि जी मुख से उस्तुति गाते हैं।
हे भगवान तूं है बेअन्त जो अन्त ना कोई पाते हैं।।

ऋषि जी ने पुनः कहा कि तुम एक राजा होकर अपनी सत्ता और प्रभुता का मान त्याग कर आए हो। आप घर जाओ मैं कल सुबह आ जाऊँगा और श्री कृष्ण जी के दर्शन पाऊँगा। राजा के अपने साथ चलने के लिए बार-बार अनुग्रह करने पर, कृष्ण-कृष्ण जपते हुए ऋषि जी उनके साथ राजमहल पहुँच गए। वहाँ जाकर मुरलीधर भगवान को नमन किया। कृष्ण जी ने भी बड़े प्यार से उन्हें गले लगाकर उनका सम्मान किया। प्रेम विह्वल होकर ऋषि जी भगवान का स्तुतिगान करते हुए कहते हैं कि आप बेअन्त हैं। आपकी लीला का कोई पार नहीं पा सकता।

भजन

आज भाग्य भरा दिन आया है,
मुरली वाले दा दर्शन पाया है।

आज भाग्य भरा दिन आया है,
मुरली वाले दा दर्शन पाया है।
हे बंसी वाले श्यामा, किस मुख से यश मैं गांवां
शेषनाग ने अन्त ना पाया है।
तुम भगवान हो हितकारी, है आपने दुनिया तारी
दुष्टां दा नाश कराया है
है सूरत आपकी प्यारी, हे मोर मुकुट गिरधरी
भगतां दा तेज वधाया है
भगतों को मान दिलाते हो, विच जग में रोशन कराते हो
ये दासन दास ने गाया है।

दोहरा :

आदर किया ऋषि का बहुत प्रेम वधाए।
हे राजन अब ऋषि को भोजन दयो छकाए।।

भगवान श्री कृष्ण जी ने ऋषि जी का यथोचित आदर सत्कार के उपराँत उनके लिए भोजन परोसने का आदेश दिया।

चौपाई :

सुन्दर आसन दिए बिछाए।। चौके में दिए ऋषि बिठाए।।
सुन्दर भोजन थाल सजाया। कठ्ठे कर ऋषि भोग लगाया।।
तब भगवान जी बोलत भए। सभी पदार्थ इकट्ठे कीय।।
सबको जो है इकट्ठे किया। भिन्न-भिन्न रस क्यों नहीं लीना।।
सुनकर ऋषि ने अर्ज़ गुजारी। भोग लगाया तुम्हें मुरारी।।
खाने हुए आज बहुत तैयार। पता न किस में करो प्यार।।
यही समझ कर इकट्ठे कीने। सभी आपको अर्पण कीने।।
खट्टा मीठा जो तुम चाहो। सब धर दिए मर्जी खाओ।।
सुनकर राजा हुआ हैरान। धन्य भगत है धन्य भगवान।।
ऋषि जी लगे करने रसोई। किसी के मान में ग्लानि ना हुई।।
ज्यों ज्यों ग्रास मुख अपने में डाले। ऊँची सुर शंख से आवे।।
यज्ञ संपूर्ण हो गया भारी। जै-जै कार करे नर-नारी।।
ये है नाम की महिमा भारी।। जात को पूछो नहीं मुरारी।।

भगवान का आदेश पाकर राजा ने चौके में ही सुन्दर आसन लगवाकर ऋषि जी को आदरपूर्वक बिठाया और सुन्दर थाली में भोजन परोस कर दिया। सभी व्यजनों को एक साथ एकत्रित करके ऋषि जी भोग लगाने लगे। ऐसा देखकर भगवान श्री कृष्ण जी ने पूछा कि सभी व्यजनों का अलग-अलग स्वाद ना लेकर तुमने उन्हें इकट्ठा क्यों कर दिया। सुनकर ऋषि जी ने उत्तर दिया, हे मुरारी! मुझे नहीं पता कि आपको इन सभी व्यजनों में से कौन सा व्यंजन अधिक प्रिय हैं इसी कारण मैंने सभी खट्टे-मीठे व्यंजन आपको समर्पित कर दिए हैं। आप स्वेच्छा से जो चाहें खा लें। यह सब सुनकर राजा युधिष्ठिर हैरान होते हुए बोले, धन्य हैं आप भगवान और धन्य हैं आपके ऐसे भक्त। ऋषि

जी को भोजन करते देखकर अब किसी के भी मन में किसी भी प्रकार का संशय या अथवा ग्लानि नहीं हुई।

जैसे जैसे ऋषि जी भोजन करते जा रहे थे। शंख ध्वनि निरंतर बढ़ती चली जा रही थी। इस प्रकार से यज्ञ की संपूर्णता का संकेत मिल गया और प्रसन्नता से सभी नर-नारी जय-जयकार करने लगे। यह सब नाम का ही प्रताप हैं भगवान ने यह सिद्ध कर दिया कि जाति-पाति का कोई महत्व नहीं होता। भगवान तो केवल भाव के भूखे होते हैं। अपने श्रद्धा, विश्वास से बड़ी सरलता से हम भगवान को रिझा सकते हैं।

गुरबाणी

जात-पात पूछे ना कोई।। हरि को भजे सो हरि का होय।।

उआ से ऊत्तम गनऊ चण्डाला।। नानक जीह मन बसहि गोपाला।।

नाम तुलि कुछ अवर ना होई।। नानक गुरमुख नाम पावै जन कोई।।

(श्री सुखमनी साहिब, पृ. 253)

गुरबाणी में भी कहा गया है कि प्रभु को जाति-पाति से कुछ लेना-देना नहीं है। यह तो इन्सान के द्वारा बनाए गए बेकार के ढकोसले हैं। जो उस परमात्मा को सच्चे मन से याद करता है। उसकी भक्ति में लीन रहता है वही परमात्मा को सर्वाधिक प्रिय है।

मात्र उच्च कुल में जन्म लेकर कोई भगवान को प्रिय नहीं हो सकते। प्रभु तो उन्हीं से प्रसन्न होते हैं जिनके मन में हर पल नाम सिमरन और प्रभु भक्ति का वास है।

भगवान का नाम सर्वोपरि है। इससे ऊपर तीनों लोकों में अन्य कुछ नहीं है। नानक जी कहते हैं वही प्रभु का प्रिय है जो उसकी याद में रहते हैं, उनके वचनों को मानकर सद्मार्ग पर चलते हुए एक आदर्श जीवन व्यतीत करते हैं।

भजन

टेक : जपो मन नाम ईश्वर का,
वो ही मुक्ति का दाता है।

वो ही पालन करे सबना का, वो ही सबका विधाता है।
सिवा उसके नहीं तेरा, कोई भी यार है जग में
ना बेटा है ना पोता है, ना बंधु है ना माता है।
करे अभिमान क्यों धन का, ना तेरे साथ जाएगा
ना जावे साथ रथ हाथी, धरम ही साथ जाता है।
पड़ा क्यों नींद में गाफिल, भौर अब होने वाली है
सम्भल कर बांध ले बिस्तर, अभी वो काल आता है।
सता मत बेगुनाहों को, दुखा मत चित्त तूं दीनों का
ना सुख पावे कभी वो भी, किसी को जो दुखता है।
शुक्र कर ऐ मन प्रभु का, बजा ले हुक्म तूं दिल से
प्रभु मुक्ति का दाता है, प्रभु सबका विधाता है।

चौपाई :

पूरा हुआ यह अध्याय।। गुरु चरणीं दिया शीश झुकाए।।
भुल चुक सब बख्शो मेरी।। सतगुरु जी मैं शरणी तेरी।।
पढ़े-सुने जो प्रेम से यह अध्याय।। पाप सभी उसके मिट जाए।।
नाम की महिमा अपरम्पार।। बोलो सारे सत करतार।।

इस अध्याय के संपूर्ण होने पर मैं अपने पूज्नीय गुरुदेव के चरणों में सादर नमन करता हूँ। हे सतगुरु जी! मैं आपकी शरण में हूँ। मेरे द्वारा हुई हर गलती को आप क्षमा करें। जो भी पूर्ण श्रद्धा और प्रेम से इस अध्याय को पढ़ेगा या सुनेगा तो प्रभु की कृपा से उसके समस्त पापों का नाश होगा। सबको सत-करतार कहते हुए बापू जी ने एक बार फिर से प्रभु नाम स्मरण की महिमा को सर्वोपरि और अपरम्पार बताया है।

गुरबाणी :

पत राखी गुरु पारब्रह्म तज प्रपंच मोह विकार।

नानक सोई आराधिए जा का अंत ना परावार।

(गुरबाणी पृ. 258)

हर समय गुरुवाणी का मनन करने वाले बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी इस साखी का समापन गुरुबाणी के इस श्लोक के साथ कर रहे हैं। वह ईश्वर सदा ही बख्शनहार है। वह सबकी बुराईयों को अच्छाई में परिवर्तित कर देता है और आन-बान की रक्षा करता है। इसलिए हमें हमेशा उस प्रभु की सेवा, सत्संग, सिमरन को ही माँगना चाहिए।

जगत स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी सच्चे अर्थों में एक समाज सुधारक भी थे। जिस समय सारा समाज जाति-पाति, ऊँच-नीच, छुआछूत को महत्व देता था, उस समय एक सच्चे संत बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने सभी भेदभाव को भुलाकर, सभी को उस ईश्वर का अंश जानकर गले से लगाया। दरबार में लंगर की प्रथा शुरू की जहाँ पर सभी जाति के छोटे-बड़े, अमीर-गरीब एक स्थान पर एक साथ बैठकर एक सा ही भोजन करते थे। ऋषि बाल्मीक के समान ही ऋषि ठाकुर दास जी भी निरंतर प्रभु भक्ति में लीन रहते थे। बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने उन्हें उनकी अनन्य भक्ति, सेवा, श्रद्धा को देखकर ही ऋषि ठाकुर दास जी कहकर संबोधित किया। धन्य हैं ऐसे गुरू श्रद्धाराम जी और धन्य हैं ऐसे शिष्य ऋषि ठाकुर दास जी।

ॐ ॐ

इति श्री भगत माल संगीत बाल्मीक दी

साखी वर्णन नाम तृतीय अध्याय समाप्तम्।।3।।

सति करतार

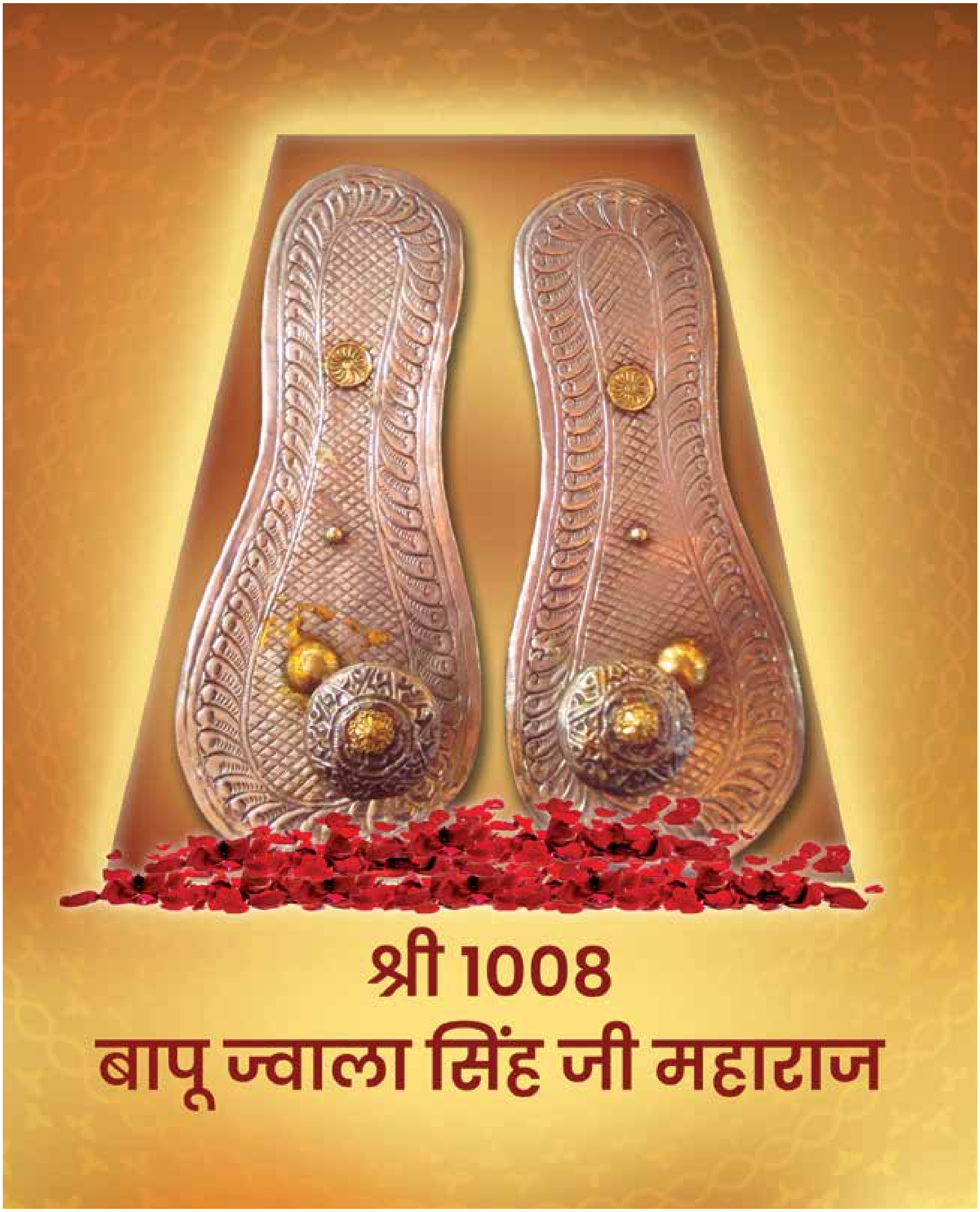
श्री 1008
बापू ज्वाला सिंह जी महाराज

१ੴ सतिगुरु प्रसादि।

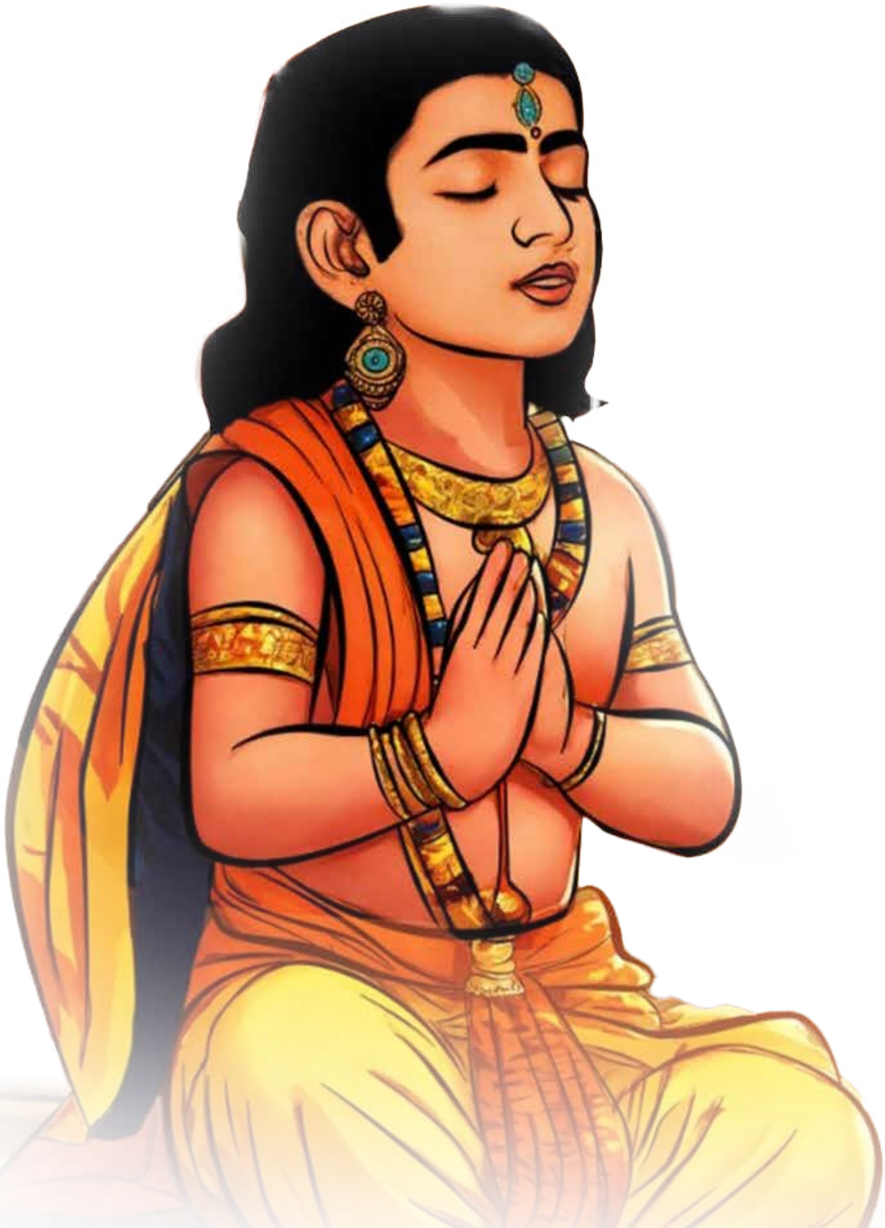

अथ ध्रुव जी का प्रसंग

श्लोक : धर जीअरै इक टेक तूं, लाह बिड़ानी आस।। नानक नाम ध्याइये, कारज आवे रास।।

(गुरबाणी पृ. सं. 257)

ध्रुव जी का प्रसंग शरू करते हुए बापू श्री श्रद्धाराम जी इस श्लोक में कह रहे हैं कि हे जीवात्मा! तूं किसी भी वस्तु, व्यक्ति से सहारा मत ढूंढ, उस एक ईश्वर पर अपना विश्वास गहरा कर। जैसे-जैसे हम नाम सिमरन बढ़ाते जाएंगे, संकीर्तन करेंगे, वैसे-वैसे हमारे दोष समाप्त होते जाएंगे और हमारे जीवन के सारे काम अपने आप ही बनते जाएंगे।

श्लोक : छाती शीतल मन सुखी छंत गोबिन्द गुण गाए।।
ऐसी किरपा करहुं प्रभ नानक दास दसाए।।

जैसे-जैसे हम अपना नाम जप बढ़ाते जाएंगे, वैसे ही हमारे जीवन में आनन्द, शांति, मस्ती बढ़ती जाएगी और हमें अपने हर कार्य को करते हुए उस प्रभु का साथ, आशीर्वाद अनुभव होगा।

दोहरा :

नमस्कार गुरुदेव को कहता हूं चित्त लाए।
ध्रुव जी का प्रसंग जो निज मन कहा सुनाय।।

अपने पूज्नीय गुरुदेव जी के चरण कमलों में नमन करते हुए उनकी कृपा द्वारा अपनी मति अनुसार ध्रुव जी का प्रसंग प्रारंभ करने जा रहा हूँ।

गुरबाणी :

"ध्रुव को मिला हरि निसंग"

भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी 1

ध्रुव हंसदा घर आया करके प्यार पिता ने गोदी लिया।

बाहों पकड़ उठा लिया मन में गुस्सा सौतेली मां ने किया।।

हँसते-खेलते हुए ध्रुव प्यार से अपने पिता की गोद में आकर बैठ गए, ऐसा देखकर ध्रुव की सौतेली माँ ने क्रोध से उनको पिता की गोद से उठा दिया।

दोहरा :

संभुमान की कुल में, उत्तानपाद महाराज।

तेज जगत में छायों, सिर पर सोहे ताज।।

गृह उनके बिबरानियां, ऐक सुनीति पछान।

दूजी नाम सरूचि था, अदभुत रूप महान।।

सुरूचि के बेटा हुआ, उत्तम रखा नाम।

नृप खुशियां मनावंदा, बांट दिए बहु दाम।।

सुनीति के पेट से ध्रुव जी जन्में, सर्व गुणों की खान।

अद्भुत रूप महान था, होता नहीं ब्यान।।

संभुमान कुल में जन्मे उत्तानपाद राजा, एक नेक और तेजस्वी राजा थे। उनकी सुनीति और सुरुचि नामक दो रानियाँ थी। उनकी दूसरी रानी सुरुचि जो अत्यन्त सुन्दर थी, का उत्तम नाम का एक बेटा था। पुत्र प्राप्ति की खुशी में राजा ने बहुत दान-पुण्य किया। रानी सुनीति ने अति सुन्दर एवं गुणवान पुत्र ध्रुव को जन्म दिया।

छन्द :

पिछले जन्म की भक्ति करी जो ईश्वर शक्ति छाई हुई है।

नाम का बीज नहीं पलटे बात वेद में गाई हुई है।
सुन्दर रूप भी हुआ सुरूचि का, रम्भा के समान हुई।
सब अंगों से महा चंचल थी, उम्र भी नौजवान हुई।।
इसीलिए सुरूचि रानी से, राजा प्यार बहुत करता था।
वशीभूत उसके हुआ, जो कहे सो मन में धरता था।
सुनीति बेचारी बुढ़ी थी, सुधा स्वभाव व निरछल थी।
पर पुत्र ध्रुव जी जन्मे थे, इसमें यह भारी बल था।।
इक दिन ध्रुव जी खेलते हुए , राजा के नजदीक आए।
हंसते-हंसते बहुत प्यार से, नृप की गोद में समाए।।
राजा भी प्रसन्न हुए, ज्यादा खुशी मनाते हैं।
ध्रुव जी गोद में बैठ रहे हैं, बड़ी ही शोभा पाते हैं।।
सुरूचि ने आकर जब यह देखा, जल बर कर हो छार गई।
ऐसा दिल कट गया रानी का, जैसे साबुन को तार पड़ी।।
गोद में से खींच लिया है, मुख पर थप्पड़ मार दिए।
छुटड़ नार का बेटा होकर, नृप की गोद में बैठा आन।।
बैठने की जो इच्छा गोद में, उदर मेरे होता पखान।
जा तूं अभी भी समय है, तप करके उदर मेरे आओ।।
राज के लायक तब तुम होवो, जेकर मन में है चाव।
इतनी बात ध्रुव को कहकर, धक्का देकर भेज दिया।
रोता हुआ आया माता के पास, पांच बरस का जोर किया।।

वेदों में भी बखान किया गया है कि जन्मों-जन्मों में की गई ईश्वरीय भक्ति का बीज हर जन्म में आकर और अधिक प्रफुल्लित और पल्लवित होता है। यही ईश्वरीय भक्ति ध्रुव जी के रोम-रोम में बसी हुई थी।

रानी सुरूचि रम्भा अप्सरा के समान रूपवती और युवा थी। उसके अनूपम रूप पर मोहित हुआ राजा उत्तानपाद उसकी हर उचित, अनुचित बात मानता था।

दूसरी रानी सुनीति अधिक आयु की होने के साथ-साथ शीतल और शांत स्वभाव की थी लेकिन इन सब बातों से हटकर ध्रुव जैसा पुत्र उसका वास्तविक बल और सहारा था।

एक दिन खेलते हुए ध्रुव जी प्यार में आकर पिता की गोद में बैठ गए। पुत्र को गोद में बिठाकर राजा भी प्रसन्नतापूर्वक उन्हें प्यार करने लगे।

ध्रुव को पिता की गोद में शोभायमान होता देखकर, सौतेली माँ सुरूचि ईर्ष्या से जल-भुन गई। थप्पड़ मारकर उसे पिता की गोद से उठा दिया और साथ ही बोलने लगी कि तुम एक अधम नारी का बेटा होकर राजा की गोद में कैसे बैठ सकते हो।

आगे क्रोधवश बोली कि यदि तुम मेरी कोख से जन्मे होते, केवल तभी राजा की गोद में बैठने के अधिकारी होते। अगर अपनी यह इच्छा पूरी करना चाहते हो तो तपस्या करो।

पाँच बरस के ध्रुव को धक्का देकर, उस रोते हुए बालक को उसकी माता के पास भेज दिया।

भजन

टेक : फड़के जी बांहो ध्रुव नूं गोदियों उतारया
जोर नाल थप्पड़ इक मुख उत्ते मारयां

1. राजा दी गोद विच बैठना जो चाहवंदा
   जन्मदा तूं मेरे पेटों कोई ना हटावंदा
   सौतन के गृह में जाकर जन्म क्यों धारया

2. राजा दी गोद दा तूं नहीं हकदार है
पुत्र तूं उसदा है छुटन जो नार है
राज दा वी हिस्सा तैंनू मिले ना निकालया

3. सुत है मेरा उत्तम करना उसी ने राज है।
सब दा ओ ही होवे मालिक जितना समाज है
जन्म लै के सुनीति दे तूं की काम संवारयां

4. रोंदे कुरलादें ध्रुव जी माता पास आंवदे
बीतया जो हाल सारा मुख से सुनावदें
वचन सौतेली ने जो उसनूं उच्चारयां।

छन्द :

दुखी हुआ माता ने देखा, हे बचड़े क्यों बहाता नीर।
किस निर्दयी ने तुझको मारा, पीला रंग हुआ शरीर।।
ध्रुव जी ने जो हाल सी बीता, माता आगे खोल दिया।
पिता जी की गोद में बैठा मैं खेलता था अनमोल गया।
सुरूचि ने गोद में से खींचा थप्पड़ मुख पर मार दिया।
पेट मेरे से क्यों हुआ न पैदा मुख से यही उच्चार दिया।।
माता कहे सुन मेरे पुत्र, बात सच वो कहती है।
पिछले जन्म में तप बहुत थे कीते, कसर अभी कुछ रहती है।।
हे पुत्तर जे राज करन दी, तेरे मन में लोड़ पड़ी।

परमात्मा जो सबदा मालिक, चरणों में दिल जोड़ लई।
लोक परलोक सभी बन जाते, जो हरि नाम ध्याते हैं।
सुख आनन्द सभी मिल जाते, अंत को मुक्ति पाते हैं।
सुन उपदेश करां मैं तैंनू, दिल में बच्चा धार लवीं।
इस समुद्र जगत विचों तूं, डुबदी किश्ती तार लवीं।।

रोते हुए बालक को देखकर माँ ने घबराकर पूछा कि हे पुत्र! तुम्हारा शरीर पीला क्यों पड़ गया है, तुम्हें किसने निर्दयता से मारा है।

रोते हुए ध्रुव जी ने माँ को बताया कि किस तरह वह पिता की गोद में बैठे थे और सुरूचि माँ ने गोद से उतारकर थप्पड़ मार दिया और बताने लगे कि माँ ने बोला कि यदि वह पिता की गोद में बैठना चाहते हैं तो इसके लिए उन्हें उनकी कोख से जन्म लेना चाहिए था।

ऐसा सुनकर माँ सुनीति बोली, हे पुत्र! सुरूचि ठीक कहती है। यदि तेरे साथ ऐसा व्यवहार हुआ है तो निश्चित रूप से तेरे द्वारा किए गए पिछले जन्मों की तपस्या में कोई कमी अवश्य रह गई होगी।

हे पुत्र! यदि तेरे मन में राज करने की इच्छा है तो उसकी प्राप्ति के लिए तुम अपने मन को परमात्मा के चरणों से जोड़ लो। जो उस प्रभु के नाम का सहारा लेते हैं उन्हें लोक-परलोक के सब सुख मिल जाते हैं और उन्हें अंत में मुक्ति भी प्राप्त हो जाती है। यदि तुम मेरे बताए हुए मार्ग पर चलोगे तो निश्चय ही इस संसार रूपी समुद्र से तुम्हारी जीवन

रूपी नैय्या बड़ी आसानी से पार हो जाएगी।

"भुल गया है अॅज करतार तैंनू" बेंत :

1. मानुष जन्म है बड़ा दुर्लभ, बेटा ऐ मिले न बारम्बार तैंनू।

जीव जन्त सब रचे रॅब ने, है कीता सारयां दा सरदार तैंनू।।
रहन वास्ते अच्छे मकान बख्शे, खाने वास्ते मेवे हजार तैंनू।
हिकमत नाल तैंनू जिसने किया पैदा, भुल गया है अॅज करतार तैंनू।।

2. गंदे पानी दी बूंद से कीता पैदा, सत्ता दे के कीता तैयार तैंनू।
उक्त जुगत बख्शी नाले दित्ती ताकत, कीता बहुत जो समझदार तैंनू।।
मेरे पेट दे विच है कीता पालन, हिकमत नाल पहुंचाया आहार तैंनू।
बेटा उस भगवान नूं याद कर लै, भुल गया है अॅज करतार तैंनू।।

3. हिफाज़त करन खातिर मां बाप बख्शे, पालन-पोषण करदे नाल प्यार तैंनू।
दुध मेरे स्तनां में डाल करके, कैसा सोहणा दिया आहार तैंनू।।
झुलने के लिए झूले बड़े सुंदर, चखने के लिए मेवे हजार तैंनू।
बेटा उस भगवान नूं याद कर लै, भुल गया है अॅज करतार तैंनू।।

4. बिना मोल लिए बख्शे पवन पानी, पंखे बिजली दे अजब बहार तैंनू।
संतरे, अंगूर, बादाम, आडू, मेवे बख्शे है अम्ब, अनार तैंनू।।
रत्न जड़े मंदिर तेरे रहने को है, कैसे सुंदर दिए घर बार तैंनू।
बेटा उस भगवान नूं याद कर लै, भुल गया है अॅज करतार तैंनू।।

5. नेत्र देखने के लिए दो बख्शे, बिना नेत्रां सी अंधकार तैंनू।
आवाज सुनने को कान लगाए दिए, क्रिया करने को हाथ दरकार तैंनू।।
पांव चलने के लिए दो लगाए, बिना अश्व के किया सवार तैंनू।

बेटा उस भगवान नूं याद कर लै, भुल गया है अॅज करतार तैंनू।।

6. खोटी चीज से किया पवित्र जिसने, सारी योनियां दा किया सरदार तैंनू।
सभी तरह से खुशी हमेशा बख्शे, रहने दिया ना कभी लाचार तैंनू।।
इतनी परवशा वो दातार करदा, बिसर गए है सभी उपकार तैंनू।
बेटा उस भगवान नूं याद कर लै, भुल गया है अॅज करतार तैंनू।।

सारी सृष्टि का रचियता वह परमात्मा ही है परंतु मनुष्य उसकी सर्वोत्तम रचना है। मनुष्य जन्म बार-बार नहीं मिलता है। जिस परमात्मा की कृपा से हम अच्छे घर में रह रहे हैं। स्वादिष्ट और उत्तम भोजन खा रहे हैं। अनेकानेक सुख-सुविधाओं का भोग कर रहे हैं। यह विडम्बना ही है कि इन सुखों को देने वाले परमात्मा को ही हम भूल गए हैं।

सुनीति माँ ध्रुव को समझा रही है कि जिस परमात्मा ने माँ के पेट में भी उन्हें सुरक्षित रखा। हर प्रकार की सुख-सुविधा और भोजन का वहाँ भी प्रबन्ध किया। इस संसार में जन्म लेने के बाद भी उस प्रभु ने बल, बुद्धि, ज्ञान, विद्या देकर अनेकों सुख प्रदान किए। उस दयालु प्रभु को ही हम इस संसार के मोह-माया में फंसकर भूल गए हैं। उस परामात्मा की देन को देखकर तुम हमेशा उस प्रभु की याद में रहो।

संसार में तुम्हारी रक्षा करने के लिए और प्यार करने के लिए प्रभु ने तुम्हें माता-पिता दिए। उसी परमात्मा ने माँ के दूध के रूप में तुम्हें सारी सुख सुविधाएं और नियामतें दी। इतना सब देने वाले परमात्मा को तुम्हें हमेशा याद रखना है।

हमसे बिना कोई मोल लिए हमारी जीवन दायनी हवा और पानी जैसी अनमोल प्राकृतिक भेंट दी है। घर में मिलने वाली सारी सुविधाएं, पंखे-बिजली जैसी सुविधाएं भी उस परमात्मा की दया से मिली है। रहने के लिए विशाल रत्न जड़ित महल, खाने के लिए अति स्वादिष्ट एवं दुर्लभ फल और मेवे सभी उस ईश्वर की विशेष कृपादृष्टि की ओर ही संकेत करते हैं। इन सभी कृपाओं की ओर देखते हुए तुम उस परमपिता को बार-बार धन्यवाद करो।

उस परमात्मा ने तुम्हें बहुत सुन्दर और पूर्ण शरीर दिया है। दो आँखों से तुम सुंदर संसार

को देख सकते हो। सुनने के लिए कान व सभी कार्यों को करने के लिए हाथ दिए हैं। बिना किसी सहारे के चलने के लिए दो पैर दिए हैं। बेटा उस परमात्मा की दी हुई इन सभी शक्तियों को याद करते हुए उसे कभी मत भूलना।

हम तो इस योग्य भी नहीं है जितनी उस परमात्मा ने हम पर कृपाएँ की हैं। चौरासी लाख योनियों में सर्वोच्च मनुष्य जन्म देकर उस दयालु, कृपालु ने हम जैसे पापी आत्माओं को भी अपनी कृपा का पात्र बना दिया है। हमें कभी किसी प्रकार से भी सुख-सुविधा से वंचित नहीं रखा है। हमारी खुशहाली का एकमात्र केन्द्र वह परमपिता ही है। हमें सदा उसकी प्यार भरी याद में रहना है।

गुरबाणी

रागा गोबिन्द गुण खहूं सांस सांस जपि नीत।
कहा बिसासा देह का विलम्ब ना करयो मीत।।
ना बालक ना योवन ना वृद्ध कुछ बन्धु।
ओ बेरा ना बूझिए जउ आए परे यम फंद।।

(गुरबाणी पृ. 254)

गुरबाणी में नानक जी ने सभी को उपदेश दिया है कि हर श्वास से उस गोबिन्द मुरार के गुणगान करो। इस देह का कोई भरोसा नहीं है, नाम जपने में हर एक क्षण का हर श्वास का सदुपयोग करो। काल किसी भी समय, किसी भी आयु के मनुष्य को अपना ग्रास बना सकता है।

मं0 ।।9।।

जो उपजयो सो बिनसि है, परो आज को काल।
नानक हरि गुण गाई ले, छाड़ि सगल जंजाल।।52।।

(पृ. 1429)

जो इस संसार में आया है उसे इस शरीर को त्यागकर जाना ही है। इसलिए इस दुर्लभ मानव शरीर से परमात्मा का नाम लेते हुए अपना जन्म सफल बनाएं। इस संसार के मोह-माया में ना फँसे।

इक बात मेरी रखीं याद हरदम, कहंदी आप नूं नाल प्यार बेटा।
कूड़े सुखां दे नाल ना प्रीत करनी, सुख माया दे हैं दिन चार बेटा।।
हो एंकात भगवंत नूं याद कर ले, दिल विच ऐ लई तूं धार बेटा।
तनों मनों जे प्रभु नूं याद करिए, आपे आनके देवे दीदार बेटा।।

बेटा जी मैं आपको बड़े प्यार से समझाना चाहती हूँ कि सांसारिक सुख पानी के बुलबुले की भांति है। सदा-सदा साथ रहने वाला केवल परमात्मा का सच्चा नाम ही है। तन-मन से एकाग्रचित्त होकर, एकांत में रहकर उस प्रभु का अधिक से अधिक समय जाप करें तो प्रभु स्वयं आकर हमें दर्शन दे देते हैं।

भजन

जा के जंगल में तूं नाम ध्या लै बेटा
प्रभु मालक जो तेरा ध्यान लगा लै बेटा

जा के जंगल में तूं नाम ध्या लै बेटा
प्रभु मालक जो तेरा ध्यान लगा लै बेटा
जग कूड़ दा पसारा, इससे करी तूं किनारा
है नाम ओम प्यारा, दिल में बिठा लै बेटा
शत्रु है पांच भारे, दुख देन वाले सारे
कोई सूरमा ही मारे, इनको हटा लै बेटा

अभ्यास रोज करना, पापों से रहते डरना
संसार से है तरना, दुविधा मिटा लै बेटा
दासन का दास बनकर, अभिमान लेना सब हर
अपना जन्म सफल कर, बंधन कटा लै बेटा
उपदेश सुना जब ध्रुव ने, वन को हुए तैयार
कूड़ा सारा ठाट है, करिए चल विचार।

छन्द :

सब राज भाग और सुख सेजों को फौरन ही त्याग दिया।
सबसे चित्त उदास हो गया, तीव्र जो वैराग हुआ।
भोगों से दिल उठ गया है, जिउ हंस गंदगी नहीं चाहता।
बस इसी तरह से ध्रुव जी को कोई पदार्थ नहीं भाता।।
माता जी ने जब देखा कि पुत्तर अब निराश हुआ।
उपदेश मेरा दिल विच बस गया है, जगत से अब उदास हुआ।।
मस्तक में तिलक दिया जल का और जाते वक्त सुनाती है।
तप करके भगवंत रिझायो भक्ति-मुक्ति की दाती है।।
ऐसी पदवी पावीं बचड़े, किसी ने कभी ना पाई है।
खुश होकर पुत्तर तोर दिया और थापी कमर पर लगाई है।।
नमस्कार कर ध्रुव जी टुर पए, बाग में डेरा लगा लिया।।
नृप के बाग सपत ऋषि आए, ध्रुव जी को दर्शन दीना।।
हाथ जोड़कर प्रणाम करी और अपना हाल सुनाया है।

॥ हे संत जी मेहर करो दास शरण आपकी आया है। ॥

माँ की दी हुई शिक्षा से बालक ध्रुव का मन वैराग्य से भर उठा। सारे राजसी ठाट-बाट और सुखों से उदासीन हो गए।

जिस प्रकार हंस गंदगी छोड़कर केवल मोती ही चुगता है। इसी प्रकार ध्रुव जी को भी समस्त सांसारिक सुखों और पदार्थों से मोह नहीं रह गया। परमपिता के समक्ष यह सभी तुच्छ से प्रतीत होने लगे।

माता ने जब देखा कि उनके द्वारा दी गई शिक्षा से पुत्र का हृदय और मस्तिष्क पूर्ण रूप से प्रभावित हो गया है तो माता ने पुत्र के मस्तक पर जल का तिलक लगाया और प्रभु भक्ति व तपस्या को जाने के लिए प्रेरित किया। मनोयोग से भक्ति करना क्योंकि भक्ति ही मुक्ति पाने का एकमात्र सच्चा मार्ग है। ऐसा कहा और आशीर्वाद दिया कि बेटा अपनी भक्ति से तुम ऐसा ऊँचा स्थान प्राप्त करना जो आज तक किसी ने ना किया हो।

माँ को प्रणाम करके ध्रुव जी ने उनकी आज्ञा से राजा के बाग में समाधि लगा ली। राजा के बाग में सप्त नाम ऋषि ने आकर ध्रुव जी को दर्शन दिए। ऋषि जी को सादर नमन करने के पश्चात् ध्रुव जी ने उन्हें सारा वृतान्त सुनाया और उनके मार्ग दर्शन व आशीर्वाद के लिए प्रार्थना की।

भजन

टेक : मेरे सतुगुरू करो उपकार जरा,
बिगड़ी हालत को दीजो सुधार जरा

1. ब्रह्म से मैं जीव बनया, अपने अज्ञान से
असली घर को छोड़ बैठा, पड़ गया घमसान में,
किरपा करो तां होवें विचार जरा।

2. पतित पावन नाम सुनके, शरण मैं वी आ पड़ा
हाथ देकर राख लवो, समुद्र में जाता रूड़ा
डुबदी किश्ती नूं देना तार जरा

3. काम क्रोध और लोभ मोह अहंकार, दुश्मन हैं बड़े
पांच डाकू माल लुटन, कमर बांधे हैं खड़े
करां दूर देवो तलवार जरा

4. निथावें के थां तुम हो, चरण वासा दीजिए
कई जन्म है खत्म हुए, मुक्ति जल्दी दीजिए
दासन दास दी सुन लो पुकार जरा।

दोहरा :

संत खुश हो जांवदे लागे शिक्षा देन।
किरपालु स्वभाव जो, तिमर सभी हर लेन।।

संत सदैव स्वभाव से ही दयालु और कृपालु होते हैं। ध्रुव जी की विनती सुनकर प्रसन्न हो गए और उनके सब अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करने के लिए उचित मार्गदर्शन किया।

छन्द :

राग-द्वेष को त्यागो, पुत्र फिर ईश्वर का जाप करो।
फल-फूल खाए तपस्या करनी, प्रेम भक्ति कर आप तरो।।
इतना ही उपदेश दिया है, ऋषि चले गए हैं बन में।
ध्रुव जी उठकर चल पड़े अकेले, खौफ़ नहीं है कुछ मन में।।

थोड़ी बाट अभी चले थे, जब नारद ऋषि आए।
ध्रुव जी चरणी शीश निवाते, धन्य भाग दर्शन पाए।।
ऋषि ने पूछा हे पुत्तर तूं, कहां को चला जाता है।
हाल सुनाया ऋषि को, शुभ उपदेश दिया मेरी माता है।।

ऋषि जी बोले अपने मन से राग-द्वेष त्यागकर और कंदमूल-फल आदि को भोजन के रूप में ग्रहण करते हुए हृदय में सच्चा प्रेम और भक्ति को जागृत करो और उस प्रभु के नाम सिमरन द्वारा उस प्रभु को ही प्राप्त करो। ऐसा समझाकर संत जंगल को चले गए।

ऐसा मार्गदर्शन पाकर ध्रुव जी निडर होकर वन की ओर तपस्या के लिए चल पड़े। थोड़ी दूर चलने पर ही उन्हें नारद ऋषि ने दर्शन दिए। ऋषि जी को सादर प्रणाम करते हुए उनके पूछने पर ध्रुव जी ने उन्हें सारा हाल सुना दिया।

भजन

टेक : गर बे निशां को पाना, तूं वी बे निशान हो जा हस्ती मिटा के अपनी, ईश्वर समान हो जा

1. मिलना है जिससे तूंने, उसकी शक्ल बसा ले
   श्मशीर वो अगर है, तो तूं म्यान हो जा

2. टेढ़ी भवों में बसता है, लेकिन है तीर जैसा
   अगर तीर को है पाना, टेढ़ी कमान हो जा

3. सिर को झुका के नीचे, दांतों को जोड़ लेना
   पुतली पलट कर देखों, झटपट ज्ञान होगा।

4. सतगुरू के चरण , अहंकार गंवा के अपना
तब दास बाप तेरा, खुद मेहरबान होगा

दोहरा :

नारद जी कहने लगे मुड़ जाओ अपर धाम।
तप करना मुश्किल बहुत धूप सीत सहि धाम।।

नारद जी ने तपस्या को बहुत कठिन बताते हुए ध्रुव जी को अपने घर वापिस लौट जाने के लिए कहा। समझाया कि तप करने के लिए अति असाधारण सहनशक्ति चाहिए।

छन्द :

ध्रुव जी कहे पीछे ना मुड़ना, मेरा तो काई घर भी नहीं।
जंगल में निवास करांगा, किसी का मुझको डर भी नहीं।।
पक्का निश्चय देख लिया, ऋषि जी बहुत प्रसन्न हुए।
ओम नमो भगवते वासुदेवाय, ये मंत्र जप तूं धन्य होए।।

ध्रुव जी ने बहुत बेबसी से उत्तर दिया कि मेरा कोई घर नहीं है। मैं तो अब माता की आज्ञानुसार जंगल में जाकर बिना किसी भय के तप करूँगा। नारद जी ने जब ध्रुव जी का दृढ़ और अडिग निश्चय और भाव देखा तो अति प्रसन्न होकर उन्होंने ध्रुव जी को "ॐ नमो भगवते वासुदेवाय" मंत्र जाप करने को कहा।

छन्द :

हरदम ऐसी मूरत का, तूं दिल अपने ध्यान धरी,
शंख चक्र गदा पद्म विराजे, गॅल माला श्याम है रूप हरि।

जमुना किनारे बहुत नजारे, सुंदर जो इक मधुबन है,
उधर जाकर करो तपस्या, शुद्ध हो जाए तेरा मन है।
इतना कहकर नारद मुनि, अब नृप के धाम भी आते हैं,
हे राजन् तूं करी अनीति, मुख से ऋषि फरमाते हैं।
पांच बरस का बचड़ा तेरा, बनों को तुमने भेज दिया,
कोई इन्साफ नहीं तुमने किया, पांच वर्ष का जोर किया।
धर्म नीति के वाक् कहे, फिर नारद उठ तैयार हुए,
सुनकर हाल पुत्तर का सारा, नृप मन में लाचार हुए।
अपनी मंत्री साथ लिया और ध्रुव जी पास है चल आए,
देख पिता प्रणाम करी है, राजा ने गॅल से लाए।
हे पुत्तर चल गृह अपने नूं लिख देता हूं आधा राज,
बाद जिन्दगी मेरी तो, सिर पर होवे तेरे ताज।
यह बात सुनकर ध्रुव जी अपने, मन के बीच विचार करन,
आधा राज अभी है मिलता, जपा नाम नहीं संकट हरन।
सच्चे दिल से ध्यान ओम का, जंगल में लगावंगा,
क्या जाने कैसी वस्तु, मैं वासुदेव से पाऊंगा।
राजा को जवाब दे दिया, मैं नहीं राज को चाहता हूं,
जाकर राज करो महाराजा, आप को शीश झुकाता हूं।
नृप मन में उदास हो गया, निज महलों को आया है,
सुरूचि को सारा हाल सुनावे, बुरा तूने कहर कमाया है।

हाल सुना जब ध्रुव जी का रानी रूदन को करती है।
अपयश मेरा हुआ जगत में, भावी नहीं टलती है।
राम जी को बनवास हुआ जब, कैकई की गई मति मारी,
नृप वी स्वर्ग सिधार गए जो, कहते लोग है हत्यारी।
कालिख को जो लगा टीका, कभी ना धोया जाएगा,
तर्क किया और थप्पड़ मारा, वक्त हाथ नहीं आएगा।
ऐ भावी बलवान बड़ी तूं, पेश ना कोई जाती है,
जिस ऊपर तूं गालब होवे, सारी अक्ल डुबाती है।
सुनीति रानी सुन खुश हो गई, पुत्तर भजन में लग गया,
देई पीठ संसार तरफ को, भोग वासना तॅज गया।
जमुना में स्नान किया और पहले दिन लिया आचमन है।
मुख से यही प्रण कीना, उपवास व्रत को राख लिया है,
एक माह पूरा हुआ और दिन तीजे, बंद्री फल चाख लिया।
दूजे महीने सूखे पत्तर, छेवें दिन को खाते थे,
तीजे महीने नौ दिन बाद, आचमन ही करते थे।
चौथे माह को बारहवें दिन को, पवन का भक्षण करते थे,
पांचवे माह भवन भी छोड़ा, ध्यान प्रभु का करते थे।
एक अंगूठे भार खड़े हो, करी तपस्या भारी है,
अडोल समाधि जब लगी तो, डोली पृथ्वी सारी है।
जैसे हाथी नौका पर, जब दाहिनें पांव को धरता है,

एक तरफ को नौका झुकती, ज्यादा बोझल करता है।
ऐसा उग्र तप इन्द्र ने देखा, मन अपने भय मानता है,
इन्द्र पुरी छीन लेगा ये, यदि भक्ति में प्रधान हुआ।
मायावी नाम के दैत्य को भेजा, जाकर तप को भंग करो,
जिस तरह भी होवे ध्रुव जी को, ज्यादा ही तुम तंग करो।
दैत्य पहले ध्रुव जी की माता का भेष बनाया है,
हे पुत्तर मैं फिरां खोजदी, बड़ी मुश्किल हॅथ आया है।
उठ चल घर नूं जल्दी चलिए, तूं नेत्र क्यों नहीं खोलदा है,
वन में सिंघ व्याग्र भारी, राक्षस भी एक डोलता है।

प्रभु की ऐसी मोहिनी मूरत जिनके हाथ में शंख, चक्र, गदा और पदम (कमल) है और गले में माला धारण किए हुए हैं। ऐसे श्याम सलोने हरि का हर क्षण ध्यान करो।

नारद जी ने कहा कि यमुना किनारे जो सुंदर मधुबन है उधर जाकर शुद्ध मन से अपना तप प्रारंभ करो।

ध्रुव जी को तप करने के लिए भेजकर, नारद मुनि राजा उत्तानपाद के महल में गए। नारद जी ने राजा से कहा कि तुमने पाँच वर्ष के छोटे से बालक को वन में भेजकर बहुत ही अनीतिपूर्वक, अन्यायपूर्वक कार्य किया है। नारद जी द्वारा धर्म और नीति की बात समझाने पर राजा अपने मंत्री सहित ध्रुव जी को वापिस लाने के लिए वन को चले गए।

पिता को देखकर ध्रुव जी ने उन्हें सादर प्रणाम किया तो पिता ने पुत्र को प्रेम से गले लगाकर घर वापिस चलने का आग्रह किया। साथ ही उन्हें आधा राज्य देने का आश्वासन दिया और कहा कि मेरी मृत्यु के पश्चात् तुम ही राजा घोषित किए जाओगे।

पिता का यह आश्वासन सुनकर ध्रुव जी मन में विचार करने लगे कि अभी तो मैंने तप करने का मात्र निश्चय ही किया है तो मुझे आधा राज्य तुरंत ही मिल गया है। यदि मैं

सच्चे मन से निरंतर नारद जी द्वारा दिया गया मंत्र जाप करूँगा तो ना जाने वह वासुदेव मुझे क्या-क्या दे देंगे।

ध्रुव जी ने विनयपूर्वक अपने पिता को राज्य लेने में किसी प्रकार की भी कोई रुचि नहीं बताई। बोले कि मैं कोई घर वापिस नहीं जाना चाहता कृप्या आप ही जाकर अपना राजपाट संभालें।

निराश होकर राजा अपने महल वापिस आ गए और रानी सुरूचि को इन सब का दोषी बताते हुए उसे कोसने लगे।

ध्रुव जी का ऐसा हाल सुनकर रानी रोते-रोते स्वयं को इस सब अनहोनी के लिए दोषी बताते हुए पश्चाताप करने लगी। होनी के कारण ही राम जी को बनवास हुआ और उनके वियोग में महाराज दशरथ स्वर्ग सिधार गए किंतु रानी कैकई ही आज तक इस सब के लिए दोषी ठहराई जाती हैं।

क्रोध और ईर्ष्यावश होकर ध्रुव को मैंने जो भला बुरा कहा और थप्पड़ मारा - यह कलंक अब कभी नहीं मिट पाएगा।

ये होनी बहुत बलवान है। यह हर हाल में होकर ही रहती है। जिसको भी अपयश दिलाना हो उसकी सब कुश्लता और बुद्धि हर लेती है।

रानी सुनीति अपने पुत्र का हाल सुनकर अति प्रसन्न हुई कि उनका बेटा ध्रुव संसार से विमुख होकर भक्ति के मार्ग पर अग्रसर हो गया है।

ध्रुव जी ने अपने घोर तप व्रत का संकल्प लेते हुए यमुना के जल का आचमन किया और उनका तप और कठिन से कठिनतर होता चला गया।

उपवास के एक महीने से तीन दिन अधिक (33 दिन) होने पर एक बंद्री फल ही खाया।

दूसरे महीने से छः दिन ऊपर (33+33=66 दिन) केवल सूखे पत्ते ही खाए।

तीसरे महीने से 9 दिन अधिक (33+33+33=99 दिन) होने पर केवल जल का आचमन ही किया।

चौथे महीने से 12 दिन अधिक (33+33+33+33=132 दिन) होने पर केवल वायु पर ही

निर्भर रहे।

तत्पश्चात् पाँचवे महीने में वह स्थान भी त्याग दिया और केवल पैर के एक अँगूठे पर खड़े रहकर घोर तप करने लगे।

ऐसे कठोर तप के प्रभाव से लगी स्थिर समाधि से सारी पृथ्वी ही डगमगा उठी।

जिस प्रकार यदि हाथी किसी नाव पर चढ़ने के लिए उस पर अपना केवल एक दाहिना पैर ही रखता है तो नौका का संतुलन स्वतः ही बिगड़ जाता है और नाव का दूसरा किनारा एकदम से ऊपर उठा जाता है, ऐसी ही स्थिति मानो पृथ्वी की हो गई।

ऐसा कठोर तप और भक्ति देखकर इन्द्र को भी अपनी इन्द्रपुरी छिन जाने का भय सताने लगा। ध्रुव जी से भयभीत होने के कारण देवराज इन्द्र ने मायावी नाम राक्षस को ध्रुव की अडिग समाधि को किसी भी प्रकार से भंग करने के लिए भेजा।

मायावी राक्षस ध्रुव की माता का भेष बनाकर ध्रुव जी के पास आया और जंगली जानवरों और राक्षस का भय दिखाकर उन्हें वापिस घर चलने के लिए बड़े प्रेमपूर्वक आग्रह किया।

दोहरा :

तूं मेरा सुत एक है वन में लेगा कोई खाए।

जीवांगी किस आसरे होवे कौन सहाय।

तूं मेरा इकलौता पुत्र है और मेरे जीवन का एकमात्र सहारा है। यदि इस घनघोर जंगल में किसी जानवर या राक्षस ने हानि पहुँचाई तो मैं किस प्रकार से जी पाऊँगी।

छन्द :

बहुतेरा बुलाए रही पर, भगत ने नेत्र नहीं खोले।

दैत्य सारा जोर लगाया, ध्रुव जी रंग भी नहीं डोले।।

फिर अपना असली रूप बना, हाथ खड्ग ले मारन गया।
आगे देखे हरि खड़े हैं, शंख चक्र गदा धारण किया।।
राक्षस अपने प्राण बचा के, इंन्द्र को जा भाख दिया।
राज तुम्हारा नहीं बचता, ये सत्य वचन मैंने बता दिया।।

राक्षस द्वारा बार-बार माता के रूप में बुलाने पर भी ध्रुव जी टस से मस नहीं हुए और ना ही उन्होंने नेत्र खोले।

इतना प्रयास करने पर भी जब मायावी राक्षस असफल रहा तो वह हाथ में खड्ग लेकर अपने असली रूप में आ गया और ध्रुव जी को मारने के लिए अग्रसर हुआ। जैसे ही वह मारने के लिए आगे बढ़ा तो उसने वहाँ पर स्वयं श्री हरि को शंख, चक्र, गदा और पदम धारण किए विद्यमान पाया। भयभीत होकर राक्षस इन्द्र के पास लौट आया और उसने कहा कि ध्रुव का कठोर तप देखकर मैं आश्वस्त हूँ कि अब तुम्हारा राजपाट बचना मुश्किल है।

दोहरा :

इंद्र चिन्तावान हो लिए देवते साथ।
खीर समुद्र में गया जाए निवाया माथ।।

इन्द्र देवताओं को साथ में लेकर क्षीर सागर में स्थित भगवान श्री हरि की शरण में जाकर उन्हें नमन करने लगा।

छन्द :

प्रणाम करी सब देवता ने, वरूण कुबेर जो मिल आए।
उस्तत करन लगे हरि की, इंद्र मन में ध्यान लाए।।

वरुण, कुबेर सहित सभी देवता, इन्द्र के साथ मिलकर श्री हरि को प्रणाम करके उनकी स्तुति गान करने लगे।

भजन

टेक : भगवन तूं है दयाल, दुख दूर कर हमारा
तेरी शरण में आया, अब दीजिए सहारा

1. इक भगत हुआ तेरा, दुशमन जो हुआ मेरा
   दुखड़े ने आन घेरा, मैं तो जोर लाए हारा
2. ध्रुव जी ने तप है कीना, तेरा नाम मुख से लीना
   मुश्किल है मेरा जीना, होवे राज से किनारा
3. राक्षस मैं भेजा भारी, हिम्मत लगाई सारी
   आंखे ना उसने उधारी, हुआ ध्यान मग्न भारा
4. तप से उसे हटावो, शीघ्र ही आप जावो
   मेरे राज को बचावो, सुनो दास की पुकारा

दोहरा :

प्रभु आगे बिनती करे होवो आप सहाय
किरपा हो जो आपकी राज मेरा बच जाए।

बड़े दीनहीन भाव से श्री हरि से अपने राजपाट को बचाने के लिए देवताओं ने सहायता मांगी।

छन्द :

अंतर्यामी सुनी बेनती, ऐ इन्द्र क्यों डरता है।
ध्रुव जी तेरा राज ना चाहता, ध्यान मेरा ही धरता है।।
इंद्रपुरी को तुच्छ वो समझे, तूं क्यों दहशत खाता है।
ध्रुव जी को वैराग हुआ है, राज ना तुम्हारा चाहता है।।
इंद्रपुरी तूं अच्छे समझे, भगत मेरे करते हैं गलान।
इस सुख की तो बात क्या करनी, वो तो चाहते नहीं कल्याण।।
मेरे भगत से तूं डरता है, सिंघ को देख हुआ भय मान।।
हे इंद्र तूं सोच तो मन में, सिंघ ने असती क्या करनी।
यदि उसको जरूरत होवे, ताजी मार उसने धरनी।।
अनन्य भगत जो मेरे हैं, राज ना तुम्हारा चाहते हैं।
निर्भय होकर राज करो, हम अभी भगत पास जाते हैं।

वह अंतर्यामी श्री हरि इन्द्र की मनःस्थिति समझकर उसे समझाने लगे कि इन्द्र तुम्हें भयभीत होने की कोई आवश्यकता नहीं है। ध्रुव मेरा सच्चा भक्त है। उसे मेरे नाम स्मरण, भक्ति और दर्शन के अतिरिक्त अन्य कोई चाह नहीं है। उसके लिए राजपाट व अन्य सभी सुख गौण है। इन्द्रपुरी छिन जाने का भय तुम देवताओं को ही है। मेरे उच्च कोटि के ध्रुव जैसे सच्चे भक्त केवल मुझे ही चाहते हैं। वह तो अपनी मुक्ति और कल्याण की भी कामना नहीं करते। उनका जीवन ध्येय केवल मेरा नाम स्मरण और सच्ची भक्ति ही है।

तुम्हारी दशा ठीक वैसी है जिस प्रकार स्वान (कुत्ता) सूखी हड्डी को भी ना खा ले। वही दशा मेरे सिंह के समान भक्त ध्रुव के अटल और कठोर तप को देखकर तुम्हारी हो रही है कि तुम्हारी इन्द्रपुरी ना छिन जाए। श्री हरि बोले, इसलिए तुम निर्भय होकर अपने

इन्द्रलोक का राज्य करो और मैं अपने प्रिय भक्त ध्रुव के पास जाता हूँ।

दोहरा :

पास ध्रुव के आ खड़े जगाने लगे भगवान।
कुछ शरीर की सुध ना ऐसा लगा ध्यान।।

अपने शरीर की सुधबुध खोकर प्रभु भक्ति में पूर्ण रूप से तल्लीन भक्त ध्रुव के पास स्वयं भगवान आकर खड़े हो गए।

छन्द :

बाहरूनी सभी ज्ञान भूल गया, नेत्र ना ही खोलता है।
अंदरूनी है बिरती हुई, ध्यान में जरा ना डोलता है।।
जिस स्वरूप का ध्यान धरा था, हरि ने वहीं निकाल लिया।
ध्रुव जी ने तभी नेत्र खोले, दर्शन तो तत्काल किया।।
जिस स्वरूप का ध्यान धरे, वो ही प्रगट सामने आन खड़े।
शंख, चक्र, गदा, पदम विराजे, नेत्र जिनके सुंदर बड़े।।
पतित पावन के चरणों ऊपर, अपना शीश टिकाया है।
मस्तक चूमा आप हरि ने, अपने कण्ठ लगाया है।

ध्रुव जी अपने अंतर्मन में प्रभु भक्ति और ध्यान में इतने मग्न हो गए कि उन्हें बाहरी दुनिया की कोई सुधबुध नहीं है। इसलिए वह नेत्र ही नहीं खोलते।

अपने रोम-रोम में ध्रुव जी ने भगवान के जिस रूप को बसाया हुआ था। निरंतर जिसके ध्यान और आराधना में लीन थे जब प्रभु श्री हरि ने वही रूप धारण किया तो ध्रुव जी अपने नेत्र खोले और उसी सुंदर रूप के दर्शन पाकर धन्य हो गए। अपने समक्ष शंख,

चक्र, गदा, पदम धारण किए श्री हरि के उस अनुपम और अद्वितीय स्वरूप को अपने समक्ष पाकर ध्रुव जी गद्‌गद् होकर उनके चरणों में नतमस्तक हो गए। प्रभु ने नतमस्तक हुए ध्रुव जी का उठाकर प्यार से उनका मस्तक चूम लिया और उन्हें गले से लगा लिया।

दोहरा :

हे प्रभु आपकी स्तुति कैसे कहूं सुनाय।
शेषनाग हजार मुख नित नूतन यश गाए।।

ध्रुव जी निहाल होकर प्रभु वन्दना करते हुए कह रहे हैं कि मैं आपके गुणगान करने में सर्वथा असमर्थ हूँ। शेषनाग अपने हजार मुँह से निशदिन आपका यशोगान करते हैं किंतु वह भी आपकी स्तुतिगान करने में सक्षम नहीं हैं। आप अनन्त हैं, असीम हैं, विराट हैं, विशाल हैं, अपरम्पार हैं। तीनों लोक मिलकर भी आपका यशोगान नहीं कर सकते हैं।

छन्द :

हे महाराज मैं मूढ़ बुद्धि हूं बालक और बड़ा ही अन्जान।
नेति-नेति कर वेद पुकारे कैसे आपका करूं ब्यान।।
महाराज ने शंख अपना भगत को जभी छुआया है।
ऐसी उज्ज्वल बुद्धि हो गई अनुभव से यश गाया है।।

ध्रुव जी कहने लगे कि मैं अल्पमति मूर्ख आपकी महिमा का बखान कैसे करूँ। वेद भी आपको नेति-नेति कहकर पुकारते हैं। तो मैं तो बहुत ही तुच्छ प्राणी हूँ।

तब भगवान ने दया करके ध्रुव जी को अपने शंख का स्पर्श करवाया। वह दिव्य स्पर्श पाते ही ध्रुव जी की बुद्धि उज्जवल हो गई और वह उस दिव्य प्रभु के गुणगान करने लगे।

चौपाई :

जै हो जै हो किशन मुरारी।। भगतन के हो तुम हितकारी।।
आप का अन्त ना कोई पावै।। शेषनाग नित नया यश गावे।।
अंगोचर अलख तुम करतार।। अदृष्ट निखचन है करतार।।
जोगी जन नित ध्यान लगांउदे।। विधि हरि नारद है यश गांवदे।।
सब सृष्टि के हो तुम पालक।। चौदह तबक के हो तुम मालिक।।
जो जन आपका ध्यान लगाते।। केवल मुक्ति को हैं पाते।।
सब से दूर सबन से नेड़े।। अंत ना कोई पावत तेरा।।
दीन दयाल ऐ कृपालु।। भक्तन के हो सदा रक्षपाल।।
जन को भीड़ पड़े जब आई।। फिर होते है आप सहाइ।।
गज को आपने आन छुड़ाया।। तेंदूए पासों तूं ही बचाया।।
हिरण्याक्ष ने भगत को ताड़ा।। प्रगट हुए खंभ को फाड़ा।।
प्रहलाद भक्त की रक्षा कीनी।। मुक्ति भक्ति दोनों ही दीनी।।
द्रोपदा को जब बनी लाचारी।। रखी लज्जा तूं ही गिरधारी।।
नामदेव को नृप दुख दीना।। कोठे भीतर बन्द करीना।।
मोई हुई धेन जिवाई।। भगत को वहां से लिया छुड़ाई।।
कबीर भगत के भए रखवारे।। निंदका के मुख कीने कारे।।
संत दिवस लंगर वरताया।। सेठ का रूप तू ही बन आया।।
सदना भागत दीवाल में जड़या।। नृप ने उसको जदी पकड़ाया।।
तब ही आप भए सहाई।। क्षण में में भीत को दिया गिराई।।
भीड़ बने भगतों को छुड़ाते।। प्रगट आप तथी हो जाते।।

हे भक्तों के हितकारी भगवान! आपकी सदा-सदा ही जय हो। आप अनन्त हैं, शेषनाग भी आपका यशोगान में असमर्थ हैं। आप अगम अगोचर हैं। अदृश्य होने पर भी आप भक्तों के हृदय में सदा निवास करते हैं।

ऋषि-मुनि सदा आपका ध्यान लगाते हैं और नारद सहित सभी देवी-देवता आपकी स्तुति गाते हैं।

आप इस सम्पूर्ण सृष्टि के पालनहार हो व चौदह भुवनों के स्वामी हैं। जो भी आपका ध्यान सच्चे मन से लगाते हैं, वे निश्चित रूप से मुक्ति को प्राप्त करते हैं।

आप दूर से दूर और निकट से निकट हो, हृदय में विराजित हो। आपकी लीलाएं और कृपाएं अनन्त हैं।

आप दीनन हितकारी हैं, करूणानिधि हैं, बख्शनहार हैं। अपने भक्तों की पुकार सुनकर हर स्थिति में, हर प्रकार से आप उनकी रक्षा करते हैं।

जब भी आपके भक्त पर कोई भी संकट आन पड़ता है तो उसकी पुकार सुनकर आप तुरंत उसकी सहायता के लिए आ जाते हैं। तेंदुए के चंगुल में फंसे गज की आर्त्त पुकार सुनकर आप स्वयं उसकी रक्षा के लिए तुरंत पहुँच गए।

जब हरणाख्स राक्षस ने भक्त प्रहलाद को प्रताड़ित किया तो उसकी रक्षा के लिए स्तम्भ को फाड़कर आप स्वयं वहीं प्रकट हो गए।

प्रहलाद, अपने प्रिय भक्त को बचाकर उसे अपनी भक्ति और मुक्ति दोनों ही प्रदान की।

द्रोपदी जब हर प्रकार से बेबस और लाचार हो गई तो उसकी करूण पुकार सुनकर, भरी सभा में उसका चीर बढ़ाकर आपने उसकी लाज बचाई।

राजा द्वारा कैद किए गए अपने भक्त नामदेव को बचाने के लिए आपने मृत गाय को पुर्नजिवित कर दिया और उसकी हर प्रकार से रक्षा की।

अपने भक्त कबीर की रक्षा के लिए आप स्वयं रखवाले बने और उनके निंदकों को मुँह की खानी पड़ी।

एक दिन संत द्वारा चलाए लंगर की पूर्ति के लिए सेठ रूप बनकर आप स्वयं वहाँ पर आ

गए।

दीवार पर चिनवाने के समय सदना भगत की पुकार सुनकर आप उसको भयहीन करने और प्राण रक्षा करने के लिए स्वयं आ गए।

जब कभी भी आपके भक्तों पर कोई भी किसी प्रकार का संकट आन पड़ता है तो हे करूणानिधान, हे दुयालु श्री हरि आप उनकी रक्षा हेतु और उनका संकट दूर करने के लिए तत्काल ही दौड़े आते हैं।

दोहरा :

इहों दास दी बेनती, करो आप मंजूर।
जल्दी दर्शन भगतों को, देना आप जरूर।।

यह विनती अपने इस दास की अवश्य स्वीकार करें कि आप अपने भक्तों को सदैव अपने पवित्र पावन दर्शनों द्वारा कृतार्थ करते रहेंगे ।

भजन :

टेक : मेरे भगवान जी दरश दिखाया करो,
अपने भगतों को ना तरसाया करो

1. भगतां नूं है ताण तेरा, आसरा ना होर है
   निभावंया के थांव तुम हो, आप ऊपर जोर है
   बाहों पकड़ के गले से लगाया करो

2. आपकी महिमा हे भगवान, कुछ कही ना जावे है
   शेषनाग हजार मुख से, अन्त ना ही पावे है

मेरे हृदय में आप समाया करो।

3. जो शरण आवे आपकी, भव से वो ही तर जावंदा
जाता नहीं फिर नर्क को, मुक्ति का रस्ता पावंदा
निर्बल नूं वी पार लंघाया करो

4. दरबार आली आपका, सब विश्व का आधार है
महिमा ना जान सके कोई, पावे ना पारावार है
दासन दासा नूं मुक्त कराया करो।

दोहरा :

सुनके उस्तुत वासुदेव होए बहु प्रसन्न।
मांगो वर जो इच्छा जन्म सफल है धन।।
ध्रुव जी तब कहते भए क्या मांगू भगवान।
किरपा करके बख्श दयो आठों याम तौहे ध्यान।।

ध्रुव जी द्वारा की गई वन्दना सुनकर भगवान वासुदेव अति प्रसन्न हुए और बोले ध्रुव तुम्हारा जीवन सफल और धन्य हो गया है, जो इच्छा हो वर माँग लो।

ध्रुव जी बोले, हे भगवान! अब कुछ भी मांगने की इच्छा नहीं है बस ऐसी कृपा कीजिए कि मैं आठों पहर आपके ध्यान में मग्न रहूँ।

गुरबाणी :

झूठा मांगन जे कोई मांगे।। तिसको मरते घड़ी ना लागै।।

(पृ. 130)

आसा कबीर जीउ पृ. 48

लंका सा कोट समुद्र सी खाई।। तिह रावण घर खबर ना पाई।।

गुरबाणी में कबीर जी के अनुसार झूठी सांसारिक वस्तुओं का माँगना भी क्या माँगना हुआ। वे तो क्षणभंगुर हैं, नष्ट होने वाली हैं। जिस प्रकार रावण द्वारा माँगी गई सुंदर नगरी लंका जो कि चारों ओर से समुद्र द्वारा सुरक्षित थी वह भी एक दिन विनाश को प्राप्त हो गई।

छन्द :

चरण कमल में रहूं जो लिपटा, करो किरपा अंतर्यामी जी।
ऐसी पदवी बख्श दो, रहूं दर्शन करता स्वामी जी।।
तथास्तु भगवान जी कहते, सबका तूं सरताज हुआ।
देवता भी परमात्मा करेंगे, अटल पदवी का राज हुआ।।
तेरा पिता जरूरी तुझ को, लेने यहां पर आएगा।
छवि हजार बरस कर राज को, बहुत अटल पद पाएगा।।
नृप के साथ जरूर जाना, इस पर हठ नहीं करना।
भाई शिकार जाएगा खेलने, जॅद्द के हाथ से उस मरना।।
साथ जॅद्द के युद्ध करो, तुम भाई का बदला ले लेना।
आए कुबेर मिलेगा तुमको, भूल माफ फिर कर देना।।
इतनी वार्ता कह करके, भगवान जी अंतर ध्यान हुए।
ध्रुव को मिला वासुदेव नृप, पास किसी के ब्यान हुए।।
साथी मंत्री ले लीना, ध्रुव को जाकर मिलने लगे।
गले लगाया बड़ी खुशी से, कंवल फूल जो खिल गया है।।

रथ में बिठाकर लाए भगत को, नगर सारे हुआ जै जैकार।
सबसे पहले सुरूचि आगे, शीश झुकाया बारम्बार।।
रानी शर्म की मारी हुई, सम्मुख नेत्र नहीं करती।
हाथ जोड़कर ध्रुव जी बोले, हे माता जी क्यों डरती।।
यह तेरी सब किरपा है जो, वासुदेव को पाया है।
तेरे जरिए माता साहिब, नाम प्रभु का ध्याया है।
सुनके वाक् हलीमी भीने, कण्ठ के साथ लगा लिया।
हे पुत्तर चिरन्जीवी होवे, आशीर्वाद मुख से दीना।।
पुनः ध्रुव जी निज माता को, प्रेम से शीश झुकाया है।
अत्यंत खुश होकर मस्तक चुमा, प्यार से गले लगाया है।।
हे सुत तुम्हारा जन्म सफल भया, पूरी हो गई मेरी आस।
जननी जन्में तो भगत जन्में , गुरबाणी लिखा खास।।

हे अंतर्यामी भगवन मुझ पर इतनी दया कीजिए कि सदा आपके सुंदर चरण कमलों का ही ध्यान करूं। मेरा हृदय सदा आपके सुंदर पावन चरण कमलों का दर्शन करता रहे।

भगवान ने उसकी ऐसी प्रार्थना सुनकर 'तथास्तु' कहा और साथ में कहा की तुम सबके प्रिय बनकर ऐसी अटल पदवी को प्राप्त करोगे कि मनुष्य और देवी-देवता सभी तुम्हारा आदर और सम्मान करेंगे।

भगवान साथ ही समझा रहे हैं कि जब तुम्हारे पिता तुम्हें लेने आए तो जिद् न करके उनके साथ अवश्य वापिस चले जाना। हजार वर्ष तक राज्य करने के पश्चात् तुम ऊँची पदवी तक प्राप्त कर लोगे।

तुम्हारा भाई उत्तम शिकार खेलते हुए मारा जाएगा। तुम उसके शत्रु को मारकर अपने भाई की मृत्यु का बदला अवश्य ले लेना। इसके अतिरिक्त जब कुबेर तुमसे अपनी भूल

के लिए क्षमा याचना के लिए आएगा तो तुम उसे भी अवश्य क्षमा कर देना।

ध्रुव के पिता को जब समाचार मिला कि भगवान गोबिन्द ने उनके पुत्र ध्रुव को अपने पवित्र दर्शनों के द्वारा कृतार्थ किया है। तो पिता मंत्री सहित खुशी-खुशी अपने पुत्र को वापिस ले जाने के लिए आए।

पिता ने पुत्र की इस महानतम उपलब्धि को बहुत सराहा और प्रसन्नतापूर्वक अपने रथ पर बिठाकर उन्हें आदर सहित नगर में वापिस ले आए। नगर निवासी ध्रुव जी की जय-जयकार करने लगे।

ध्रुव जी ने सबसे पहले रानी सुरूचि को प्रणाम किया। रानी अपनी करनी के कारण बहुत शर्मिन्दा थी और ध्रुव जी से आँखें भी नहीं मिला पा रही थी।

ध्रुव जी हाथ जोड़कर माँ सुरूचि से बोले कि माँ मैं केवल आपकी कृपा के कारण ही भगवान वासुदेव के दर्शन पा सका हूँ इसलिए आप व्यर्थ ही शर्मिन्दा न हो।

आप ही मेरे द्वारा किए जाने वाले प्रभु स्मरण और ध्यान का मूल कारण और माध्यम हैं। मैं तो आपका ऋणी हूँ। ऐसा सुनकर माँ सुरूचि ने गद्गद् होकर ध्रुव जी को चिरंजीवी होने का आशीर्वाद दिया और अपने गले से लगा लिया।

तत्पश्चात् ध्रुव जी ने अपनी माँ सुनीति को प्रेमपूर्वक शीश झुकाकर प्रणाम किया। माँ सुनीति ने भी ध्रुव का मस्तक चूमकर गले से लगा लिया। तत्पश्चात् माँ ने कहा तुम्हारा जन्म सफल हुआ और साथ ही मेरी प्रबल इच्छा भी पूरी हो गई। माँ यदि पुत्र को जन्म दे तो वह पुत्र ईश्वर का सच्चा और उच्च कोटि का भक्त होना चाहिए। गुरबाणी में भी कहा गया है कि ऐसी माँ और ऐसे पुत्र का जन्म सार्थक हो जाता है।

गुरबाणी

जननी जने ता भगत जन के दाता के सुर।

नहीं ता जनी बांझ रहे काहे गवावे नूर।।

गुरबाणी में भी लिखा है कि माँ यदि जन्म दे तो भक्त संतान को ही जने। ऐसी संतान जो नित्य प्रति उस प्रभु के गुणगान करती रहे। यदि माँ अपनी संतान को ऐसे संस्कार ना दे

पाए तो उसका नि:संतान रहना अधिक बेहतर है।

धन्य है वह माँ और धन्य है वह पिता जिन्होंने ध्रुव जी को जन्म दिया। साथ ही वह वंदनीय भी है।

(श्री मुखवाक 32-12)

धन जननी जिन जाया धन पिता प्रधान।।

छन्द :

सारा नगर जो मिलने आया, यथा शक्ति पूजा कीनी।
नाम जपे सभी दिल लगा के, ध्रुव जी ने शिक्षा दीनी।।
तेरह दिन आनन्द रहा, पुनः मंगल बाजे बजते हैं।
पिता ने राज दिया ध्रुव जी को, बैठ सिंघासन सजते हैं।
सारे देश ढिंढोरा दीना, प्रेम करो और जाप बड़ा।
नाम की महिमा अंत ना पावे, नाम महिमा भारी है।
जो कोई मेरे राज में रहता, नाम जपे नर नारी है।
नाम के साथ की चीज ना कोई, दुनिया में है नाम ही सार।
गया वक्त फिर हाथ ना आवे, जप लो नाम से बेड़ा पार।।

सारे नगरवासी ध्रुव जी के दर्शन और पूजन के लिए उमड़ पड़े। तब ध्रुव जी ने सभी को यही बात समझाई कि हम सभी को पूरे मनोयोग से उस प्रभु की भक्ति और उसके नाम सिमरन में लीन रहना चाहिए।

तेरह दिन तक लगातार यही क्रम चलता रहा। उसके पश्चात् मंगल बेला में पिता ने ध्रुव जी का राज्याभिषेक करवा दिया। सिहांसन पर बैठे राजा रूप में ध्रुव जी सबको मोहित कर रहे हैं।

राजा बनते ही ध्रुव जी ने सारे देश में ऐलान करवा दिया कि मनुष्य और ईश्वर दोनों से प्रेम करो व अपना अधिक से अधिक समय नाम सिमरन में व्यतीत करने का प्रयत्न करो। नाम की महिमा का बखान नहीं किया जा सकता।

अपने राज्य की प्रजा को, राजा ध्रुव यही समझाना चाह रहे हैं कि दुर्लभ मनुष्य जन्म पाकर हम इसे व्यर्थ ना जाने दें। अपने बचे हुए जीवन को नाम के गहरे रंग से रंगकर जन्म सार्थक करें।

दोहरा :

किरपा गुरां दी हो गई, पूरा हुआ अध्याय।
पढ़े सुने जो प्रेम से, नाम बसे मन आए।।
पत राखी गुरू पारब्रह्म, तज प्रपंच मोह विकार।
नानक सोई आराधिए, जा का अंत ना पारावार।।

(गुरबाणी पृ. 258)

गुरू जी की असीम कृपा से यह अध्याय भी संपूर्ण हुआ। जो भी इसे पढ़ेगा या सुनेगा उसका मन भी प्रभु नाम के रंग में रंग जाएगा और वह भी प्रभु नाम की महिमा को समझकर उसी मार्ग पर गुरू की कृपा से चलने के लिए प्रेरित होगा।

गुरु को परमब्रह्म (परमात्मा) के रूप में मानते हुए उनकी शरण में जाना चाहिए और संसार (माया) के मोह और विकारों को त्याग देना चाहिए। नानक जी कहते हैं, उसी की आराधना करो जिसका न तो कोई अंत है और न ही कोई सीमा। यह पंक्ति सत्संग और गुरू की महिमा पर आधारित है, जो यह सिखाती है कि सांसारिक मोह-माया और विकारों से ऊपर उठकर, सच्चे गुरु या ईश्वर का स्मरण ही वास्तविक शंति और मुक्ति का मार्ग है।

इति श्री भगत माल संगीत ध्रुव जी की साखी वर्णन
नाम चतुर्थ अध्याय समाप्तम।।4।।
सति करतार

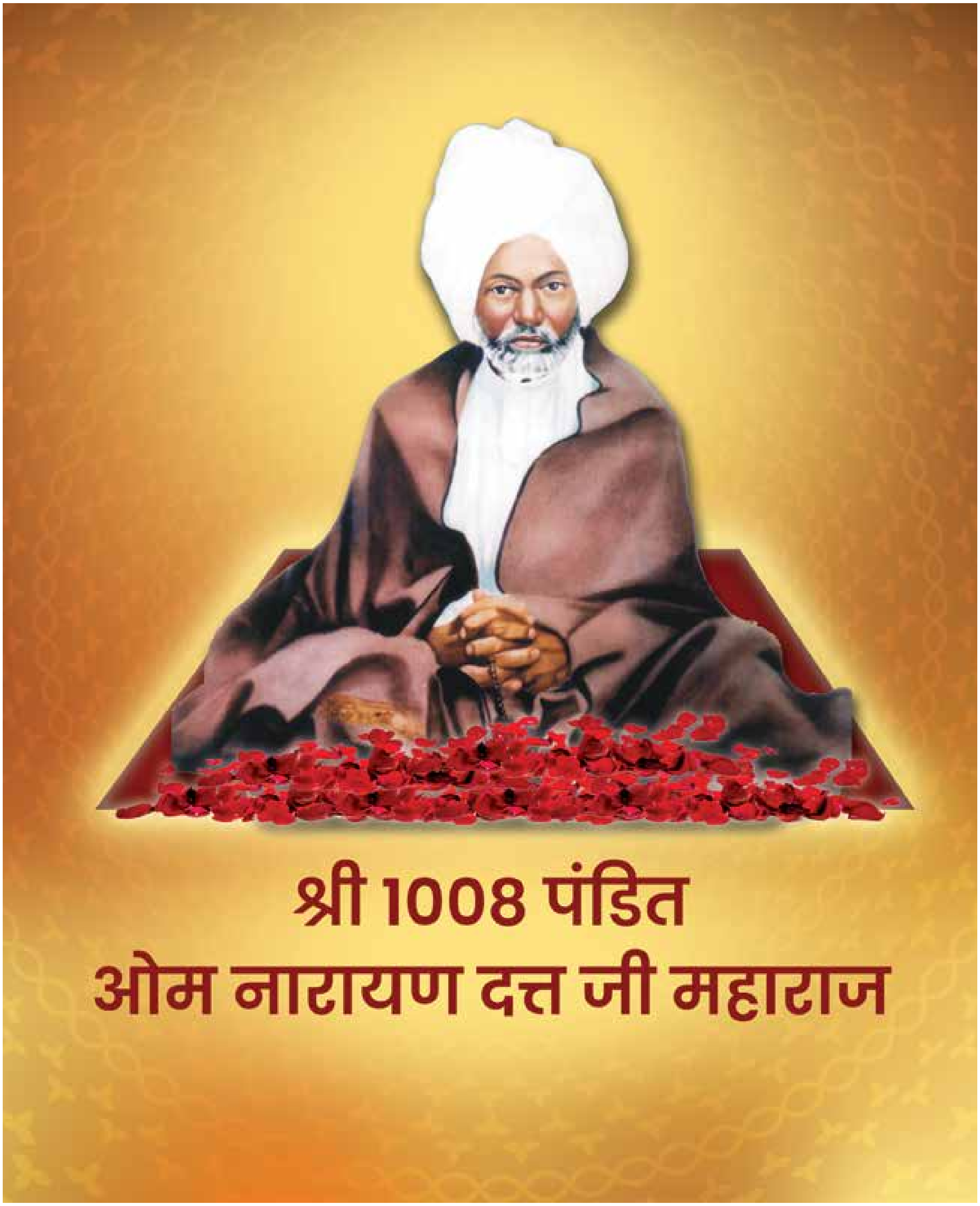
श्री 1008 पंडित
ओम नारायण दत्त जी महाराज

ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

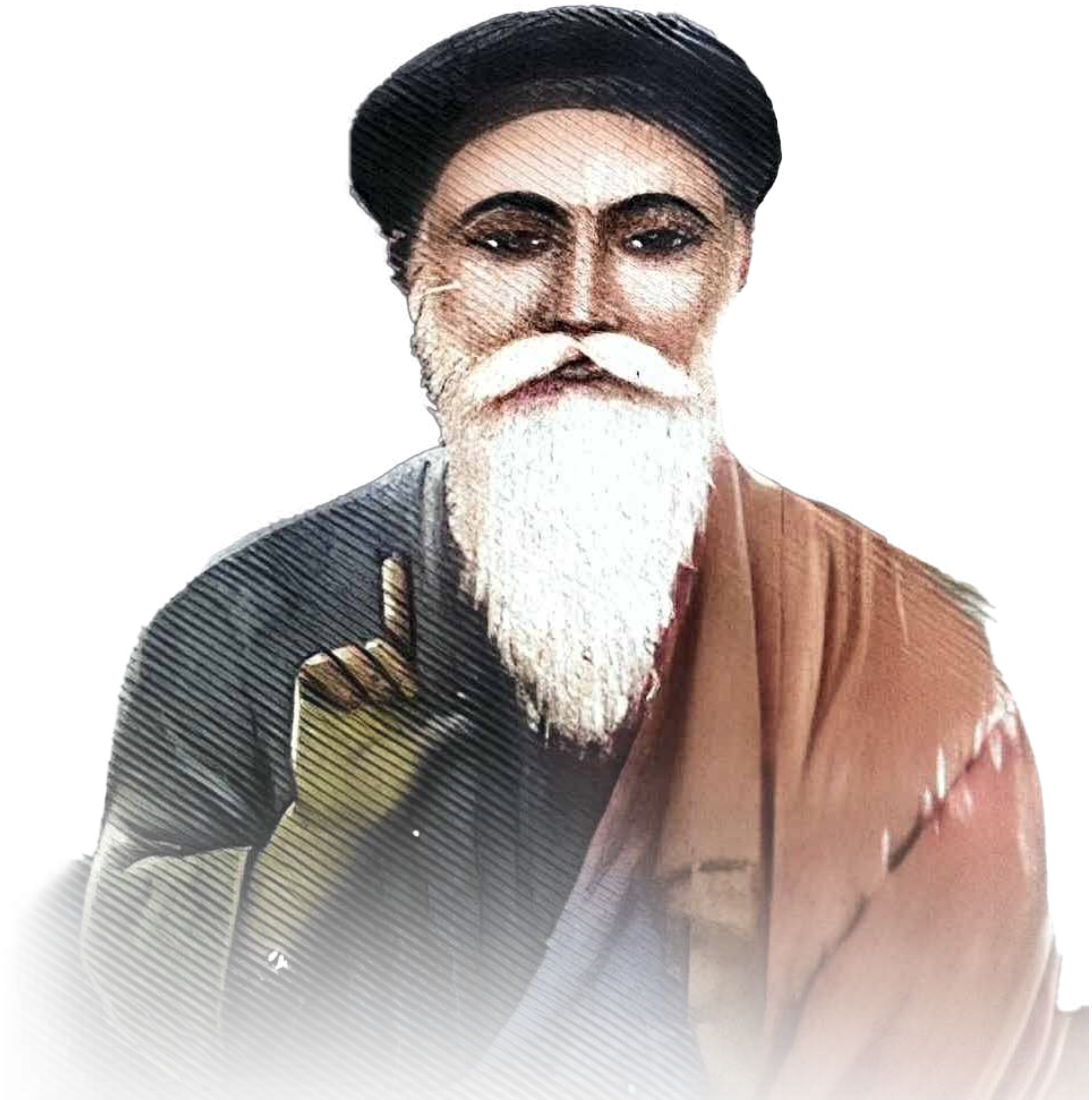

अथ साखी संत रैन व लाला चारज जी

श्लोक :

दंडवत वंदन अनेक बार सर्व कला समरथ।।
डोलन तो राखहु प्रभु नानक दे कर हाथ।।1।।29।।

(पृ. 256)

संत धूण का यश कहूं बुद्धि के अनुसार।।
संतन काजो संग करे बेड़ा होवे पार।।

हे सर्वकला समर्थ प्रभु आपको मैं बार-बार दण्डवत् प्रणाम करता हूँ। आप हमेशा मेरे सिर पर सदैव अपना शुभाशीष बनाए रखें ताकि मैं कभी भी, किसी भी स्थिति में डगमगाऊँ नहीं। पूरा जीवन आपके सहारे व्यतीत करूँ।

अपनी बुद्धि के अनुसार संतों के चरणरज का यश, महिमा का गुणगान करता हूँ। जो भी महान संतों का संग करता है निश्चित रूप से उसकी जीवन नैय्या बिना किसी रूकावट के इस संसार रूपी भवसागर को पार कर लेती है।

गुरबाणी

तेरया संता जाचउ चरण रेन,
ले मस्तक लावउ कर किरपा देन।।

हे सच्चे साहिब जी, तेरे संत हमेशा ही तुम्हारी चरण धूलि को मस्तक पर लगाना चाहते हैं। परमपिता जी ऐसी कृपा करो कि सभी आपके चरण कमलों का दर्शन करें जिससे कि हम सौभाग्यशाली बन सकें।

बेंत :

पंचम पातशाह जी आप विनय करदे,
हे परमात्मा सुनो पुकार सांई।।

अंतर्यामी और सबके हो स्वामी, जीव जंत के आप आधार सांई।।
दास आपका यही वर मांगता है, रोज संता दे होन दीदार सांई।।
चरण धूण जो बड़ी पवित्र होती, मस्तक लाई होवे बेड़ा पार सांई।।

पाँचवे पातशाह भी गुरू अर्जुन देव जी उस अकाल पुरख की वन्दना करते हुए कहते हैं कि प्रभु आप घट-घट की जानने वाले हैं। सारी सृष्टि के स्वामी हैं। सभी जीव जन्तुओं के प्राणाधार हैं। मैं आपका अदना सा दास आपसे केवल एक यही वर माँगता हूँ कि मुझे नित्यप्रति संतों के दर्शनों का सौभाग्य मिले। मैं आपके व संतों के चरणों की पवित्र चरण

धूलि को मस्तक पर धारण करूँ, जिससे मेरे इस जीवन का सब प्रकार से कल्याण हो।

दोहरा :

संतन के प्रताप से अजामल हुआ पार।
बाल्मीक और ध्रुव जी गए हैं जन्म सुधार।।

केवल संतों की ही असीम कृपा और प्रताप के कारण अजामिल जैसा पापी भी मुक्त हो गया। बाल्मीक जी और ध्रुव जी भी आपके और संतों के मार्गदर्शन व कृपा के कारण ही अपना जीवन सार्थक कर पाए।

छन्द :

संत की महिमा वेद ना जाने, गुरबाणी में गाया है।
जो-जो शरण पड़ा संतों की, बहुत जन्म नहीं पाया है।।

संतों की महिमा का बखान करने में वेद भी सक्षम नहीं हैं। गुरबाणी में भी निरंतर संत-महिमा का गुणगान ही किया है। साथ ही बहुत सरल तरीके से समझाया है की जिस

जिसने भी सच्चे संतो की शरण ली है वे जनम मरण के बंधन से मुक्त हुए है।

श्लोक :

संत सरणी जो जनु पड़े, सो जनु उधरन हार।।

संत की निन्दा नानका,बहुरि-बहुरि अवतार।।

(श्री सुखमनी साहिब)

जो भी सच्चे संतों की शरण में आ गए हैं और उनके कृपापात्र बन गए हैं उनका उद्धार होना निश्चित है। जो भी इसके विपरीत संतों की निन्दा या अवहेलना करते हैं उन्हें बार-बार अनेकों योनियों में जन्म लेकर दुःख भोगने पड़ते हैं।

छन्द :

संतों की जो शरण पड़े, किस तरह है पार हो जाता।
लाला चारज की जो साखी, गुरू किरपा से हूं सुनाता।।
महा श्रेष्ठ लाला चारज, भगती में प्रवीण हुए।
गृह अपने को छोड़ दिया है, मन में बहुत उदासीन हुए।।
किसी महात्मा संत के द्वारे, जाकर शीश झुकाया है।
आप की शरणी आए पड़ा है, सारा हाल सुनाया है।।

संत कृपा से किस प्रकार से बेड़ा पार हो जाता है, लाला चारज जी की साखी जो कि गुरू कृपा पर आधारित है इसका अच्छा उदाहरण है।

लाला चारज जी ने भक्ति भाव में आकर उदासीन होकर अपना घर छोड़ दिया और संत-महात्मा जी की शरण में चले गए ताकि उन्हें मुक्ति प्राप्त हो सके।

भजन

टेक : रक्षा करो गुरू जी, आया हूं तेरे द्वारे चरणी हूं शीश धरता, तुझ पर जाऊं बलिहारे

1. भारी मैं औगुणहारा, मेरा आप करो निस्तारा
   तॅक लया है आ सहारा, किसे ला दयो किनारा

2. उपमा मैं क्या सुनाऊं, बुद्धि है ना जो गुण गाऊं
   तन-मन ही भेंट चढ़ाऊं, धन पास ना हमारे

3. मेरी दूई नूं मार मुकाओं, बेगम शहर पहुंचाओ
   मुक्ति मुझे दिवावो, सांची बताई कारे

4. मेरे आप माई बाप, कर दयों दूर पाप
   किरपा करो जी आप, दासन दास है पुकारे

छन्द :

संसार समुद्र गहरा है दिखता, संतों जी पार करो।
दास जान उपदेश करो और जल्दी मेरा उद्धार करो।।
संत दयाल कृपाल जो सुन, बिनती फरमाने लगे।
भेष मात्र जो साधु देखी, गुण-अवगुण ना विचार करी।।
परमेश्वर समान जानकर, संतों का सत्कार करी।।
परमेश्वर समान संत को, यदि नहीं पहचान होवे।

तब उसको तूं ऐसे समझी, सतगुरू के समान होवे।।

भक्ति भाव से भरे हुए लाला जी महात्मा जी से विनती कर रहे हैं कि आप मुझे अपना सेवक जानकर मुझ पर कृपा कीजिए और मेरा उद्धार कीजिए। क्योंकि संसार मुझे समुद्र सा गहरा लगता है और आप ही मुझे इस भवसागर से अपने मार्गदर्शन द्वारा पार उतार सकते हैं।

संत जी दयालु होते हैं इसलिए लाला जी की विनती सुनकर समझाने लगे कि जो केवल भेष मात्र से भी साधु हो हमें उनके गुण-अवगुणों का मूल्यांकन नहीं करना चाहिए।

संतों को हमेशा भगवान का रूप जानकर उनका यथोचित्त आदर सम्मान करे। यदि किसी संत को भगवान के रूप में ना स्वीकार कर सको तो उन्हें सद्‌गुरू रूप में ही मानें व जानें।

दोहरा :

दोनों बातों से परे तीसरी बात पछान।
संतों को तुम मानना सम्बन्धी समान।।

यदि तुम परमेश्वर और सद्‌गुरू इन दोनों रूपों में ही स्वीकार ना कर पा रहे हो तो अपना नातेदार या सम्बन्धी जानकर उनका उचित आदर-सत्कार अवश्य करें।

छन्द :

संतों में और परमेश्वर में, भेद नहीं है कुछ जानो।
बस हमारा उपदेश यही है होवे मुक्ति तुम मानो।।
मीठा बोलो, नींवा चलना, संत सेव कर है तरना।
वापिस घर को लौट जाओ, जंगल में जा क्या करना।।

संतों को परमेश्वर का ही रूप जानकर उनका आदर-सत्कार करें। हम बस यही समझाना चाहते हैं कि सच्चे संतों द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए अपने लिए मुक्ति का मार्ग प्रशस्त करो।

हमेशा मीठा-मधुर बोलो, विनम्र होकर रहो। ऊँचे बोल मत बोलो तथा निरंतर संतों की सेवा करते रहो, उसी में तुम्हारा कल्याण है। इतना समझाकर संत जी ने लाला जी को जंगल से वापिस घर जाने का आग्रह किया।

गुरबाणी :

निवण सु अक्खर खिवण गुण, जीभा मणीयां मंत।।

इसनूं बहने बस कर, तां बस आवे कंत।।27।।

(पृ. 1384)

मीठा बोले नींवा होके चले, हत्थों भी कुछ दे।।

फरीदा, रॅब तीनां दी बुकली, जंगल क्या ढूंढे।।

यही बात गुरबाणी में इस प्रकार कही गई है कि सदैव विनम्र रहे और वही विनम्रता हमारी जीव्हा द्वारा बोली गई वाणी में भी सदैव झलकती रहनी चाहिए। जीव्हा हमेशा मीठा-मीठा ही बोले जो दूसरों को सुख पहुँचाए। इस जीव्हा पर नियंत्रण रखें ताकि उस पर हरिनाम का वास हो पाए। यही कल्याण का रास्ता है।

हमेशा मीठा बोलो, नम्र स्वभाव रखो, हाथों से हमेशा सेवा करते रहो, दान-पुण्य का कर्म करते रहो। फरीद जी समझा रहे हैं कि यदि तुम इन तीन बातों को जिन्दगी में अपना लोगे तो तुम्हें दर-दर भटकना नहीं पड़ेगा। तूं बस सबका शुद्ध भाव से आदर कर, अपने हाथों से सेवा धर्म कर और जंगल में रहने का विचार छोड़ दे।

सद्गुरू जी समझा रहे हैं कि प्रभु के प्यारों हर रोज नेक कमाई करके अपने मन को शुद्ध

करते जाओ। जिससे तुम्हारी सुन्न समाधि लग जाएगी और तुम निर्भयता से बेगमपुर शहर में जा पाओगे। बस सतगुरू जी से युक्ति प्राप्त करके प्रभु के ध्यान में मग्न रहो और उस निराकार की आनन्द-मस्ती में रहो।

भजन

टेक : ओम तेरे विच वसदा,
जंगल काहंनू जाणा

1. जंगल में क्या ढूंढन जाए, घर अपने दी खबर ना पावे
   सतगुरू बाझों जी, यमां दा दुख पावणां
2. सतगुरू ने जो युगत बताई, कर लै बन्दे राज कमाई
   शुद्ध मन हो जावेगा, आतम दरसावना
3. लगेगी जदों सुन्न समाधि, होवेगी सब दूर उपाधि
   बेगम शहर ताहीं र्निभउ, होकर जावनां।
4. सतगुरू जी दी लै ओट प्यारे, घर जंगल सम होवे सारे
   दासन का दास कहे, प्रभु जी दा ध्यान लगावना

छन्द :

संतों ने उपदेश दिया, जो मन अपने बसाया है।
नमस्कार कर गुरू अपने को, वापस घर में आया है।।
जो कोई संत महात्मा आवे, सब को भोजन खिलावे।
नजदीक एक सरिता बहती, नियम से नहाने जावे।।

इक दिन जब इश्नान किया तो, चलते समय नजर पड़ी।
वैष्णव साधु मृत पड़ा है, लगा किसी तरह किनारे आया।।
उठाकर उसको लाला चारज, गृह अपने को ले आया।
विमान बनाया बहुत ही सुंदर, ऊपर दुशाला है पाया।।

लाला चारज जी ने संतों के उपदेश को मानते हुए गुरू चरणों में शीश निवाया और वापिस घर आ गये। अब लाला चारज जी की दिनचर्या बन गई कि वह नित्य नितनेम करके जो कोई संत-महात्मा आता उनको पूरे आदर के साथ भोजन करवाते, उनकी जरूरतों को पूरा करते।

एक दिन जब नदी से स्नान करके वापिस आ रहे थे तो देखा कि एक वैष्णव संत का मृत शरीर नदी में बहता हुआ किनारे आ गया है। साधु के मृत शरीर को आदरपूर्वक उठाकर लाला चारज जी अपने घर ले आए। अंतिम संस्कार करने के लिए एक सुंदर विमान बनाकर संत जी के शरीर पर एक सुंदर दुशाला भी ओढ़ा दिया।

दोहरा :

धूमधाम से ले गए, श्मशान की ओर।
दाह क्रिया सब कर दी, जैसा शास्त्र बताते हैं।
बैराग किया मन आपने, सबने जाना चल।
यह संसार है स्वप्त की तरह, आज जाए या कल।।

शास्त्रानुसार लाला जी ने, श्मशान भूमि में, संत जी का अंतिम संस्कार पूरे विधि-विधान से भी करवा दिया।

ऐसा सब करते हुए उनके मन में वैराग्य उत्पन्न हो गया कि यह संसार एक स्वप्न की भांति ही है, यहाँ किसी के लिए भी स्थाई निवास नहीं है। जो भी इस संसार में जन्म

लेकर आया है उसकी मृत्यु निश्चित ही है।

छन्द :

किया वचन गुरां ने मैंनू, संत राम में भेद नहीं।
एक रूप तुम संता जानो, रहे फिर कोई खेद नहीं।।
परमेश्वर समान संत को, जान नहीं मैं सकता हूं।
जानना मुश्किल गुरू समान है, इसीलिए मैं कहता हूं।।
सम्बन्धि समान जरूरी, मुझको जानना है चाहिए।
तेंरहवे दिन क्रिया करवा, उद्म भण्डारे दा उठाइए।।
क्रिया कर्म सभी कर दीने, जब तेरहवां दिन आया।
बाद रचा भण्डारा भारी, सब ब्राह्मणों को बुलवाया।।
भांति-भांति के खाने सुंदर, बड़े प्रेम से तैयार किए।
सलाह करी जो कि मूर्ख थे, खाने को इन्कार किए।।
भगत साथ जो जिद्द करते थे, मौका मिल गया उनको आन।
सब पण्डितों को कहने लगे, मत करना इसका जल-पान।।
सोचो तुम यह मृतक पुरुष को, नदी से आप उठा लाया।
पता नहीं वो क्या जाति था, सम्बन्धी सम ठहराया।।
ऊंच नीच का भेद ना जाने, भ्रष्ट गई है इसकी बुद्ध।
अन्न जो इसका पा लेवेंगे, कैसे रहेंगे फिर हम शुद्ध।।

गुरू ने मुझे यही समझाया था कि संत और गुरू को ईश्वर का ही रूप जानो। इन संत को मैं परमेश्वर और गुरू रूप में जानने में असमर्थ हूँ। अत: संतों के कथनानुसार मैं

इन्हें सम्बन्धी रूप में ही स्वीकार कर सकता हूँ। शास्त्रानुसार बताए गए तेरहवें दिन के सभी अनुष्ठान लाला जी ने पूरे श्रद्धा भाव से सम्पन्न करवाए। तत्पश्चात् बहुत से व्यंजन तैयार करवा कर ब्रह्मभोज का भी पूर्ण आयोजन किया। लाला जी से ईर्ष्या रखने वाले कुछ ब्राह्मणों ने आपस में सलाह करके बाकी सभी ब्राह्मणों को भी भड़काना प्रारंभ कर दिया। उनके अनुसार यह मृतक संत किस जाति का था, नहीं जानते। उसके मृत्यु भोज को ग्रहण करके हम शुद्ध आचरण रख पाएंगे या नहीं।

दोहरा :

इसे श्रेष्ठों ने जब सुना मन में किया विचार।
भगत जी के मन में बसी सब नर हरि अवतार।।

इतना सुनने पर कुछ सद्बुद्धि रखने वाले ब्राह्मणों पर कोई कुप्रभाव नहीं पड़ा बल्कि वह तो लाला जी की प्रशंसा करने लगे। वे कहने लगे कि लाला जी तो महान हैं जो सभी प्राणियों में उस परमात्मा का ही रूप देखते हैं।

छन्द :

भगत जी प्रेम में रंगे हुए है, नजर ना दूजा आता है।
इस बात का भेद है गहरा, ईर्ष्या भगत से करते हैं।।
जैसा किसी का दिल होता है, वैसा दूसरा नजर आवे।
यह सारे दिल के खोटे हैं, इसीलिए भगत जी नहीं भाते।।
समझाने से ना समझे, अच्छा इनकी मर्जी है।
आखिर को फिर पछताएंगे, जो ब्राह्मण है खुदगर्जी।।

भले ब्राह्मणों का मानना है कि भगत जी के विरुद्ध केवल ईर्ष्यावश ही ऐसा बोल रहे हैं। वास्तव में भगत जी तो उस परमात्मा के रंग में इस प्रकार से रंगे हैं कि उन्हें सभी में उसी

ईश्वर का ही रूप नजर आता है। जैसे किसी की भावना होती है - अच्छी या बुरी, वह उसी के अनुसार ही दूसरों का मूल्यांकन करता है। इसलिए ऐसी खोटी बुद्धि वाले लोग भगत जी जैसे अच्छे और भले व्यक्ति की निंदा कर रहे हैं। यदि ये हमारे समझाने से भी समझना नहीं चाहते तो अंततः इन्हें इसके लिए पछताना ही पड़ेगा।

दोहरा :

खोटे खोटे मिल गए, सबने करी सलाह।
पंगत बीच से खीच देवों, जो कोई भोजन खाए।।
इतनी बात को कह दिया, चले गए सब घर।
वैर बुरा है नीच से, गए सयाने डर।।

उन मूर्खों ने अच्छे लोगों की बात को समझने की चेष्टा किए बिना ही सभी भोजन कर रहे ब्राह्मणों को बलपूर्वक खींच-खींचकर वहाँ से उठा दिया।

बुद्धिमान ब्राह्मणों ने सोचा कि मूर्खों से वैर लेने में कोई समझदारी नहीं है। कारण वे सब भोजन छोड़कर अपने-अपने घरों को लौट गए।

छन्द :

मूरख साथ जो करिए वैर, तो भी होता दुखदाई।
मित्र भाव जे कर ले, नहीं होता तब सुखदाई।।

मूर्खों के साथ किया गया वैर और मित्रता दोनों ही हानिकारक और दुखदायी होते है।

भजन

टेक : छोड़ दयो मूर्ख का संग, भजन में पा देता है भंग

1. बुरा मूर्ख से बोलना, करना बुरा प्यार
अपना ही घर नाश होंवदा, यदि कर लइए प्यार
सुखां में पा देंवे भंग

2. बान्दर ऊपर चिड़िया ने, कीना पर उपकार
उसने ॲगे तो की सुख दित्ता, तोड़ दिया घर बार
मचाया साथ चिड़िया दे जंग

3. दाना दुश्मन है भला, कुछ नहीं मूर्ख यार
थां भले दे बुरा कमावे, देवे जान से मार
नहीं तां कर देंदा है तंग

4. रीछ के पांव में कंडा चुभ गया, दुखी हुआ बहु आन
किसी पुरुष ने तुरंत निकाला, दिल में दया को ठान
रीछ कहे जो चाहे सो मांग

5. रीछ कहता पुरुष को, तूं मेरा है यार
मैं भी तैंनू सुख देवांगा, है मेरे सिर भार
देख सुख होवेंगा तूं दंग

6. पुरुष को निंद्रा आ गई, कुछ हुई न ज्यादा देर
मक्खी रीछ उडावंदा, मुड़-मुड़ आवे फेर
सुन लवो तोर दयो हुण गंग

7. मारियां थप्पड़ मक्खी ते, मार गई उड़ार
चोट जो लांगी पुरुष के, गया स्वर्ग सिधार
तोड़ दिया मुख दा भारी अंग

8. मूर्ख का इलाज ना, कभी ना है सुधार
इसका संग तुम छोड़ दो, करना नहीं प्यार
आखदा दास दास निसंग

दोहरा :

मित्तर भाव और वैर भाव मूरख से दयो तुम छोड़।
जे सुख चाहो अपना मुख इनसे लो मोड़।।

मूर्खों के साथ ना तो मित्रता लाभदायक है और ना ही उनसे वैर रखने में कोई भलाई है। यदि तुम वास्तव में अपनी भलाई चाहते हो तो मूर्खों से किसी भी प्रकार का सम्बन्ध या सरोकार नहीं रखना चाहिए।

छन्द :

मित्तर भाव और वैर भाव छोड़, जो समान ही रहता है।
तब अगम कुछ मिलता है और आनन्द को लेता है।।
श्रेष्ठ ब्राह्मण गए घर को, देख भगत उदास हुए।

भोजन सभी तैयार पड़ा है, कौन खाए विश्वास करके।।

जो इस संसार में कमल के समान रहता है अर्थात् संसार में किसी से भी विशेष मोह या वैर भाव नहीं रखता। किसी से मित्रता या शत्रुता का भाव ना रखकर समभाव में रहता है और अपने कर्त्तव्यों को पूरा करते हुए निरंतर अपने ध्यान को उस परमात्मा में लगाए रखता है, वही व्यक्ति वास्तव में आंतरिक आनन्द का अनुभव करता है। उसे अगम् से प्रतीत होने वाले मुक्ति जैसे लक्ष्य भी प्रभु की कृपा से प्राप्त हो जाते हैं।

जब श्रेष्ठ ब्राह्मण भी भोजन को त्याग कर चले गए तो सारा भोजन ज्यों का त्यों रखा देखकर लाला जी बहुत उदास हो गए।

दोहरा :

कपटी ब्राह्मण पास जा कीनी है नमस्कार।
किरपा करके छको जी भोजन पड़ा तैयार

लाला जी ने वहाँ उपस्थित कपटी ब्राह्मणों को नमस्कार करते हुए तैयार रखे भोजन को विनयपूर्वक ग्रहण करने के लिए आग्रह किया।

छन्द :

गुस्से से हो लाल ब्राह्मण मुख से ज्यों फरमाते हैं।
तेरे जैसे नीच के घर में कभी नहीं हम जाते हैं।।
मृतक पुरुष को ले आना, बताओं उसकी है क्या जाति।
क्रिया कर्म सभी कर दीने रचया भण्डारा कर उत्पात।।
भगत ने नम्र भाव कहा जाति का मुझे नहीं पता।
परमेश्वर सम्बन्धी नाता माफ कीजिए मेरी खता।।

संत में और परमेश्वर में भेद नजर नहीं आता है।
हिन्दू वैष्णव जाति पहचाने संत मेरा ही नाता है।।
सुनकर कपटी ब्राह्मण बोले, भगत नहीं तूं है ठग भारी।
माला गले में पा लीनी है लुट लई है खलकत सारी।।
तेरे जैसे बगला भगत को लोग सभी अब मानते हैं।
हम जो उत्तम ब्राह्मण हैं कोई नहीं पहचानते हैं।।
कलयुग का प्रभाव हुआ है बात किसी के नहीं है बॅस।
पाखण्डी की पूजा होवे हमरा करते हैं अपयश।।
और भी कड़वे वचन भगत को कई तरह के कर दीने।
जा तूं माथे लाग नहीं, सब वचन भगत जी सह लीने।।

क्रोधित ब्राह्मणों ने लाला जी को भला बुरा कहते हुए भोजन करने से साफ इन्कार कर दिया।

तुम उस मृतक व्यक्ति की कुल-जाति को जाने बिना उसे अपने घर ले आए और उसका क्रियाकर्म भी कर दिया। अब यह ब्रह्मभोज के आयोजन करने में भी निश्चित रूप से तुम्हारी कोई बुरी मंशा ही है।

भगत जी ने विनयपूर्वक उत्तर दिया कि मुझे उनकी जाति-पाति का कुछ पता नहीं है। मैंने तो ईश्वर द्वारा भेजा हुआ अपना कोई सम्बन्धी जानकर शुद्ध भाव से यह अनुष्ठान किया है। यदि इसमें मेरी कोई गलती है तो उसके लिए मैं क्षमा याचना करता हूँ।

भगत जी बोले कि वैष्णव हिन्दु होने के कारण संत और परमात्मा में भेद नहीं कर सकता हूँ। ऐसा सुनकर कपटी ब्राह्मण लाला को कहने लगे कि तुम भगत नहीं बल्कि ठग हो जो गले में माला डालकर सारी दुनियां को ठगने में लगे हो।

वे स्वयं को उत्तम ब्राह्मण बताते हुए लाला जी को बगुला भगत कहकर पुकारने लगे।

यह बस कलयुग का ही प्रभाव है कि आप जैसे बगुला भगत को सब सराहते हैं और हम जैसों को अपयश ही मिलता है।

उनके द्वारा कहे गए और भी अनेक कड़वे वचनों को सहते हुए भगत जी चुपचाप सुनते रहे।

दोहरा :

लाला चारज चल पड़े, मन में हुए उदास।

सख्ते नाल की जोर है आए सतगुरू पास।।

भण्डारे की बात जो सारी देई सुनाय।

अन्न पड़ा तैयार जो ब्राह्मण कोई ना खाए।।

लाला जी ने बड़े दुखी और भारी मन से गुरू जी के पास जाकर सारा वृतान्त सुना दिया। कहने लगे कि जो इतना भोजन तैयार पड़ा है उसे कोई भी ब्राह्मण खाने के लिए तैयार नहीं है।

छन्द :

बात सुनी यह संता ने मन में हुए बहुत प्रसन्न।

बड़े अभागी वो नर हैं जो तेरा नहीं खाते अन्न।।

जाति का है मान उनको, इसीलिए तो शंका मनाते हैं।

प्रेम भक्ति दिल में नहीं उपजी रस नाम हरि नहीं जानते हैं।।

तुम अपने घर जा बैठो कोई फिक्र भी दिल में करो नहीं।।

एक हजार पत्तल चाहिए डूना लयावो दो हजार।

अंतर्यामी आप आएंगे सब सामग्री करो तैयार।।

ये सब हाल सुनकर संत जी ने प्रसन्नतापूर्वक कहा कि जो तुम्हारे द्वारा परोसा हुआ अन्न ग्रहण नहीं कर पा रहे, वास्तव में वे सब बहुत ही अभागे व्यक्ति हैं।

वे सिर्फ जाति-पाति जैसी खोखली बातों में ही उलझ कर रह गए हैं। वास्तव में उस भगवान के प्रति ना तो उनका सच्चा प्रेम है और वे उस प्रभु की सच्ची कृपा और भक्ति से भी पूर्णतः अनभिज्ञ हैं।

तुम निश्चिंत होकर प्रसन्नचित्त अपने घर को लौट जाओ। प्रभु कृपा से तुम्हारे कार्य सम्पन्न हो जाएंगे।

गुरू जी ने फरमाया कि एक हजार पत्तल और दो हजार डोनों (पत्तों की कटोरियाँ) का प्रबन्ध करो। वह अंतर्यामी, दयालु भगवान स्वयं आकर भोजन ग्रहण करेंगे।

दोहरा :

लाला चारज खुश हो आ गए अपने घर।

सामग्री तैयार कर मन में रहा न डर।।

लाला चारज जी गुरू जी का आश्वासन पाकर हर प्रकार से प्रसन्नचित्त और निर्भय होकर अपने घर को लौट आए।

छन्द :

अन्तर्यामी सबका स्वामी, लाज रखदा आया है।

सब देवतों को साथ लिया और ब्राह्मण रूप बनाया है।।

जिस रस्ते दुष्ट जन बैठे उसी रस्ते से आते हैं।

साथ देवता विप्र बने हैं बाजे कई बजाते हैं।।

बड़ा कोलाहल होता है और शोभा होती है अपरम्पार।

दुष्टों की कुछ पेश ना चलती जल भुन हो गए सारे छार।।

आपस में बातें करते हैं ये और ग्राम से ले आया।
हम नहीं गए जिस कारण से वो भेद नहीं है बतलाया।।
इन विप्रों को खबर नहीं है लोभ से सारे भरे हुए हैं।
बस भोजन इनको खाने दो ये तो सारे फंसे हुए।।
अब इनको कुछ नहीं कहना बाद में बात सुनाएंगे।
मित्तर का सब हाल बताकर पीछे दण्ड लगाएंगे।।
अब ये खुशियां करते हैं और बाजे सभी बजाते हैं।
ढीले कान सभी के होने अब तो नहीं शर्माते हैं।।
तब हानि इनको होवेगी जो आए है बहुमानी।।
भाईचारे से छेक दयांगे बंद करांगे हुक्का पानी।।
इस तरह वो ब्राह्मण मूरख जो दिल में खुश होते हैं।
भगत की निन्दा करते हैं, बिन साबुन कपड़े धोते हैं।।
भगवान साथ जो ब्राह्मण है भजन सुरों में गाते हैं।
मृदंग, बीन और बांसुरी, झांजर कैसी खूब बजाते हैं।।
भगवान इस तरह सज रहे, ज्यों सौहे शशितारा गण में।
गलियों में चले जाते हैं, खुशी होती लोगों के मन में।।
ये भगत की सारी किरपा है श्रेष्ठों का दर्शन पाया।
ये खुशी तो बताई ना जावे अॅज दिन बड़भागी है आया।।

अन्तर्यामी प्रभु अपने सच्चे भक्त के दुःख और चिन्ता को दूर करने के लिए ब्राह्मण वेष धर करके, सभी देवताओं को साथ लेकर लाला जी के घर भोजन ग्रहण करने के लिए स्वयं आ गए।

जिस मार्ग को अवरुद्ध करके वे दुष्ट जन बैठे थे, उसी मार्ग से बाजे-गाजे के साथ सभी देवताओं को लेकर प्रभु स्वयं लालाजी के घर आ पहुँचे।

ऐसी अनुपम शोभा को देखकर दुष्ट ईर्ष्यावश जल-भुन गए और चाहकर भी कुछ ना बिगाड़ पाए।

आपस में यही कहने लगे कि वास्तविक सत्य बताए बिना यह किसी दूसरे गाँव से इन सभी ब्राह्मणों को ले आया है।

इन सभी लोभी ब्राह्मणों को भोजन खाने के अलावा और कुछ भी सुधबुध नहीं है। आपस में वह यही योजना बना रहे हैं कि अभी हम इन्हें कुछ ना कहकर बाद में सारी वास्तविकता बता कर इन्हें दण्डित करेंगे।

अभी तो ये सब बहुत मान-सम्मान के साथ आए हैं। बाद में जब इन्हें जाति-बिरादरी से निष्कासित करके इनको हानि पहुंचाएंगे तो ये सब बहुत पछताएंगे।

अभी तो ये मूर्ख ब्राह्मण भगत जी की निन्दा करते हुए बहुत प्रसन्न हो रहे हैं परंतु वे नहीं जानते कि वास्तव में ऐसी निन्दा द्वारा वे स्वयं को ही भारी हानि पहुँचा रहे हैं।

भगवान के साथ ब्राह्मण रूप में आए देवता मधुर वाद्य यंत्रों के साथ बहुत सुन्दर भजन गायन करने में तल्लीन हैं।

देवताओं के बीच बैठे भगवान तारों के बीच में चन्द्रमा की भाँति सुशोभित हो रहे हैं। उनके मधुर भजनों को सुनकर सभी लोग बहुत आनन्दित हो रहे हैं साथ ही आपस में बातें कर रहे हैं कि लाला जी की कृपा के कारण ही हम ऐसे श्रेष्ठ ब्राह्मणों का दर्शन कर पा रहे हैं। ऐसे भाग्य भरे व खुशी भरे क्षणो का वर्णन हमारी जिव्हा नहीं कर पा रही है।

दोहरा :

विप्र जो विद्वान थे, जिनको था विचार।

दर्शन करके खुश हुए, जै महाराज उच्चार।।

श्रेष्ठ ब्राह्मण गण ऐसा अनुपम दृश्य देखकर जय-जयकार करते हुए प्रसन्नचित्त होकर

भगत जी की सराहना करने लगे।

छन्द :

धन है लाला चारज जी, यह सब विचार मिल करते हैं।
जिनके गृह में ऐसे उत्तम, विप्र चरण आ धरते हैं।।
इनके दर्शन में है तासीर, जो खिंचा मन सबका जाता है।
जो बाणी इनकी सुनती है, ना वापिस घर को आता है।।
सब मगर इन्हों के लागे हैं देखो तो कैसे हुए मतीह।
घर के काज सभी ने छोड़े नर नारी सब करते नेह।।
वासुदेव के साथ ब्राह्मण भजन प्रेम से गाते हैं।
लाला चारज के घर पहुंचे पंगत सभी सजाते हैं।।
पहले लाला चारज जी ने सबको शीश निवाया है।
अहो भाग्य मेरे हुए जो आपने दर्श दिखाया है।।
कई प्रकार के भोजन जो थे बड़े प्रेम से वर्ताए।
संतुष्ट महात्मा को करके पीछे से हाथ हैं धुलवाए।।
छिलग इलायची पान बीड़ा सबको आदर से दीने।
सबकी चरणी शीश निवाकर खुशी भगत ने है कीने।।
विमान सुनहरी आकाशों आए लोख देखते रहे खड़े।
सभी देवता बैठ गए और तरफ आकाश की सब चले।।
सभी देवता पहुंच गए अपने अपने जो थे धाम।
कपटी ब्राह्मण सोचने लगे शुद्ध हो गया भगत का काम।।

जब किसको दण्ड लगाएंगे ये भारी हमारी है गलती।
शरण पड़ो और शांत करो जो अग्न ईर्ष्या की है जलती।।

श्रेष्ठ ब्राह्मण मिलकर विचार विमर्श कर रहे हैं कि लाला जी के बहुत उत्तम भाग्य है कि उनके घर में ऐसे श्रेष्ठ ब्राह्मणों के चरण पड़े हैं।

इनके दर्शन और वाणी में इतना चुम्बकीय आकर्षण है कि हर कोई इनकी ओर खिंचा चला जाता है। इन्हें छोड़कर, इनकी दिव्यता से दूर होकर वापिस आने को मन नहीं चाहता।

सब नर नारी इनके प्यार में काम काज छोड़कर, इनके आस-पास ऐसे मंडरा रहे हैं मानों इनके दिवाने ही हो गए हों।

वासुदेव जी के साथ प्रेममग्न होकर भजन गाते हुए सभी ब्राह्मण लाला चारज जी के घर पहुँच कर पंगत में बैठ रहे हैं।

लाला चारज जी ने सभी का अभिवादन करते हुए कहा कि मेरे अहोभाग्य हैं कि आप सब मेरे घर पर पधारे हैं।

सभी महात्माओं को प्रेमपूर्वक भोजन करवाने के पश्चात् हाथ धुलवाकर सभी को संतुष्ट कर दिया।

भोजन के पश्चात् लाला जी ने खुशी-खुशी आदरपूर्वक इलायची, पान-बीड़ा आदि भी खाने के लिए दिए।

सभी नर-नारी यह देखकर विस्मित हो गए कि आकाश से सुनहरी विमान उन सभी ब्राह्मण वेषधारी देवताओं को अपने-अपने धाम में ले जाने के लिए आ गए।

ऐसा दृश्य देखकर कपटी ब्राह्मण मन ही मन सोचने लगे कि लाला जी का कार्य तो अति शुद्ध रूप से सम्पन्न हो गया है।

मन ही मन पश्चाताप् करने लगे और सोचने लगे कि लाला जी के पास जाकर अपने इस ईर्ष्या भरे बुरे व्यवहार के लिए क्षमा माँगें।

दोहरा :

इकट्ठे हो गए दुष्ट जन, गए भगत के पास।
गॅल में पल्लू पा लिए, करने लगे अरदास।।

सभी ईष्यालु ब्राह्मण एकत्रित होकर लाला जी के पास जाकर शर्मिन्दा होकर क्षमा माँगने लगे।

भजन

टेक : तेरे आ गए भगत ही द्वारे,
बख्शो हुण औगुण सारे

1. असां भेद ना तुमरा जानया सी, भगती को नहीं पहचानया सी
   तां ही तो पापी भारी तेरे
2. हम जात के बहुत अभिमानी हैं, नहीं भगती दिल में आनी है
   निंदया करते थे सारे
3. सांनू भुलयां नूं रस्ते पावो जी, सानूं अपना दास बनावो जी
   कर दयो हुण बेड़े पारे
4. बख्शो जी प्रेम और भगती जो असां देखी तुमरी शक्ति जो
   आप जीत गए हम हारे
5. इस नाम में बहुत शक्ति है, प्रभु आए देखकर भगती है
   दिया दर्शन सब नर तारे

6. असी ंआ गए आपकी शरणी जी, हुण लावो जल्दी चरणीं जी
हम दासन दास हत्यारे

दोहरा :

सुनकर बेनती भगत जी हो गए तुरन्त दयाल
जिनका दिल अति नरम है वैर ना किसी दे नाल।।

विप्रों की ऐसी प्रार्थना और क्षमायाचना सुनकर कोमल चित्त लाला जी दया से भर गए।

छन्द :

हे ब्राह्मणों जी तुम दया करो, मैं सबका दास कहाता हूं।
तुम तो पूजन योग्य हमारे, किरपा आपकी चाहता हूं।।
यह यज्ञ जो शेष बचया है, आप भी भोजन पा लीजे।
सुनकर ब्राह्मण कहने लगे, क्यों इतना पाप चढ़ाते हैं।।
पत्तलों की जो जूठ पड़ी है, सबको हम खा जाते हैं।
जो बुलाए हुए नहीं आते थे और जाति शंका का अभिमान।।
पत्तलां विचों देख भाल के जूठा बचना खाने लगे।
क्षत्रिय ब्राह्मण जूठ खाकर मन में खुश बहुत होते हैं।।
सबसे उत्तम भगती यह बात हमने जान लई।
संत संग की उपमा ज्यादा है ये भी दिल में ठान लई।।
संत दयालु किरपालु हैं चरण धूड़ का क्या प्रताप।
लाला चारज जी संतों का संग करके पहले उद्धरे आप।।

हजारों जीवों का किया उद्धार वासुदेव जी आप आए।
लाला चारज जी हो गए रोशन घर-घर में सब यश गाए।।
जो लोग भगत की करते निन्दा अब वो ही तो पूजा करते हैं।
संतसंग की है यह महिमा चरण धूड़ लाए तरते हैं।।
ताते आओ श्रोता गण कर लीजे अब साधु संग।
जन्म सफल है कर लीजो नहीं तो जाता है भाणे भंग।।

भगत जी बोले, हे ब्राह्मणो! आप ऐसा कहकर मुझे शर्मिन्दा ना करें। मैं तो आपके दासों के समान हूँ। आप सब श्रेष्ठ ब्राह्मण मुझ पर अपनी दया और कृपा बनाए रखिए।

ऐसा कहते हुए लाला जी ने विनती की कि कृप्या आप भी भोजन ग्रहण कीजिए ताकि मेरा अनुष्ठान वास्तव में संपूर्ण हो जाए। ऐसा सुनकर सभी ब्राह्मण ग्लानि से भरकर बोले कि हम जो उस समय आपके बुलाने पर भी नहीं आए थे। हम जैसे पापी और अभिमानी व्यक्तिओं के लिए अब यही उचित होगा कि अब हम इन पत्तलों की बची हुई जूठन को ग्रहण कर स्वयं को धन्य करें।

भोजन करते हुए वे सब यही सोच रहे हैं कि वास्तव में सच्ची भक्ति, सच्चे संतों की संगति और अनुसरण से ही प्राप्त की जा सकती है।

दयालु और कृपालु संतों की चरण धुलि हम जैसे सांसारिक प्राणियों के लिए प्रभु का बहुत बड़ा वरदान है। इसका सबसे ज्वलंत उदाहरण है लाला चारज जी। संतों की सच्ची संगति के कारण ही वासुदेव जी ने अपने पावन दर्शन देकर लाला चारज जी के साथ-साथ हजारों अन्य जीवों का भी उद्धार कर दिया।

घर-घर में अब लाला चारज जी का यशोगान होने लगा, उनके निन्दक भी अब उनके भारी प्रशंसक बन गए थे।

संतों की संगति और चरण धूलि पाकर उनकी दया व कृपा द्वारा सबका कल्याण होना निश्चित है। अतः हमें भी शीघ्र अति शीघ्र सच्चे संतों की शरण में जाकर उनकी

कृपा और मार्गदर्शन प्राप्त करना चाहिए और अपने जीवन को वास्तव में सफल और अर्थपूर्ण बना लेना चाहिए। इतना सारा जीवन हमने व्यर्थ कर दिया किन्तु जब सच्चे संतों की शरण में जाकर उनकी संगति और चरण धूलि लेकर शेष जीवन को सत्मार्ग पर चलते हुए व्यतीत कर लेना चाहिए।

भजन

टेक : मिलकर साधुआं, साधुआं धुणी कर इश्नान

सत्संग जो नर करते हैं, हो जावे कल्याण

चरण धूण जे मस्तक लाइये, हो जाता है ज्ञान

वॅडे भाग जे चरण रेन मिले, लागे सहज ध्यान

दोहरा :

संतसंग और चरण रेन की महिमा अपरम्पार।

जन्म सफल हो जाएगा जपो जाप करतार।।

सतगुरू किरपा हो गई पूरा हुआ अध्याय।

पढ़े-सुने जो प्रेम से पाप नष्ट हो जाए।।

इस प्रकार सत्संग और संतों की चरण धूलि की महिमा बेअन्त है। अपने जन्म को सफल करने के लिए प्रभु सिमरन सबसे सरल उपाय है। इस मार्ग पर चलते हुए हम सबका कल्याण होना सर्वथा निश्चित है।

मेरे सद्गुरु की असीम कृपा के कारण यह अध्याय भी समाप्त हो गया। जो भी प्रेम व श्रद्धापूर्वक इसका पठन और श्रवण करेगा उसके सभी पापों और दुःखों का नाश हो जाएगा।

इति श्री भगत माल संगीत लाला चारज जी दी साखी वर्णन नाम पंचम अध्याय समाप्तम् ।।5।।

इति करतार

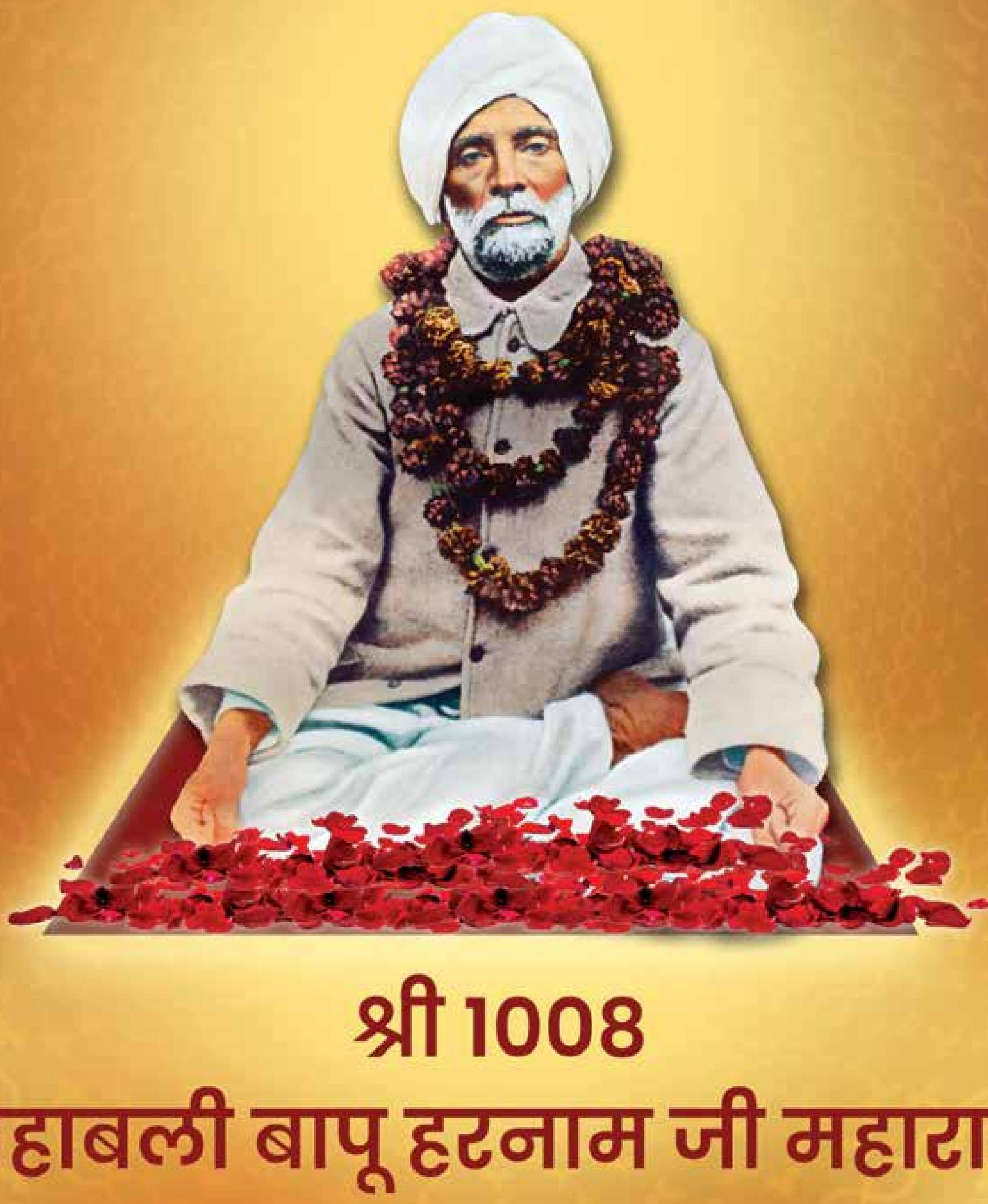

श्री 1008
महाबली बापू हरनाम जी महाराज

ੴ सतिगुरु प्रसादि।

अथ गणिका का प्रसंग

दोहरा :

जै गुरु नानक देव जी महिमा अपरम्पार।
दशम गुरां को वन्दना कलयुग के अवतार।।
श्री गुरु हरनाम जी महिमा कही न जाए।
गणिका की साखी कहूं होवो आप सहाय।

गुरू नानक देव की जय-जयकार करते हुए बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ने अध्याय प्रारंभ करते हुए दसों गुरूओ की चरण वन्दना की है। बापू जी के अनुसार इस कलयुग में प्राणियों के उद्धार के लिए दसों गुरू स्वयं ईश्वरीय रूप में ही अवतरित हुए थे अतः बार-बार इन सभी के चरणों में नमन।

तत्पश्चात् अपने परम पूज्नीय सतगुरू बापु श्री गुरु हरनाम जी को प्रणाम करते हुए प्रार्थना की है कि मैं जो गणिका की साखी का वर्णन करने जा रहा हूँ। आप स्वयं सहायक बनकर यह कार्य निर्विघ्नतापूर्वक सम्पन्न करवाएँ।

गुरबाणी :

(गणिका उद्धारी हरि कह तोत। भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी 21)

गणिका पान होई के पापां दा गॅल हार परोता।
महापुरुष अचानक गणिका के पास आन खलोता।।
दुरमति देख दयाल हथहुं उसने दित्तोन तोता।
राम नाम उपदेश कर खेल गया देवन जसोता।।
लिव लागी तिस तोतिहु नित पढ़ाए करे असोता।
पतित उद्धारन राम नाम दुर्मत पाप कलेवर धोता।।
अन्त काल यमजाल तोड़ नरक विच ना खादोस गोता।

गई वैकुण्ठ विमान चढ़ नाम नारायण छोड़ अछोता।।

सिथांह निथावै-माण मणौतापि

गणिका ने आजीवन कुकर्म करते हुए घोर पाप ही कमाए थे, किंतु उसके किसी पूर्व जन्म के पुण्य कर्म के कारण, एक दिन एक महापुरुष उसकी जीवन दिशा को बदलने के लिए स्वयं उसके पास आ गए। उसे दयावश एक तोता भेंट करते हुए बोला कि इसे हर रोज़ राम नाम रटवाते रहना। गणिका को उस तोते से प्रेम हो गया और वह प्रतिदिन दिन-रात उसे पतित-पावन राम नाम पढ़ाती रहती। राम नाम तो वैसे भी सभी प्रकार के पापों व दुर्गति का नाश करने वाला है। इसी कारण तोते को राम नाम रटवाते हुए अंत समय उसे अपने द्वारा किए गए पापों के कारण नरक यात्नाओं से भी मुक्ति मिल गई। उस प्रभु का नाम चाहे किसी भी रूप में लिया हो, जिसके कारण वह सुन्दर विमान द्वारा बैकुण्ठ धाम को प्राप्त हुई।

छन्द :

मन मेरे जप नाम हरि, यह नाम बड़ा सुखदाई है।
गणिका का प्रसंग सुना, अब कैसे मुक्ति पाई है।।
नाम चन्द्रमणि इसको कहते, रूप में बहुत भरपुर हुई।
जे कोई नर तुमको देखे, बस शर्म तो सारी दूर हुई।।
गुण, अक्ल, शक्ल की बहुत थी, पर पाप रात दिन करती थी।
नाम हरि का कभी भूलकर, हृदय में नहीं धरती थी।।
एक रोज महात्मा फिरते हुए, उसी गांव में आ गए।
नमस्कार करी संता को, बड़े आदर से बिठलाए है।।
सब भीगे वस्त्र उतरवाए, और सूखे वस्त्र पहनाए हैं।
बरसन से बरखा बंद हुई, फौरन हो संत तैयार चले।।

गणिका बिनती करने लगी है, दुष्टों के बंधन काटते हो।
जैसे काठ के संग लोहा भी बोझल बहुत होकर भी तरता है।।
बस इस तरह ही तार जावो, तभी कारज मेरा सरता है।।

हे मन! तूं सदैव, हर क्षण सभी सुखों को देने वाले परमात्मा के नाम को जपा कर। इसी नाम जाप के कारण गणिका ने भी सहज रूप से ही मुक्ति पा ली।

वास्तव में गणिका का नाम चन्द्रमणि था और वह अत्यंत रूपवती थी। वह अपने रूप और गुणों के कारण सभी पुरुषों को अपनी और सहज ही आकर्षित कर लेती थी। दिन-रात पाप कर्मों में संलग्न रहती थी। उसका ध्यान कभी प्रभु की ओर नहीं जाता था।

एक दिन घूमते हुए एक महात्मा गणिका के गाँव पहुँच गए। गणिका ने महात्मा जी को देखते ही उन्हें आदरपूर्वक नमस्कार किया। वर्षा में भीग जाने के कारण महात्मा जी के वस्त्र गीले हो गए थे। गणिका ने गीले वस्त्र बदलवाकर, उन्हें पहनने के लिए सूखे वस्त्र दिए। जब वर्षा रुक जाने पर संत वापिस जाने लगे तो गणिका ने अपने उद्धार के लिए विनती करते हुए कहा कि जिस प्रकार लकड़ी के साथ लोहा भी तर जाता है, उसी प्रकार आपके द्वारा दिए गए मार्गदर्शन से मेरा भी कल्याण हो। कृप्या आप मेरा उद्धार कीजिए।

भजन

टेक : मेरे ऊपर करो उपकार जरा जी,
मैंनू पापन नूं देना तार जरा जी

1. उमर सारी बीत गई, मैं किया पुण्य ना दान है
   व्रत तीर्थ ना किया मैं भरी रही अभिमान से
   मेरे सिर से उतारो भार जरा जी

2. संतों का जो संग मैंने भूलकर भी नहीं किया

नाम जपने से भी रहा मेरा मुंह सीया
मेरा कर दयो दूर हंकार जरा जी

3. रात-दिन पाप करके पेट रही सी पालदी
रूप का था मान मुझको कामीयां नू गालदी
डुबदी किश्ती नूं देना तार जरा जी

4. हे संत जी मैं शरण आई कृपा मुझ पर कीजिए
पापियां नूं तारदे हो तार मुझको दीजिए
दासन दासां दे पाप दयो जार जरा जी

छन्द :

संत ने मन विचार किया, यह पापन बहुत हत्यारी है।
लेकिन शर्म हमारी आ गई, बिनती बहुत उच्चारी है।।
एक तोता संत के पास ही था, जो अपने हाथ से पाला है।
ले इसको अपने पास रखीं, गणिका को तभी संभाला है।।
हम चले है तीर्थ यात्रा को, पढ़ाना तोते को तुम राम।
वापिस इसको हम ले जाएंगे, शुद्ध हो जावे तुम्हारे काम।। संत जी मन में सोच रहे हैं कि हालांकि इसने जीवन में बहुत पाप कमाए हैं। किन्तु हमें देखकर यह दीन-हीन भाव से प्रार्थना भी कर रही है। संत जी ने गणिका की विनती सुनकर अपने द्वारा पाला हुआ तोता गणिका को दे दिया। संत जी बोले हम तीर्थ यात्रा के लिए जा रहे हैं तुम इस तोते का राम नाम पढ़ाती रहना। इससे तुम्हारे सारे काम शुद्ध हो जाएंगे। तीर्थ यात्रा से लौटते हुए अब इस तोते को ले जाएंगे।

दोहरा :

इतना कह कर संत जी, तीर्थ गए सिधार।
उस तोते में नार का हो गया अधिक प्यार।।

इतना कह कर संत जी ने तीर्थ यात्रा के लिए प्रस्थान कर दिया। धीरे-धीरे गणिका को उस तोते से बहुत प्यार हो गया।

भजन

टेक : कह तूं गंगाराम राम-राम,
राम बिना सब झूठे काम

1. पढ़ ले पैंती चतुर सुजान, सबका दाता श्री भगवान
   जग में इहो सच्चा नाम
2. राम का नाम जगत में सार, राम कहो तब बेड़ा पार
   मिल जावेगा सच्चा धाम
3. राम बिना नहीं खलकत तरदी, राम बिना कोई होर ना दरदी
   राम बोल कुछ लगे ना दाम
4. संता ने मुझको फरमाया, राम राम है तुझे सिखाया
   राम-राम कह सुबह और शाम

दोहरा :

इस तरह सिखलावंदी तोते को दिन रात।

बुरे काम सब भूल गए राम ही राम ध्यात।।

इस प्रकार तोते की दिन-रात राम नाम रटवाते हुए अपने सभी बुरे कार्यों को भूल गई और बड़ी श्रद्धा से राम-राम के जाप से राम नाम रंग में रंगी गई।

छन्द :

दिन रात राम ही राम कहे, अब काज न कोई करती है।
पाप दूर हो गए गणिका के, ज्यों अग्न से लकड़ी जलती है।।
या ज्यों साबुन से कपड़ा मैला, शीघ्र साफ हो जाता है।
बस इसी तरह से तन गणिका का, राम कहे सोहाता है।।

दिन-रात के अपने सभी कामों को छोड़कर गणिका सिर्फ राम नाम ही रटती रहती है। जिस प्रकार अग्नि लकड़ी को जला देती है, उसी प्रकार गणिका के राम जाप रूपी अग्नि ने उसके समस्त पापों रूपी लकड़ी को धीरे-धीरे समाप्त कर दिया। इसके अतिरिक्त जैसे साबुन कपड़ो की मैल को हटाकर उन्हें उजला कर देता है। वैसे ही गणिका का राम नाम रटते-रटते, तन और मन धीरे-धीरे निर्मल, स्वच्छ, उज्जवल होते चले गए।

गुरबाणी

रामकली मॅहला 5 ।।(914-915)

ज्यों साबुन कापर अजल होत। नाम जपउ सब भ्रम, भय खोत।।

उमर हुई गणिका की पूरी, काल ने फेरे पाए हैं।
बस उसी समय धर्मराज के, दूत भी लेने आए हैं।
बड़े भयानक है रूप जिनके, हाथ में संगल और बरछी।
गणिका को डर दिखलाते हैं, निगाह जो करते है तिरछी।

डर कर गणिका कहने लगी, हे तोते कह तूं राम ही राम।
औखे वेले राम सहाई और ना आता कोई काम।।
राम राम श्री राम राम का, कर तूं तोते शीघ्र जाप।
राम का नाम पवित्र ऐसा, नष्ट होवंदे सारे पाप।।

जैसे साबुन से कपड़ों की मैल दूर हो जाती है। वैसे ही राम का नाम सभी प्रकार के संशय और भय मिटा देता है।

गणिका का अंतिम समय आने पर धर्मराज के दूत उसे ले जाने के लिए आ गए। अपने भयानक रूप से यमदूत गणिका को भयभीत करने की चेष्टा करते हैं। उनसे डरकर गणिका तोते को राम-राम बोलने के लिए प्रेरित करने लगी। और साथ ही कहने लगी कि कष्ट और दु:ख के क्षणों में केवल राम का नाम ही हमारा सच्चा सहायक सिद्ध होता है। इसके अतिरिक्त और कोई सहारा नज़र नहीं आता। हे तोते! तूं निरंतर राम नाम का जाप करता रह। यह पवित्र पावन राम नाम सभी पापों को शीघ्र ही हर लेता है।

दोहरा :

राम नाम की लूट है लूट सके तो लूट।
इतना ही कहकर नार को प्राण गए फिर छूट।।

उस राम के नाम की ही सब जगह अमृत वर्षा हो रही है। जितना भी हम उसे जप लेंगे वही हमारे काम आएगा। इस प्रकार राम-राम कहते हुए गणिका ने अपने प्राण त्याग दिए।

गुरबाणी

ऊंचे मंदर साल रसोई। इक घड़ी फिर रहन ना होइ।।1।।
यह तन ऐसा जैसा घाट की टाटी।। जल गयो धाम गल गयो
माटी।।रहाउ।।

भाई बंधु कुटुंब सारा।। ओ वी लागे काढ़े सावेरा।।2।।
सर की नार उरहीं तन लागी।। ओ तां भूत भूत कर भागी।।3।।
कहर रविदास सभी जग लुटया।। हम तउ एक राम कह छुटया।।4।।

जैसे ही इस शरीर से आत्मा रूपी पंछी उड़ जाएगा तो यह शरीर किसी काम का नहीं रह जाएगा। हमारे सभी भौतिक सुख सुविधाएं, धन-सम्पत्ति आदि सभी क्षण में ही छूट जाएंगे, कुछ भी साथ नहीं जाएगा। जो भाई बंधु का हमारा परिवार है, जो हमें बहुत प्रिय थे और हम भी जिन्हें बहुत प्रिय थे। मृत्यु के समय सभी शीघ्रातिशीघ्र हमें अपने घर से निकालने के लिए तत्पर हो जाते हैं। जो सदैव प्रेमपूर्वक अपने हृदय से लगाए रखते थे वो भी डरकर दूर भागने लगते हैं।

रविदास जी यह सब कहते हुए समझाना चाह रहे हैं कि हम अपना पूरा जीवन जिस धन, सम्पत्ति को अर्जित करने व अपने प्रिय जनों को सदा प्रसन्न रखने के लिए व्यर्थ कर देते हैं। अंत समय दोनों में से कुछ भी काम नहीं आता और ना ही कोई साथ निभाता है। यदि कोई साथ जाता है, तो वे हैं हमारे द्वारा किए गए अच्छे कर्म और हमारे द्वारा लिया गया प्रभु का नाम।

छन्द :

पारखदों को वासुदेव ने ऐसा हुक्म लगाया है।
छुड़ाए यमों से लयावो गणिका क्यों इतना चिर लाया है।।
उसी काल में पारखदों ने गणिका को छुड़ाए लिया।
सुन्दर जो विमान सुनहरी उसके बीच बिठाए दिया।।
धर्मराज के दूतों को बहुत ही फिर ताड़ते है।
दूत बिचारे देखते रह गए विमान आकाश को चढ़ाते हैं।।
नाम का प्रताप देख लो कैसा मर्तबा पाया है।

ऐसा नाम हरि का सुंदर क्यों मन तूं इसनूं भुलाया है।।
तोते को पढ़ावे गणिका राम-राम जो थी कहती।
अंत में चली गई परम धाम को नरकां विच नहीं बहती।।
ऐ मेरे मन सच्चे दिल से जेकर नाम ध्याएगा।
संता का जे संग करे तां जन्म-मरण कट जावेगा।।
इसीलिए साखी गणिका की तेरे लिए सुनाई है।
नाम जपो भवसागर तरना नाम बड़ा सुखदाई है।
अजामल को इसी नाम से देखो मल में तारा था।
इसी नाम से तार दिया जो बाल्मीक वटवारा है।।
ध्रुव भगत ने नाम जपा, अटल पदवी जो पाई है।
लाला चारज तरया नाम जप, गणिका परम गति पाई है।।
सतगुरू जी की किरपा हुई, पूरा हुआ यह अध्याय।
पढ़े सुने जो प्रेम से, पाप नष्ट हो जाए।।

गणिका के प्राण त्यागने पर वासुदेव भगवान ने अपने पार्षदों को आदेश दिया कि गणिका को यमदूतों के चंगुल से छुड़ाकर अति शीघ्र ही हमारे लोक में ले आओ।

प्रभु की आज्ञा पाकर पार्षद धर्मराज के दूतों को प्रताड़ित करते हुए गणिका को आदरपूर्वक विमान में बिठाकर प्रभु के धाम में ले आए। गणिका के इस प्रसंग से हमें प्रभु नाम की महिमा और प्रताप का ज्ञान हो जाना स्वाभाविक है। आजीवन पापकर्म कमाने वाली गणिका राम का नाम लेकर ऐसे पथ को इतनी सरलता से पा गई जिसे प्राप्त करने में साधु-संतों को भी वर्षों लग जाते हैं। अतः हे मन! तूं प्रभु के उस सुन्दर व सरल नाम को भूलकर क्यों अपना अनमोल मनुष्य जीवन व्यर्थ गँवा रहा है।

केवल तोते को सहज भाव से राम-राम पढ़ाते हुए ही गणिका इतनी सरलता से प्रभु के ६

ाम को प्राप्त कर गई।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी कह रहे हैं कि गणिका की इस कथा के माध्यम से मैं आपके कल्याण के लिए सबसे सरलतम और सर्वोत्तम मार्ग बताना चाह रहा हूँ - प्रभु का निरंतर नाम सिमरन और जाप करते रहो।

सच्चे मन से यदि प्रभु का नाम लिया जाए, साथ ही सच्चे और ऊँचे संतों की संगत की जाए तो इस जन्म-मृत्यु के चक्कर से छूटते हुए हम सहज ही भवसागर से पार हो सकते हैं।

इसी नाम ने ही पापी अजामल को सहज ही तार दिया था। बाल्मीकि भी राम नाम लेते-लेते ही महर्षि बाल्मीकि बन गए। ध्रुव भगत प्रभु नाम को जपते-जपते अटल और उच्च पदवी को प्राप्त हो गए। ऐसे ही लाला चारज और गणिका भी सत्संगति और प्रभु नाम के प्रभाव से उन श्री हरि के परम धाम के सहज ही अधिकारी बन गए जगत स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी ।

अपने महान सतगुरू जी का कोटि-कोटि धन्यवाद करते हुए कह रहे हैं कि उन्हीं की कृपा के कारण यह गणिका की साखी संपूर्ण हुई है। जो भी प्रेम और श्रद्धा से इसे पढ़ेगा और सुनेगा साथ ही इस साखी से सीख लेकर प्रभु का नाम जपेगा तो उसके सभी दुःख और पाप स्वतः ही मिट जाएंगे।

भजन

टेक : भगवान जी पापियां नूं तूं ही तारदा,
तेरा नाम पतित है पावन

1. स्वामी जी अजामल नूं तू ही तारया,
   मरती बार किया आवारन।
2. स्वामी जी बाल्मीक नूं तू ही तारया,
   लागा अन्त को नाम ध्यावन।
3. भगवान जी लाला चारज तूं ही तारया,
   आ गए भोजन उसदे खावन।
4. स्वामी जी गणिका नूं तूं ही तारया,
   दासन दास तेरे दर जावन।

इति श्री भगत माल संगीत गणिका दा प्रसंग
वर्णन अध्याय छटमों समाप्तम् ।।6।।
सति करतार

श्री 1008
जगत स्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज

ੴ सतिगुरु प्रसादि।

अथ गजिन्द्र दा प्रसंग

दोहरा :

आदि पुरख को वन्दन, श्री ओम करतार।
सब सृष्टि को साज के, आप करे प्रतिपाल।।
नमो-नमो गुरुदेव को, होवो आप सहाय।
गजिन्द्र का प्रसंग जो, निज मन कहुं सुनाय।।
सिगजिन्द्र ध्यान हरि कीयो मोखपि

छन्द :

गज हस्ती का जो प्रसंग निज मन को ही सुनाता है।
परमात्मा का नाम लिए से पशु योनि से तर जाता है।।
श्री गुरुदेव का आसरा लेकर, जेकर नाम ध्यावेगा।
गजिन्द्र ज्यों तरया नाम लै, मन तूं भी तर जावेगा।।
त्रिकुट नाम इक पर्वत है, खीर समुंद्र सम जानो।
दस हजार योजन ऊंचा, दीर्घ जितना विस्तार मानो।।
तीन संधि है इसके, कहते सोना, रूपा, लोहे का।
चारों तरफ नदीयां दूध की, बहती हुई शोभायमान होती है।
ऊपर से जल निर्मल गिरता, ज्यों रवि किरण की ज्योति है।।
ऐसे सुंदर पर्वत पर, अप्सरा चार रहते सिद्ध।
गंधर्ब विद्या पढ़, किनर बसते रहे हमेशा वहां निध।।
सुंदर पर्वत की गुफा में, रितु नाम का था बाग।
देवतों की स्त्रियों के खेलने का वो बना समाज।।

नाना प्रकार के वृक्ष लगे हैं, गुढ़ी है जिनकी छाया।
सुदर वन को देख लिया तब, हाथियों ने डेरा लगाया।
इक दिन हाथी जल पीने को सारे ही तैयार हुए।
पहुंच गए सरोवर ऊपर, त्रिखा से सब लाचार हुए।।
हाथियों का सरदार गजिन्द्र सब का ही कहलाता था।
सिंघ, व्याग्र, मृग, गैण्डे, अजगर, गऊ और सिंह भारी।।
ये सब ही इनसे खौफ खाए कर, मानो मारे उडारी।।
गजराज बली ऐसा भाई, सब अंगों से मद चोता है।
बाल कुंटुब और हथिनी साथ है, देख देख खुश होता है।
सरोवर में जल पीने लगा, सीतल सुन्दर है मीठा।।
अपनी मौज में मस्त हुआ है, ग्राह नहीं है जो दिखा।
ग्राह ने पांव को नहीं छोड़ा, गज ने सब जोर लगा दिया।।
बलवान साथ के हाथी जो, कोई ना अब छुड़ाता है।
ज्यादा देर हुई पकड़े को, गज दिल में घबराता है।।
देवता भी अचरज हुए, ये ईश्वर की कैसी माया।
बलवान आपको मानता था, सब मान प्रभु ने है गंवाया।।

परमात्मा की कृपा से गज जैसा पशु भी सच्चे मन से उस परमात्मा का नाम लेकर पशु योनि से मुक्त होकर अमर हो गया।

अपने सच्चे और पूर्ण सतगुरू का सहारा लेकर, उनके द्वारा बताए गए मार्ग पर चलते हुए सच्चे मन से जो भी उस परम पिता का ध्यान धरेगा। गजेन्द्र कीभाँति उसका कल्याण होना भी निश्चित है।

त्रिकुट नामक पर्वत, क्षीर सागर की भाँति फैला हुआ और विस्तृत है। साथ ही दस हजार योजन ऊँचा और विशाल है।

सोने, चांदी और लोहे के भण्डार इसमें समाहित हैं और चारो ओर मानो दूध जैसे स्वच्छ जल की नदियाँ इस पर्वत के सौन्दर्य को चार चाँद लगाती है।

ऊपर से गिरते हुए जल पर पड़ती हुई सूर्य की किरणें आलौकिक ज्योति सी प्रतीत होती हैं। ऐसे सुन्दर पर्वत पर गन्धर्व, किन्नर, अप्सराएँ और सिद्ध बसते हैं।

ऐसे सुन्दर पर्वत की गुफा में रितु नामक बाग देवताओं की स्त्रियों के खेलने का एक सुन्दर व प्रिय स्थान था।

इतने सुन्दर पर्वत पर घने वृक्षों को देखकर हाथियों के झुण्ड ने भी अपना डेरा जमा लिया।

एक दिन प्यास से लाचार हाथी जल पीने के लिए सरोवर के पास पहुँचे। हाथियों का सरदार गजिन्द्र बहुत ही शक्तिशाली है। गजिन्द्र के बल और शक्ति के प्रभाव से सभी अन्य पशु-पक्षी उससे डरते हैं और दूर ही रहते हैं। गजराज का अपना ही एक मदभरा आस्तित्व है। अपनी हथिनी और बच्चों को साथ देखकर बहुत खुश हैं।

प्यास के कारण वह सरोवर का मीठा और ठंडा जल पीने लगा और जल में उपस्थिति ग्राह (तेंदुए) की ओर उसका ध्यान नहीं गया। ग्राह ने बलपूर्वक गजेन्द्र का पाँव पकड़ लिया।

पूरा जोर लगाने पर भी ग्राह से अपने पैर को छुड़ा नहीं पाया। गजिन्द्र के बलवान साथी भी स्वयं को असहाय मानकर दूर खड़े देखते रहे। अधिक देर की ग्राह द्वारा पकड़ से गजिन्द्र मन ही मन में घबराने लगा। देवता भी ईश्वर की इस माया को देखकर हैरान हो रहे हैं। स्वयं को इतना शक्तिशाली मानने वाला गजिन्द्र भी इस समय अति बेबस और असहाय स्थिति में फँस गया है। यह प्रभु का कैसा विचित्र खेल है कि उस अहंकारी, अभिमानी गजिन्द्र को कैसा शक्तिहीन बना दिया है।

दोहरा :

गज हस्ती की पेश अब चली नहीं कोई।
शरण प्रभु की लीजिए दें कष्ट को खोई।।
ऐ परमात्म देव जी, होवों आप सहाय।
गृह मुझको पकड़या, जल्दी लवो छुड़ाय।।

जब गजिन्द्र का कोई भी जोर नहीं चला तो उसे समझ आ गया कि इस घोर संकट के समय में प्रभु के अतिरिक्त उसकी कोई भी किसी भी प्रकार से सहायता नहीं कर सकता है।

अब वह दीन हीन भाव से उस प्रभु को अपनी सहायता के लिए पुकारने लगा।

छन्द :

भगवान तुझे प्रणाम करूं, जिस आसरे देह होती चेतन।
कारण कारज से परे सुता, सिद्ध सर्व का साखी है तूं धन।।
कारण कारज को देख रहा, पर फिर लिप्त नहीं होता है।
प्रकाश ही प्रकाश है, जो वो सब कष्टों को खोता है।।
जिसके स्वरूप को ऋषि देवता, बहु मुश्किल से जानते हैं।
जन्म, कर्म, रूप, गुण, नाम नहीं, अनन्त शक्ति पहचानते हैं।
बहुस्वरूप जिसके कहिए और स्वरूप ही नहीं कोई।
सब का जो प्रकाश है साखी, मन-वाणी से परे सोई।।
पूर्ण सच्चिदानंद ज्ञान धन, सब इंद्रे गणों का दृष्टा है।
सब वृत्तियों में जो व्यापक है, सो जाने जिनको निश्चय है।।

गज राज उस्तुति करता है, जो शरण आपकी आता है।
दृढ़ संकल्प जिसका होवे, कारज वो ही बन जाता है।।
भगवान देवता असुर नहीं, मानुष पशु पंछी नाहीं।
अबला हीजड़ा कर्म नहीं ना, कारण करज के मांही।।
विधि नहीं नाखेध नहीं, जो विधि निखेध से परे है शेष।
माया करके सर्व रूप है, तिसको मेरा है आदेश।।
ऐसा जो परम आत्मा देव है, सोई मुझको छुड़ावेगा।
परिपक्व हुआ निश्चय मेरा, प्रगट अभी हो आवेगा।।
कंवल फूल को सूंड में लेकर, ऊँचा करके पुकारता है।
हे दीनबंधु रक्षो करो मेरी, ग्राह जो मुझको मारता है।।

हे प्राणाधार प्रभो! मैं आपको सादर प्रणाम करता हूँ। आप जिस प्रकार सभी की सहायता करते हैं, मुझ दीन-हीन को भी इस संकट की घड़ी में आपके सहारे की बहुत आवश्यकता है। जिसने भी आपको सच्चे मन से पुकारा है, आपने बिना कोई कारण जाने सदा उसकी रक्षा की है।

हे प्रभो! आप प्रत्येक प्राणी के साथ घटित होने वाले प्रत्येक सुख-दुःख के कारण और निवारण के ज्ञाता हैं। आप आलौकिक प्रकाश के रूप में प्रकट होकर, इस घोर संकट से बाहर निकालें।

आप असीम हैं, अनन्त हैं, अजेय हैं। बड़े-बड़े ऋषि-मुनि ज्ञानी भी आपके रूप, गुण, जन्म और कर्म के विषय में कुछ भी जानने में सर्वथा असमर्थ है।

आपके रूप साकार भी हैं और निराकार भी हैं। आपकी थाह कोई भी नहीं पा सकता। आपकी कृपाओं का कोई अन्त नहीं है। आप केवल एक ऐसी अद्वितीय शक्ति हैं, जो सभी प्रकार के संकट रूपी अंधकार का नाश करती है और एक दिव्य और आलौकिक

प्रकाश से सर्वत्र दिपाय मान होती है।

आप पूर्ण सच्चिदानंद हैं, ज्ञान धन हैं। सभी सृष्टि के संचालक हैं। आपके सर्वव्यापी रूप को केवल वही जान सकता है जिसका आपके प्रति अटूट निश्चय और अथाह प्रेम है।

गजिन्द्र जी आगे भगवान की स्तुति करते हुए कहते हैं कि हे प्रभो! आप शरणागत वत्सल हैं, जो भी सच्चे मन से दृढ़ संकल्प के साथ आपकी शरण में आता है उसके सभी कार्य आपकी कृपा से सिद्ध हो जाते हैं।

प्रभु जिस पर दयालु हो जाते हैं, तब उसका लिंग, जाति, कारण, कर्म कुछ भी नहीं देखते। प्रभु देखते हैं केवल अपने भक्त के मन के सच्चे भाव और प्रेम व सुनते हैं भगत के हृदय से निकली सच्ची करूण पुकार।

प्रभु अपनी पूजा के लिए किसी भी विशिष्ट पूजा पद्धति और विधि विधान की ओर ध्यान नहीं देते। वह एक सीमित दायरे से निकलकर सर्वव्यापी रूप में सभी में समाए हुए हैं। ऐसे प्रभु को मैं अपनी सहायता के लिए बारम्बार प्रार्थना और आग्रह कर रहा हूँ।

ऐसे परमात्मा ही अपने दयालु, करूणा के स्वभाव के कारण मेरी विनती सुनकर मेरी सहायता के लिए वह अवश्य ही प्रकट हो जाएंगे।

गजिन्द्र अपनी सूँड में कमल के फूल को लेकर उस कमलनयन भगवान को अर्पित करते हुए प्रार्थना कर रहा है कि हे दीनबन्धु आप स्वयं आकर मुझे इस ग्राह के चंगुल से बचाइए।

दोहरा :

बेनती करी गज राज ने प्रगटे दीन दयाल।

वाहन जिन का गरुण है चक्र लिया संभाल।।

गजराज की करूण पुकार और विनती सुनकर सुदर्शन चक्रधारी भगवान गरुड़ पर सवार होकर गजराज की सहायता के लिए स्वयं आ गए।

छन्द :

गजराज ने दर्शन जब कीता, प्रणाम खुशी से है करता।
महाराज मेरी अब करो रक्षा, नहीं तो अब मैं हूं मरता।।
वासुदेव ने जान लिया, यह दुख भूख से है लाचार।
ग्राह के ऊपर चक्र छोड़ा, फौरन उसको दिया है मार।।

भगवान को अपने समक्ष पाकर प्रसन्नतापूर्वक गजिन्द्र ने उनको प्रणाम किया और अपनी रक्षा के लिए विनती की। वासुदेव जी ने उसके अपार दुःख को देखकर अपना सुदर्शन चक्र छोड़ दिया और ग्राह का वध कर दिया।

गुरबाणी सोरठि महल्ला 9 (623)

जब भी शरण गए किरपा निधि, गज ग्राह से छूटा।।
महिमा नाम कहां तक बरनउ, राम कहत बंधन से छूटा।।2।।

भगवान के नाम की महिमा का कोई भी अन्त नहीं है। वह अनन्त और असीम कृपा और करूणा के स्त्रोत हैं। जो भी सच्चे मन से उनको पुकारेगा, वह अवश्य ही उसके सहायक बनते हैं। जब गज ने सब तरफ से निराश होकर प्रभु की शरण ली तो वह प्रभु कृपा से तत्काल ग्राह के बंधन से मुक्त हो गया। प्रभु का नाम ही हमें सभी दुखों और संकटो से मुक्ति दिलवा सकता है। अतः हमें उसी सच्चे नाम का निरंतर जाप और ध्यान करते रहना चाहिए।

छन्द :

आकाश में देवते देख रहे हैं, पुष्पों की है वर्षा करी।
ग्राह से जो गजराज छुड़ाया, भगत वच्छल हैं आप हरि।।
ऐसे अंतर्यामी को मन तूं भी यदि ध्याएगा।

कट जावेगा जन्म मरण सब, संकट से बच जाएगा।।
नाम हरि का सार जगत में, अन्त को करता नाम सहाय।
वासुदेव जी रक्षा करेंगे, जो यह पढ़े-सुने अध्याय।।

जब उस भक्त वत्सल भगवान ने ग्राह से गजिन्द्र को बंधन मुक्त किया तो इस प्रभु कृपा से हर्षित होकर देवताओं ने आकाश से पुष्प वर्षा की।

यदि तुम भी ऐसे ही अपने मन में सदा उस दयालु व अंतर्यामी प्रभु का नाम सम्माहित किए रखोगे तो हर प्रकार के कष्टों व बन्धनों से मुक्त होकर आवागमन से मुक्त हो जाओगे।

इस झूठे मायावी जगत में प्रभु का नाम ही सच्चा सहारा है। अंत समय जब अन्य सभी सहारे छूट जाएंगे तो प्रभु का नाम ही हमारा सच्चा सहारा बनेगा। जो भी इस अध्याय को पढ़ेगा अथवा सुनेगा, प्रभु वासुदेव जी उसकी हर प्रकार से रक्षा करेंगे।

बिलावलु महल्ला-5

ऊँच अपार बेअन्त स्वामी, कौण जाणै गुण तेरे।।

(गुरबाणी पृ. 802)

गावत उधरहिं सुनते उधरहिं बिनसहि पाप घनेरे।।
पशु प्रेत मुगध को तारे पाहन पार उतारे।।
नानक दास तेरी शरणाई सदा सदा बलिहारे।।

वह परमात्मा ऊँचे से ऊँचा है, बेअन्त है, अपरम्पार है। इस संसार में उस प्रभु के गुण बखान करने में कोई भी सक्षम नहीं है।

जो भी उसके गुणों का ध्यान करता है, गुणो का बखान करता है अथवा उसकी महिमा का श्रवण करता है तो उसके सभी पाप स्वतः ही नष्ट हो जाते हैं।

वह परमात्मा सबकी सच्ची पुकार सुनते हैं। वह किसी में भी कोई भेदभाव नहीं रखते। चाहे वह मनुष्य हो, पशु-पक्षी हो, प्रेत हो किसी भी अन्य योनि में, उन्हें सभी प्रिय हैं। उनकी कृपा से असंभव भी संभव हो जाता है। डूब जाने वाले पत्थर भी प्रभु की कृपा से तैरने लगते हैं।

हे शरणागत वत्सल प्रभु! मैं आपकी अनन्त कृपाएँ और लीलाएँ देखकर कृतार्थ हो गया हूँ। आपकी करूणामयी दृष्टि, बख्शनहार स्वभाव पर बार-बार बलिहार जाता हूँ।

इति श्री भगत माल संगीत गजिन्द्र दा प्रसंग

नाम सप्तमों अध्याय समाप्तम् ।।7।।

सति करतार

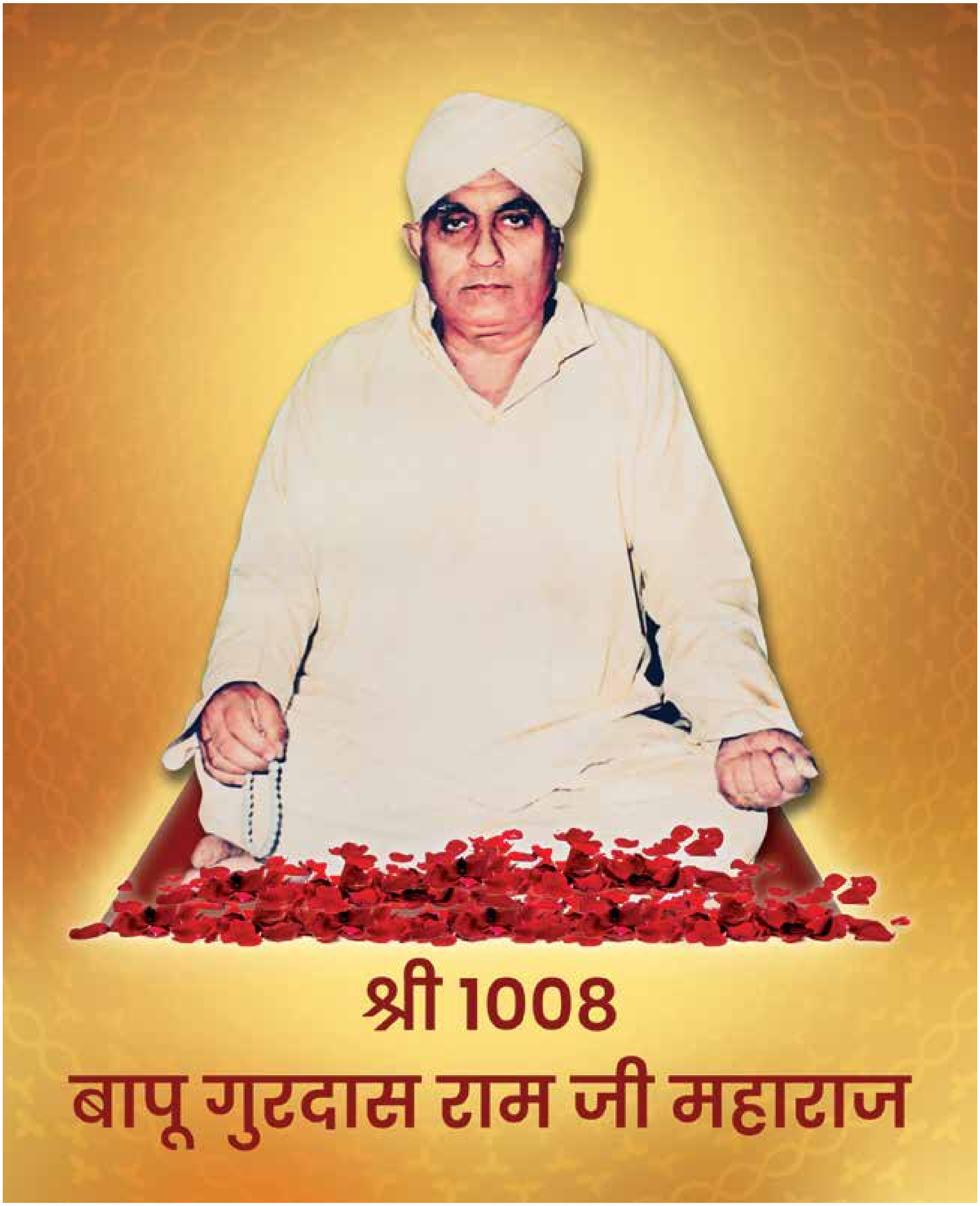
श्री 1008
बापू गुरदास राम जी महाराज

ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

अथ सुदामा जी का प्रसंग

मंगला चरण :

श्री गुरू नानक देव जी की, महिमा कही ना जाए।

चरण वन्दना करता हूँ, अपना शीश निवाए।।

चरण कंवल का आसरा, होवो आप सहाय।

प्रसंग सुदामा भगत का, अब मैं कहु सुनाय।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी, श्री गुरू नानक देव जी की चरण वंदना करने के बाद कह रहे हैं कि गुरू की महिमा बेअन्त है। उनका शब्दों में बखान नहीं हो सकता। मैं अपने गुरुवर को नतमस्तक होकर प्रणाम करता हूँ। इस संसार को पार करने के लिए मुझे केवल आपके पावन चरणों का ही सहारा है। आप ही मेरे कार्य सिद्धि में सहायक हो। प्रसंग, सुदामा भगत की साखी अब मैं शुरू कर रहा हूँ, प्रभु कृपा बनाए रखें।

गुरबाणी

विप्र सुदामा दालद, भज रे मन तूं भी भज गोबिन्द

(भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी।।)

विप्र सुदामा दालिदी, बाल सखाई मित्र सदाए।।

हे मन विप्र सुदामा की भाँति तूं भी उस गोबिन्द को भज, विप्र सुदामा श्री कृष्ण जी के बाल सखा के रूप में जग विख्यात हैं।

दोहरा :

राम नाम जग सार है, राम का नाम उच्चार।

आलस त्यागो हरि भजो, हो जाए बेड़ा पार।।

राम के नाम के समान इस पूरे जगत में और कुछ भी नहीं है। अतः हमें सदैव अपने

सर्वांगीण कल्याण करने के लिए, आलस्य को त्याग कर उस राम नाम का भरोसा रखना चाहिए। राम को निरंतर जप से ही हमारा बेड़ा इस भवसागर से पार हो सकता है। राम के नाम की महिमा अपरम्पार है।

छन्द :

मन मेरे भज नाम हरि दा, नाम बड़ा सुखदाई है।
सुदामा जी दा गया दलिद्र अंत परम गत पाई है।।
सुदामा नाम ब्राह्मण जाति, महा श्रेष्ठ होता भया।
विषयों से बैराग, शांत मन, ब्रह्म जान सब भग गया।।
बंसरी वाले का था मित्र, बीच गृहस्थ के रहता था।
फटे हुए वस्त्र हैं तन के, और अच्छी गुजरान नहीं।।
कभी-कभी भोजन था मिलता, कभी मिलता जलपान नहीं।
अबला भी संतोखन थी, यदि मिल जाए भाग्य से अन्न।
पति को भोग लगा देवे और, आप रहे भूखी खुश मन।।
धर्म पतिवर्ता पाले तन से, हो गया बहुत कमजोर।
थर-थर कांपे पति से डरती, माने हुक्म और रहे अधीन।।
सारे अंग अब शिथिल हुए हैं, मन नहीं वस्त्र पाने को।
आखिर को लाचार हो गई, अन्न ना मिलता खाने को।।
इक दिन बेनती करने लगी, हे पति, कृष्ण है तुम्हारे मित्र।
द्वारका पुरी में राज है जिनका, महिमा उनकी है विचित्र।।
हैं दीनदयाल और किरपालु, भगत की रक्षा करते हैं।

बंसरी वाले से कुछ ले आवों, भूख से अब हम मरते हैं।
यह धीरे-धीरे वचन ब्राह्मणी, अपने पति से करती है।
पति के सम्मुख कभी ना बोले, मन अपने में डरती है।

हे मन तूं सदा हरि का नाम सिमर, जिस सिमरन से तुम्हें भौतिक के साथ-साथ सच्चा सुख भी प्राप्त हो जाएगा। ऐसा नाम जप के फलस्वरूप ही सुदामा जी की सारी दरिद्रता दूर हो गई और उन्हें परम गति भी प्राप्त हो गई।

सुदामा जी एक कुलीन और श्रेष्ठ ब्राह्मण थे, वे स्वभाव से ही शांत मन, वैरागी और ब्रह्मज्ञानी भक्त थे।

वह कृष्ण के बालसखा थे, गृहस्थ में रहते हुए भारी दरिद्रता से जूझ रहे थे। न पहनने को अच्छे वस्त्र थे और ना ही प्रतिदिन खाने को पर्याप्त भोजन जुटा पाते थे।

उनकी पत्नी भी बहुत संतोषी स्वभाव वाली पतिव्रता स्त्री थी। यदि किसी दिन भाग्य से खाना मिल जाता था तो पति को खिलाकर स्वयं भूखी रहकर भी शांत रहती थी।

क्षीण तन हो जाने पर भी निरंतर पति की अधीन रहते हुए उनकी हर आज्ञा का पालन करती थी।

कई दिन तक भोजन ना मिल पाने के कारण उनका शरीर शिथिल और कमजोर हो चुका है। एक दिन इन सभी अभावों के कारण लाचार होकर पति को बोली कि द्वारिकाधीश भगवान श्री कृष्ण आपके अच्छे मित्र हैं। द्वारिकाधीश भगवान श्री कृष्ण की महिमा जग विख्यात है। वह बहुत ही दयालु, कृपालु और भक्त वत्सल हैं। हे नाथ, आप जाकर उनसे मदद माँगें। यह सब बोलते हुए सुदामा जी की पत्नी मन ही मन डर रही है।

दोहरा :

सुदामा जी ने जब सुना, मन में किया विचार।
इस बहाने प्रभु के, होवणगे दीदार।।

अबला को कहने लगे, कर कुछ भेंट तैयार।
खाली हाथ ना जावंना, वासदेव दरबार।।
श्री कृष्ण चन्द्र आनन्द कन्द, आज सब दुनिया दे ताज हुए।
उनको मिलना मेरा मुश्किल, राजों के महाराज हुए।।
ऐ मेरी भारजा तूं कहती है, उनके पास मैं जाता हूं।
अपनी हालत देख-देख मैं, दिल में बड़ा शर्माता हूं।।
किसी गृह से मांग लाई, मुठ्ठी चावल की जो चार।
चावल साफ भी नजर नहीं आते, बांधन को नहीं कपड़ा तैयार।।
दिल में मेरे बड़ी खुशी है, प्रभु को मिलिए चल छेती।
ढूंढा साफा बांधे तदूंल, रॉख लिए है कांख सेती।।

पत्नी की विनती सुनकर सुदामा जी ने अपने मन ही मन यही विचार किया कि मदद के बहाने जाने पर ही सही लेकिन उस मुरली मनोहर के दर्शन तो अवश्य ही कर पाऊँगा।

पत्नी से सुदामा जी कहने लगे कि मित्र के पास खाली हाथ तो नहीं जा सकता। भेंट देने के किसी चीज का तो प्रबन्ध कर दो।

सबको आनन्दित करने वाले श्री कृष्ण अब महाराजाधिराज श्री कृष्ण बन चुके हैं। उनके मन में शंका होने लगी कि इतने बड़े राजा से मुझ गरीब को कोई मिलने भी देगा या नहीं।

हे भार्या, तुम्हारा कहना मानकर मैं जा तो रहा हूँ किंतु अपने फटेहाल देखकर शरमा और कतरा भी रहा हूँ।

पत्नी पड़ोस से चार मुट्ठी चावल मांगकर ले आई जिन्हें कि बाँधने के लिए बड़ी कठिनाई से घर में एक साफ कपड़ा ढूंढा। इस तरह पोटली तैयार करके श्री कृष्ण को भेंट स्वरूप देने के लिए पति को थमा दी। सुदामा जी भी खुशी-खुशी उस पोटली को बगल में

दबाकर चल दिए।

दोहरा :

पहले ही भगवान ने कह दिया दरबान।
आवे विप्र दलिद्री रखियों आप ध्यान।।
बेशक भीतर आन दयो नहीं करना अटकाए।
इतने में सुदामा जी पहुंचे ड्योढ़ी जाए।।

भगवान श्री कृष्ण तो अंतर्यामी है। उन्होंने सुदामा के आने की पूर्व सूचना देते हुए दरबान को निर्देश दिया कि एक दरिद्र ब्राह्मण अपने वाला है, तुम इस बात का ध्यान रखना। आपने उन्हें अंदर आने से रोकना नहीं है। कुछ ही देर में सुदामा जी महल के द्वार पर जा पहुँचे।

भजन

टेक : पहुंचा जब निर्धन ब्राह्मण, कृष्ण के दरबार में,
मस्त ऐसा हो गया भौंरा ज्यों खुश गुलजार में

1. नंगे पांव मिसले मजनूं छोड़ शाही तख्त को
   ड्योढ़ी में आकर के चिपटे अपने जिस्म यार में
2. जिस्म पर कपड़ा नहीं क्यों जिस्म दुबला हो गया
   अफसोस कैसे फंस गए हो दुख की मझधार में
3. लिया बिठाया तख्त पर अपने बराबर मित्र को
   यह मोहब्बत की निशानी प्रेम और प्यार में

4. पानी पटरानी के ले आने पर हुई पल भर की देर
   प्रभु की आंखों से पानी गिरा प्रेम बहार में

5. पांव के कांटे निकाले खुद प्रभु ने हाथ से
   कट के आते हैं जिगर के टुकड़े तेज तलवार में

6. हर तरह खातिर तवज्जो कृष्ण जी करने लगे
   भगवान जी ऐसे हैं मित्र जो हुए संसार में

दोहरा :

सुदामा जी को पलंग पर दिया फिर बिठाए।
महारानी जी रूकमणी हाथ से चौर कराए।।

भगवान श्री कृष्ण ने आदरपूर्वक सुदामा जी को पलंग पर बिठा दिया और महारानी रूक्मणी उनके लिए स्वयं चंवर झूलाने लगी।

छन्द :

पुरवासी जो लोग देख के, मन अपने विचार करन।
महा दलिद्री भूखा ब्राह्मण, इसको बच्चे देख डरन।।
तन में कपड़ा साफ नहीं है, पांव में भी नहीं जोड़ा।
भिक्षा मांगने वाला ब्राह्मण, आया कहीं से तंग थोड़ा।।
खबर नहीं क्या पुण्य किया है, वासुदेव आदर करते हैं।
अपने पलंग पर बिठाया है, सेव कराते हैं घर से।।
वासुदेव जी हाथ जोड़कर, सेवा में हैं खड़े हुए।

त्रिलोकी के नाथ कहाते, प्रेम के साथ हैं जकड़े हुए।
परमात्मा की गति न्यारी, भेद नहीं कुछ आता है।
भिखारी को राज दिलावे, नृप कंगाल बन जाता है।

महल में उपस्थित लोग यह दृश्य देखकर आचंभित हो रहे हैं। मन में विचार कर रहे हैं कि अति दरिद्र, भूखे, नंगे ब्राह्मण की दीन-हीन दशा देखकर जिनसे बच्चे भी भयभीत हो रहे हैं। यह भिक्षुक सा दिखने वाला ब्राह्मण मालुम नहीं कहाँ से आया है। पता नहीं किन पुण्यों के कारण भगवान वासुदेव स्वयं उनका इतना आदर-सत्कार कर रहे हैं। अपने पलंग पर बिठाकर अपनी पटरानी से सेवा भी करवा रहे हैं। साथ ही स्वयं भी करबद्ध होकर उनके सम्मान में खड़े हैं। तीनों लोकों के स्वामी, ऐसे प्रेम के बन्धन में बंधे हुए हैं।

उस परमात्मा के खेल न्यारे हैं। उनका भेद कोई नहीं जान सकता है। उनकी इच्छा हो तो भिखारी को बादशाह बना दे और चाहे तो बादशाह को भिखारी बना दे।

दोहरा :

सुदामा को पूछन लगे, वासुदेव जी आप।
विवाह करवाया आपने, विषयों का नहीं ताप।।

अब वासुदेव जी, सुदामा जी से पूछ रहे हैं कि आपने विवाह करवा लिया है, परंतु आपकी दशा देखकर ऐसा लगता है कि आप विषय-विकार रहित जीवन यापन कर रहे हैं।

छन्द :

अबला आप की महा पवित्र, मुझको नजर वो आती है।
निष्काम भक्ति है तुम समान, बहु कामना से शर्माती है।।
धन-दौलत तुम कुछ नहीं चाहो, भगती मेरी प्यारी है।

निष्काम भगत की यही निशानी, जो ये गति तुम्हारी है।।
यह गुरां की किरपा है, मैं बात जानता हूं सारी।
ज्ञान को देने वाले सतगुरू, जिनकी महिमा है भारी।।

मुझे ऐसा प्रतीत हो रहा है कि तुम्हारी पत्नी पवित्र भाव रखने वाली स्त्री हैं। वह भी तुम्हारी तरह निष्काम कर्मी हैं। किसी भी प्रकार की इच्छा विशेष अपने मन में नहीं रखती। इतनी दरिद्रता का सामना करते हुए भी तुम्हें धन-दौलत की कामना नहीं है। तुम एक निष्काम भक्त हो, जिसे मेरी भक्ति के अतिरिक्त और कोई भी अन्य इच्छा नहीं है।

सतगुरू की कृपा से ही मैं तुम्हारे विषय में यह सब जान पाया हूँ। गुरू की महिमा करने से सद्गुरू ऐसा सब ज्ञान दे देते हैं।

गुरबाणी (सलोकु महला 1)

बलिहारी गुरु आपने दयोहाड़ी सद वार।।
जिन मानस ते देवते कीए करन ना लागी वार।।1।।

अपने महान सतगुरू की अपार कृपाएँ पाकर मैं उन पर बलिहार जाता हूँ। ऐसे प्यारे सतगुरू पर तन-मन सब वार दूँ तो भी उनका ऋण चुकाया नहीं जा सकता। गुरू कृपा हो जाए तो वह बिना देर किए साधारण मनुष्य को भी देवताओं के समान शक्तियाँ, ज्ञान और सभी गुण प्रदान कर देते हैं।

महला ।।2।।

जे सऊ चंदा उगवहि सूरज चढ़इ हज़ार।।
एते चानन होव दा गुरु बिन घोर अंध्‍ि ायार।।2।।

गुरू ही ऐसी महान शक्ति है जो असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान से ज्ञान की ओर, अंधकार से प्रकाश की ओर तथा मृत्यु से मोक्ष की ओर ले जाती हैं।

जैसे हजारों चन्द्रमा और सूर्य का प्रकाश मिलकर भी गुरू के तेज और दिव्य-आलौकिक प्रकाश के सम्मुख फीका और क्षीण प्रतीत होता है। गुरू भी ऐसे ही प्रकाश पुंज हैं। जो हमारे जीवन के अज्ञान रूपी अंधकार को दूर करते हैं। गुरू के बिना इस अंधकार से निकल पाना असंभव है।

छन्द :

तुम और हम गुरभाई, दोनों पास गुरां के पढ़ते थे।
संदीपन जी जो महा दयालु, सब पर किरपा करते थे।।
तिनकी दया दृष्टि से जो, शरण आए नर हुए पार।
ज्ञान को देने वाले गुरू जी, मेरा रूप सो है निरधार।।
जो मानुष तन धारण करके, शरण गुरू की नहीं आता।
ज्ञान प्राप्त नहीं होता, फिर सीधा नरक को है जाता।।
ज्ञान को देने वाले गुरू हैं, गुरां बिना नहीं होता ज्ञान।
जप-तप संयम लाख कमावे, चाहे लाए रोज ध्यान।।
ब्रह्मचार्य को धार ले या चाहे होवे सन्यासी।
बेशक वानप्रस्थी होवे, कटे ना जन्म मरण फांसी।।
जो गुरु सेवा नहीं करता है, वो अरथ जन्म को खोता है।
किसी और कर्म से खुश नहीं, गुरु सेवा से खुश होता है।।

भगवान श्री कृष्ण जी, सुदामा जी से कहने लगे कि मैं और आप दयालु और कृपालु गुरू संदीपनी के पास इकट्ठे पढ़ने के कारण गुरूभाई हैं। गुरू संदीपनी जी की शरण में जो भी आया, उसको इतना ज्ञानवान बना दिया कि उसका कल्याण हो गया। आज मैं जो भी हूँ उनके दिए ज्ञान के कारण ही हूँ। जो मनुष्य जीवन पाकर भी गुरू की शरण में नहीं

जाता है उसे जीवन जीने की सही युक्ति पता नहीं चलती और वह अपनी अज्ञानता के कारण नारकीय जीवन जीता है।

चाहे हम जितना भी अपने आप से जप, तप, संयम, पूजा-पाठ कर लें, किंतु ध्यान-सिमरन-सेवा करने की सही विधि सतगुरू से ही मिलती है।

गुरू ज्ञान के बिना चाहे ब्रह्मचारी हो या सन्यासी हो अथवा भले ही वनों में रहने लगे, जन्म-मरण के बंधन से छुटकारा पाना नितांत असम्भव है।

गुरू सेवा के समान कोई दूसरा पुण्य कर्म नहीं है। गुरू सेवा सर्वोपरि है। जो गुरू की सेवा नहीं करते उनका जीवन अर्थहीन सा ही रह जाता है। सेवा और निष्काम कर्म से गुरू अवश्य प्रसन्न होते हैं।

दोहरा :-

सुदामा जी कहने लगे कृपा आप की सार।

सब देवन के देव हो हे कृष्ण मुरार।।

सब संकल्प है आपका जगत के हो गुरुदेव।

हुआ आपका संग जब तभी कमाई सेव।।

भगवन आपका संग भया तभी हम सेव कमाई है।

हम सब वस्तु को पा चुके हैं, गुरु चरणों से लिव लगाई है।।

बंसरी वाले कहने लगे कि भेंट मेरे लिए हो लाए।

मैं खुश होता हूं उन पर जो मुझे प्रेम से पत्तर चढ़ाए।।

जो बिना प्रेम से बहुत सामग्री, मुझको करते हैं अर्पण।

मैं उन पर खुश नहीं होता हूं, समझ लेवो तुम अपने मन।।

जो प्रेम भाव से मुझको कोई, थोड़ी चीज भी है देता।

बहुत खुशी में होकर जल्दी, उस पासों हूं ले लेता।।
तुम जो कुछ घर से ले आए हो, देने में क्या देरी है।
अमानत क्यों छिपात हो क्या अब मर्जी तेरी है।।

सुदामा जी कहने लगे कि हे कृष्ण मुरार! आप स्वयं ईश्वर स्वरूप हैं और जगत नियन्ता हैं। आपका साथ और मार्गदर्शन पाकर ही मेरे लिए गुरू सेवा सम्भव हो पाई थी।

यह सब आपकी ही कृपा है। वरना में किसी भी योग्य नहीं हूँ। हे भगवन! केवल आपकी दया से ही, मुझे आपके सानिध्य के कारण ही मैं गुरू सेवा का अवसर प्राप्त कर पाया था। आपके साथ और प्यार के बाद मुझे संसार की किसी वस्तु की जरूरत नहीं रही है अब मेरी अनुरक्ति सिर्फ आपके चरणों से ही है।

बंसीधर कृष्ण मुरार बोले, तुम मेरे लिए भेंट लाए हो। मैं उन पर बहुत प्रसन्न होता हूँ जो प्रेम व श्रद्धा भाव से केवल बेल-पत्र ही क्यों न लाए, मैं ऐसा कुछ भी स्वीकार नहीं करता जो बिना श्रद्धा-प्रेम के सामग्री भेंट करता है या अहंकार के साथ कोई भी कर्म मेरे नाम पर करता है। प्रेम-विश्वास-श्रद्धा से समर्पित थोड़ी सी वस्तु भी मुझे बहुत अधिक खुशी देती है। इसलिए मैं जल्दी से उसे स्वीकार भी कर लेता हूँ। तुम घर से जो भी भेंट मेरे लिए सप्रेम लेकर आए हो वह मुझे दे क्यों नहीं रहे हो। तुम मेरी अमानत मुझसे छिपा नहीं सकते। मेरी भेंट किस कारण से छिपा रहे हो।

दोहरा :

सुदामा जी कहने लगे की चढ़ावां नाथ।
लज्जा मुझको आवंदी खाली मेरे हाथ।।

सुदामा लज्जावश सकपकाते हुए कहने लगे कि मैं आपको क्या देने योग्य हूँ, मेरे पास ऐसा कुछ भी नहीं है जो मैं आपको भेंटस्वरूप समर्पित कर सकूं।

भजन

टेक : सुदामा को भगवान पूछने लगे,
भेंट मेरी क्यों मुझको चढ़ाता नहीं,
घर से आए हो जो कुछ हमारे लिए,
देर क्या है जो अब पकड़ाता नहीं

1. भेद मेरे क्यों आप छिपात हैं, वो ही बन के नजारे नजर आते हैं।
   तुम अकेले ही चीज़ को खा जाते हो, क्यों अपनी पिछली आदत हटाता नहीं
2. एक दफा वन में बारिश जो भारी पड़ी, रात काटने को जब दरख्तों की ओट लई
   आई आंधी रात बहुत वहां, वो दिन तो कभी भूल जाता नहीं
3. तन को सर्दी ज्यादा सताने लगी, भूख भी जोर अपना लगाने लगी।
   दांतों की खट खट मुझको आने लगी, खाए छोले मुख को तूं हिलाता नहीं
4. मैंने पूछा सुदामा जी क्या खाता है, पास तेरे कुछ छिपा हुआ नजर आता है
   कहा तुमने पाला ही सताता है, दांत हिलते मैं इनको हिलाता नहीं
5. उस दिन का है तुम को दलिद्र पड़ा, असर जो झूठ का अभी तक नहीं गया
   मुरली वाले ने जो तब्दल का फूस लिया, दासन दास कहे अंत आता नहीं

दोहरा :

सुदामा जी की बगल से निकाले चावल भगवान।
खुशी बहुत मन होवदे लागे कच्चे खान।।

सुदामा द्वारा लाए गए चावलों को उनकी बगल से खींच लिया और प्रसन्नतापूर्वक प्रेमवश होकर त्रिलोकीनाथ वासुदेव उन चावलों को कच्चा ही खाने लगे।

छन्द :

ऐ मित्र सुदामा ये जो चावल प्रेम से भेंट लाए हो।
इसको थोड़े तुम मत मानो विश्व को तृप्त कराए हो।।
ये तेरे प्रेम के चावल जो हैं, मैं इनको कर रहा था याद।
अब तेरी किरपा से मिल गए, मुझको आया घना स्वाद।।
एक ग्रास जब खा चुके हैं, दूजा खाने को हुए तैयार।
रुकमणी जी ने हाथ पकड़ लिया, सुनिए मेरी बात मुरार।।
मित्र के गृह की सौगात जो, अकेले ही क्या खाएंगे।
ऐसी प्रेम भरी वस्तु, हम को नहीं दिलवाएंगे।।
इक मुट्ठी भर चावल पाए, आप हुए हैं बहुत प्रसन्न।
महिमा आपकी कही ना जाए, होंगे आपके भगत भी धन।।
दूसरी मुट्ठी रहन दयो, अब सब संसार का दिया धन।
यदि आपने यह भी खाई, क्या देवोगे मेरा तन।।
जिस ऊपर तुम खुश होते हो, लोक परलोक सब बन जाते।
संसारी सब भोग आनन्द को, अन्त परम गत हैं पाते।।

सुदामा का मान बढ़ाते हुए भगवान ने कहा कि ये जो चावल आपके लिए थोड़े से हैं इसको तुम कम मत समझो वास्तव में यह चावल संपूर्ण जगत को तृप्त करने के लिए प्रचुर मात्रा में हैं। मैं न जाने कब से तुम्हारे द्वारा प्रेमपूर्ण लाऐ जाने वाले इन चावलों की प्रतिक्षा कर रहा था। आज इन्हें खाकर मुझे अभूतपूर्व स्वाद का अनुभव हुआ है।

एक ग्रास खाने के बाद जब प्रभु दूसरा ग्रास खाने लगे, तभी रुकमणी जी ने हाथ पकड़कर विनती करते हुए कहा कि आप ऐसे प्रेम से लाए हुए स्वादिष्ट चावल अकेले ना खाएँ। हमें भी इन्हें चखने को सौभाग्य प्रदान करें।

एक मुट्ठी चावल प्रेम से भरकर जो लाई गई आप उसे पाकर इतने प्रसन्न हो गए हैं। हे करूणानिधान! आप कितने भक्तवत्सल और दयालु हैं। आप केवल भक्तों के प्रेम और भाव को ही देखते हैं। आपकी ऐसी कृपा और दयालुता देखकर आपके सभी भक्तगण अति धन्य हो गए हैं।

हे प्रभु! अब आप प्रसन्न होकर मुझे भी प्रेम से भरे चावल प्रसाद रूप में ग्रहण करने के लिए दे दीजिए ताकि मैं भी कृतार्थ हा जाऊँ। स्वामी जी आप तो प्रेम ही चाहते हैं। आप जिसका भी सच्चा प्रेम व श्रद्धाभाव पाते हैं उसे इस लोक के सभी सुख देने के साथ ही उसका परलोक भी सुधार देते हैं। अर्थात् उसका हर प्रकार से कल्याण कर देते हैं।

दोहरा :

सुदामा जी को कई प्रकार का भोजन दिया छकाए।
आराम कराया पलंग पर सुख बताया ना जाए।
सुदामा जी कहने लगे, ऐसी आज की रात।
सुख हुआ बैकुण्ठ सम, होई गई प्रभात।।
सुबह हुइ तो उठ खड़े, घर को हुए तैयार।
कृष्ण जी ने विदा करते हुए किया बहुत प्यार।।

बड़ी कृपालता है करी दीना दर्शन आए।
सुदामा जी को भेज कर आ गए यादव राय।।

भगवान श्री कृष्ण जी ने सुदामा जी को अनेकों प्रकार के स्वादिष्ट भोजन करवाकर, अति आरामदायक शयन के लिए व्यवस्था करवा दी।

सुदामा जी को ऐसी सुखद व्यवस्था से ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो वह बैकुण्ठ में ही हैं। अगली सुबह सुदामा जी जब घर वापिस लौटने लगे तो कृष्ण जी ने उन्हें अति प्रेमपूर्वक विदा किया।

सुदामा जी को विदा करते हुए विनम्र भाव से यदुवंशी कृष्ण जी बोले कि यहाँ आकर, दर्शन देकर मुझ पर बहुत कृपा की है।

छन्द :

सुदामा चलता जाता है, मन में लगा विचार करन।
प्रभु ने आदर बहुत किया है, जिनका नाम संकट हरन।।
मेरे जैसे दलिद्री को, छाती साथ लगाया है।
बलदेव साथ जो प्यार करन, वैसा ही प्यार जताया है।।
कहां तो वे त्रिलोकी नाथ हैं, कहा दलिद्री मैं पापी।
मुझको पलंग ऊपर बिठा लिया, सेव करन रुकमणी थापी।।
आपने हत्थी वासुदेव ने, चरण धोए सत्कार किया।
उदक पवित्र मान लिया है, आपने मस्तक पर है धरा।।
सम्मान तो मेरा बहुत किया पर, कुछ भी दिया नहीं है धन।
अच्छा हुआ जो कुछ नहीं दिया, मौत मलीन हो जाता मन।।
वासुदेव ने की बहुत किरपा, मेरे बड़े सुखदाई हैं।

यही सोच विचार करता, पहुंच नगर में जाए हैं।
सुदामा का घर ऐसा सुंदर वासुदेव ने बनवाया है।
सब पदार्थों से है भरा, स्वर्ग सा नक्शा खिचांया है।।
सूरज के सम लश्के मंदिर, रत्नों से हैं जड़ा हुआ।
विमान और रथ घने शोभ रहे हैं, सोने का जा बना हुआ।।
सुन्दर बाग बगीचे लगे, बीच तालाब सोहते हैं।
नौकर चाकर बेशुमार हैं, भट कई यश गाते हैं।।
राज समाज बना है पूरा, कमी नहीं अब कोई है।
सुदामा जी अब सोचन लगे, छप्परी किसने गिराई है।।
कौन गरीबां को पूछता है, शक्ति किसने दिखाई है।
छप्पर मेरा गिरा दिया है, कोठी अपनी बनाई है।

वापिस जाते हुए सुदामा जी रास्ते में चलते हुए सोच रहे हैं कि संकट हरने वाले कृष्ण ने मुझे बहुत आदर-सत्कार दिया है।

बलराम की ही भाँति मुझे बहुत ही स्नेहपूर्वक मान देते हुए गले से भी लगाया है।

उन त्रिलोकी नाथ भगवान ने मुझ जैसे दीन-हीन, दरिद्र और पापी व्यक्ति को इतने सम्मानपूर्वक अपने पलंग पर बिठा दिया और महारानी रुकमणी भी सेवा में लग गई।

मुझ जैसे दरिद्र के धूल और कांटों से भरे चरणों को प्रभु ने अपने हाथों से धोकर, उस जल को अपने मस्तक पर धारण कर लिया।

इतना प्रेम, आदर, सम्मान दिया जिसके लिए मैं योग्य नहीं था। फिर चलते-चलते विचार मग्न हैं कि सम्मान तो बहुत दिया किन्तु धन कुछ भी नहीं दिया। पुनः विचार आया कि अच्छा है जो धन नहीं दिया नहीं तो मैं शायद अपनी नज़रों से ही गिर जाता।

वासुदेव द्वारा दी गई कृपा और उनके साथ बिताए हुए अति सुखपूर्वक क्षणों का स्मरण

करते हुए सुदामा जी अपने नगर आ पहुँचे।

अपने घर के स्थान पर एक सुंदर महलनुमा घर दिखा। वह रत्नजड़ित, स्वर्ण से सुसज्जित महल सूर्य की भाँति चमक रहा था। स्वर्ग में पाए जाने वाली सभी दुर्लभ और कीमती वस्तुएँ वहाँ उपलब्ध थी। सुन्दर बाग-बगीचे, घने वृक्ष, तालाब उस महल की सुन्दरता को और बढ़ा रहे थे। महल के बाहर स्वर्ण निर्मित रथ और विमान भी सुशोभित हो रहे थे। सेवा के लिए अनेकों नौकर-चाकर और यशोगान के लिए भाटगण भी विद्यमान थे। उस पूरे राजसी ठाट-बाट में किसी प्रकार की कोई कमी दिखाई नहीं दे रही थी।

सुदामा जी मन में सोचने लगे कि न जाने किस शक्तिशाली ने मुझ गरीब का छप्पर गिरा कर यहाँ अपना महल बना लिया है।

दोहरा :

सुदामा जी डरने लगे, आगे धरन को पैर।
किसी के घर जाना मना, बिन पूछे नहीं खैर।।
हमको गुरू की दया है, हर्ष-शोक नहीं कोय।
छप्पर गिरने का गम नहीं, जो होनी सो होय।।

सुदामा जी आगे चलने को सोच में पड़ गए कि बिना किसी की अनुमति के अंदर जाना उचित नहीं होगा। यदि ऐसे ही भीतर चला जाऊँ तो ना जाने क्या परिणाम हो। उसी क्षण विचार आया कि हमें तो अपने गुरू का ही सहारा है। छप्पर गिरने का मुझे दुःख नहीं है यदि प्रभु की यही इच्छा है तो मेरे लिए भलाई ही होगी।

सलोक महला ९।।
जग रचना सब झूठ है, जान लेह रे मीत।।

अपने मन में हमेशा यह याद रखना है कि यह संसार तो झूठे स्वप्न की भाँति ही है। कुछ

पाने से ना तो खुशी हो और ना खो जाने से विशेष दुःख। ईश्वर ही केवल एकमात्र सत्य है।

गुरबाणी

कहु नानक थिरु न रहै ज्यों बालू की भीत।।4।।9।। पृ. 1428

नानक जी गुरबाणी में यही बात ऐसे समझा रहे हैं कि जिस प्रकार मुट्ठी में भरा रेत फिसलकर छूट जाता है। इसी प्रकार इस संसार के सभी भौतिक सुख-सम्पदा चिर स्थायी नहीं रहती।

भजन

झूठा है सब जगत व्यवहारा
हम ना किसी के कोई ना हमारा।।

झूठा है सब जगत व्यवहारा।। हम ना किसी के कोई ना हमारा।।

तन सम्बन्ध सकल परिवारा।। सो तन हमने जाना न्यारा।।

पुण्य उदय सुख का बड़बारा।। पाप उदय दुख होत अपारा।।

पाप-पुण्य दोऊ संसारा।। मैं सब देखन जानन हारा।।

मैं चारों युग तीन काल अकेला।। पर संयोग भयऊं बहु मेला।।

उपमा निन्दा सब कर कर जाए।। मेरे हर्ष शोक कुछ नाहीं।।

राग है भाते सज्जन मानो।। द्वेष भाव तो दुर्जन जानो।।

राग-द्वेष दोए मम नाहीं। हानि ना लाभ चेतन मद माहीं।।

छप्पर में नहीं प्रेम हमारा।। गम नहीं जो किसी महल बनाया।।

दोहरा :

भगत खड़े हैं सोचते आई सुशीला नारी।
साथ गालियां टहलड़ा पाया गॅल में हार।।

सुदामा जी असमजंस वश वहीं खड़े हुए विचार ही कर रहे थे कि एक सुशीला स्त्री दासियों के साथ कीमती वस्त्र और गहने धारण किए हुए आ पहुँची।

छन्द :

हे महाराज मैं नार आपकी क्यों इतना घबराते हो।
चलिए महल के भीतर स्वामी, किससे आप शर्माते हो।।
तुम गए द्वारिका पुरी को, जिस दिन-रात को सब सामान हुआ।
मेरा तन और तन तुम्हारा भी, देख लो नौजवान हुआ।
इसीलिए हे पति जी मुझको, आप नहीं पहचान सके।
छप्पर की जगह मंदिर बन गया, इसको भी नहीं जान सकें।।
प्रेम भरी दृग जल गिरता है, चरणी शीश निवाता है।
सुदामा जी को भीतर ले गई, पलंग ऊपर बिठलाया है।
चरण धोए चरणमृत पीया, दिल में होती बहुत प्रसन्न।
सुदामा जी सामान देखकर, रहे सोच हैं अपने मन।।
इतना सामान यदि वासुदेव जी कहकर के हमको देते।
बस फौरन ही इन्कार जो करते, कभी नहीं हम थे लेते।।
चलते समय मुझे कुछ ना कहा, यह ईश्वर की बड़याई है।

बिन मांगे से इतनी संपत्ति, गृह मेरे में आई है।
जैसे रात को बड़े जोर से, बादल वर्षा करता है आन।
बस इसी तरह ही मेरे गृह में संपत्ति निश्में (बरसाई) हैं भगवान।।
सुदामा भगत जी बड़े आनन्द से करने लगे अपनी गुजरान।
सांसारिक सुख भोग-भाग कर आखिर हो गया कल्याण।।
ऐ मेरे मन प्रेम से जेकर, करेगा कुछ तूं भी दान।
सभी दलिद्र दूर होवेंगा, अंत को हो गया कल्याण।।
इसीलिए सुदामा जी की साखी पवित्र सुनाई है।
निष्काम दान और नाम जपे फिर प्रभु जी होते सहाई हैं।।
जो कामना करके नाम जपे, और कामना करके करता दान।
मन की शुद्धि नहीं होती है दिल में आता नहीं ज्ञान।।
निष्काम भक्ति को जो करते हैं, लोक परलोक है बन जाता।
साइर किसी को नहीं लावे, आपे ही सब जल जाता।।
ऐ मेरे मन देर ना कर, निष्काम भक्ति का कर ले चाव।
निष्काम ही राम का नाम जपो, पूरा हुआ यह अध्याय।।

सुदामा जी की पत्नी ने आकर सुदामा जी को कहा कि शायद आपने मुझे पहचाना नहीं है, मैं आपकी ही धर्मपत्नी हूँ। जिस दिन आपने द्वारिकापुरी जाने के लिए प्रस्थान किया, उसी समय के दौरान वासुदेव जी ने हमारे जीवन का कायाकल्प कर दिया। यह सुंदर महल आपका ही है। आप कृपा कर बिना कुछ सोच-विचार किए अंदर चलें।

उनकी कृपा के कारण ही ऐसा प्रतीत हो रहा है कि हम दोनों भी पुनः युवा अवस्था को प्राप्त हो गए हैं। हमारे छप्पर का स्थान इस महल ने ले लिया है। श्री कृष्ण जी की अपार

कृपा के कारण अब हमारी सब दुःख-दरिद्रता समाप्त हो गई है। ऐसा सुनकर सुदामा जी अति भावुक हो गए और उनकी आँखों से निरंतर प्रेमाश्रु बहने लगे। अब सुदामा जी उस प्रभु के चरण-कमलों का ध्यान कर बारम्बार मन ही मन धन्यवाद करते हुए उन्हें नमन कर रहे हैं।

सुदामा जी की पत्नी ने प्रसन्नतापूर्वक उन्हें अंदर ले जाकर आदरपूर्वक पलंग पर बिठा दिया। जल से उनके चरण धोकर चरणामृत रूप में उसे ग्रहण किया। सुदामा जी सब सुख-सुविधाएँ देखकर मन में सोचने लगे कि यदि ये सुख सामग्री भगवान ने हमें बिना बताए ना दी होती तो शायद हम यह सब स्वीकार ना करते।

यह वासुदेव जी का बड़प्पन ही है कि इतना कुछ बिना माँगे ही मुझे दे दिया। जल से भरे बादल द्वारा की गई भारी जल वृष्टि के समान ही प्रभु ने मेरे घर में सुख-सम्पदा की इतनी अधिक वृष्टि बरसाई है। आनन्दित होकर, पूर्ण सुखपूर्वक जीवन व्यतीत करने के बाद प्रभु की कृपा से अंततः उनके धाम को चले गए और इस प्रकार से उनका सर्वथा कल्याण हो गया।

सुदामा जी की इस पवित्र साखी के माध्यम से बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी हमें समझा रहे हैं कि यदि हम अपनी सामर्थ्य के अनुसार निष्काम भाव से दान-पुण्य करेंगे तो हमारी सभी प्रकार की दरिद्रता समाप्त हो जाएगी। अंततः हमारा कल्याण होना निश्चित है।

यदि हम किसी भी इच्छा या कामना को मन में रखकर प्रभु नाम सिमरन करेंगे अथवा दान-पुण्य करेंगे तो उस कृत्य का कोई विशेष महत्व व लाभ नहीं मिल पाता। इच्छापूर्ति तो हो जाएगी किंतु अंतःकरण की शुद्धि और ज्ञान का मिलना कठिन है।

अतः निष्काम भाव से की गई भक्ति और दान-पुण्य ही वास्तव में सार्थक होती है। हमारे निष्काम भाव को देखकर ही प्रभु प्रसन्न होकर हमारी हर प्रकार से सहायता करते हैं।

निष्काम भक्ति और इसी भाव से किए गए दान-पुण्य द्वारा ही हमारे लोक-परलोक स्वतः सुखी और निष्कंटक हो जाते हैं। हमारे सभी बुरे कर्म, विकार, विचार, कष्ट स्वतः ही प्रभु कृपा से नष्ट हो जाते हैं।

बापू जी हमारा मार्गदर्शन करते हुए पुनः यही समझा रहे हैं कि बिना किसी देरी के हम

शीघ्रातिशीघ्र तुच्छ सांसारिक इच्छाओं से रहित होकर, पूर्ण मनोयोग और समर्पण भाव से उस परमात्मा की निष्काम भक्ति करें। निरंतर निष्काम भाव से राम-नाम का जाप करें। जितना संभव हो सके अपने तन-मन-धन से निस्वार्थ भाव से सबकी सेवा और सहायता करें।

दोहरा :

पढ़े सुने जो प्रेम से कष्ट सभी मिट जाए।।
सुख सम्पत्त मिल जावेगी अंत परम गत पाए।।
श्री गुरु रामदास जी महिमा अपरम्पार।।
दास जान के बख्श दो सदा हूं भुल्लनहार।।

अंत में बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी आशीर्वाद देते हुए कह रहे हैं कि जो भी शुद्ध भाव से श्रद्धापूर्वक इस कथा का पठन और श्रवण करेगा उसके सभी कष्ट प्रभु दूर करेंगे। ईश्वर की कृपा से वह प्राणी सुख और ऐश्वर्यपूर्वक जीवन बिताते हुए अंततः उस प्रभु के लोक को प्राप्त करेगा। अंततः परम गति की भी प्राप्ति हो जाएगी।

बापू जी चौथे गुरू श्री गुरू रामदास जी का आह्वान और स्तुति करते हुए कह रहे हैं कि हे गुरू रामदास जी! आप मेरे द्वारा की जाने वाली प्रत्येक भूलचूक को क्षमा करें क्योंकि आप स्वभाव से ही दयालु, कृपालु और बख्शनहार हैं।

अति श्री भगत माल संगीत सुदामा जी का प्रसंग

नाम अष्टमो अध्याय समाप्तम् ।।8।।

सति करतार

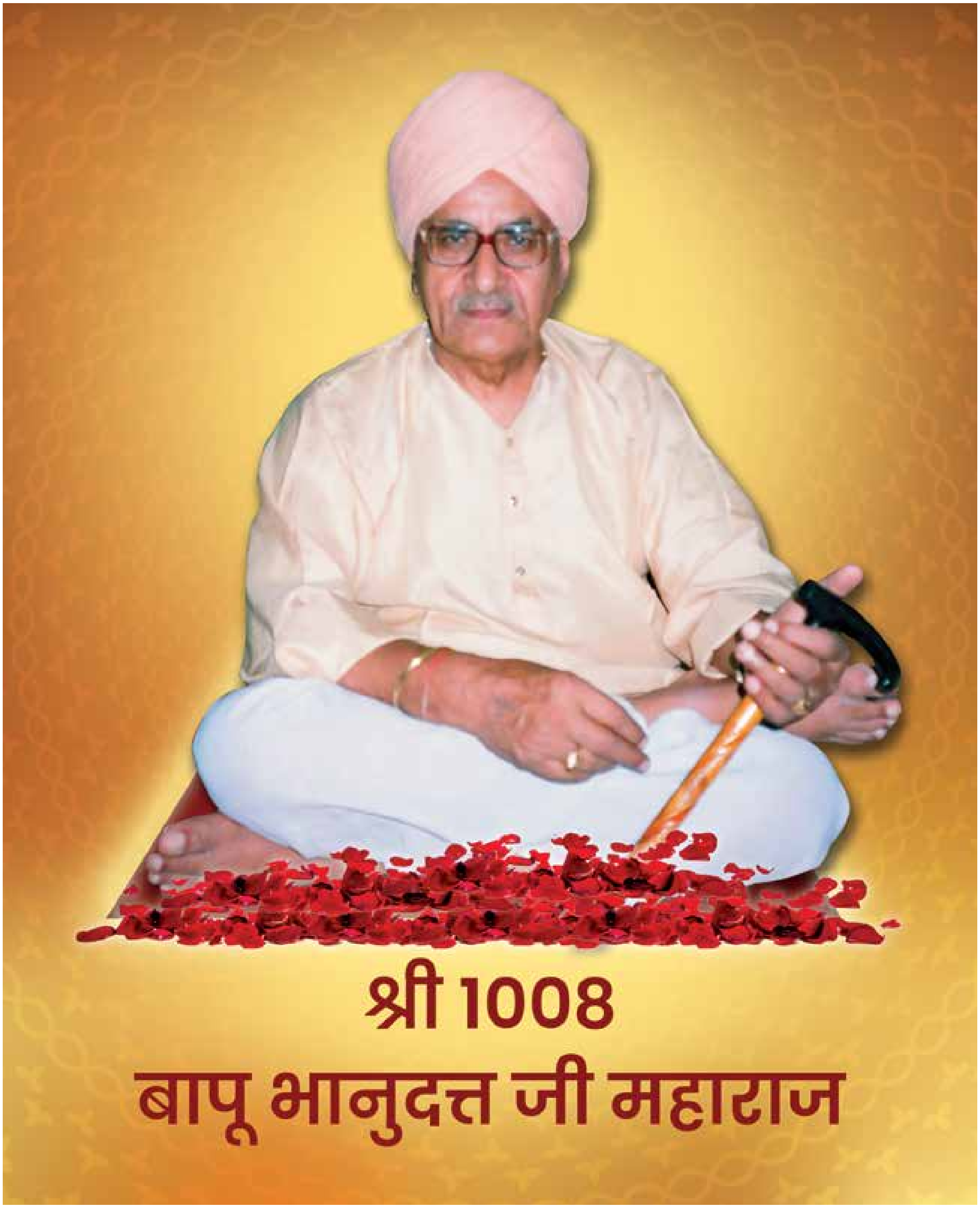
श्री 1008
बापू भानुदत्त जी महाराज

੧ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

अथ बँधाक का प्रसंग

श्लोक :

दण्डवत वन्दन अनिक बार, सर्व कला समरथ।।
डोलन ते राखहूं प्रभु, नानक दे कर हॅथ।।1।।
(गुरबाणी पृ. 256)

श्री गुरू हरनाम जी इनका सरल स्वभाव।
चरण कंवल पर वन्दना होते सदा सहाय।।
निज मन कहा सुनाय के बंधक का प्रसंग।
पाप करता तन गया दिल में धार उमंग।।
सिबंधक उद्धरउ खम्भ प्रहारपि

इस अध्याय का प्रांरभ गुरबाणी के श्लोक द्वारा उस परम पिता के चरणों में दण्डवत प्रणाम करते हुए उनकी स्तुति द्वारा दिया गया है। हे सर्वकला समर्थ प्रभु! आप मेरे सिर पर अपना वरद हस्त सदा ही बनाए रखें ताकि मेरा हृदय, मन, जीव्हा सदैव आपका गुणगान करती रहे और सांसारिक विषय-विकारों में उलझकर भ्रमित ना हो।

तत्पश्चात् बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी सरल स्वभाव वाले अपने गुरू बापू श्री गुरू हरनाम जी की वन्दना सर्वप्रथम कर रहे हैं। उन्हें प्रणाम करते हुए स्थिति में मेरे सहायक बनकर मेरे अंग-संग रहते हैं। इसी प्रकार इस साखी का वर्णन आपने स्वयं ही मुझे माध्यम बनाकर करवाना है।

बँधक जैसे पापी का भी अपने मन में केवल एक सच्ची उमंग और उत्साह होने के कारण प्रभु कृपा से उद्धार हो गया।

भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी 23

जाए सोया परभास में घुटनों पर पैर पसारे।
चरण कंवल में पदम है झिलमिल झलके जैसे तारे।।

भगवान श्री कृष्ण जंगल में एक छायादार वृक्ष के नीचे जाकर विश्राम करने लगे। भगवान श्री कृष्ण के चरणों में चिन्हित पदम, अति चमकदार और आभावान सितारों की भाँति शोभायमान हो रहे थे।

चौपाई :

हरण्याकश्यप हरिणाख्श भारे वैर भाव कर उतरे पारे।।

महा दुहकर्मी रावण भारा, वैर भाव कर उतरया पारा।।

शिशुपाल विरोधी कहे कबोल, वैर भाव कर तर गया अडोल।।

शिकारी जो कंस था पापी, मारे भान्जे कुल का घाती।।

वेर भाव कर तजे प्राण अंत को हो गया कल्याण।।

बँधक ने भी बाण चलाया, दुकरत पापी मुक्त कराया।।

परमात्मा तो इतने करूणामय और दयालु है कि उनसे प्रेम करने वाले तो निश्चित रूप से भव से पार होते ही हैं किंतु जो उनसे वैर भाव भी रखते हैं उन सब का भी वहु दयालु प्रभु उद्धार कर देते हैं। वैर भाव रखकर ही सही निरंतर उनका स्मरण-चिन्तन तो हो ही जाता है।

जिस प्रकार हिरण्यकश्यप और हरिणाख्श दोनों भाई स्वयं को ही भगवान समझते थे, उनके अभिमान को मिटाने के लिए भगवान स्वयं नरसिंह रूप में आए और उनका उद्धार किया।

महा दुष्कर्मी रावण, सीताहरण करके भगवान श्री राम का वैरी बन गया। अंततः श्री राम के हाथों द्वारा मारे जाने पर रावण भी प्रभु धाम को पा गया।

भगवान श्री कृष्ण का घोर-विरोधी, शिशुपाल भी भगवान के सुदर्शन चक्र के प्रहार से भले ही मृत्यु को प्राप्त हो गया किंतु निश्चित रूप से भगवान ने उसे मुक्ति दे दी।

निर्दयी कंस ने कारावास में ही जन्म लेते ही कई अबोध बालकों का वध करने के लिए

अनेकों प्रयास कर डाले किंतु उस दयालु भगवान ने उसका भी कल्याण कर दिया। बँधक के बाण प्रहार से आहत होकर भी भगवान ने उसे अपना परमपद प्रदान किया।

दोहरा :

पतित पावन जो नाम है, इसलिए गए तर।
ऐसा नाम अमोल है, मन तूं जपया कर।।
बँधक का प्रसंग जो, सुन तूं मेरे मन।
बाण मार कर उद्धरया, पाप गए सभी भन्न।।

अपने पतित पावन नाम को सार्थक करते हुए भगवान, सभी पापी पतितों का भी उद्धार कर देते हैं। अपनी कृपा द्वारा अति पवित्र और पावन बना देते हैं। भगवान के नाम की महिमा अनमोल है, तूं निरंतर भगवान के नाम का जप किया कर। भगवान पर बाण प्रहार करने के बावजूद भी श्री कृष्ण जी ने उसके सभी पापों को नष्ट करते हुए उसे भी पावन बनाकर उसका उद्धार कर दिया।

छन्द :

कोई जप करके कोई तप करके, कोई तरया नाम के जपने से।
कोई कर उपासना साधन उद्धरे, कोई उद्धरया धूनियां तपने से।।
पतित पावन है नाम हरि का पापी अनेकों देता तार।
इसीलिए गुरू साहब लिखदे, बँधक उद्धरया खम्भ प्रहार।।

उस परमपिता की प्राप्ति के लिए भिन्न-भिन्न मार्गों द्वारा साधक अनेकों यत्न करते हैं। कोई जप, कोई तप, कोई निरंतर प्रभु नाम सिमरन करके भव से पार हो जाते हैं। ऐसे ही कोई घोर उपासना अथवा साधना द्वारा, तो कोई उस भगवान की स्तुति करने के लिए धूनी रमाकर अपने उद्धार के लिए मार्ग प्रशस्त करता है।

इन विधियों द्वारा परमात्मा प्राप्ति निश्चित ही है किन्तु वह दयालु, कृपालु, पतित-पावन भगवान पापियों और दुष्टों को भी तार देते हैं। इसी कारण गुरबानी में भी बँधक का वर्णन करते हुए यही कहा गया है कि प्रभु ने बाण प्रहार करने पर भी बँधक का उद्धार कर दिया।

छन्द :

पांडवों को यदि राज दिया, धरती बोझ से कीनी दूर।
सुधर्मी नृप को बिठाया, कुकर्मी राज किया चूर।।
कृष्ण जी मन में सोचते हैं, अभी भार बकाया रहता है।
यादवों की कुल है भारी, इसलिए अंहकार में बहता है।।
इस धरती पर भार है बाकी, इसे भी हटाना चाहिए।
यादव सारे नाश होणगे, बुद्धि पर पर्दा डालना चाहिए।।
विश्वामित्र भृगु अंगरा, वासुदेव कश्यप जो साथ।
अति विशिष्ट नारद मुनि सारे, दर्वासा भी आए उसके साथ।।

महाभारत का युद्ध समाप्त होने के पश्चात् धरती से कुकर्मी औरअहंकारी कौरवों का विनाश होने के पश्चात् सुधर्मी पाण्डवों का राज्याभिषेक भगवान श्री कृष्ण ने अपने कर कमलों द्वारा करवाया।

इसके पश्चात् प्रभु श्री कृष्ण जी मन ही मन विचार करने लगे कि कौरवों के अतिरिक्त, अहंकारी यादव कुल भी इस धरती के लिए भार स्वरूप विद्यमान हैं। अब उन

यादवों की बुद्धि पर पर्दा डालकर उन्हें भी भ्रमित करते हुए धरती को बोझ रहित करना चाहिए।

तभी भगवान श्री कृष्ण के दर्शनों के लिए विश्वामित्र जी, भृगु जी, अंगरा जी, कश्यप जी, ऋषि दुर्वासा जी और देवर्षि नारद जी आदि सभी उपस्थित हुए।

दोहरा :

श्री कृष्ण चन्द्र के दरश को आए मुनि सुजान।
पहले यादव कुल के मिलने आ गए सारे बालक।।
ऋषियों को प्रणाम कर बैठे सभी कुमार।
अंदर भरया कपट से बाहरों नमो उच्चार।।

सभी महान ऋषियों का आगमन सुनकर यादव कुल के सभी बालक वहाँ आ गए। मन में तो छल-कपट भरा था किन्तु ऊपरी दिखावे के लिए उन सभी महान विभुतियों को प्रणाम करते हुए वहाँ बैठ गए।

छन्द :

जामवंती के पुत्र सांभ को, स्त्री रूप बनाए लिया।
पेट में ऊंची बाटी बांधी, गर्भवती ठहराए लिया।।
ऋषियों को फिर पूछने लगे, आप जो अंतर्यामी हैं।
इस औरत को क्या जन्मेगा, बतलावो तुम स्वामी हो।।
यदि तुम नहीं बतलावोगे, क्यों दुनिया में घूमते हो।
बीच तुम्हारे क्या शक्ति है, पांव लोग जो पूजते हैं।।
दुर्वासा ने क्रोध किया है, अपने मुख से कहा उच्चार।
इसको मूसल जन्मेगा, जो सबही कुल देऊ मार।।
जब यह बात सुनी लड़कों ने, मन में हो गए बड़े उदास।
सांभ के पेट से कपड़ा खोला, लोह का मूसल निकला खास।।
शर्म के मारे सारे लड़के, मन में बड़ा पछताते हैं।

हमारे कुल का नाश होवे, ऋषि वचन ना बिरथे जाते हैं।।
राजा उग्रसेन पास फिर वो मूसल ले आए।
जो कुछ हाल बीता था सारा सबने दिया सुनाए।।
श्री गुरबाणी में लिखा, नामदेव जो शब्द गाए।
दुर्वासा से करी ठगौरी, यादव फल हैं यह पाए।।
प्रभु के सम्मुख यही वार्ता, सबने रखी है छिपाए।
उस मूसल को पीस-पीसकर समुद्र में दिया बहाए।।
पीसने को जो रह गया टुकड़ा, वो भी कीना चल प्रवाह।
मछली ने जाना चीज अमोलक, फौरन उसका लिया खा।।
तरंग से चूरा बाहर गिरा जो, हो गई पैदा दंभ अपार।
झीवर ने वो ही मछली पकड़ी है, पेट से निकला लोह चमत्कार।।
भाल बनाई उस लोहे की बाण के आगे लिया लगाए।
कोई शिकार न बचता था, चलता था जिसके ऊपर।।
द्वारिका की अब सुनो बात, बड़े उपद्रव होने लगे।
छोड़ दो इस नगरी को तुम, प्रभु आप समझाने लगे।।
स्त्री बालक और वृद्ध तुम, सारे द्वार नगर जाओ।
इस जगह को छोड़ दयो तुम, वापिस लौट के ना आओ।।

उन शरारती बालकों ने रानी जामवंती के पुत्र सांभ को, पेट पर ऊँचा बर्तन बाँधकर, गर्भवती नारी का रूप दे दिया। फिर सभी बच्चे मिलकर ऋषियों से कहने लगे कि आप तो अंर्तयामी हैं, कृपा करके बताओ कि यह नारी किसको जन्म देगी।

यदि आप यह बताने में असमर्थ रहे तो हम यही समझेंगे कि आपको शक्तिवान और

सामर्थ्यवान समझकर दुनिया व्यर्थ ही पूजती है।

इस अपमान से ऋषि दुर्वासा ने क्रोधित होकर कहा कि इसके गर्भ से, एक मूसल की उत्पति होगी जो तुम्हारे सारे कुल की मृत्यु का कारण बनेगा।

ऋषि दुर्वासा जी बात सुनकर सभी बालक भय के कारण उदास हो गए, घबराकर जब उन्होंने सांभ के पेट पर बँधा कपड़ा खोला तो वास्तव में ही ऋषि के कथनानुसार एक लोहे का मूसल ही मिला।

अपनी करनी से शर्मिन्दा होकर सभी बालक मन ही मन बहुत पश्चाताप् कर रहे हैं। साथ ही साथ सोच रहे हैं कि ऋषि के कथनानुसार हमारे कुल का नाश होना तो अब निश्चित है।

वही मूसल अपने साथ लाकर राजा उग्रसेन को दिखलाते हुए सारा हाल ब्यान कर दिया।

इसी बात का वर्णन नामदेव जी द्वारा गुरबाणी में भी किया गया है कि दुर्वासा जी से किए गए असत्य वचन, धुर्तता और उपहास के कारण यादव कुल विनाश को प्राप्त हुआ था।

भगवान श्री कृष्ण से यह घटना छिपाते हुए उन सभी बालकों ने सम्पूर्ण रूप से मूसल को पीस कर समुद्र में बहा दिया।

जो टुकड़ा घिसने से रह गया उसे भी साथ में ही समुद्र में बहा दिया। उस टुकड़े को कुछ अमूल्य वस्तु समझकर मछली ने ग्रहण कर लिया।

ऊँची उठती समुद्र की लहरों द्वारा कुछ चूरा समुद्र के किनारे आ गिरा। मछुआरें के जाल में भी वही मछली जा फसी। काटे जाने पर उसके पेट से वही चमकता हुआ मूसल का एक लोहे का टुकड़ा निकला।

शिकारी ने इस टुकड़े से भाल बनाकर उसे अपने बाण के आगे लगा दिया। उस भाल द्वारा वह बाण ऐसा अचूक बन गया कि उसके प्रहार से, शिकारी द्वारा किया गया कोई भी शिकार बच नहीं पाता था।

इसी बीच द्वारिका नगरी में भी भारी उपद्रव होने शुरू हो गए थे। प्रभु ने भी स्वयं सभी

को द्वारिका नगरी छोड़ने का और फिर वापिस न लौटने का परामर्श दिया।

दोहरा :

इतना कहकर कृष्ण जी आप भी हुए तैयार।
प्रभास क्षेत्र में पहुंच गए लीला अपरम्पार।।

सबको ऐसा समझाते हुए भगवान श्री कृष्ण जी स्वयं भी द्वारिका नगरी छोड़कर प्रभास क्षेत्र में आ गए। प्रभु की ऐसी लीला को समझ पाना असंभव है।

छन्द :

जाकर स्नान किया उपवास व्रत को लीना धार।
अनिष्टों को दूर करने की, सब सामग्री करी तैयार।।
सुनिए बात अब यादवों की, कैसे उनकी बिगड़ी बुॅद्ध।
मदिरा पी ली तीर्थ जाकर, भूल सब तन की सुध।।
माया के कारण सब मरे हुए से, भूल गया है निज का ज्ञान।
उसी समुद्र तट पर पहुंचे, हाथ में लेकर तीर कमान।।
जैसे वन के हाथी दांत कर, हाथियों को ही मारते हैं।
बस इसी तरह वो लड़ने लगे, मरते जाते सारे हैं।
पुत्र पिता से, पिता पुत्र से, भ्राता-भ्राता से हैं लड़ते।
मामा-भांजा, नाना-दोहत्तरे, दादा-पोता नहीं अड़ते।।
भगवन उनको रोकने लगे, मारने को दौड़े वैरी जान।
ऐसा मद का जोश चढ़ा है, भूल गया है सबको ज्ञान।।
सभी शस्त्र जब टूट गए, वो ही हाथ में पकड़ी दम्भ।

तेज दो खण्ड धार बन गई, उसी से कट कर मर गए सब।।
जैसे बांस की अग्न बांस के, बन को भस्म कर डालती है।
बस इसी तरह सब यादव मर गए, अग्न क्रोध की जालती है।।
बलदेव जी ने समुद्र तट पर, पारब्रह्म का किया ध्यान।
ज्योति जोत समाए गए हैं, छोड़ दिए जो तन से प्राण।
भगवन सोचा सब चले गए हैं, बाकी मेरा रहे शरीर।
जो आया सो सबने जाना, यहां बस होती आखीर।।

प्रभास क्षेत्र में पहुँचकर प्रभु ने स्नान, जप, तप, व्रत उपवास करते हुए आशंकित अनिष्टों को दूर करने के लिए सभी प्रयोजन करने आरम्भ कर दिए।

इधर यादवों की बुद्धि इतनी भ्रष्ट हो गई कि उन्होंने तीर्थ स्थलों पर जाकर भी मदिरा पान कर ली।

माया द्वारा भ्रमित होने के कारण उनका सभी ज्ञान और सुधबुध मानो लुप्त ही हो गए थे। वे सभी हाथों में धनुष-बाण लिए हुए उसी समुद्र तट पर जा पहुँचे जहाँ लहरों द्वारा उस मूसल का चूरा फेंका गया था। वहाँ जाकर मदमस्त हाथियों की भाँति एक दूसरे पर ही प्रहार करते-करते मृत्यु को प्राप्त होते चले गए।

आपस में सभी पारिवारिक रिश्ते-नाते भूलकर बस लड़ते ही चले जा रहे थे। मदिरा के नशे में धुत होने के कारण किसी प्रकार का भी मान नहीं रहा। भगवन् के स्वयं रोकने पर भी उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा।

आपस में बुरी तरह से लड़ते-लड़ते जब सभी अस्त्र-शस्त्र टूट गए और लड़ने को कुछ भी नहीं बचा। उसी समुद्र तट पर लहरों द्वारा छोड़े गए उस मूसल अवशेष को हाथों में

उठा लिया। ऋषि दुर्वासा के श्राप के कारण वह मूसल के अवशेष नुकीले हथियारों में परिवर्तित हो गए।

जिस प्रकार से एक बांस में लगी आग बांस के सारे जंगल को ही जलाकर समाप्त कर

देती है। उसी प्रकार क्रोध और अज्ञान के कारण उसी मूसल द्वारा बने हुए शस्त्रों से आपस में ही लड़ते हुए सभी यादव एक-दूसरे की मृत्यु और विनाश का कारण बन गए।

बलराम जी ने भी उसी समुद्र तट पर उस पारब्रह्म का चिन्तन और ध्यान करते हुए स्वेच्छा से अपने प्राण त्याग दिए।

अब भगवान श्री कृष्ण सोचने लगे कि यदुवंश का होने के कारण और इस नश्वर संसार की रीति अनुसार मैं ही इस शरीर को त्यागने के लिए एकमात्र शेष रह गया हूँ।

गुरबाणी श्लोक महला 9।।

राम गयो, रावण गयो, जा को बहु परिवार।।

कहूं नानक थिरु कुछ नांहि, सपने जैसा संसार ।।40।। (पृ. 1428)

जो उपजयो सो बिनसु है परै आज के काल।

नानक हरि गुण गाई लै छोड़ सगल जंजाल।। (1828)

झूठे तन को छोड़ गए हैं, जितने भी हुए अवतार।

इसीलिए अब कृष्ण चन्द्र भी, तन से लागे करन किनार।।

पीपल तले सुख आसन हुए, पैर में पदम् का लिशकारा।

बँधक सोचे मृग है कोई, खींच बाण उसने मारा।।

गुरबाणी भी यही समझाती है कि संसार स्वप्न की भांति क्षणभंगुर है। यदि भगवान भी मनुष्य रूप में अवतरित होकर इस संसार में आते हैं तो उन्हें भी इस शरीर को त्यागना पड़ता है। भगवान श्री राम भी इस संसार में धर्म-स्थापना करने के पश्चात् अपने विष्णुलोक चले गए। चाहे राम हो अथवा रावण जैसा महापराकर्मी, बड़े कुल परिवार वाला या स्वयं को अजेय समझने वाला प्राणी हो। कोई भी सदा नहीं रहा और ना ही कोई रह पाएगा। सभी का इस संसार को त्यागना सर्वथा निश्चित ही है।

गुरू नानक जी आगे कह रहे हैं कि जिसने भी इस संसार में जन्म लिया है उसका विनाश

को प्राप्त होना शाश्वत सत्य है। इसी कारण इस सत्य को भली-भाँति जानकर हमें अपना जीवन उस हरि के गुणगान करते हुए और सभी प्रकार के जंजालों से मुक्त रहकर सत्कर्म करते हुए बिताना चाहिए। ऐसा करने से ही हमारा उद्धार होना संभव है।

अन्य सभी अवतारों की भाँति भगवान वासुदेव भी अब अपने इस शरीर को त्यागने की इच्छा कर रहे हैं। ऐसा सोचते हुए भगवान श्री कृष्ण पीपल के वृक्ष के नीचे विश्राम मुद्रा में आ गए। भगवान के चरण कमलों में चिन्हित पदम की आलौकिक आभा और प्रकाश को हिरन की चमकती आँख समझकर बँधक ने अपने धनुष-बाण से वहाँ प्रहार कर दिया।

दोहरा :

जरा नाम बँधक गया, जल्दी प्रभ जी पास।
ऐ किरपानिधि बख्श दयो, समझो अपना दास।।
हाथ जोड़ कहने लगा करो दूर सब पाप।
अपराधी गुनाहगार हूं नष्ट होण तरै ताप।।

जब बँधक को अपनी इस भूल का आभास हुआ तो वह घबराकर वासुदेव के पास

जाकर अपनी इस भूल के लिए क्षमायाचना करने लगा। हाथ जोड़कर विनती और अनुनय करते हुए भगवान से कहने लगा, हे किरपानिधि! मुझे अपना तुच्छ दास जानो, मैं अवगुणों से भरा हुआ नीच और पापी व्यक्ति हूँ। अब आपकी शरण में आया हूँ, आप दयापूर्वक मेरे

द्वारा किए गए पाप को क्षमा करें।

छन्द :

हे महाराज मैं जीवों की, दिन-रात जो हिंसा करता हूं।
मृग जानकर बाण मैं छोड़ा, लगा आप को डरता हूं।।

हे प्रभु आपका नाम जगत में, श्रेष्ठ बहुत कहलाता है।
नाम लेने से सभी पाप नष्ट हों, परम गति को पाता है।
मेरे जैसा और ना पापी, आपको बाण चलाया है।
मुझको भी अब जान से मारो, क्यों इतना समय लगाया है।।

हे भगवान! मैं दिन-रात जीव हत्या करने में ही सलंग्न रहता हूँ, इसी कारण भ्रमवश हिरण समझकर मैंने आप पर बाण चला दिया। कुछ भयवश होकर भी प्रभु से प्रार्थना करते हुए कह रहा है कि इस संसार में सर्वश्रेष्ठ केवल आपका पावन नाम ही है। जो भी भाव सहित आपका नाम लेता है उसका परम गति को पा जाना सर्वथा निश्चित है। दीन हीन भाव से बँधक वासुदेव से कह रहा है कि मुझसे बड़ा पापी इस संसार में अन्य कोई नहीं है क्योंकि मैंने आप पर बाण चलाकर आपको पीड़ा पहुँचाई है। अतः आप मेरे इन प्राणों का हरण कर लीजिए क्योंकि ऐसा अक्षम्य पाप करने के बाद मैं इस संसार में जीवित रहने का अधिकारी नहीं हूँ।

भजन

टेक : प्रभु जी तार-तार-तार आया तेरी शरण
आया तेरी शरण मिटे जन्म मरण

1. पाप किया मैं ऐहो भारी, तीर चलाया गई मति मारी
   लाहो भार-भार-भार आया तेरी शरण
2. निशदिन जीव पकड़ कर मारे, जुल्म कमाए होर वी भारे
   लवों सार-सार-सार आया तेरी शरण
3. भुलकर तुम्हरा नाम ना लीता, विषयों में सब जन्म है बीता

गया हार-हार-हार आया तेरी शरण

4. पापी आपने बहुत तारे, दासन दास पड़ा आन द्वारे
पाप जार-जार-जार आया तेरी शरण

दोहरा :

बँधक की सुन बेनती, खुश हुए कृष्ण मुरार।
तेरा कुछ कसूर ना, हुक्म यह करतार।।

बँधक की ऐसी प्रेमपूर्वक, भावभीनी प्रार्थना और आग्रह सुनकर भगवान श्री कृष्ण प्रसन्न होकर कहने लगे कि इसमें आपका कोई भी दोष नहीं है। यह सब तो उस परमात्मा की इच्छा का ही परिणाम है।

छन्द :

मेरे ही मन की कामना थी, सो आज हो गई है पूर्ण।
ऐ बँधक तूं सोच ना कर, सभी पाप तेरे हो गए चूर्ण।।
कुछ उमर तेरी अभी है बाकी, अंत काल जब आएगा।
मन अपने में निश्चय कर ले, तूं बैकुण्ठ को जाएगा।।
उमर भोग के मरया बँधक, बैकुण्ठो विमान आया।
महापापी जो बँधक तरया, एक निमख हरि गुण गाया।।
इसलिए साखी बँधक की, तेरे लिए सुनाई है।
नाम हरि का जप मन प्यारे, नाम बड़ा सुखदाई है।
ऐ मेरे मन नाम हरि का, सुबह और शाम ध्यावेगा।
श्री गुरुदेव सहाई तेरे, जन्म-मरण कट जावेगा।

ऐसा बँधक पापी भारा, प्रभु ने गले लगाया है।
पतित पावन है नाम प्रभु का, क्यों मन तूं ये भुलाया है।।

तुम्हारे द्वारा बाण प्रहार के रूप में वास्तव में मेरी ही मनोकामना पूर्ण हुई है। इसी कारण ऐ बँधक, तुम सोच विचार छोड़ दो, इसमें तुम्हारा कोई दोष नहीं है बल्कि इस कर्म द्वारा तुम्हारे द्वारा किए गए सभी पापों का अन्त हो गया है।

भगवान वासुदेव प्रसन्नतापूर्वक बँधक को वरदान देते हुए कहते हैं कि तुम अपनी शेष आयु पूर्ण करने के बाद निश्चित रूप से ही मेरे बैकुण्ठ धाम को प्राप्त करोगे।

केवल एक क्षण मात्र को ही हरि गुण गाकर, हरि जी के कथनानुसार पापी बँधक को अंत समय सुन्दर विमान बैकुण्ठ ले जाने के लिए आ गया।

बापू जी हम सब का मार्गदर्शन करते हुए बार-बार यही समझा रहे हैं कि जिस प्रकार बँधक क्षण मात्र को ही प्रभु नाम लेकर बैकुण्ठ धाम का अधिकारी बन गया उसी प्रकार इस साखी के माध्यम से हमें भी अधिक से अधिक प्रभु नाम का सिमरन करने के लिए प्रेरित होना चाहिए।

यदि हम प्रतिदिन सुबह-शाम, हर पल नाम चिन्तन करते रहेंगे तो हमारे मन को स्वतः ही एक अभूतपूर्व सुख और शांति का अनुभव होने लगेगा। यदि हम इस मार्ग पर अग्रसर होंगे तो वह परमात्मा सभी प्रकार के दुखदायी बंधनों से मुक्त कर देंगे। सद्गुरु हर समय, हर स्थान पर सहायक होंगे। ऐसा निरन्तर अभ्यास करते रहने पर सच्चे सद्गुरु की कृपा तो हरपल बरसेगी साथ ही सारे भौतिक सुख भी प्राप्त होंगे।

उस पतित पावन प्रभु ने अपने नाम को सार्थक करते हुए करूणा भाव से बँधक जैसे पापी द्वारा किए गए सभी दुष्कर्मों और अवगुणों को भुलाकर उसे भी अपने गले से लगाकर पावन पवित्र बना दिया। क्षण भर की स्तुति और प्रार्थना से रीझकर उसे अपना बैकुण्ठ धाम भी प्रदान कर दिया। इसी कारण हमें भी सदैव उस दीनबंधु करूणानिधान श्री हरि को अपने हृदय में बसाए रखना चाहिए और उनका निरंतर नाम स्मरण करते रहना चाहिए।

ऐसा कर्म करने से हम जैसे पापियों का भी उद्धार दयालु परमात्मा करेंगे।

भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी 23

गॅल विच लीता कृष्ण जी, अवगुण कीता हरि न चितारे।

भले भले कर मनया बुरया दे हरि काज सवारै

पाप करेंदे पतित उद्धारे ।।23।।10।।

भगवान श्री कृष्ण ने अपने भक्तों के किए सभी पाप-अवगुणों को भुलाकर उन्हें अपने कण्ठ से लगाया है, चाहे अजामिल हो, गणिका हो अथवा बँधक सभी का उद्धार कर दिया। बुराईयों को भी भुलाकर उनकी क्षणिक अच्छाईयों और नाम स्मरण से प्रसन्न होकर भगवान ने उन्हें अमर बना दिया। हमें भी ऐसे दीन हितकारी को रोम-राम में बसाकर श्वास-श्वास में उस परमपिता का चिन्तन और नाम सिमरन करने का भरपूर प्रयत्न करते रहना चाहिए।

दोहरा :

सतगुरु किरपा हो गई पूरा हुआ अध्याय।।

पढ़े सुने जो प्रेम से पाप नष्ट हो जाए।।

मेरे सच्चे श्री सद्गुरु जी की कृपा के कारण यह बँधक का अध्याय सम्पूर्ण हो पाया है। जो कोई भी श्रद्धापूर्वक पूरा विश्वास रखते हुए इस साखी का पठन और मनन करेगा व इससे प्रेरणा लेकर अपने जीवन को प्रभु भक्ति और सत्कर्मों में लगाने की चेष्टा मात्र भी करेगा तो परमात्मा की कृपा से उसका जीवन सफल और सार्थक होगा।

इति श्री भगत माल संगीत बँधक का प्रसंग वर्णन

नाम नवमों अध्याय समाप्तम्।।९।।

सति करतार

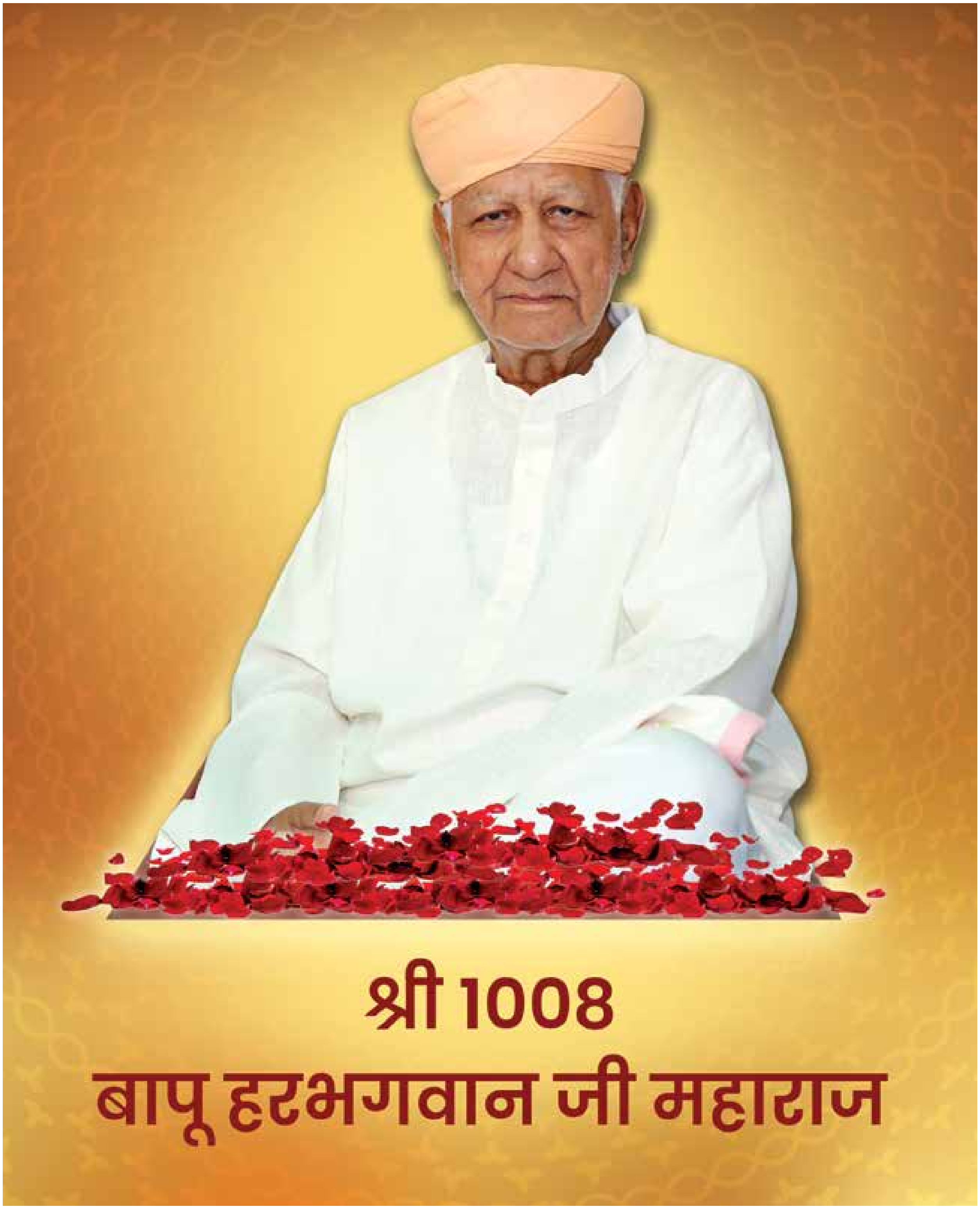
श्री 1008
बापू हरभगवान जी महाराज

ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

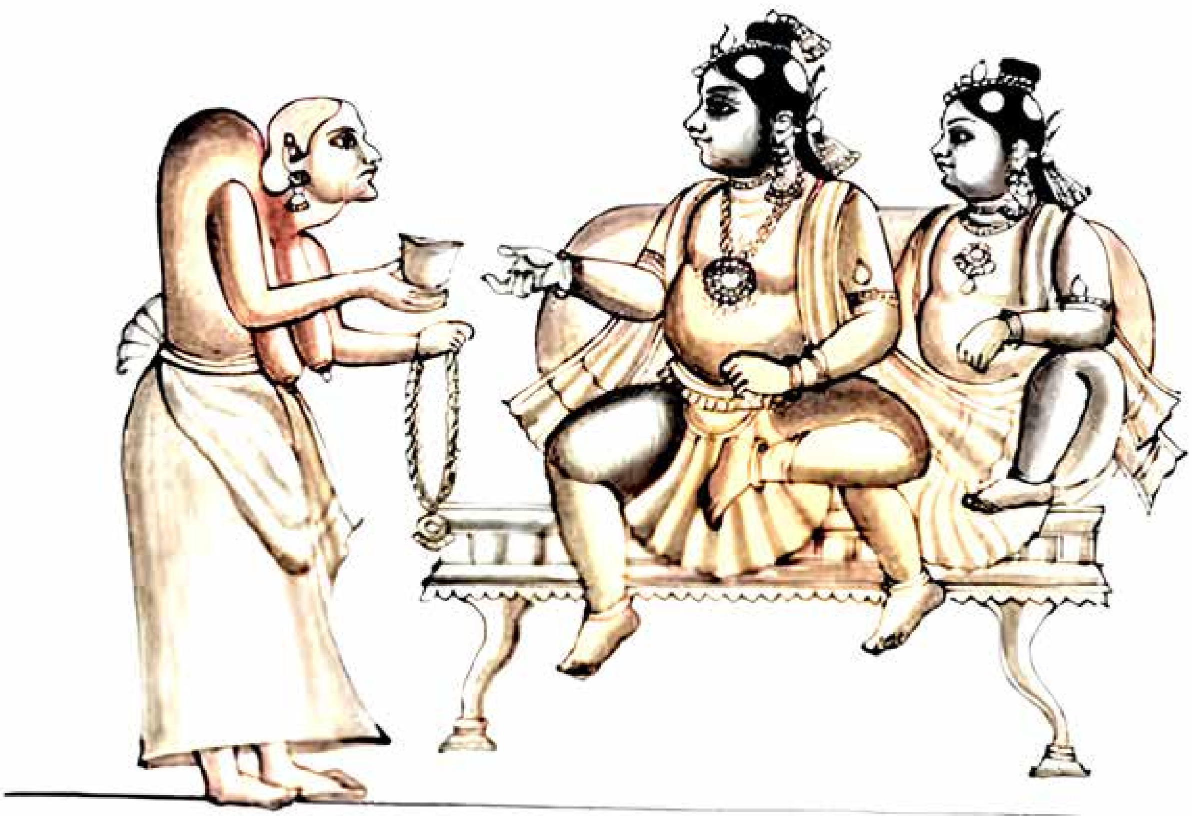

अथ कुब्जा का प्रसंग

सलोकु :

दीन दरद दु:ख भंजना घट घट नाथ अनाथ।।

शरण तुम्हारी आयो नानक के प्रभु साथ।।2।।

(श्री सुखमनी साहिब)

श्री गुरु हरनाम जी, करता हूं प्रणाम।

चरण कंवल का आसरा, रहे सुबह और शाम।।

कुब्जा की साखी कहूं, होवो आप सहाय।

दीन दयाल कृपाल हो, महिमा कही ना जाए।

गुरबाणी

कुब्जा उद्धारी अंगुष्ट धारि

कुब्जा का अध्याय प्रारंभ करते हुए बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी उस परमपिता के चरणों में गुरुबाणी के माध्यम से प्रार्थना कर रहे हैं-हे दीन बन्धु, करूणानिधि भगवन! आप ही हम सबके दु:ख-दर्द को दूर करने वाले हैं। आप बेसहारों के सहारे, अनाथों के नाथ और निआसरों के लिए सच्चा आसरा हैं।

हे मेरे साहिब! हम सब आपके भरोसे ही जीवनयापन कर रहे हैं। आप बख्शनहार हैं। अपने नाम की शान निभाते हुए हमारे ऊपर अपना कृपा भरा हाथ सदा बनाए रखना।

हे दीनदयालु एवं कृपालु सद्गुरू जी! आपकी महिमा अपरम्पार है। सदा की भाँति इस कुब्जा की साखी वर्णन में भी आप मेरे सहायक और मार्गदर्शक बनें।

छन्द :

ऐ मेरे मन शरण प्रभु की, यदि तूं भी आवेगा।
कुब्जा तरह उद्धार होवेगा, जन्म मरण कट जावेगा।।
सुन तूं साखी कुब्जा की, जिस तरह संसार से हुई पार।
मथुरा में अवतार लिया और, गोकुल में जा बसे मुरार।।
जब कंस ने नारद के मुख से, सब हाल अपने बारे में सुन लिया।
कृष्ण चन्द्र जी प्रकट हो गए, अब आवेगा मेरा काल।।
अक्रुर को भेजा गोकुल में, साथ कृष्ण को ले आओ।
मैंने यज्ञ करना है जरूर आए, बात ये तुम उन्हें समझा दो।।
घने सूरमें मारे मेरे, पेश नहीं अब चलती है।
इसी बहाने बदला ले लूं, ज्वाला दिल में जलती है।।
अक्रुर चले गए वृन्दावन को, सारा हाल सुनाया है।
साथ मेरे तुम चलो स्वामी, कंस ने तुम्हें बुलाया है।।

जिस प्रकार कुब्जा भगवान श्री कृष्ण की कृपा पाकर जन्म-मरण के आवागमन से मुक्त होकर संसार रूपी भवसागर से पार हो गई, इसी प्रकार यदि हे मन! तुम भी हरि की शरण में आ जाओगे तो कुब्जा की भाँति सभी पापों का नाश करके प्रभु तेरा भी उद्धार कर देंगे। अब मैं कुब्जा की साखी सुनाता हूँ।

जब देवर्षि नारद जी द्वारा कंस ने अपने बारे में की गई भविष्यवाणी सुनी तो उसे श्री कृष्ण जी के अवतरित होने पर यह भय निरंतर सताने लगा कि मेरा काल अब निकट ही है। भगवान श्री कृष्ण जी ने मथुरा में अवतार लिया किन्तु नन्द जी और यशोदा जी के पुत्र बनकर गोकुल में ही रहने लगे।

कंस ने अक्रुर जी को यज्ञ के बहाना बना श्री कृष्ण जी को आमंत्रित करने के लिए गोकुल

भेजा।

कंस द्वारा भेजे गए अनेकों शूरवीर भी जब भगवान श्री कृष्ण जी का बाल भी बाँका नहीं कर पाए तो यज्ञ के बहाने मथुरा बुलाकर बदला लेने की सोची।

कंस के आदेशानुसार अक्रुर जी ने वृंदावन आकर वासुदेव जी को यज्ञ के लिए मथुरा चलने का निमंत्रण दिया।

भजन

टेक : भगवन तूं है दयालु सुनो बेनती हमारी
गॅल फूल माला सोहे सिर मोर मुकुट धारी

1. उर्वी दुखी पुकारे जदों पाप होण भारे-भारे
   दुख आन करके टारे मेरे शाम है मुरारी

2. दुष्टों ने जोर लगाया, अधर्म को फैलाया
   भारत में तो ही आया, खलकत तराने सारी

3. यह कंस पापी भारा, बहुत जुल्म है गुजारा
   माता-पिता तुम्हारा, जंजीर बांध भारी

4. दासन दास है सुनावे, पापी रहम ना खावो
   इस जंग के बुलावे, सच बात है उच्चारी

दोहरा :

मथुरा में आए प्रभु, जिनका नाम मुरार।
बलदेव जी जिनके साथ हैं, पहले आए बाज़ार।।

बलराम जी के साथ प्रभो सर्वप्रथम मथुरा के बाज़ार में भ्रमण के लिए जा पहुँचे।

छन्द :

कुबरी नाम की थी जो मालन, सुंदर रूप है टेढ़ा तन।
इसलिए है नाम भी कुब्जा, कुँबी कर गया रूप है तन।।
हाथ में कटोरी उसके, चन्दन रगड़कर भरी हुई।
वासुदेव जी आते देखे उसे, बाजार में खड़ी हुई।।
बतला दे तूं कसकी औरत, वासुदेव ने पूछा हंस।
यह चन्दन किसके पास ले जाना, हाल सारा तूं जल्दी बता।।
हे अबला यह चंदन यदि, प्रेम से मुझको चढ़ाओगी।
इसमें कोई संदेह नहीं है, तू मुक्ति को पावेगी।
जो प्रेम भाव से फूल-पत्तर, चन्दन, इत्र चढ़ाता है।
बस इतने में खुश होता हूं, वो परम धाम को जाता है।।

बाज़ार में वासुदेव जी की दृष्टि चंदन से भरी कटोरी लिए खड़ी हुई एक स्त्री पर पड़ी। जिसका नाम कुबरी था। कुबरी नामक मालिन वैसे तो रूपवान थी परंतु टेढ़ा तन होने के कारण उसकी पीठ पर कुँब निकला हुआ था। इसलिए सभी उन्हें कुब्जा कहकर पुकारते थे।

वासुदेव जी ने हँसते हुए कुब्जा से पूछा कि बताओ कि तुम किसकी स्त्री हो और चन्दन से भरी कटोरी किसके लिए लेकर जा रही हो। तत्पश्चात् भगवान कहने लगे यदि तुम प्रेमपूर्वक यह चन्दन मुझे अर्पित करोगी तो निश्चित ही तुम मुक्त हो जाओगी। भगवान वासुदेव तो केवल प्रेम और सच्चे भाव के ही भूखे हैं। इसी कारण कहने लगे कि जो भी मुझे प्रेमपूर्वक फूल, पत्र, चन्दन, इत्र आदि चढ़ाता है तो मैं इतने में ही प्रसन्न हो जाता

हूँ। मुझे किसी मूल्यवान भेंट की इच्छा नहीं होती। मैं तो केवल भक्त की श्रद्धा, सच्चा भाव, रोम-रोम में अपनी याद को ही देखता हूँ।

दोहरा :

यह सुनकर कुबरी, बोली वचन उच्चार।
दासी हूं मैं कंस की, जाती हूं नित दरबार।।

यह सुनकर कुब्जा ने उत्तर दिया कि मैं कंस की दासी होने के कारण यह चन्दन प्रतिदिन उसके दरबार में लेकर जाती हूँ।

छन्द :

हे महाराज मैं कंस की दासी, कुबरी नाम कहाती हूं।
चंदन घिसना काम है मेरा, बहुत खुश्बुएं पाती हूं।।
इसलिए राजा खुश हो जाए, उसको रोज चढ़ाती हूं।
यही मेरा रोज़गार बना है, नौकरी करके अन्न खाती हूं।।
भाग्य मेरे आज प्रगट हुए, किया है जो आपका दर्शन।
कुछ परवाह नहीं राजा की, चंदन चढ़ाऊं आपके तन।।
वासुदेव बलदेव युगल को, प्रेम से चंदन चढ़ाया है।
कस्तूरी, इत्र की सुगंधि मिली है, मुश्कपूर भी मिलाया है।।
घने प्रेम से कुब्जा चन्दन, कर अपने से लगाए रही।
नम्र भाव से करे बेनती, प्रभु जी को सुनाए रही।।

कुब्जा पुनः कहने लगी कि हे नाथ! मैं कुबरी, राजा कंस की दासी हूँ। मेरा काम अनेकों प्रकार के सुगंधों वाले चन्दन को घिसना है।

राजा को प्रसन्न करने के लिए ही प्रतिदिन उन्हें सुगन्धित चन्दन चढ़ाना ही मेरा रोज़गार है। इसी से मैं अपनी गुज़र–बसर करती हूँ।

ना जाने कितने संचित पुण्य कर्मों के फलस्वरूप मुझे आज आपके पावन दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है। इसी कारण आज कंस के दरबार में ना जाने की किंचित मात्र भी चिन्ता नहीं है। ये चंदन, हे वासुदेव! आज मैं आपको ही अर्पित करती हूँ। तत्पश्चात् कुब्जा ने अति प्रेमपूर्वक कस्तूरी और कपूर मिश्रित अति सुगन्धित चन्दन भगवान श्री कृष्ण और बलराम जी को चढ़ा दिया।

भगवान को चढ़ाए गए चन्दन को बहुत ही प्रेमभाव से कुब्जा स्वयं को भी लगाने लगी और बहुत ही विनम्र और भावभीनी स्तुति करने लगी।

भजन

टेक : किरपा करके गुंसाई,
तराईं जी जिवें सारयां नूं तारया

1. मैंनू आसरा होर ना कोई, मेरी पीर हरे है जोई
   हे सारे जगत दे सांई जी, तराईं जिवें ....
2. जो जन आया शरण तुम्हारी, काटे संकट है गिरधारी
   बेड़ी मेरी भी पार लगाईं जी, तराईं जिवें ....
3. पत्थर अहिल्या तुमने तारी, जाने है ये खलकत सारी
   और तराई मीरा बोई जी, तराईं जिवें ....
4. सैणी भगत त्रिलोचन तारा, नामे दा दुॅध पीता सारा
   तारया सधना कसाई जी, तराईं जिवें ....

5. जिस नर-नारी नाम ध्याया, सबनूं जीवन मुक्त बनाया
तेरी उपमा कही ना जाए जी, तराईं जिवें ....

6. मैंने कोई भगती ना कीनी, घर अपने दी सार ना लीनी
बिरथी अवध गंवाई जी, तराईं जिवें ....

7. पतित पावन है नाम तुम्हारा, अजामल दा है किता निस्तारा
मैं वी शरण तेरी अॅज आई जी, तराईं जिवें ....

8. दासन-दास ने अर्ज गुजारी, संकट काटे है गिरधारी
अपनी भगती दिखाई जी, तराईं जिवें ....

दोहरा :

कुब्जा की बिनती सुनी, खुश हुए दीन दयाल।
तन सीधा शीघ्र किया, कुब्जा भई निहाल।।

कुब्जा की विनती सुनकर दीनदयालु भगवान अति प्रसन्न हो गए। उस पर अत्यंत कृपा करते हुए वासुदेव जी ने उसका टेढ़ा तन सीधा कर दिया और अपनी इस अपार कृपा द्वारा उसे कृतार्थ कर दिया।

छन्द :

कष्ट निवारण नाम जिन्हों का, निकाल किया कुब्जा का कुॅब।
सुंदर रूप बनाया उज्जवल, तन-मन से कर दीनी शुद्ध।।
अपना अंगूठा उसके पावं पर, प्रभु ने जब टिकाया है।
केशों से पकड़ कर खींचा है, तन को साफ कराया है।।

महा स्वरूप कुब्जा का हुआ, सुन्दर हो गए सारे अंग।
कामदेव की रति शर्मावे, रूप देख होती है दंग।।
वासुदेव फिर कहने लगे, हे कुब्जा वर लो तुम आज मांग।
तेरे ऊपर खुश हम हुए, जो चाहो तुम मांगो निसंग।।

प्रभु जिस पर दया करदे, क्षण भर में ही उसके सभी कष्ट और दुःख हर लेते हैं। ऐसे कष्टहारी भगवान ने प्रसन्न होकर मथुरा जाकर कुब्जा को अपना कृपा पात्र बनाया और उसके दुःख क्षणमात्र में ही हर लिए। अपना अँगूठा कुब्जा के पैर पर टिकाकर और उसके केशों को खींचकर उसके टेढ़े तन को तुरन्त सीधा कर दिया।

कुब्जा को महास्वरूप प्रदान करते हुए, सुन्दर अंगों वाली एक अद्वितीय सुन्दरी बना दिया। कुब्जा के अनूपम सौन्दर्य को देखकर कामदेव की रति भी मानो दंग हो रही हैं।

कुब्जा पर अति प्रसन्न होते हुए वासुदेव जी कहने लगे कि आज तुम निसंकोच होकर, जो चाहो वर माँग लो।

दोहरा :

कुब्जा ने सुनकर कहा, हुए हो जो आप दयाल।
प्रेम भक्ति बख्शो मुझे, चित्त रहे चरणों के पास।।

कुब्जा मुरलीधर, वासुदेव की कृपा को देखकर प्रेमविह्वल होकर विनती करने लगी, हे करूणानिधान! यदि आप मुझ पर प्रसन्न हैं तो मुझे आपके सच्चे प्रेम और सच्ची भक्ति के अतिरिक्त अन्य कोई इच्छा शेष नहीं रही। यदि फिर भी आप मुझे वर देना चाहते हो तो कृपा करके यही वर दीजिए कि मेरा हृदय सदैव आपके पावन चरण कमलों के साथ जुड़ा रहे।

भजन धारण ।।1।।

चित्त मेरा लगा रहे गुरू चरणां दे नाल,
मन मेरा लगा रहे

1. चाहे रहण नूं महल माणियां, चाहे कुटिया डाल
2. चाहे पहनन नूं शाल दुशाले, चाहे लीरां डाल
3. चाहे धन बेअन्त तूं बख्शें, चाहे रखें कंगाल
4. दासन दास करे अरजोही, दास नूं करो निहाल

छन्द :

तथास्तु भगवान ने कहा, ऐसे मुझको भाएगा।
मेरे में तूं लीन होवेगी, जन्म-मरण कट जावेगा।
वासुदेव को कुब्जा ने, प्रेम से चन्दन चढ़ाया है।
और प्रेम से की है बेनती, कैसा मर्तबा पाया है।।
परमधाम को गई है कुब्जा, कट गया दुख जन्म-मरण।
ऐ मन जल्दी कर तूं, गुरू अपने की ले ले शरण।।
हाथ जोड़ के करूँ बेनती, हे गुरु बख्शो बख्शनहार।
कुब्जा की तरह मेरा भी अब, बेड़ा अटका करना पार।।
श्री गुरु देव दयाल मेरी, हरदम रक्षा करते हैं।
चरणों ऊपर शीश निवांवा, दुख अन्धेरा हरते हैं।।

कुब्जा की प्रेम से भरी पुकार सुनकर वासुदेव ने कुब्जा को तथास्तु कहा। पुनः वर दिया कि मेरी प्रेम भक्ति के साथ-साथ तुम मेरी कृपा से, परमगति को प्राप्त होकर मेरे सानिध्य में, मेरे ही लोक में सदा निवास करोगी।

केवल प्रेमपूर्वक चन्दन चढ़ाकर और सप्रेम भावपूर्ण विनती करते हुए कुब्जा ने ऐसा परम पद प्राप्त कर लिया, जिसे पाना बड़े-बड़े ऋषि-मुनियों के लिए भी अति दुर्लभ होता है।

जिस प्रकार प्रभु शरण को जाकर कुब्जा जन्म-मरण के आवागमन से छूट गई। उसी प्रकार हे मन! तूं भी ऐसा वर पाने के लिए सच्चे सद्‌गुरु की शरण में जा।

हे सच्चे सद्‌गुरु जी! आपके अति पावन चरण कमलों में मेरी भी सविनय प्रार्थना है कि ऐसी कृपा कीजिए कि कुब्जा की भाँति मुझ दीन-हीन का भी उद्धार हो पाए।

गुरुदेव की कृपा से कुब्जा का प्रसंग भी सम्पूर्ण हुआ। इस प्रसंग के वर्णन में मेरे द्वारा जो भी भूलचूक हो गई हो तो मेरे बख्शनहार सतगुरु जी उन्हें क्षमा करते हुए आगे से शुद्ध और प्रयुक्त वर्णन करने की शक्ति दें।

मैं अपने दयालु, कृपालु गुरुदेव के बलिहार जाता हूँ जो हर पल, हर तरह से हमारी रक्षा हर स्थिति में करते हैं। हमारे ऐसे पूर्ण गुरू जो हमें सदैव असत्य से सत्य की ओर, अज्ञान रूपी अंधकार से ज्ञान रूपी प्रकाश की ओर, मुत्यु से मोक्ष की ओर लेकर जाते हैं। हमारे सभी अवगुणों और पापों की ओर ना देखते हुए हम पर सदा अपनी असीम, अनन्त कृपा वृष्टि करते रहते हैं। ऐसे सच्चे सतगुरु के पावन चरण कमलों में बार-बार कोटि-कोटि प्रणाम जी प्रणाम!

इति श्री भगत माल संगीत कुब्जा का प्रसंग वर्णन

नाम दसवाँ अध्याय समाप्तम् ।।10।।

सति करतार

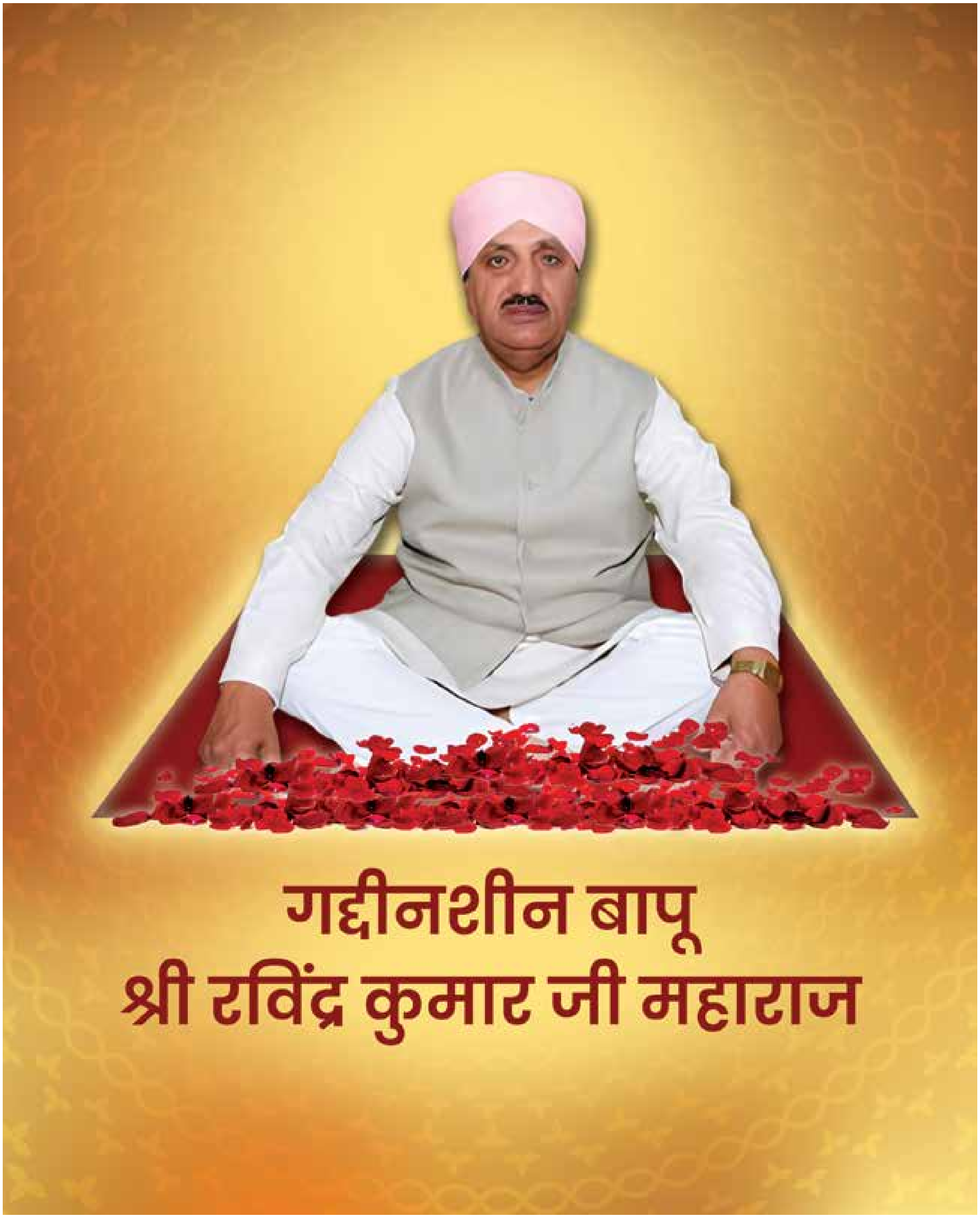
गद्दीनशीन बापू
श्री रविंद्र कुमार जी महाराज

ੴ सतिगुरु प्रसादि।

अथ विदुर जी का प्रसंग

गुरबाणी

ज्ञान ध्यान कुछ कर्म ना जाणा, सार ना जाणां तेरी।।

सब तो वॅडा सतगुरु नानक, जिन कॅल राखी मेरी।।4।।10।।57।।

(गुरबाणी, पृ. 749-750)

दोनों हाथ को जोड़कर, सतगुरु को प्रणाम।

कोट कलेशों को हरण, पतित पावन है नाम।।

विदुर जी का प्रसंग जो अब मैं कहूं सुनाय।

बुद्धि मेरी नूनता करनी आप सहाय।।

विदुर जी का प्रसंग शुरू करते हुए बापू जी गुरबाणी के श्लोक के माध्यम से कह रहे हैं कि मैं तो एक साधारण सा प्राणी हूँ। ना मुझमें कोई ज्ञान है, ना मुझे कोई ध्यान लगाने की विधि आती है, ना ही मुझे कोई कर्मकाण्ड का ही ज्ञान है। आप की महिमा बेअन्त है।

मुझमें ऐसी कोई योग्यता नहीं है जो मैं आपके बारे में अंशमात्र भी जान सकूं।

मुझे तो केवल अपने सद्गुरु का ही आसरा है जिन्होंने हर क्षण मुझे थाम रखा है। अतः उन्हीं की कृपा दृष्टि से ही मेरे संशय दूर हो सकते हैं।

मैं करबद्ध होकर अति विनम्र भाव से सद्गुरु के प्रति नतमस्तक होकर उन पतित पावन गुरू जी के चरणों में बारम्बार प्रणाम करता हूँ। मेरे सद्गुरु ही मेरे सभी प्रकार के कष्टों, दुखों, संकटों से मेरी रक्षा करते हैं।

मेरी बुद्धि में इतना सामर्थ्य नहीं है कि मैं विदुर जी के प्रसंग का वर्णन कर सकूँ। केवल आप ही मेरी सहायता कर सकते हैं कि इस प्रसंग को भावपूर्ण लिख सकूँ।

गुरबाणी

विदुर उद्धारउ दासत भाई।
हे मन तूं भी हरि ध्याय।।

भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी-7

आया सुनया विदुर दे बोले दुर्योधन होए रूखा।
घर साड़ा छॅडके गोले दे, घर जाए के सुॅखा।।

हे मन! तूं भी उस हरि का ध्यान कर, जिनकी कृपा से इस संसार में दासी पुत्र कहलाए जाने वाले विदुर जी का उद्धार हुआ।

जब वासुदेव जी ने दुर्योधन के राजमहलों का आतिथ्य अस्वीकार करते हुए विदुर जी के घर जाकर प्रेमपूर्वक परोसा गया भोजन ग्रहण किया तो दुर्योधन को यह सब अप्रिय लगा।

छन्द :

ऐ मेरे मन विदुर जी ने, जब वासुदेव जी की लीनी ओट।
दास भाव कर प्रेम किया है, रही नहीं फिर कोई तोट।।
आठ पहर हरि हरि को सिमर लै, बिरथा कोई ना जावे साथ।
सुन तूं साखी मेरे पासों, विदुर जी हुए कैसे दास।।
कौरव वंश में पैदा हुए, विदुर जी जिनका नाम।
बंसरी वाले का हुआ सेवक, जो सभी के सुख का धाम।।
वासुदेव जी के चरणों में, हरदम लगा रहे हैं ध्यान।
प्रेम भाव से भजन करे, करता ना कुछ अभिमान।।
वासुदेव जी ऐसे हैं, यदि कोई प्रेम करे।

प्रेम वश हो जाते हैं शीघ्र, यदि कोई प्रेम से ध्यान करे।।
प्रेम वश हुए अर्जुन के, रथ को आप चलाते हैं।
सुलह सफाई करने के लिए, कौरवों के घर जाते हैं।।

बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी विदुर जी की उच्चकोटि के भक्ति भाव का वर्णन करते हुए बता रहे हैं कि जिस प्रकार विदुर जी ने उस वासुदेव भगवान का सहारा लेकर बहुत दीन-हीन और विनम्र भाव से भगवान का निरन्तर ध्यान किया, उसी प्रकार हे मन! हमें भी आठों पहर हर आती-जाती श्वास के साथ उस हरि का सिमरन करते रहना चाहिए। विदुर जी की ही भाँति फिर हमारे जीवन में भी कोई कमी नहीं रहेगी।

कौरव वंश में जन्म लेकर विदुर जी उस सुखधाम, मुरलीधर भगवान श्री कृष्ण के अनन्य भक्त बन गए। सभी प्रकार के अहंकार को त्यागकर, प्रेम भाव से दिन-रात वासुदेव जी की भक्ति में ही लीन रहते थे।

भगवान वासुदेव तो ऐसे दयालु हैं कि भक्त केवल उन्हें सच्चे प्रेम भाव से ही बड़ी सुगमता से रिझा सकता है। सच्चा प्रेमी श्री हरि को अपने प्रेम द्वारा जल्दी ही अपने वशीभूत कर लेता है।

यह अर्जुन का प्रेम ही तो था, जिसके कारण प्रभु पाण्डवों के दूत बनकर सुलह कराने के लिए कौरवों के पास चले जाते हैं और उनके प्रेमवश होकर अर्जुन के सारथी भी बन जाते हैं।

भजन

टेक : वन में तुझे स्वामी बंसी बजाते देखा ग्वालों के संग मिलकर गऊए चराते देखा

1. कौरवों का मान भरया भोजन तुसीं त्यागा
   घर में विदुर के जाकर तुझे साग खाते देखा
2. अवतार लेकर तुमने लीला की है बृज में
   बृज वासियों के कारण पर्वत उठाते देखा
3. ऋषियों का गर्व तोड़ा जाति गुमान सारा
   भीलनी के बेर खाकर भव से तराते देखा
4. अर्जुन के साथ तुमने दृढ़ प्रेम है लगाया
   संग्राम में भगत के रथ को चलाते देखा
5. नारी सभा में आकर तेरी शरण पुकारी
   तब द्रोपदा के वस्त्र तुम को बढाते देखा
6. रावण को मारा भाला धर राम रूप तुमने
   दे राज दास को, फिर सीता को लाते देखा
7. दासों के काज कारण अवतार धारते हो
   अर्जुन ने प्रेम किया धीरज धराते देखा

दोहरा :

प्रेम वश हुए प्रभु, भगत का राखन मान।
सुलाह करवाने के लिए चले आप भगवान।।

निष्कपट प्रेमभाव के कारण भगवान सदा भक्त के लिए, किसी प्रकार का भी कार्य करने से नहीं हिचकते। जैसे प्रेम के कारण ही भगवान वासुदेव पाण्डवों के दूत बनकर युद्ध को टालने और सुलह-समझौता करवाने के लिए कौरवों की सभा में स्वयं चले गए।

छन्द :

बाहर नगर के उतर पड़े हैं, किया डेरा है उपवन।
विदुर जी को संदेशा भेजा, और बताया है आगमन।।
विदुर जी ने जब सुना संदेशा, शीघ्र उठकर हुआ तैयार।
दीनानाथ जी के चरणों में आकर, कीनी है नमस्कार।।
वासुदेव जी ने विदुर जी को, अपने गले लगाया है।
विदुर जी मन में खुश बहुत हुए, दर्शन प्रभु का पाया है।।

हस्तिनापुर नगर के बाहर पहुँच कर एक बाग में डेरा लगाकर, भगवान ने विदुर जी को अपने आगमन का संदेश भिजवा दिया।

श्री कृष्ण भगवान जी का संदेश पाकर विदुर जी तुरंत भगवान श्री कृष्ण के दर्शनों के लिए पहुँच गए।

विदुर जी का प्रणाम स्वीकार करते हुए, वासुदेव जी ने खुश होकर प्रेम से विदुर जी को अपने गले से लगा लिया।

भगवान श्री कृष्ण जी द्वारा इतना प्रेम और सम्मान पाकर विदुर जी अत्यंत प्रसन्न हो गए।

दोहरा :

विदुर जी को कहने लगे, तब ही दीनदयाल।

दुर्योधन से जा कहो, मेरे आने का हाल।।

विदुर जी ने तब जाकर कहा सारा ही समाचार।

तेरे नगर में आ गए, आज श्री कृष्ण मुरार।।

तब दीनदयाल श्री कृष्ण ने विदुर जी से कहा कि दुर्योधन को मेरे आगमन की सूचना दे दो। विदुर जी ने दरबार में जाकर श्री कृष्ण के आने का समाचार कह सुनाया।

छन्द :

देवता, ऋषि, मुनि, सिद्ध साधक, सब ही निशदिन धरते ध्यान।

शेषनाग यश नूतन गावे, नेति-नेति कर वेद व्याख्यान।।

स्वयं ज्योत जो पारब्रह्म है, सो तुम्हरे ग्रह आप आए।

आप ले आओ जल्दी उनको, नम्र भाव को जतलाओ।।

बाज़ारों में फर्श बिछाओ, और जुलूस तुम करो तैयार।

सुन्दर गृह में लवो बुलाए, वासुदेव श्री कृष्ण मुरार।।

प्रेम भाव से सेवा करनी, फिर तुमको जो कुछ फरमाएं।

सत् सत् करके मान लेना तुम, इसमें होवेगा कल्याण।।

देवता, ऋषि-मुनि, सिद्ध-साधक सभी निरंतर जिन प्रभु का ध्यान करते हैं। प्रतिदिन शेषनाग जिनका यशगान करते हैं किन्तु फिर भी भगवान की महिमा के समक्ष वह यशोगान भी अपर्याप्त है। वेद भी नेति-नेति कहकर उनकी महिमा का गान करते हैं।

ऐसे पारब्रह्म भगवान स्वयं आपके घर पधार रहे हैं। आप अति विनम्रतापूर्वक उन्हें शीघ्र

ही लिवा लाइए।

एक शोभा यात्रा निकालते हुए, प्रत्येक गली-कूचे को उनके स्वागत के लिए पूर्ण रूप से सुसज्जित कर दो।

आदरपूर्वक अपने घर में बुलाकर अति प्रेमभाव से उनकी सेवा सुश्रुषा करना। वह जो भी कहें, उनका हर प्रकार से पालन करने में ही तुम्हारा कल्याण है।

दोहरा :

दुर्योधन ने सुन लिया सारा ही समाचार।
भला कहा मुख बाहरों, भीतर भरा अहंकार।।

भगवान श्री कृष्ण के आने का समाचार सुनकर अहंकारी दुर्योधन ने झूठी प्रसन्नता का प्रदर्शन किया।

छन्द :

यादव कुल के जो राजा हैं, सो तो हैं सब मेरे दास।
यथा योग्य ये बात न बनती, क्यों जाऊं में उनके पास।।
भीष्म, कर्ण, द्रोणाचार्य, भेज दिए है विदुर के संग।
वासुदेव को लेने गए है, मिले सब दिल में धार उमंग।।
सबने जाकर बड़े प्रेम से, नमस्कार है कर दीनी।
आदर सहित ले आए नगर में, सारे हुए आधीनी।।
दुर्योधन की सभा में पहुंचे, कर्ता हर्ता जो भगवान।
तुच्छ समान आदर जो किया, रहा बैठ मन में अभिमान।।
सभी के भीतर बैठे भगवान, मनोहर वचन सुनाते हैं।

आपस में तुम प्यार करो, पाण्डव भी भाई कहाते हैं।।
पांच गांव उनको दे दो, कर लेंगे इसमें गुजरान।
आपस में रलमिल कर बैठो, वचन हमारा लो तुम मान।।
दुर्योधन तभी सुनकर कहता, तुम कहते हो पांच नगर।
मैं इतनी पृथ्वी नहीं देता, जितनी आवे सुई के अगर।।
वासुदेव ने कहा हे राजा, भली कही तो ना मानी।
कुल का नाश करवाएगा, अब होगी तुम्हारी हानि।।

दुर्योधन मन में सोचता है कि सभी यदुवंशी राजा तो मेरे दास हैं, तो मेरे लिए यह सर्वथा अनुचित ही होगा कि मैं उस यदुवंशी वासुदेव के स्वागत सत्कार के लिए स्वयं जाऊँ। मैंने भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य और मित्र कर्ण को विदुर जी के साथ वासुदेव को लिवा लाने के लिए भेज दिया है और वह सब इस कार्य के लिए बड़ी प्रसन्नतापूर्वक चले गए हैं।

सभी ने जाकर प्रेमपूर्वक भगवान को प्रणाम किया और उन्हें आदरपूर्वक नगर में ले आए। भगवान के दर्शन पाकर सभी नगर निवासी प्रेमादीन होकर अति आनन्दित हो रहे हैं।

सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी भगवान वासुदेव के आगमन पर भी वह अहंकारी, हठी दुर्योधन उनके सम्मान और अभिवादन के लिए नहीं उठा और अभिमान वश अपने स्थान पर ही बैठा रहा।

सर्वव्यापी भगवान वहाँ उपस्थित सभी सभागणों को मधुर वाणी में यही समझा रहे हैं कि पाण्डव आपके ही भाई हैं। इसलिए आप सभी भाई मिलकर प्रेमपूर्वक रहें।

हमारे कथनानुसार पाण्डवों को केवल पाँच गाँव ही दे दीजिए। उनके लिए वही पर्याप्त है।

भगवान के वचन सुनकर दुर्योधन बोला कि पाँच गाँव तो बहुत दूर की बात है, मैं इन

पाण्डवों को सुई की नोंक के बराबर भी पृथ्वी नहीं दूँगा।

वासुदेव जी ने फिर से समझाया कि मैं तुम सबके हित की बात ही समझा रहा हूँ। इसे ना मानकर तुम अपने कुल का नाश करने के जिम्मेदार होओगे।

दोहरा :

दुर्योधन ने तब कहा, नेत्र करके लाल।
क्यों मुझको समझावंदा, मैं सब जानता हूं हाल।।

क्रोधित होकर भगवान को तिरस्कृत करते हुए दुर्योधन ने कहा कि मैं सब जानता हूँ। मुझे कुछ भी समझाने की आवश्यकता नहीं है।

छन्द :

युद्ध किए बिन अपनी भूमि, मैं नहीं दूंगा पांव धरण।
यदि सुरमताई है फिर, मुझे मारे या आप मरे।।
इतना कहकर वासुदेव को, एक मकान में दिया निवास।
महा मलीन दुर्गंध हे आवे, भरा सामान से जो है खास।।
देख मकान को वासुदेव जी, चले गए हैं विदुर के घर।
भीष्म कहें, द्रोण सब रोकें, हार गए सब बेनती कर।।
प्रेम प्रीत अपने भगतां की, वासुदेव को प्यारी है।
सबको विदा करके आ गए, विदुर के घर बनवारी हैं।।
स्नान करे जो विदुर की नारी, दरवाजे का कुण्डा है लगाया।
जब आवाज़ करी भगवन ने, नार के मन में हर्ष आया।।
धन्य भाग्य आज आए प्रभु जी, प्रेम मग्न हो गई बौरी।

तन की तो कुछ खबर नहीं है, कुण्डा खोलन नग्न दौड़ी।।
वसुदेव ने जान लिया, प्रेम से बौरी हो गई नारी।
पीताम्बर फिर अपना उतार कर, उसके तन पर डाल दिया।।
उस वक्त कुछ खबर नही है, देर बाद फिर होश आई।
तन मेरे पर कपड़े हैं नहीं, फिर देखकर शर्माई।।
तन के वस्त्र पहने सारे, वासुदेव को किया प्रणाम।
बिठाया प्रेम से आसन भीतर, ऊपर बिठलाए हैं शाम।

आगे दुर्योधन पुनः बोला कि बिना युद्ध किए मैं अपने राज्य की धरती पर पाण्डवों को पाँव तक भी नहीं रखने दूँगा। यदि वे अपने को इतना वीर क्षत्रिय मानते हैं तो युद्ध क्यों नहीं करते।

ईर्ष्यावश वासुदेव जी को अपमानित करने की इच्छा से दुष्ट दुर्योधन ने उनके विश्राम के लिए दुर्गन्ध भरा और पुराने सामान से भरा हुआ एक मकान का प्रबन्ध करवाया।

ऐसा मकान देखकर भीष्म पितामह और द्रोणाचार्य की विनती को भी ठुकराकर वासुदेव जी, विदुर जी के घर चले गए।

वासुदेव भगवान की आवाज़ सुनकर, स्नान के लिए गई विदुर जी की पत्नी, स्वयं को भाग्यवान और अति धन्य मानते हुए प्रसन्नतापूर्वक, भगवान के सत्कार के लिए उसी नग्नावस्था में ही द्वार खोलने के लिए जा पहुँची। खुशी और अति उत्साह में आकर वह अपने तन-मन की सुधबुध भी भूल गई।

अंतर्यामी भगवान ने जान लिया कि मेरे प्रेम के वशीभूत होकर ही यह अनजाने में इस दशा में ही मेरे सत्कार के लिए आ गई है। भगवान ने अपने पीताम्बर से उसका तन ढक दिया।

कुछ समय बाद जब उसे होश आया तो बहुत शर्मिन्दा हो गई। वस्त्र धारण करने के बाद, वासुदेव को प्रणाम करते हुए, प्रभु जी को सुन्दर आसन पर बिठाया।

दोहरा :

केले के फल छीलकर, लागी छील खिलाने।
गुदे को एक तरफ फेंकती, छील खाए भगवान।।

भगवान को केले खिलाते समय वो प्रेम और प्रसन्नता के अतिरेक में उन्हें केले के छिलके खिलाने लगी और फल को दूसरी और फेंकती जाती। प्रेम के भूखे भगवान उसके द्वारा अर्पित किए हुए छिलके भी स्वादपूर्वक, मुस्कराते हुए खाए चले जा रहे थे।

छन्द :

प्रेम मग्न कुछ पता नहीं लगता, छील खिलाए अपने हाथ।
जब विदुर जी आए, आन निबाया प्रभु को माथ।।
गुदे पड़ें हैं और छिलके हैं नहीं, मन अपने हुआ है भान।
ऐ पापन तुमने यह क्या किया, छिलके खिलाए हैं भगवान।।
शर्मिंदगी अपनी दूर करने को, केले के फल ले आए।
बीच से गुदा निकाल-निकाल कर, वासुदेव को खिलाए।।

विदुर जी ने घर आकर जब यह दृश्य देखा, तो उन्हें बहुत संकोच हुआ। भगवान को प्रणाम करने के पश्चात् विदुर जी पत्नी को चेताते हुए बोले, भगवान को ऐसे छिलके खिलाकर तुम क्यों पाप की भागीदार बन रही हो। ऐसा अनर्थ तुम्हें शोभा नहीं देता।

शमिन्दा होकर पश्चाताप् करते हुए विदुर जी छिलके फेंककर प्रभु जी को केले अर्पित करने लगे।

दोहरा :

वासुदेव कहने लगे, अब ये नहीं स्वाद।

मीठामन इसमें कुछ नहीं आता, पहले वाले याद।।

ऐसा होने पर वासुदेव जी मंद-मंद मुस्कान के साथ बोले कि इन केलों में, वैसा मधुर और अनूठा स्वाद नहीं है जो कि अति प्रेम और समर्पण भाव द्वारा खिलाए गए उन छिलकों में था। कितने भक्तवत्सल हैं भगवान!

छन्द :

मैंने जो पहले खाए हैं केले, उनमें रस था अपरम्पार।

अब मुझको है भूख लगी, जल्द ही भोजन करो तैयार।।

नेत्रों से जल बहता है विदुर के, प्रेम मग्न हुए मस्ताने।

गति प्रेम की बड़ी न्यारी, जो प्रेमी होए सो ही जाने।।

वासुदेव जी बोले, मैंने जो केले पहले खाए थे उसका स्वाद और रस का वर्णन नहीं किया जा सकता। अब आप मेरे लिए भोजन तैयार करवाइए।

छिलके खाकर भी इतनी प्रशंसा और प्रेम देखकर विदुर जी भाव विह्वल हो गए। वासुदेव जी को सच्चे भक्त का प्रेमभाव उन्हें कितना मोह लेता है। विदुर जी जानते हैं कि प्रेमवश होकर ही वासुदेव जी दुर्योधन के महल छोड़कर मुझ जैसे साधारण व्यक्ति के घर पधारे हैं। उनकी ऐसी कृपा देखकर विदुर जी गद्‌गद् हो उठे।

भजन

टेक : उठो, जागो वीरों प्रमा भक्ति दी लोण

1. प्रेम जिस जिस कीता नाम अमीं रस पीता
   सदा जग विच जीता, बंधन गया सब तोड़

2. विदुर पुत्र जो दासी, कृष्ण उसदे गया सी
   कटी यमां वाली फांसी, भरम दिए सभी तोड़

3. रविदास जो चमार, प्रेमाभक्ति विच प्यार
   मिन्नतां करदा वक्त चार, सानूं चरणां नाल जोड़

4. नामां भक्त प्यारा, आप आके हरि जी ने तारा
   फिरयां देहुरा जो भारा, जाति वलो मुख मोड़

5. जाति नूं रब्ब नहीं मन्ने, करदे हैं गुमान अन्धे
   उसने पीसना जिवें गन्ने, निक्के-मोट करोड़

6. जाति राम नहीं रीझे, भक्ति करो ताहीं सीझे
   फरोलो अपने ही गीझे लाल, जो है सबनां दे कोल

7. बनना चाहंदे हो जो ऊँचे, नालो सारयां तो सुच्चे
   पाप ऊड़ांगे समुचे, भक्ति तरफो ना दिल मोड़

8. दासन दास कहे भाई उठो, देर क्यों लगाई
जिहड़ी गफ़लत है छाई, इसनूं देवों मरोड़

दोहरा :

विदुर जी तब कहने लगे भोजन करो तैयार।
प्रेम करो भवजल तरो हो रहना हाशियार।।

भगवान का आदेश पाकर विदुर जी अपनी पत्नी को भोजन तैयार करने के लिए कहने लगे। अपने हृदय में उस प्रभु के लिए सच्चे निश्छल को बसाए रखो। यही सच्चा प्रेम इस संसार में उचित जीवनयापन के साथ-साथ, भव से पार उतरने का भी सरल उपाय बन जाएगा। इसलिए अपने जीवन में प्रभु की याद निरंतर बढ़ती रहे ऐसी सावधानी बनाए रखो।

छन्द :

पिछले भूल तुम्हारी हुई, वो अब कर देता हूं माफ।
अगर जो गलती फिर अब हुई, वो तो कभी ना होवे माफ।।
भगवान को जो छिलके खिलाए, इस तरह अब न बनना गंवार।
सोच समझ के करो रसोई, नहीं तो मैं करने को तैयार।।

विदुर जी अपनी पत्नी को निर्देश देते हुए कह रहे हैं कि अब बहुत सावधानीपूर्वक भगवान श्री कृष्ण के लिए भोजन तैयार करना। एक बार भगवान को केले के छिलके खिलाने की भूल तो क्षमा कर सकता हूँ किन्तु बार-बार ऐसी भूल नहीं होनी चाहिए।

यदि सावधानी से रसोई में भोजन बनाना संभव नहीं है तो यह दायित्व मैं ले लेता हूँ।

दोहरा :

इतना सुनकर नार ने, मन में किया विचार।
प्रभु जी का भोजन तैयार करां, किस तरह हो होशियार।।

पति द्वारा समझाए जाने पर विदुर जी की पत्नी असमंजस में पड़ गई कि इस स्थिति और मनोदशा में मैं कैसे भोजन तैयार कर पाऊँगी।

छन्द :

हाथ जोड़कर गरदन अपनी, नीचे को झुकाई हुई।
छिलके खिलाए याद है करती, इसलिए शर्माई हुई।।
त्रिलोकी के नाथ स्वामी, सब के कर्ता हर्ता हैं।
सर्वव्यापी सरब रूप हैं, सब जीवों के भर्ता हैं।
केले के जो छिलके खिलाए, कर्म किया ये खोटा है।
मैं अन्जान मूर्ख हूं अबला, इसलिए पड़ा तोटा है।।
विदुर ने देखा बहुत ही चिन्ता, करती है यह मेरी नार।
इससे कोई काम ना बनना, भोजन करिए आप तैयार।।
बड़े प्रेम से भरे विदुर जी, अच्छी तरह बनाया साग।
नमक डालने का रहा ना चेता, नशा प्रेम का पड़ा है जाग।।
प्रेम मगन हो थाल प्रेम से, वासुदव के आगे रखा।
रूचि-रूचि भोग लगाते प्रभु जी, कहते पेट नहीं भरा।।
हे विदुर जी ऐसा खाना, मैंने तो कभी नहीं खाया।
इसका अजब स्वाद है चाखा, मुझको खाना बहुत भाया।।

साग बहुत प्रेम से भ्रा है, उपमा करते बारम्बार।
भाव भक्त के भूखे हैं जो, बंसी वाले कृष्ण मुरार।।
भोजन पा सुखासन हुए, प्रभु की महिमा की न जाए।
शीत प्रसाद जो बचा प्रभु का, विदुर भक्त ने लिया उठाए।
महा पवित्र उसको माना, मुख में बुरकी (ग्रास) डाली है।
साग अलूड़ा खाकर देखो, बात नार को बतलाई है।।
हे प्यारी मैं शर्मसार हूं, इसलिए शर्माता हूं।
धरती अपने में समा ले मुझको, अभी गरक हो जाता हूं।।

केले के छिलके खिला देने के कारण विदुर जी की पत्नी मन ही मन शर्मिन्दा होते हुए गरदन झुकाकर पश्चाताप् कर रही है। सोच रही है कि मैं मूर्ख और नासमझ स्त्री हूँ।

इसी मूर्खतावश मैंने उस त्रिलोकीनाथ, सर्वव्यापी, सर्वरूप, सम्पूर्ण सृष्टि के स्वामी प्रभु को छिलके खिलाकर खोटा कर्म कर दिया है।

अपनी पत्नी की ऐसी दशा देखकर विदुर जी सोचने लगे कि शायद यह इस अवस्था में भोजन तैयार न कर पाए। इस कारण उन्होंने स्वयं ही भोजन बनाने का निश्चय किया।

वासुदेव जी के अनूठे प्रेम में मग्न विदुर जी ने उनके लिए साग तैयार तो कर दिया किन्तु भावावेश में वह भी उसमें नमक डालना भूल गए।

पूरे श्रद्धा भाव से विदरु जी ने भोजन का थाल भगवान जी को अर्पित किया। बहुत ही प्रेम और रूचिपूर्वक भोजन ग्रहण करते हुए गिरधारी जी, विदुर द्वारा तैयार किए भोजन की बहुत ही प्रशंसा करने लगे। बार-बार कहने लगे कि ऐसा अजब, स्वादिष्ट, रसपूर्ण भोजन उन्होंने कभी नहीं खाया।

भक्तों के भाव और प्रेम के भूखे मुरलीधर भगवान श्री कृष्ण विदुर जी द्वारा तैयार किए बिना नमक के साग की भी भूरि-भूरि प्रशंसा करते रहे।

भोजन कर लेने के बाद भगवान विश्राम करने के लिए चले गए। भगवान द्वारा बचाए गए महा प्रसाद को महा पवित्र मानकर विदुर जी उसे ग्रहण करने में अपना परम सौभाग्य मानने लगे।

बिना नमक वाले साग को खाकर विदुर जी अत्यंत शर्मिन्दा होते हुए अपनी पत्नी को बताते हुए, अपनी गलती का आभास कर रहे हैं और पश्चाताप् करने के लिए मानो धरती में समा जाना चाहते हैं।

दोहरा :

सुनी बात जो नार ने दिल में गई घबराए।
ज़रदी मुख पर फिर गई करती हाय हाय।।

विदुर जी की बातों से घबराकर उनकी पत्नी पश्चाताप् करने लगी और बेचैनी के कारण उनका मुखमण्डल भी पीला पड़ गया।

छन्द :

हे पति जी, देखो हमारे घर, वासुदेव जी आए हैं।
मैं पापन ने सेवा कीनी, छिलके जो खिलाए हैं।।
आपने ऐसी सेवा कीनी, नमक साग में नहीं डाला।
किस मुख से अब सम्मुख होना, जोड़ा ही अब शर्माया।।
बड़े भाग्य जागे थे हमारे, घर में आए आप हरि।
कीड़ी के घर नारायण आए, सेवा कोई नहीं सरि।।

सिर अपने को धुनती है, कर रही सोच अपरम्पार।
हे पति जी मुझको तुमको, क्या कहते होंगे कृष्ण मुरार।।
अपने मन में दोनों ही सोच रहे हैं, क्या कौतुक किया है करतार।
चलो भूल बख्शा लेते हैं, हम भुले वो बख्शनहार।।
जाकर दोनों चरणीं पड़ गए, बख्श दो प्रभु हमारी भूल।
सदा बख्शंद सदा ही मेहरबान है, आदि से आपका यही तरीका है।

दोनों पति-पत्नी अपनी करनी पर बहुत ही शर्मिन्दा हो रहे हैं। दोनों के मन में प्रभु आगमन के कारण अत्यंत प्रसन्नता और उत्साह भर गया था। मन में प्रभु की सेवा का ही एकमात्र भाव था। इस दिव्य अनुभूति के कारण पत्नी ने भगवान को केले के स्थान पर छिलके खिला दिए और विदुर जी ने बिना नमक का साग। यही सब देखकर दोनों आपस में यही विचार कर रहे हैं कि अब हम प्रभु के सम्मुख कैसे जाएँ। ना जाने कितने ही पुण्यों के फलस्वरूप भगवान स्वयं चलकर हमारे घर आए और हम जैसे दीनहीन को कृतार्थ किया। भगवान की ऐसी अपार कृपा हो गई जैसे तुच्छ के घर नारायण स्वयं चलकर आ गए। हम ऐसे स्वर्णिम अवसर को पाकर भी भावावेश में आकर वासुदेव जी का उचित आदर सत्कार नहीं कर पाए।

बार-बार पश्चाताप् करते हुए पति से यही कह रही है कि हमारी ऐसी करनी को देखकर भगवान कृष्ण ना जाने क्या सोचते होंगे। पुनः दोनों ने यही निश्चय किया कि प्रभु तो दयालु हैं, सभी को क्षमा कर देते हैं, हम भी अपनी इस बहुत बड़ी भूल के लिए क्षमा प्रार्थना कर लेते हैं।

ऐसा निश्चय कर दोनों पति-पत्नि ने जाकर भगवान के चरणों को पकड़कर उनसे क्षमायाचना करने लगे। आदिकाल से आप सदा ही अपने भक्तों की प्रत्येक भूल और गलती को निश्चित ही क्षमा कर देते हैं इसीलिए आपका नाम भी बख्शनहार है।

दोहरा :

वासुदेव कहने लगे हम हैं बहुत प्रसन्न।

मुझको प्यारा प्रेम है, कीया प्रेम तुम धन्य।।

ऐसी विनती सुनकर भगवान मुस्कराते हुए बोले कि आपका इतना उच्च कोटि का प्रेमभाव देखकर मैं अति प्रसन्न हूँ, मैं तो यही कहता हूँ कि ऐसा प्रेमभाव रखने वाले आप दोनों पति-पत्नी ही धन्य हैं।

छन्द :

ऐ विदुर मैं भुखा नहीं चीजों का, मुझको लागे प्रेम प्यार।
प्रेम भाव से जो कछ देवे, मैं लेता हूं हाथ पसार।।
बिना प्रेम से जो भी कुछ अरपे, मैं नहीं करता अंगीकार।
जो कुछ तुमने सेवा कीनी किसे ना कीनी बची संसार।।

भगवान पुनः बोले, हे विदुर! मैं किसी भी भौतिक पदार्थों का इच्छुक नहीं हूँ। मुझे तो केवल सच्चे प्रेम से अर्पित की गई वस्तु ही स्वीकार्य है। तुम्हारे द्वारा सच्ची श्रद्धा व प्रेमभाव से परोसा गया भोजन इतना स्वादिष्ट था कि मैंने अभी तक ऐसा भोजन संसार में

कहीं पर भी ग्रहण नहीं किया है। बिना प्रेम और श्रद्धाभाव से यदि मुझे अनेकानेक व्यंजन भी परोसे जाएं तो भी मैं उन्हें स्वीकार नहीं करता।

दोहरा :

सुनकर विदुर जी हुए खुश, गलती माफ काफूर।

सारी रात जागते रहे, सेवा में हजूर।।

उस्तुति करते प्रेम से, महिमा अपरम्पार।
बंसरी वाले कृष्ण जी, होते रहे दीदार।।

भगवान के इन वचनों से विदुर जी की प्रसन्नता की कोई सीमा नहीं रही। पूरी रात विदुर जी बहुत ही प्रेमभाव से प्रभु की स्तुति और गुणगान करते हुए उनके पावन दर्शनों और सेवा द्वारा आनन्दविभोर होते रहे। साथ ही विनती करते रहे कि हे बंसीधर! अपने पावन दर्शनों द्वारा हमें आज की भाँति सदैव कृतार्थ करते रहना।

भजन

टेक : छूट जाए जान अजाबां तो,
जिन्द हो जाए पाक हिसाबां तों

1. बंसी वालया आए तुम्हारी शरणी, लाई रखीं अपनी चरणीं
   हंस बना दयो कागां तो, जिन्द हो जाए पाक हिसाबां तों
2. ऐ दुनिया कूड़ पसारा, आप करो मेरा निस्तारा
   बचा लवों बुरीयां लागां तों, जिन्द हो जाए पाक हिसाबां तों
3. महिमा आप जी कैसे गावां, दर्शन तो बलिहारे जावां
   आप आए मेरे भागां तो, जिन्द हो जाए पाक हिसाबां तों
4. दासन दास दी ऐसी अर्जी, रोज दीदार होवे तेरा हरि जी
   साफ करो गंदे दागां तों, जिन्द हो जाए पाक हिसाबां तो

दोहरा :

बेनती अब करने लगी, विदुर के घर की नार।

छिलके खिलाए माफ करो, हे श्री कृष्ण मुरार।।

अब विदुर जी की पत्नी भगवान से अपने द्वारा छिलके खिलाए जाने के लिए क्षमा प्रार्थना करने लगी।

भजन

शाम सुन्दर बृजवासी,
रहां चरणा दी मैं दासी।

शाम सुन्दर बृजवासी, रहां चरणा दी मैं दासी।

भुलनहार को बख्श दया, प्रभु मैं दर्शन की प्यासी।।

चरण कमल में लिपटी रहूं, सदा तुझे छोड़ कहां जासी।

छिलके खिलाये माफ करो जी, लोग करन मेरी हासी।।

दासन-दास नूं बख्शो प्रभु जी, मैं दर्शन की प्यासी।।

दोहरा :

दोनों बेनती कर चुके, खुश हुए भगवान।

इसमें संशा कुछ नहीं, होए तुम्हारा कल्याण।।

दोनों द्वारा की गई क्षमा प्रार्थना सुनकर भगवान ने प्रसन्न होते हुए उन दोनों को उनके कल्याण और उद्धार का वरदान दिया।

छन्द :

बड़े प्रेम से रात गुजरी, प्रेम मग्न हरि यश गाया।
स्नान करवा कर वासुदेव को, हार कमल का गॅल पाया।।
दुर्योधन की सभा में आए, वासुदेव अंतर्यामी।
क्रोध के साथ नृप बोला, तुम काहे के हो स्वामी।।
राजनीति की बात ना कीनी, चले गए दासी के घर।
कंगले के घर रात जो काटी, छोड़ दिया महलों का दर।।
राजा तभी शोभता है यदि, कंगालों के ही गृह जावे।
कंगला तभी शोभता है यदि, राजों के ही गृह जावे।।
यदि मेरे महल में रहते, भोजन खाते कई प्रकार।
पलंग निवारी बिछे दुशाले, सेवा करने को भी तैयार।।
विदुर के घर जाकर सथर सोए और अलूड़ा खाया साग।
आहीरों का रहा आहीर, तुमने राजनीति को लगाया दाग।।

विदुर जी ने भगवान श्री कृष्ण के सानिध्य में प्रेमपूर्वक उनका यशोगान करते हुए वह रात्रि बिताई। प्रातः काल स्नान से निवृत करवाकर उन कमल नयन वासुदेव जी को सुंदर कमलों की माला पहनाकर सुसज्जित किया।

तत्पश्चात् अंतर्यामी वासुदेव ने दुर्योधन की राज्यसभा के लिए प्रस्थान किया। वासुदेव को देखते ही दुर्योधन अति क्रोधित होकर उलाहना देते हुए उन्हें कहने लगा कि तुम बिना कोई राजनैतिक चर्चा किए हुए और साथ ही मेरे राजसी आतिथ्य को ठुकराते हुए उस दासी पुत्र विदुर के घर रात्रि भोज और विश्राम के लिए चले गए।

दुर्योधन बोले कि राजाओं की शोभा राजाओं के पास जाने में ही है। निर्धन के आतिथ्य तो निर्धन ही स्वीकार करते हैं। यदि तुम मेरे महल में रहते तो नाना प्रकार के स्वादिष्ट

व्यंजन खाने के साथ-साथ, सुंदर-कोमल राजसी बिछौने भी विश्राम के लिए तैयार मिलते। अनेकों सेवक भी निरंतर हर क्षण आपकी सेवा में उपस्थित रहते।

आप तो राजा होकर भी शायद ग्वाले ही रह गए हो। इसी कारण विदुर के घर जाकर बिना नमक का साग खाया और नीचे धरती पर ही विश्राम किया।

दोहरा :

वासुदेव जी कहने लगे, सुन राजन तूं बात।
मुझको प्यारा प्रेम है, नहीं प्यारी जात।।
गुरबाणी को सुन लो, सभी पाप मिट जाए।
भगत कबीर जी लिख गए, शब्द इस प्रथाए।।

मारू कबीर जीउ

राजन कउन तुम्हारे आवै। ऐसौ भाव विदुर को देखियों,
ओ गरीब मोहे भावै।।1।।

(गुरबाणी पृ. 105)

दुर्योधन के ऐसे वचन सुनकर वासुदेव जी ने उत्तर दिया कि मुझे तो केवल प्रेमभाव ही भाता है। फिर चाहे वह निर्धन का हो या छोटी जाति वाले प्रेमी का हो। ऐसा प्रेम और श्रद्धा भाव रखने वाला मुझे तुम जैसे राजाओं से कहीं अधिक प्रिय हैं।

बापू जी कह रहे हैं कि इसी बात का वर्णन गुरबाणी में कबीर जी द्वारा भी किया गया है - कि हे राजन, तुम जैसे अहंकारी राजा के राजमहल में भला कौन आना पसंद करेगा। विदुर जी भले ही दरिद्र हैं किन्तु वह अपने हृदय में अमूल्य प्रेमभाव रखने के कारण तुमसे कहीं अधिक धनी हैं। मेरे लिए ऐसा भाव रखने वाला प्रेमी ही मुझे अत्याधिक प्रिय है।

दोहरा :

तुमरे में कुछ प्रेम ना, मैं हूं प्रेम आधीन।

विदुर प्रेमी भगत है, आदर बहुत ही कीन।।

तुम्हारा हृदय तो प्रेम से पूर्णतः विहीन है जबकि मैं तो प्रेमी के सर्वदा अधीन रहने वाला हूँ। विदुर मेरा वास्तव में सच्चा भक्त है क्योंकि उसका हृदय पूरी तरह से मेरे प्रेम से भरा है। उसका ऐसा अनुपम प्रेमभाव द्वारा किया गया स्वागत सत्कार मुझे सदैव स्वीकार्य रहेगा।

छन्द :

बेशक विदुर गरीब बहुत है, मुझे प्रेमी है भाए।
तुमरे में कुछ प्रेम नहीं है, कौन तुम्हारे फिर आवे।।
जैसे तेल बिना जो बाती, नहीं आती हैं किसी भी काम।
तेसे प्रेम बिना जो तुम्हरे, नहीं लगते हैं अच्छे धाम।।

वासुदेव जी पुनः बोले विदुर चाहे कितना भी दरिद्र क्यों ना ही उसके मन में बसा प्रेम मुझे सदा आकर्षित करता रहा है और करता रहेगा। तुम्हारे हृदय में मुझे ऐसा कोई प्रेमभाव नहीं दिखता। इसी कारण तुम्हारे घर अतिथि बनकर आने में कोई लाभ नहीं है। जिस प्रकार बिना तेल की बाती किसी को भी प्रकाश देने में असमर्थ है इसी कारण वह सबके लिए व्यर्थ ही है। इसी प्रकार तुम्हारे जैसे प्रेमविहीन व्यक्ति और उनके बड़े-बड़े राजमहल भी मुझे सर्वथा अप्रिय हैं।

राग सूही महला 5 घर 4।।

भली सुहावी छापरी जा मैं गुण गाए।

कितही काम ना धउलहर जित हरि बिसराए।।

(गुरबाणी पृ. 745)

वह झोपड़ी या छप्पर जहाँ निरंतर हरि का गुणगान होता है। वह स्थान छोटा और सुख-सुविधा रहित हो तो भी बहुत सुहावना, रम्य और आरामदायक होता है।

इसके विपरीत जहाँ प्रभु का चिन्तन, भजन-कीर्तन नहीं होता वह राजमहल धन-धान्य सुख-सुविधा से भरे घर भी मेरे लिए व्यर्थ ही है।

छन्द :

तुम्हारा दूध और भोजन सारे, मुझको नहीं ये भाते हैं।
विदुर का पानी साग अलूड़ा, खुश होकर हम खाते हैं।
अजब स्वाद है साग का देखा, मैंने तो कभी ना खाया है।
विदुर का पानी ऐसा मीटा, दूध देख शर्माया है।।
सॅथर की सेजा उन्होंने, मेरे लिए सवारी थी।
ऐसा सुख बैकुण्ठ में नाहीं, विदुर के गृह जो सुख पाया।
तुम्हरे महल तो किसी काम के नहीं, हरि का गुण जो नहीं गाया।।
विदुर जी प्रेमी पूर्ण हुए, तुम्हरी दृष्टि में सुत दासी।
हमारी दृष्टि में महापुरुष है, कट गई जन्म मरण फासी।।
पाण्डु पुत्रों के जैसे हमको, वैरी तो तुम जानते हो।
हमारे दिल में वैर भाव नहीं, दोनों को सम मानते हैं।
जैसा अपने दिल का भाव हो, वैसा ही दूसरा नजर आवे।
मित्र भाव से मित्र दिखे, वैर भाव वैरी दिल गाए।।

थोड़ा अधिकता पक्ष पात, हम ना किसी का करते हैं।
बुरे काम जो कर लेते हैं, दुख भी वो ही भरते हैं।।
वेद शास्त्र और सभी महात्मा, बात यही कहते हैं।
खोटा करम करे दुख पावे, भले करम से सुख मिलते हैं।।
भले तेरे की बात कही थी, पांच नगर जो दे देता।
सभी कलह अभी मिट जाते, कहना जो मेरा मान लेता।।
मैं तुमको समझा रहा हूं, तूं समझा नहीं खुदगर्जी।
इसका बुरा नतीजा निकलेगा, अब जो कर लो तुम्हारी मर्जी।।

इसी कारण से तुम्हारे शाही व्यंजन और दूध आदि पदार्थ विदुर द्वारा परोसे गए साग और पानी से बहुत क्षीण है। बिना नमक का ऐसा स्वादिष्ट साग और दूध से भी अधिक मीठा जल मैंने शायद ही इतनी प्रसन्नतापूर्वक अन्यत्र कहीं ग्रहण किया है।

धरती पर जो मेरे शयन के लिए उन्होंने प्रबंध किया था वैसे सुख-चैन शायद मेरे लिए बैकुण्ठ धाम में भी नहीं है।

जो सुख प्रभु नाम विहीन बड़े-बड़े महलों में भी नहीं मिल पाता हैं वह अभूतपूर्व सुख मैंने तुम्हारे द्वारा निर्धन और दासी पुत्र कहे जाने वाले अपने सच्चे और प्रेमी भक्त विदुर के घर में अनुभव किया है।

तुम्हारा वह दासी पुत्र हमारी दृष्टि में उच्च कोटि का महापुरुष है। सच्चे व उच्च कर्मों के कारण उसका उद्धार निश्चित है।

तुम तो पाण्डवों की भाँति, हमें भी अपना शत्रु समझते हो किन्तु हम कौरवों और पाण्डवों दोनों को ही समान रूप से अपना प्रिय मानते हैं। किसी प्रकार का कोई भी पक्षपात नहीं करते। तुम अपने मनोभावों के कारण ही हमें अपना शत्रु मान रहे हो। यह सत्य है कि जैसे अपने मन के भाव होते हैं, उसी भाव से आप दूसरों का भी मूल्यांकन करते हो। मित्रता भाव रखने वाले को सभी मित्र और शत्रुता भाव रखने वाले को सभी

अपने शत्रु समान लगते हैं।

सभी वेद, शास्त्र और संत महात्मा यही समझाते हैं कि बुरे कार्य करने वाला या बुरे भाव रखने वाला अंततः दुःखों का ही भागीदार बनता है। और सद्विचार रखने वाले और सदाचार करने वाले सत्कर्मी व्यक्ति सदैव सुख ही पाते हैं। मैंने तो तुम्हारी भलाई के लिए और सभी प्रकार के कलह-क्लेश मिटाने के लिए ही तुम्हें पाण्डवों को पाँच गाँव दने का परामर्श दिया था किन्तु तुमने मुझे अपना शत्रु समझते हुए उस परामर्श को ठुकरा दिया।

पुनः दुर्योधन को सावधान करते हुए वासुदेव कहते हैं कि स्वार्थवश तुमने मेरा

सुझाव ना मानकर अपना ही नुकसान किया है। अब तुम स्वयं ही मेरी अवज्ञा का परिण ाम भुगतने के लिए उत्तरदायी होंगे।

दोहरा :

इतना कहकर वासुदेव, हो गए तुरन्त तैयार।
विदुर जी विदा करने को, गए करके प्रेम प्यार।।

इतना कहने के उपरान्त वासुदेव जी प्रस्थान के लिए तैयार हो गए और विदुर जी ने सप्रेम उन्हें विदा किया।

भजन

टेक : बंसी वाले मेरे शाम जी,
दर्शन है तेरा पावनां

1. मन में इच्छा होर ना कोई, चरण कमल में प्रेम बधाई
   अखियां दे रही सामने, ऐहों रूप सुहावना
2. पीताम्बर तन मांहि उजाले, शोभ रहे कुण्डल जो काले

सिर पर मुकुट सौहे, तिमर जो नसवाना

3. हाथ में मुरली शोभा पावे, गॅल में फूलों का हार सुहावे
दर्शन करने से आये, पापां ने कट जावणां

4. काटो संकट सभी गिरधारी, दासन दास ने अर्ज गुजारी
निशदिन ध्यान धरूं मैं, तुम्हरा ही यश गावनां

दोहरा :

विदुर जी को कहने लगे अंतर्यामी आप।
जन्म सफल तुम्हरा हुआ कट गए तीनों ताप।।

विदा होते हुए विदुर जी की अनूठी प्रेमभक्ति से प्रसन्न होकर अंतर्यामी वासुदेव जी ने उन्हें वरदान दिया कि तुम तीनों प्रकार के दैविक, दैहिक और भौतिक तापों से रहित होकर सुखी एवं सफल जीवन व्यतीत करो।

छन्द :

ऐ विदुर जी तुमरे ऊपर, अब हम आज हुए हैं बहु प्रसन्न।
परम धाम को जाओगे, तुमरा जन्म हुआ है धन्य।।
सभी भोग संसार के छोड़े, प्रेम भक्ति में डट गया।
इस का यह नतीजा निकला, जन्म मरण अब कट गया।।

प्रसन्न होकर भगवान जी कहने लगे कि विदुर जी तुमने सारे संसार के भोग-विलासों को अर्थहीन जानते हुए, अपने हृदय में केवल मेरे सच्चे प्रेम और भक्ति को ही बसाए रखा इसी कारण अब तुम इस जन्म-मरण के आवागमन से मुक्त होकर मेरे परम धाम को प्राप्त करोगे।

दोहरा :

इतना कहकर विदुर को, आ गए पाण्डवों के पास।
आगे वो इंतजार कर रहे, ले चरण कमल की आस।।

विदुर जी को वरदान देकर वासुदेव पाण्डवों के पास जा पहुँचे, जो कि बहुत समय से उनकी प्रतीक्षा कर रहे थे और उनके स्मरण, चिंतन में रत थे।

छन्द :

युधिष्ठर और अर्जुन-भीम, नकुल-सहदेव जी खुश हुए।
आज आपका दर्शन कीना, बिन दर्शन के हम थे मरे हुए।।
चरणों में सब लिपट गए, ज्यों पुष्पों में लिपटे भौर।
बहुत आनन्द प्राप्त हुआ, ज्यों मछली पानी का तौर।।
वासुदेव ने तभी सुनाया, जो बीता दुर्योधन के पास।
बहुत समझाया पापी, समझे नहीं सिर पर काल।।
सतगुरां की किरपा हुई, पूरा हुआ यह प्रसंग।
वासुदेव के चरणों की ऐ मन, तूं भी भक्ति मांग।।
विदुर की तरह ऐ मन, यदि प्रेम कमावेगा।
गुरू से पूछकर नाम हरि जप ले, जन्म मरण कट जाएगा।।

पाँचों पाण्डव वासुदेव के आगमन पर अत्यंत प्रसन्न होने के साथ-साथ भावुक भी हो उठे। जिस प्रकार भँवरा फूलों से लिपट जाता है, पाण्डव भी भगवान वासुदेव के चरणों को पकड़कर यहीं कहने लगे कि आपके दर्शनों के बिना हम मानों निष्प्राण ही हो गए थे। आपके दर्शन हमारे लिए इस प्रकार जीवनदायक हैं, जिस प्रकार मछली के लिए जल होता है।

वासुदेव जी ने दुर्योधन के साथ हुए वार्तालाप और हस्तिनापुर में घटित सभी घटनाओं का वर्णन पाण्डवों को सुनाया और साथ ही कहने लगे कि दुर्योधन के सिर पर काल मँडरा रहा है। इसी कारण बार-बार समझाने पर भी यह दुर्योधन अहंकारवश कुछ भी समझ नहीं पाया।

अंततः बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी गुरू कृपा और आशीर्वाद से इस विदुर जी के प्रसंग का समापन कर रहे हैं। इस प्रसंग की सहायता से बापू जी शिक्षा दे रहे हैं कि विदुर जी की भाँति ही हमें उस मुरलीधर भगवान श्री कृष्ण जी के चरणों की भक्ति और प्रेम में सदैव अनुरक्त रहना चाहिए। विदुर जी की ही भाँति सच्चा प्रेम, श्रद्धा, विश्वास और सेवा भाव रखते हुए अपने पूर्ण सद्गुरु जी द्वारा दिए गए गुरू मन्त्र का निरन्तर और निष्काम भाव से जाप करते रहेंगे तो उस हरि की कृपा के पात्र बनेंगे और हमारा भी विद्रु जी की भाँति उद्धार और कल्याण होना पक्का है।

भजन

उठ जाग तूं प्यारेया प्रेम कर लै।

उठ जाग तूं प्यारेया प्रेम कर लै। तेरी नींद ने बड़ा विराम किया।।
वक्त बीत गया तो रोवेगा हॅथ मल मल। तेरी भुल ने तैनूं अजान कीता।।
खबरदार हो जा संभाल माल अपना। दासन दास ने सोच ब्यान कीता।।
मानुष जन्म दुर्लभ जो मिलया तैनूं। गुरबाणी में कहा उच्चार भाई।।
श्वास जांवदे रोज दे रोज ऐंवे। याद कीता क्यों नहीं करतार भाई।।
दुनिया दे झूठे धंधे सारे समझ गंदे। सच्चा काम कर लै प्रेम सार भाई।।
दासन दास है प्रेम सार वस्तु। प्रेम करो बेड़ा होवे पार भाई।।

दोहरा :

गुरू से भुल बख्शा लवां, दोनों जोड़ के हाथ।

और इल्म कुछ है नहीं, धरूं चरण में माथ।।

बापू जी गुरु चरणों में बिनती कर रहे हैं की मुझे किसी भी प्रकार से कोई विशेष ज्ञान नहीं है। मुझे तो केवल आप का ही एकमात्र सहारा है। इसी कारण अपने द्वारा की गई जाने-अनजाने सभी प्रकार की भूलों को क्षमा करने के लिए व आगे भविष्य में ऐसी भूलों को पुनः ना दोहराने के लिए नतमस्तक होता हुआ प्रार्थना करता हूँ।

इति श्री भगत माल संगीत विदुर जी का प्रसंग

नाम ग्यारहवां अध्याय सम्पूर्ण।।11।।

सति करतार

ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

अथ प्रहलाद भगत जी का प्रसंग

दोहरा :

सब गुण गणह कलेवर, शांति आल दयाल।
श्री गुरू हरनाम जी, रहण सदा किरपाल।।
ऐसे श्री गुरुदेव के, चरण में शीश निवाए।
प्रहलाद भक्त की गाथा, जो निज मन कहुं सुनाय।।

सर्वव्यापी, सर्वगुण सम्पन्न, शांतिपुंज, कृपालु एवं दयालु सच्चे सद्गुरु श्री हरनाम जी महाराज आप सदा मुझ पर अपनी असीम कृपा बनाए रखें।

ऐसे महान गुरू के नतमस्तक होते हुए, भक्त प्रहलाद की कथा अपने मतिअनुसार प्रारम्भ करने जा रहा हूँ।

गुरबाणी

प्रहलाद रखी हरि पैज आप।।

(भाई गुरदास जी वार 10 पउड़ी 2)

घर हिरण्याक्ष दैत्य के कलर कंवल भगत प्रहलाद।
पढ़न पठाइया चाटसाल पाधे चित्त हुआ अहिलाद।।

दैत्य हिरण्याक्ष के घर में भक्त प्रहलाद का जन्म लेना कीचड़ में कमल खिलने के समान ही था। उचित समय जानकर प्रहलाद को विद्या प्राप्ति के लिए भेजा गया जहाँ भक्तिमय वातावरण से प्रहलाद जी का चित्त अति आनन्द से भरा रहता था।

दोहरा :

प्रहलाद भक्त की पैज जो, राखी हरि ने आप।
ऐ मन तूं भी जाप जप, नष्ट होण सब पाप।।

जिस प्रकार श्री हरि ने स्वयं आकर भक्त प्रहलाद के विश्वास की लाज रखी, इसी प्रकार हे मन! तूं भी भक्त प्रहलाद की भाँति पूर्ण समर्पित भाव से उस परमात्मा की भक्ति करेगा तो तेरे सभी पाप कर्मों का स्वतः ही नाश हो जाएगा।

छन्द :

एक समय परमात्म देव जी, खीर समुद्र में विश्राम।
अद्भुत खेल रचाने लगे हैं, आनन्द विनोदी जिनका नाम।।
मात लोक युद्ध करन को, कोई भी नहीं है मेरे समान।
द्वारपालों की बुद्धि परेरी, जिस कर बन गए बड़े नादान।।
उसी समय सनकादिक ऋषि जी, आए करन दरशं तत्काल।
भीतर जाने से रोक दिए हैं, अजय-विजय बिबें हैं द्वारपाल।।

आनन्द-विनोदी कहलाने वाले श्री हरि क्षीर सागर में विश्राम करते हुए एक अनोखी लीला रचाने की योजना बना रहे हैं।

प्रभु सोचने लगे कि इस समय धरती पर मेरे से युद्ध करने के लिए कोई भी परमवीर और शक्तिशाली योद्धा शेष नहीं है। अद्भुत खेल रचाने की इच्छा से उन्होंने अपने बुद्धिमान द्वारपालों जय और विजय की बुद्धि पलट दी।

इसी दौरान भगवान के दर्शन करने आए सनकादिक ऋषि को निडरता से जय-विजय द्वारपालों ने भीतर जाने से रोक दिया।

दोहरा :

द्वारपाल कहने लगे, भीतर जाना मत।
इस वक्त आनन्द में, मग्न श्री रमापंत।।

यह सुनकर ऋषि ने कहा, सुनो द्वार के पाल।
क्यों हमको हो रोकते, हम हैं प्रभु के बाल।।

द्वारपाल सनकादिक ऋषि जी से कहने लगे कि प्रभु इस समय आनन्दमग्न हैं, इसी कारण आप अभी अन्दर नहीं प्रवेश कर सकते। इतना सुनकर ऋषि जी बोले कि हम उस प्रभु की ही संतान हैं, आप हमें प्रवेश करने से क्यों रोक रहे हैं।

छन्द :

ऋषि भीतर को जाते हैं, द्वारपाल नहीं देते जान।
आखिर को ऋषि क्रोध से बोले, ए कपटी तुम बहुत नादान।।
राक्षस बुद्धि हो गई तुम्हारी, तभी तुम राक्षस ही कहलावो।
वाक् हमारा जाए ना बिरथा, अपने किए का फल पावो।।
अजय-विजय तभी शरण पड़ गए, मुख से स्तुति करने लगे।
अन्त श्राप का कब होगा, कांप कांप कर डरने लगे।।

ऋषि जी के बार-बार आग्रह करने के बावजूद भी जब द्वारपालों ने उन्हें हरि दर्शन के लिए नहीं जाने दिया, तब ऋषि जी ने क्रोधित होकर उन्हें राक्षस बन जाने का श्राप दे दिया। ऐसा सुनकर अजय-विजय भयभीत होकर ऋषि सनकादिक जी की स्तुति करते हुए उनसे क्षमायाचना करने लगे, साथ ही पूछते रहे कि इस श्राप का अंत कब और कैसे होगा।

दोहरा :

तभी ऋषि ने कहा मुख से वचन उच्चार।
वासुदेव के हाथ से तुम्हारा होय उद्धार।।

इतना कह चले गए, प्रभु को कर प्रणाम।
अजय-विजय भीतर गए, प्रभु सच के धाम।।

भयभीत अजय-विजय की प्रार्थना सुनकर ऋषि जी बोले कि अब स्वयं वासुदेव ही तुम्हें श्राप मुक्त करते हुए तुम्हारा उद्धार करेंगे। भगवान जी को प्रणाम करके ऋषि जी के जाने के पश्चात् अजय-विजय प्रभु की शरण में जा पहुँचे।

छन्द :

ऋषिकेश को नमस्कार कर गुजरा हाल सुनाया है।
गलती हमसे हो गई भारी, ऋषि ने श्राप लगाया है।।
पतित-पावन जी करो पवित्र, श्राप हमारा दूर करो।
ऋषि ने जो दिया श्राप है, उसको आप ही चूर करो।।
वासुदेव जी कहने लगे, भगत जन का दिया श्राप।
इसको दूर कभी नहीं करता, भगत जनों का बड़ा प्रताप।।
यह ताले खुलने वाले नहीं, चाबी ले गए अपने साथ।
दूसरा खोल सकता कोई नहीं, बेशक खोले वो ही खास।।
यदि मेरी भक्ति करोगे, सात जन्म में मिलेंगे आन।
शत्रु जानकर युद्ध करेंगे, तीन जन्म में होगा कल्याण।।
भक्ति करने से यश होता है, निंदा होती करो जो वैर।
बतला दीने दो इलाज, कर लो जिसमें तुमरी खैर।।
सुनकर द्वारपालों ने कहा, हमने भक्ति क्यों करनी।
तीन जन्म में मिल जाएंगे, निंदा का हमको डर नहीं।।

सात जन्म तक बड़ा बिछौड़ा, यह नहीं सहा जायेगा।
वैर भाव ही क्यों ना करिए, जल्दी जो मिल जाएगा।।

दोनों हाथ जोड़कर अजय-विजय ने श्री हरि को ऋषि जी द्वारा दिए गए श्राप के विषय में बताया। प्रभु से क्षमायाचना करते हुए श्राप मुक्त करने की प्रार्थना करने लगे।

ऐसा सुनकर पतित-पावन वासुदेव जी बोले, परम भक्तों द्वारा दिया गया श्राप तो अवश्य ही फलिभूत होगा। उसे नकार कर मैं अपने भक्तों का अपमान नहीं कर सकता। इस श्राप के प्रभाव को कम करना या समाप्त करना अन्य किसी के वश की बात नहीं है। यह अधिकार तो केवल उसी के पास ही है।

तत्पश्चात् भगवान ने कहा कि आपके लिए दो उपाय हैं। अपनी स्वेच्छा से जो चाहे चुनाव कर लो। पहला मार्ग है कि - यदि मेरी भक्ति करोगे तो सात जन्मों के पश्चात् हमारा पुनर्मिलन हो पाएगा, इससे आपका कोई अपयश नहीं होगा। दूसरा मार्ग है - मुझसे शत्रुता करके युद्ध करके, अपयश और बुराई मोल लेना। अब आप विचार कर लो कि आपको श्राप मुक्त होने के लिए सात जन्म प्रतीक्षा करनी है या तीन जन्म।

उपाय सुनकर द्वारपाल अजय-विजय बोले कि हमें भक्ति युक्त सात जन्मों वाला उपाय स्वीकार्य नहीं है। हम तो निन्दा और शत्रुता वाले तीन जन्मों की प्रतीक्षा करना चाहेंगे। क्योंकि सात जन्मों तक का आपसे बिछुड़ना हमारे लिए असहनीय है।

दोहरा :

ब्रह्मा जी के पुत्र जो, कश्यप जिन का नाम।
अजय-विजय पैदा हुए, आकर उनके धाम।।

श्राप के कारण उचित समय आने पर द्वारपाल अजय और विजय ने ब्रह्मा जी के पुत्र ऋषि कश्यप जी के पुत्र बनकर जन्म लिया।

छन्द :

हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप जो नाम उनका कहते हैं।
बीच जगत विख्यात हुए हैं, रिपु को पकड़कर दहते हैं।।
राजे जो बलवान कई थे, सबको दिनों में जीत लिया।
मात लोक की वार्त्ता छोड़ो, इन्द्र भी भयभीत हुआ।।
देवतों को साथ लिया है, इन्द्र ने करी लड़ाई है।
सारा जोर लगा दिया है, फतह नहीं जो पाई है।।
वाराह रूप जो वासुदेव ने, उसी वक्त तो धारा है।
हिरण्याक्ष तो भाग गया है, हिरण्यकश्यप तन टूट गया।
हिरण्यकश्यप का इन्द्र ने आ, सारा शहर तो लूट लिया।।
बहुत से राक्षस मार दिए हैं, अबला बांध कर ले आया है।
रास्ते में मिले नारद मुनि जी, यह क्यों जुल्म कमाया है।।
शुक्र जी ने कहा सुनो मुनि जी, शास्त्र यही बतलाते हैं।
शत्रु को जो गर्भ छेद करें, तो भी दोष नहीं आते हैं।।
इसके पेट से बालक जन्में, फिर देंगे उसको मार।
अबला को हम छोड़ देंगे, अपना सारा कष्ट निवार।।

द्वारपाल अजय-विजय, हिरण्याक्ष और हिरण्यकश्यप के नाम से प्रसिद्ध हुए। दोनों ही अपार बलशाली थे। जिनके नाम मात्र से ही सभी प्राणी सदा भयभीत रहते थे। अपनी शक्ति द्वारा सभी को पराजित करते हुए उन्होंने सम्पूर्ण पृथ्वी पर अपना एकछत्र राज्य स्थापित कर लिया था।

उनके अतुलित बल और शक्ति के कारण सभी देवताओं सहित देवराज इन्द्र भी उनसे

युद्ध में पराजित हो गए।

सबकी रक्षा के लिए तब भगवान विष्णु वाराह रूप लेकर अवतरित हुए। उनके द्वारा हिरण्यकश्यप मृत्यु को प्राप्त हो गया और हिरण्याक्ष प्राण बचाकर वहाँ से भाग गया।

हिरण्यकश्यप के मरणोपरांत देवराज इन्द्र ने अनेक राक्षसों का वध करते हुए उसके सम्पूर्ण राज्य को लूट लिया। साथ ही हिरण्याक्ष की गर्भवती पत्नी को भी बंदी बनाकर अपने साथ ले आया।

हिरण्याक्ष की स्त्री को देखकर नारद जी ने जब इस पापकर्म का कारण पूछा तो शुक्राचार्य जी ने उत्तर दिया कि शास्त्रों के अनुसार यदि शत्रु की गर्भवती पत्नी का गर्भनाश भी कर दिया जाए तो वह भी अनुचित नहीं है। वह बोले कि इसके गर्भ से जन्म लेने वाले बालक को मारकर, हम इस स्त्री को छोड़ देंगे। जिससे हम अपनी सभी आशंकित विपत्तियों का मूल से ही समापन कर दें।

दोहरा :

नारद जी कहने लगे, इन्द्र जी के बोल।
यह अबला मुझको दे दो, बंधन इसके खोल।।

ऐसा सुनकर नारद जी ने इन्द्र से अबला को बन्धन मुक्त करते हुए, उस नारी को अपने साथ ले जाने की अनुमति माँगी।

छन्द :

इसके गर्भ में बालक है जो सुन्दर, भक्त कहलाएगा।
ऋषि मुनि और देवतों को, कष्टों से बचाएगा।
हिरण्याक्षा की स्त्री को तो, नारद मुनि जी ले आए।
अपनी पुरी को इन्द्र चला गया, साथ देवते भी धाए।।

नितप्रति उपदेश करते हैं, अबला को मान सुता समान।
मात के पेट में बालक जो है, सुनता रहता रोज ज्ञान।।
समय पाकर बालक जन्मा, जिनका नाम हुआ प्रहलाद।
नारद मुनि जी पालन करते, बात भविष्य की कर याद।।

नारद जी भविष्यवाणी करते हुए बोले कि इसके गर्भ में पल रहा बालक संसार में आने के पश्चात् प्रभु का उच्च कोटि का भक्त बनेगा। जो कि ऋषि-मुनि व सभी देवताओं के कष्टों का भी निवारण करेगा।

हिरण्याक्ष की पत्नी को नारद जी को सुपुर्द करने के पश्चात् इन्द्र अन्य देवताओं सहित अपने लोक को चले गए।

इधर नारद जी हिरण्याक्ष की पत्नी को बेटी मानकर नित्य प्रति ज्ञान का उपदेश देते हैं जिसे गर्भ में पल रहा बालक भी श्रवण करता है।

उचित समय आने पर बालक ने जन्म लिया, जिसका नाम प्रहलाद रखा गया। उसके भविष्य का पूर्ण ज्ञान होने के कारण नारद मुनि बहुत यत्नपूर्वक उसका पालन-पोषण करने लगे।

दोहरा :

हिरण्याक्ष की बात अब, सुनिए कान लगाए।
उग्र तपस्या जब करी, तब विधि प्रगट आए।।

युद्ध में पराजित होने के पश्चात् हिरण्याक्ष कठोर तप करने में पूर्णतः तल्लीन हो गया। उसकी कठिन तपस्या से प्रसन्न होकर भगवान ब्रह्मा जी ने उनको दर्शन दिए।

छन्द :

ब्रह्मा जी तब खुश हुए, ऐ पुत्र तुम मांगो वर।
तप तुम्हारा अब पूरा हो गया, दूर करागां सारे डर।।
हिरण्याक्ष ने हाथ जोड़कर, चरणों में दिया शीश निवाए।
इतने वर अब मुझको दे दो, यदि हुए आप सहाय।।
मरूं ना इतनी चीजों से अब मैं, तुमको देता हूं बता।
शस्त्र से और अस्त्र से कभी ना मारा जाऊं बस।।
अग्नि, जल और देवता-दैत्य से, वन में ना खाए और बाहर घर।
आकाश, पृथ्वी, नर, पशु-पक्षी, दिन और रात ना जावां मर।।
बारह मास में मरूं नहीं मैं, विश्व जो आपने किया तैयार।
आखिर की मैं बात सुनावां, मुझको कोई सके ना मार।।
यदि आप कृपाल हुए हैं, त्रिलोकी का दे दो राज।
कोई मुकाबला रिपु ने करो, शुद्ध हो जावे मेरा काज।।
ब्रह्मा जी ने कहा ऐसा ही होगा, तप जो तुम्हारा हुआ महान।
इतनी बात ही कहकर के विध जी हो गए अंर्तध्यान।।
हिरण्याक्ष दिल में खुश हुआ, पा लिया है मैंने वर।
अपने शहर में पहुंच गया है, कहता अब मैं हुआ अमर।।

ब्रह्मा जी ने प्रसन्न होकर हिरण्याक्ष को वर माँगने के लिए कहा और उसके द्वारा माँगे हुए वर को पूरा करने का आश्वासन भी दिया।

ब्रह्मा जी को नतमस्तक होने के पश्चात् हिरण्याक्ष ने उनसे वर माँगते हए कहा कि ना मैं किसी अस्त्र-शस्त्र से मरूँ और ना ही अग्नि, जल, देवता व दैत्य से। वन में किसी

नरभक्षी, पशु-पक्षी द्वारा ना मरूँ। मेरी मृत्यु ना तो घर के भीतर हो ना ही काल मुझे कही घर से बाहर डस पाए। मेरी मृत्यु ना तो आकाश में हो, ना ही धरती पर हो। मेरी मौत ना तो दिन के समय हो ना तो रात को। कोई भी मनुष्य अथवा कोई भी अन्य प्राणी मेरी मृत्यु का कारण ना बन पाए। मैं इस संसार में आपके द्वारा बनाए गए बारह महीनों में भी जीवन त्याग ना करूँ। इन सभी बातों का यही सार है कि सम्पूर्ण सृष्टि में, तीनों लोकों में मुझको कोई भी मारने का सामर्थ्य या साहस ना कर पाए।

हे ब्रह्मा जी यदि आप मुझसे वास्तव में प्रसन्न हैं तो आप मुझे तीनों लोकों का एकछत्र अजय राजा बनने का वर दीजिए।

ब्रह्मा जी उसके महान तप से प्रसन्न होकर, उसके द्वारा माँगे गए वर को "तथास्तु" कहते हुए अर्न्तध्यान हो गए।

ब्रह्मा जी से ऐसा वरदान पाकर स्वयं को अमर मानकर अपने राज्य में हिरण्याक्ष वापिस लौट आया।

दोहरा :

नारद मुनि जी आ गए, ले अबला को संग।
सारा हाल सुनाया दिया, नृप तो हुआ दंग।।

हिरण्याक्ष के वापिस आ जाने पर, नारद जी सादरपूर्वक उसकी पत्नी और पुत्र को लेकर आ गए और साथ ही सारा बीता हाल सुना दिया।

छन्द :

नारी पुत्र को देख लिया तो, मन में हुआ वो खुशहाल।
नारद जी को नमस्कार कर, कहता आप हो बड़े दयाल।।
किस मुख से करूं मैं बड़ाई, मेरे ऊपर दया करी।
इस रक्षा के बदले मुझसे, आप की सेव ना कुछ भी करी।।

मुझ पर आप अनुग्रह कीनी, भारी किया है पर उपकार।
मुश्किल समय में करी सहायता, ली छुड़ा जो मेरी नार।।
नृप ने बड़ी बड़ाई कीनी, नारद मुनि जी हुए तैयार।
आदर भाव से विदा करने गया, झुक-झुक कर करता है जौहार।।
स्त्री पुत्र पा खुश हुआ, कण्ठ साथ प्रहलाद लगाया।
नार मेरी को बांध ले गया, पिछला वैर याद आया।।
राक्षसों की सेना बड़ी लेकर, इंद्र साथ किया है युद्ध।
स्वर्गपुरी को लूट लिया है, मेघपती को किया बेसुध।।
मारे खौफ के देवता भाग, गिरि कंदरा में जा बसे।
इंद्र का कुछ पता ना लगा, किस मकान में जा धंसे।।
कब्जा किया स्वर्गपुरी में, अपना दास है बिठलाया।
देवराज को जीत लिया है, डंका अपना बजवाया।।

सब हाल सुनकर व पत्नी एवं पुत्र को पाकर वह प्रसन्न हो गया और बार-बार नारद जी का धन्यवाद करते हुए उनके दयाभाव के लिए अपनी कृतज्ञता प्रकट करने लगा। बार-बार नारद जी की प्रशंसा करते हुए वह यही कहता रहा कि ऐसी विकट विपत्ति के समय केवल आपने ही मेरी पत्नी और संतान की रक्षा करते हुए मुझ पर बहुत बड़ा उपकार किया है। जिसका ऋण मैं कुछ भी देकर नहीं चुका सकता। कृतज्ञता प्रकट करते हुए प्रेम व आदर सहित उसने नारद मुनि को विदा किया।

पत्नी और पुत्र को पाकर हिरण्याक्ष, प्रसन्नता से बार-बार पुत्र प्रहलाद को गले से लगाता रहा। साथ ही पत्नी कों इन्द्र द्वारा बंदी बनाकर ले जाने वाली घटना का अनायास ही स्मरण होता रहा। क्रोधावेश में आकर तत्काल ही राक्षस सेना लेकर इन्द्रपुरी पर आक्रमण कर दिया। अपनी असीम शक्तियों द्वारा देवताओं को पराजित करते हुए इन्द्र

को भी बेसुध कर दिया। स्वर्गपुरी के लुट जाने पर भयभीत हुए देवता वहाँ से जान बचाकर भाग खड़े हुए और गिरि कंदरा (पहाड़ों की गुफाओं) में जाकर छिप गए।

देवराज इन्द्र का तो कुछ भी पता नहीं चला। इधर हिरण्याक्ष ने इन्द्र पर विजय के पश्चात् स्वर्गलोक में अपना प्रतिनिधि तैनात करते हुए, सभी लोकों में अपनी इस विजय का डंका बजा दिया।

भजन

टेक : प्रभु जी
तेरी महिमा अपरम्पार

1. इक राजे है राज करेंदे, इक टुकड़े नूं अवाज़ार
   इक पण्डित है गुणी गहेरे, इक मूर्ख गंवार

2. इकना दे तन सुंदर रहन्दे, इक रहन हमेश बीमार
   इक रुपया ब्याज तोरन, इक लैंदे हैं उधार

3. इक गऊआं नूं मात कर पूजन, इक फेरन तलवार
   भिखारी नूं राज बिठावे, राजा बने हैं गद्दार
   इंद्र से बैकुण्ठ छिनाया, राक्षस किया सरदार
   दासन दास कहे भगवान का, अन्त ना पारावार

छन्द :

दैत्य देवता परमात्म ने, सागरे पैदा है कीये।
जैसे करे भरे फिर वैसी करनी के, फल सब को दिए।।

थोड़े दिनों में हिरण्याक्ष ने तीन लोक बश कर लीने।
बलवान नृपों को जीत लिया है, सब अपने अधीन कीने।।
अपने नाम की फेरी दोही, सबको लगा देने दुख।
मारे-कूटे को उसको ज्यादा, राम का नाम जो लेवे मनुष्य।।
अपना नाम जपावे सबसे, मारे खौफ के लोग जपन।
प्रभु का नाम लेवे जो कोई, करता उसके प्राण खपन।।
धेनु दिज ऐ गरीब देवता, संत-भक्त को देता दुख।
नाम जपे हिरण्याक्ष का जो, तन से रहे खुश मनुष्य।।
धरनी को लिया साथ देवता, विधि पास जा करी पुकार।
राक्षस को वर दिए मनवांछित, दुखी हुआ सारा संसार।।

परमात्मा ने देवताओं और दैत्यों दोनों की रचना स्वयं ही की है। साथ ही विधि का विधान भी सदा यही रहा है कि जो जैसा भी कृत्य करेगा उसे अवश्य उसका फल भुगतना पड़ेगा। परमात्मा फिर देवता व दैत्यों में भी कोई भेद नहीं करते।

अल्पकाल में ही ब्रह्मा जी द्वारा मिले वरदान के कारण हिरण्याक्ष ने अपनी महान शक्तियों द्वारा तीनों लोकों में राज्य कर रहे सभी महान, शक्तिशाली राजाओं को पराजित करके अपने अधीन कर लिया।

सर्वत्र विजय प्राप्ति के कारण, अभिमान और अहंकार वश वह स्वयं को परमात्मा ही मानने लगा। जिस कारण सभी को अपने ही गुणगान करने का आदेश दे दिया। जो भी मनुष्य राम नाम लेता था उस पर भारी सजा द्वारा भारी अत्याचार किए जाते थे।

भय के कारण सभी अनमने भाव से हिरण्याक्ष का ही गुणगान करते थे। किन्तु जो निर्भयता दिखाता था, उसके प्राण लेने में भी हिरण्याक्ष कोई संकोच नहीं करता था।

गाय, ब्राह्मण, दरिद्र, देवता समान संतों और प्रभु भक्तों को हमेशा दुःख और

संताप-प्रताड़ना देता था। उसके राज्य में केवल उसके नाम जप और उसी का गुणगान करने वाले मनुष्य ही खुश रह पाते थे।

उसके अत्याचारों से पीड़ित देवता और ऐसे पापों के बोझ को सहने वाली धरती ने एक साथ ब्रह्मा जी की शरण में जाकर, मदद के लिए पुकार की। वे सब यही कहने लगे कि आपके द्वारा हिरण्याक्ष को उसका मनवांछित वरदान देने के कारण उस महाक्रूर और अत्याचारी दैत्य ने पूरे संसार को दुखी और प्रताड़ित किया हुआ है।

दोहरा :

ब्रह्मा जी कहने लगे, हमरे ना कुछ वश।

तप उसने उग्र कीया, वर मैं दीना हंस।।

ब्रह्मा जी ने उत्तर दिया कि हिरण्याक्ष के द्वारा किए कठोर तप से प्रसन्न होने के कारण मैंने उसे उसकी इच्छानुसार वर दे दिया।

छन्द :

करण कारण इक है परमात्म, जिसने जगत रचाया है।

आसरे अपनी सत्ता के, सब प्रपंच ठहराया है।।

उसके आगे करो बेनती, मैं भी चला तुम्हारे साथ।

सभी मनोरथ पूर्ण होवण, जाए निवाते हैं सब माथ।।

ब्रह्मा जी आगे कहने लगे कि शायद ऐसा होना पूर्वनिर्धारित ही था। तीनों लोकों में घटित होने वाली प्रत्येक घटना का मूल कारण और स्त्रोत वह एकमात्र सृष्टि रचियता परमात्मा ही है। वह परमशक्ति अपनी इच्छानुसार ही हम सबसे जो चाहे कार्य करवाती है। हम सभी उसी के अधीन हैं।

ब्रह्मा जी ने कहा कि अब यही मार्ग शेष बचा है कि हम उस पारब्रह्म की शरण में जाकर

उनके नतमस्तक होते हुए इस विकट समस्या से मुक्ति पाने का मार्ग पूछें। मैं भी आप सबके साथ उनकी शरण में चलता हूँ ताकि हम सबकी इच्छा पूर्ण हो।

दोहरा :

खीर समुद्र में गए, देवता को ले संग।
स्तुति प्रभु की करता है, मन में धार उमंग।।

ब्रह्मा जी सभी देवताओं सहित क्षीर सागर में विद्यमान श्री हरि की शरण में जाकर देवताओं सहित उन प्रभु की स्तुति प्रेमभाव से करने लगे।

भजन

टेक : दर्श अपना है परमात्म
दिखा दोगे तो क्या होगा....

1. शरण हम आपकी आए मिटावो दुख जो सारा
   मुरझाया दिल कमल सबका, खिला दोगे, तो क्या होगा....

2. यह धरती भार ना सहती, व्याकुल होकर आई
   टूट गई धीरजें सबकी, धरा दोगे, तो क्या होगा....

3. जुल्म भारत में करता है जो, राक्षस बड़ा ही अभिमानी
   सोया अज्ञात सेजा पर, जगा दोगे, तो क्या होगा....

4. तेरे ही नित दर्शन की, लागी है प्यास भगवन
   दासन-दास को दर्शन दिखा दोगे, तो क्या होगा....

दोहरा :

आकाशवाणी तब ही भई, चिन्ता ना कर मूल।
अभिमानी अब ना रहेगा, हो जाएगा सब अनुकूल।।

ब्रह्मा जी सहित, देवताओं द्वारा अति दीन-हीन व विनम्र भाव से की गई स्तुति सुनकर, श्री हरी ने आकाशवाणी की कि आप सब निश्चिंत हो जाइए। अब उस पापी और अत्याचारी हिरण्याक्ष का आस्तित्व शीघ्र ही समाप्त हो जाएगा। साथ ही सभी परिस्थितियाँ पुनः अनुकूल हो जाएंगी।

छन्द :

चिन्ता ना करो धीरज धर लो, सब काम शुद्ध हो जावेंगे।
हिरण्याक्ष का नाश होवेगा, सर्गुण रूप बनावेंगे।।
राक्षस के घर सुत उपजा है, मेरी भक्ति कमावेगा।
उसके साथ यदि वैर करेगा, भगत को कष्ट पहुंचाएगा।।
प्रहलाद की रक्षा करने खातिर, फिर धरूंगा अवतार।
तुम्हारे कष्ट सब दूर करूंगा, हिरण्याक्ष को देऊ मार।।

भगवान बोले कि आप सभी चिन्तारहित हो जाइये और धैर्यपूर्वक उचित समय आने की प्रतीक्षा कीजिए। उस हिरण्याक्ष राक्षस का पुत्र मेरा परम भक्त होगा। यदि वह मेरे ऐसे सच्चे भक्त को कष्ट पहुँचाएगा या उससे किसी प्रकार का वैर रखेगा तो अपने परम भक्त की रक्षा करने हेतु मैं पुनः अवतरित होकर हिरण्याक्ष का वध करूँगा। इस तरह समय आने पर आप सभी के कष्टों व दुखों का स्वतः ही अंत हो जाएगा।

दोहरा :

यह सुन देवता हुए खुश, चले गए निज धाम।
ऐ मन तूं भी नाम जप, कुछ नहीं लगता दाम।।

भगवान द्वारा ऐसा आश्वासन पाकर सभी देवता प्रसन्नचित्त होकर अपने-अपने लोक को चले गए। भगवान अपने भक्तों के लिए कितने चिंतित रहते हैं। वे उन्हें किसी भी प्रकार का दुःख व हानि नहीं पहुँचने देते इसीलिए हमें भी सदैव उस परमात्मा का नाम स्मरण व चिन्तन करते रहना चाहिए। परमात्मा का लिया हुआ नाम सच्ची अमूल्य निधि की भाँति सदा हमारे साथ रहता है।

बैंत

जब इस जहान से कूच करना, महल मणियां ऐवें उसार बैठा।
झूठे तन दे नाल प्रीत पा के, गहने कपड़े पा शिंगार बैठा।।
झूठे धंदया दे विच उम्र बिताई, सच्चे सांई नूं मनों विसार बैठा।
सुंदर जन्म अमोलक था हाथ आया, विच जुए दे इसनूं हार बैठा।।
तेरे नाल दा साथ ना नज़र आवे, दिल अपने तूं की धार बैठा।
मौत कूकदी है खड़ी रोज सिर पर, कर परे तूं तां टार बैठा।।
मुसलमानां दा छेकड़े कब्रवासा, हिन्दू वास्ते शिवा तैयार बैठा।
भक्त के कारण अवतार जो धारदा है, मनां कास नूं नाम विसार बैठा।।

दोहरा :

यह अध्याय पूरा हुआ गुरू हुए कृपाल।
नरसिंह जो अवतार की, आगे कथा रसाल।।

सद्गुरु जी की कृपा द्वारा अभी यहीं पर इस अध्याय का समापन करता हूँ। नरसिंह अवतार की रसमय कथा का वर्णन अगले अध्याय में है।

इति श्री भगत माल संगीत हरण्याकश्यप वध हिरण्याक्ष राज

नाम बारहवां अध्याय समाप्तम् ।।12।।

इति करतार

ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

अथ नरसिंघ अवतार जी का प्रसंग

श्लोक :

फिरत फिरत प्रभ आया, परया तउ शरणाई।

नानक की प्रभ बेनती, अपनी भगति लाए।।20।।

इस अध्याय का प्रारंभ पुनः गुरबाणी द्वारा करते हुए कहा है – कि मैं भटकता हुआ अब आपकी शरण में आ पहुँचा हूँ। अब आपसे मेरा यही विनयपूर्वक विनम्र आग्रह है कि आप सच्चे शरणागत वत्सल हैं। जो भी आपकी शरण में आता है उसकी सभी मनोकामनाएँ पूर्ण हो जाती हैं। मैं आपसे आपकी भक्ति के अतिरिक्त और कोई चाह नहीं रखता। आपसे यही विनम्र प्रार्थना है कि प्रभो मेरा सारा जीवन आपकी भक्ति के ही रंग में रंगा रहे।

श्री सुखमनी साहिब

श्री गुरुदेव के चरण कंवल पहले शीश निवाऊं।

नरसिंघ के अवतार की साखी कहूं सुनाय।।

सर्वप्रथम अपने गुरुदेव के चरणों में नतमस्तक होता हुआ, आपसे आपकी आशीष चाहता हूँ जिससे कि नरसिंह के अवतार की यह साखी का वर्णन भली भाँति कर सकूँ।

गुरबाणी बसंत कबीर जीउ (पृ. 1194)

हे परम पुरख देवाधि देवा। भक्ति हेत नरसिंघ भेद।।

कह कबीर को लखै न पार। प्रहलाद उद्धारे अनेक बार।।5।।4।।

कबीर जी गुरबाणी में कह रहे हैं कि उस अकाल पुरख पारब्रह्म परमेश्वर की वन्दना करते हुए आपकी महिमा बता रहे हैं कि आप सर्वोपरि हैं, जिनका वर्णन संभव नहीं है। आपने सदैव अपने भक्तों से अनूठा प्रेम किया है। उनकी हर प्रकार से, हर स्थिति में रक्षा करते हैं। उनके सभी दुखों का विनाश करते हैं। ऐसे ही आपने परम भक्त प्रहलाद की

अनेकों बार संकट से रक्षा की है। प्रहलाद को कई बार उसके पिता द्वारा दी जाने वाली भीषण यात्नाओं से बचाते हुए उसकी रक्षा की। इतना ही नहीं स्वयं नरसिंह अवतार लेकर प्रहलाद को बचाने के लिए स्वयं आपने उस हिरण्याक्ष का वध किया जिसने कि स्वयं को अमर समझते हुए तीनों लोकों में आतंक फैला कर रखा था।

दोहरा :

पांच बरस के जब हुए, भगत प्रहलाद जी बाल।
मीठे-मीठे वचन कर, सब मोहे पाजाल।।

पाँच वर्ष की आयु होने पर भक्त प्रहलाद अपने मधुर और प्यारे वचनों से सबको सम्मोहित कर लेते थे।

छन्द :

माता-पिता को लगे प्यारा, देख लिया हुआ होशियार।
शुक्र जी के पास है पढ़ने भेजा, सुत से करता बहुत प्यार।।
कई दिन गुजरे जब पढ़ने को, प्रहलाद को लीना पास बिठाए।
हे पुत्रा तूंने क्या कुछ पढ़ा, मुझको अपना सबक सुनाओ।

प्रहलाद माता-पिता द्वारा भी बहुत अधिक स्नेह पाते थे। अपने प्रिय पुत्र की योग्यता को परखते हुए पिता हिरण्याक्ष ने उन्हें गुरू शुक्राचार्य जी के पास विद्या प्राप्त करने के लिए भेज दिया।

बहुत समय बीत जाने पर एक दिन प्रहलाद को पिता ने अपने पास बिठाकर उनसे उनकी विद्या प्राप्ति के विषय में पूछा।

दोहरा :

प्रहलाद भगत कहने लगे, सुनो शब्द हे बाप।।
राम नाम मैंने पढ़ा, जिससे दूर हो पाप।।

पिता के पूछे जाने पर प्रहलाद ने यही उत्तर दिया कि मैंने राम नाम के महान प्रभाव के विषय में पढ़ा है, जिसके स्मरण मात्र से सभी पाप मिट जाते हैं।

छन्द :

जब यह बात सुनी राक्षस ने, नेत्र लाल किए रिसखाए।
शुक्र जी के सुत संडा मरकै जुगल को, लीन तुरंत बुलाए।।
कहने लगा तुम सुन लो विप्रो, सुत मेरे का करो सुधार।
जो मेरा है दुश्मन भारा, तिसका नाम यह करे उच्चार।।
तुम्हीं भला बतलाओ मुझको, मेरे सिवा कौन विष्णु का धाम।
इसकी बृद्धि तो मलीन हो गई है, कुटिल स्वभाव जो कहता राम।।
यदि यह बात कही भूपत ने, भगत को पकड़ लेगा तब काल।
समझाने के लिए ले गए, सण्डा मरकै अपने साथ।।
विष्णु का नाम ना लो भूलकर, उस कपटी की सुन तूं बात।
बहुतेरे से धोखा किया, बात जगत में है विख्यात।।
मन्दराचल पर्वत उखेड़ा, बासक नेता लिया बनाए।
समुद्र को रिड़काया है, उस बेचारे को दिया सताए।।
जितने उनके पास रत्न थे, सगरे ही फिर छीन लिए।
लक्ष्मी श्रेष्ठ आप रख ली, विष मदिरा फरामोश किए।।

लक्ष्मी तो घर-घर नाचे, कभी चैन नहीं पाती है।
कपट करने का यह फल मिला, चौतरफा फिरे शर्माती है।।
दूजी बात सुनो हे पुत्तर, साहब को जो कष्ट दिया।
तिसके श्राप से विष्णु तुम्हारा, कच्छु की योनि में हो गया।।
वेद पढ़ने की इच्छा कारण, शंखासुर के वेद लिए।
उन बेचारों को मार दिया और वेद खींच विधि को दिए।।
तुम्हारे पिता का भाई सूरमा, निरपराध को दिया मार।
चाचे साहब का दुश्मन है जो, तूं जपता है नाम मुरार।।
अपने पिता के वैरी से जो बदला न ले, वही कुपुत्र कहलाता है।
तब वो शुकर कुकरीओं के, समान ही बन जाता है।
अपने कुल की रीति न छोड़ो, नाम जपो तुम पिता और मात।
तुम्हारे पिता का तेज़ है भारी, इसको राम जानो साक्षात।।

पुत्र द्वारा राम नाम जप की महिमा सुनबर हिरण्याक्ष अति क्रोधित हो गया और उसने गुरू शुक्राचार्य और उनके दोनों पुत्रों सण्डा-मरकौ को बुलाकर उन्हें सावधान किया। हिरण्याक्ष बोले कि तुम प्रहलाद को मेरे परम शत्रु का नाम जप करवाना तुरंत रोक दो। तुम स्वयं ही बताओ कि मेरे अतिरिक्त और कौन इतना सामर्थ्यवान और बलशाली है। मेरे पुत्र की तो बुद्धि भ्रष्ट हो गई है जो कुटिलतापूर्वक उस राम का नाम उच्चारण कर रहा है।

राजा का आदेश पाकर गुरू शुक्राचार्य के पुत्र सण्डा एवम् मरकै प्रहलाद को बार-बार कहने लगे कि यदि तुमने फिर से विष्णु नाम का उच्चारण मात्र भी किया तो तुम्हें पिता द्वारा मृत्युदण्ड दिया जा सकता है।

तत्पश्चात् विष्णु जी की आलोचना करके प्रहलाद को भ्रमित करने लगे। अपने ढंग से

राजा के आदेशानुसार प्रहलाद जी को कहने लगे कि सम्पूर्ण जगत में विष्णु जी एक ध ोखेबाज के रूप में जाने जाते हैं। विष्णु जी ने मंदराचल पर्वत को उखाड़कर समुद्र मंथन के लिए उसे प्रयोग किया और अपने इस कृत्य द्वारा पर्वत और समुद्र दोनों को ही पीड़ा पहुँचाई। उस मंथन द्वारा समुद्र से जो भी अमूल्य रत्न प्राप्त हुए उन सबको स्वयं ही अपने पास रख लिया। साथ ही लक्ष्मी श्रेष्ठ को भी स्वयं ही ले लिया। शेष बचे मदिरा और विष को दूसरों में बाँट दिया। लक्ष्मी जी तो स्वभाव से ही चंचल होने के कारण कहीं भी स्थिर नहीं रह पाती। इसी कपटपूर्ण व्यवहार के कारण स्वयं ही शर्मिन्दा होकर इधर से उधर होती रहती हैं। विष्णु जी की आलोचना करते हुए आगे बोले :-

दूसरी बात भी सुनो प्रहलाद कि तुम्हारे पिता को कष्ट देने के कारण, उनके श्राप से विष्ण ु कच्छ योनि को प्राप्त हुए।

वेद पढ़ने की इच्छा होने पर उन्होंने शंखासुर का वध करके, उनके वेद छीनकर ब्रह्मा जी को दे दिए।

जिस विष्णु का तुम दिन रात नाम जपते हो उसी विष्णु ने तुम्हारे पिता के भाई जो निरपराध थे, उन तुम्हारे चाचा का भी वध कर दिया। इसी कारण वह तुम्हारे पिता के साथ-साथ तुम्हारा भी शत्रु है। यदि तुम अपने पिता के शत्रु से बदला नहीं लोगे तो कुपुत्र ही कहलाओगे। ऐसे कुपुत्र द्वारा किए गए सत्कर्म भी कुकर्म ही कहलाते हैं।

तुम अपने कुल की रीति का निर्वाह करते हुए अपने तेजस्वी और महापराक्रमी पिता को ही ईश्वर मानते हुए उनका और अपनी माता का ही नाम जपो, उन्हीं का गुणगान करो।

दोहरा :

यह सुनकर प्रहलाद ने, कर दिया प्रणाम।
विप्र तुम्हारा मुख धन्य है, लिया राम का नाम।।

ऐसा समझाने पर भी भक्त प्रहलाद ने प्रभु राम के प्रति अपना विश्वास और आस्था कम नहीं होने दी। नतमस्तक होकर गुरू पुत्र से बोले कि भले ही निन्दा की हो, परन्तु आपने

ऐसा करते हुए राम नाम का उच्चारण तो किया। प्रभु नाम लेने से आज तुम्हारा मुख धन्य हो गया।

छन्द :

भगवन्त के नाम को हित से, या फिर वैर भाव से जो लेता है।
संसार समुद्र गहरा है जो, इससे पार उतरता है।।
साइर जी की जो कहीं बात है, उसने गर्व किया था भारी।
इसलिए उससे रत्न निकाले, हुआ था जो अहंकारी।।
लक्ष्मी की जो बात कही है, तीन लोक में कोई ना घर।
रखने को समर्थ ना कोई, इसलिए रखा है हरि।।
शंखासुर की बात कही जो, वेद चुराए था वो चोर।
धर्म को उसने भ्रष्ट किया, यमों के साथ दिया तभी भेज।।
हिरण्यकश्यप की बात कही जो, भूमि को उसने कष्ट दिया।
दुख हरण जो नाम प्रभु का, तब ही दैत्य का नाश किया।।
सर्वगुण भरपूर स्वामी, सब का कर्ता हर्ता है।
तुम भी नाम जपो दिल लगाकर, जो सबका कर्त्ता है।

प्रभु का नाम चाहे प्रेम, श्रद्धा, विश्वास से लिया जाए अथवा उनके प्रति शत्रुता के भाव से, उसका महात्म दोनों ही परिस्थितियों में सदैव शुभ फल दायक ही होता है।

भगवान विष्णु जी ने समुद्र मंथन के समय पिता के परम अहंकार और झूठे गर्व को मिटाने के लिए ही रत्न अपने पास रख लिए थे।

जो आप लक्ष्मी जी के विषय में कहते हैं तो वह इतनी तेजस्वी व महान हैं कि श्री हरि के अतिरिक्त तीनों लोकों में कोई भी ऐसा योग्य नहीं है जो लक्ष्मी जी को अपने पास रख सके।

विष्णु जी ने शंखासुर से वेद छीनकर ब्रह्मा जी को नहीं दिए थे बल्कि शंखासुर ने वेदों को ब्रह्मा जी के पास से चुराकर अपने अधिकार में रख लिए थे। ऐसे चोर और अधर्मी, पथभ्रष्ट शंखासुर को मारकर भगवान ने वेदों और धर्म की रक्षा व पुर्नस्थापना की थी।

चाचा हिरण्यकश्यप ने अपने कुकर्मों और अत्याचार से सभी को अनेक कष्ट व दुःख पहुँचाए थे इसी कारण उस दुखहर्त्ता प्रभु ने उस दैत्य का वध कर दिया और सभी को सुख पहुँचाकर अपने सुखकर्त्ता नाम को सार्थक कर दिया।

ऐसे सर्वगुण सम्पन्न, सर्वव्यापी, सृष्टि के रचियता और पालनकर्त्ता प्रभु का तुम भी पूर्ण विश्वास के साथ श्रद्धा भाव से नाम जपो।

गुरबाणी

सोधत सोधत तत् विचारा
बिन हरि भजन नहीं छुटकारा।।

बहुत खोज और प्रयत्नों के परिणामस्वरूप यही निष्कर्ष निकलता है कि उस प्रभु के नाम स्मरण और चिन्तन के बिना किसी का भी गुजर-बसर होना संभव नहीं है।

दुखों, कष्टों से छुटकारा दिलाने वाला प्रभु नाम के अतिरिक्त अन्य कुछ भी नहीं है।

भजन

टेक : राम नाम सार जग में,
चाहिए जी ध्यान लगावनां....

1. मानुष जन्म अमोलक प्यारे, कांच के बदले लाल क्यों हारे
   नाम को जो नहीं जपते, आखिर पछतावना

2. औखे वेले है राम सहाई, निशदिन बंदया ध्यान लगाईं
यहां दा जाल तोड़के, प्रभु जी दे धाम जावनां

3. देवता, ऋषि-मुनि ध्यान लगांदे, नाम जपे जो सो ही मुक्ति पांदे
सुख सभी आन मिलदे, परम पद पावनां

4. नाम प्रभु का है दीन दयालु, भक्तों के रक्षक किरपालु
दासन दास कहे, चाहिए जी यश गावनां

दोहरा :

संडे मरका ने सुना, दोनों हुए खामोश।
उत्तर कहु न दे सके, हो गया शीतल जोश।।

प्रहलाद जी द्वारा दिए गए तर्कों के समक्ष संडे और मरका दोनों ही निरुत्तर हो गए और उनका सारा जोश ठण्डा हो गया।

दोहरा :

बाल पढ़न चटसाल में, ऋषि गए निज काम।
प्रहलाद भगत कहने लगे, ऐ भाईयों जपो नाम।।
जो रचना तुम देखते, जगत है स्वप्न समान।
ऐ वीरो तुम को कहूं, करो भजन भगवान।।

गुरू आश्रम में पढ़ते हुए जब ऋषि किसी निजी कार्य से चले गए तो उनकी अनुपस्थिति में प्रहलाद जी अपने सभी सहपाठियों को राम नाम का महात्म समझाते हुए संबोधित करने लगे कि तुम सदा उस राम का ही नाम जपा करो। जो संसार तुम देखते हो वह तो

स्वप्न के समान क्षणभंगुर है। सदा साथ रहने वाला तो वह राम का नाम ही है।

छन्द :

सुनकर बालक कहने लगे, ऐ वीरन सुनो हमारी बात।
हम तुम जन्में राक्षस कुल में, तुमरी हमरी एको जात।।
हमको हासिल हुई ना विद्या, भजन सीख लिया किस से आप।
तुम्हारा कहना मान लिया जो, खफा होंगे गुरू माँ और बाप।।
प्रहलाद जी बोले सुनो तुम, भाइयों नारद जी ने दिया उपदेश।
सतसंगत है सार जो वस्तु, इस पर मुझको लागी लेश।।
तुम भी ऐसा निश्चय कर लो, मान लो मेरा कहना।
अज्ञान की निंद्रा से तुम जागो, सत्संगत में जा बैठना।।

प्रत्युत्तर में सभी सहपाठी कहने लगे कि हम जिस राक्षस कुल में पैदा हुए हैं, वहाँ हमें ऐसी कोई भी बात नहीं सिखाई जाती। तुमने यह सब कहाँ से सीख लिया है। यदि हम तुम्हारा कहना मानकर राम नाम कहेंगे तो हमारे माता-पिता एवं गुरू सभी अति क्रोधित हो जाएंगे।

प्रहलाद जी ने कहा कि नारद जी ने ही मुझे सत्संगति का महत्व समझाया है। यही वास्तव में हमारे जीवन का सार है। तुम सब भी इस अज्ञान के अंधकार से बाहर आ जाओ और मेरा कहना मानते हुए प्रभुनाम सिमरन करते हुए सत्मार्ग पर चलो।

बैंत :

उठो जागो भाईयों मेरे तुम, समय जागने का है सो जाना नहीं।
सुन्दर जीवन मानुष का मिला यदि, बदले कौढ़ी दे गवानां नहीं।

राम राम करना रोज दिन-रात, होवें कोई तकलीफ घबराना नहीं।
चाहे राम का नाम ना लेना, तुम राम का नाम भुलाना नहीं।।

गुरबाणी :

कबीर मानुष जन्म दुर्लभ है, होय न बारम्बार।
ज्यों बन फल पा कर नीचे गिरे, बहुरि न लागै डाल।।

(गुरबाणी पृ. 1399)

गुरबाणी में कबीर जी फरमाते हैं कि मनुष्य जन्म हमें बड़े सौभाग्य से, ना जाने कितनी योनियों से गुजरकर आने के बाद प्राप्त हुआ है। ऐसा दुर्लभ जीवन बार-बार सुगमतापूर्वक नहीं मिलता। जिस प्रकार पेड़ से पका हुआ फल नीचे गिरने के बाद दोबारा उस पेड़ की डाल पर नहीं लग पाता, ऐसे ही हम यह जीवन पके हुए फल की भाँति व्यर्थ ही गँवा देंगे तो ना जाने फिर यह जन्म कब मिलेगा। अतः इसे प्रभु नाम सिमरन से सार्थक और सफल बनाना चाहिए।

बैंत

मानुष जन्म दुर्लभ जो लिखा है, मानुष जन्म नहीं बारम्बार भाईयो।
श्वास जांवदे रोज ही रोज ऐवें, याद करदे क्यों नहीं करतार भाईयो।।
यह झूठी पढ़ाई ना काम आनी, पढ़ लो राम पढ़ाई जो सार भाईयो।
झूठी दुनिया इक दिन छोड़ जानी, फिर आना नहीं इस बाजार भाई।।
इक मन होकर राम नाम जप लै, जन्म-मरण का उतर जाए भार भाई।
महल-माणियां तरफ ना ध्यान लगावो, छोड़ जावणें लाख हजार भाई।।
मेरे कहने नूं कदे विसराना ना, जपो राम बेड़ा होवे पार भाई।
दासन दास कहन्दा राम सार, वस्तु राम पापियां नूं देंवे तार भाई।।

भजन

टेक : मेरे वीरों जी कर लो विचार जरा,
श्री राम का नाम दिल धार जरा

1. पतित पावन नाम प्रभु का, क्यों नहीं ध्यांवदे,
   छोड़ जानी सभी दुनिया, चित्त क्यों लगावंदे
   मुश्किल वक्त ना हुन्दा कोई यार जरा

2. देह ने तो मिट्टी विच मिलना, इसदा अभिमान की
   वीरों तुम भक्ति कर लो, राम जी भगवान की
   दिया पत्थर को जिसने तार जरा

3. अजामल आखिरी समय, नाम प्रभु का ध्यावंदा
   अधम पापी तार दिया, देर नहीं लगावंदा
   पुत्तर हेतु लिया दिल धार जरा

4. छोड़ दयो तुम काम सारे, नाम प्रभु का ध्यालो
   जन्म सफला कर लवो, श्री राम के गुण गा लो
   दासन दास ना 'राम' बिसार जरा

दोहरा :

सुन लिया उपदेश जब, छोड़ दिए सब काम।
और पढ़ाई तज दी, पढ़ने लगे श्री राम।।

राम राम राम श्री राम राम जी, राम राम राम श्री राम राम जी

प्रहलाद जी की बात मानकर, सभी सहपाठियों ने अपने सारे काम छोड़ दिए, खेलना-पढ़ना आदि सब कृत्य छोड़कर राम-राम-राम श्री राम-राम-राम का जाप करने लगे। राम नाम के रस में सभी प्रहलाद व उनके साथी मग्न हो गए।

दोहरा :

सण्डामरका आ गए, सुनी राम की धुन।
बिगड़ गए सभी चाटणे, इलाज करा क्या अब।।

श्री राम नाम की धुन सुनकर, सण्डा मरका ने जब वहाँ आकर दृश्य देखा तो बेबस से होकर सोचने लगे कि अब यहाँ पर सबका सुधार कैसे करें।

छन्द :

बालकों ने जब देख लिया, जो गुरू हमारे आते हैं।
मन में राम राम ही करते, गुरां से दहशत खाते हैं।।
विप्रों ने हॅथ बैंत ली है, सब ऊपर बरसाने लगे।
साण-साण कर बैंत करसदी, सब कोई डरने लगे।।
बड़े जोश में आ गए पण्डित, चश्मो के हुए डोरे लाल।
प्रहलाद भगत को कहने लगे, क्या सिखलाई इनको चाल।।
जैसे अग्न प्रचलित होवे, जब जाती है ऊदक के पास।
तेज अग्न का दूर जो होवे, ये तासीर है ऊदक में खास।।
जब देखा प्रहलाद भगत को, क्रोध विप्र का हुआ नाश।
दो घड़ियां दे मगरों ऋषि जी, फिर गए हैं राक्षस के पास।।

बालकों ने जब अपने गुरुओं को आते देखा तो वह जोर से ना बोलकर धीरे-धीरे अपने मन में ही श्री राम नाम का जाप करने लगे। सण्डा-मरका दोनों ने हाथ में बेंत लेकर क्रूरतापूर्वक सभी विद्यार्थियों को डराते हुए व क्रोध से दोनों ही गुरू आँखें लाल करते हुए प्रहलाद से कहने लगे कि तुमने इन सभी को अपने जैसा बना दिया है।

कितनी भी तेज प्रज्वलित होती अग्नि को शांत करने का गुण केवल जल के पास ही है। उसी प्रकार प्रहलाद को देखते ही दोनों गुरुजनों की क्रोधाग्नि शांत हो गई। फिर कुछ समय बाद वह राक्षस हिरण्याक्ष के पास सब हाल बताने को चले गए।

गुरबाणी भैरउ नामदेव जी :

सण्डा मरका जाए पुकारे। पढ़े नहीं हम ही गए हारे।।

राम कहे करताल बजावै, चटीआं सभी बिगाड़े ।।1।। (पृ. 1195)

गुरबाणी में भी इसी घटना का वर्णन किया गया है - सण्डा-मरका दोनों राजा हिरण्याक्ष के पास जाकर मानो समर्पण करते हुए व अपनी हार स्वीकार करते हुए कहने लगे कि हमारे द्वारा पढ़ाए गए पाठ को पढ़ने की बजाए, प्रहलाद द्वारा पढ़ाए गए राम नाम का ताली बजाकर अधिकाधिक रस लेते हुए बाकी सब शेष विद्यार्थी भी जाप करने लगे हैं।

दोहरा :

हमने बहुत समझाया, समझे ना ही मूल।
बिगाड़ दिए सभी बालके, तोड़ दिए सभी रूल।।
राजा ने जब यह सुना, कीने नेत्र लाल।
दूत भेजा लेने को, बुलवाया तिह काल।।

हमारे लाख समझाने, डराने, धमकाने का किंचित मात्र भी प्रहलाद पर प्रभाव नहीं पड़ा। गुरुकुल के सभी नियमों की अवज्ञा करते हुए प्रहलाद ने अपने सभी सहपाठियों को भी अपना अनुसरण करवाना शुरू कर दिया है।

ऐसा सुनकर राजा अत्यंत क्रोधित हो गया और तत्काल ही प्रहलाद को वापिस बुलवाने के लिए दूत भेज दिए।

छन्द :

ऐ मूर्ख क्या सबक सीख लिया, इस सबक का करदे त्याग।
दुश्मन मेरे का नाम क्यों लेता, पड़ अविद्या में तूं जाग।।
प्रहलाद जी कहते हैं पिता जी, राम का नाम जगत में सार।
तुम भी राम कहो मन लगाकर, हो जाएगा बेड़ा पार।।
इस जन्म को सफल करो, यह तन नहीं मिलता बारम्बार।
राम जी राम कहो मुख से तुम, जिसकी महिमा अपरम्पार।।
जब यह बात सुनी राजा ने, जल बल के हो गया फिर छार।
कैसा बालक पैदा हुआ, कुल मेरी में जो अंगार।।
जननी के पेट में ऐसा बालक, क्यों कर यह नहीं गला।
इस नालायक पुत्र से तो, सीना मेरा बहुत जला।।
इस दुष्ट को जल्दी ले जाओ, मेरी नज़र से करो परे।
पर्वत के शिखर से गिरा दो नीचे, गिरकर फौरन से मरे।

प्रहलाद को समझाते हुए पिता कहने लगे कि हे मूर्ख! तुमने विद्या ग्रहण करने की बजाए राम नाम रूपी व्यर्थ का पाठ क्यों सीख लिया है। मेरे शत्रु का बार-बार नाम लेकर तुम मुझे आहत क्यों करते हो।

पिता को आवेश से भरा देखकर भी प्रहलाद टस से मस नहीं हुए और निर्भयता से पिता को ही राम नाम की महिमा समझाते हुए कहने लगे कि आप भी अपने इस जन्म को सार्थक व सफल बनाने के लिए निरन्तर उस प्रभु राम के नाम का जाप करो। यह जगत

तो नश्वर है, केवल राम नाम ही इस भवसागर से हमारा बेड़ा पार लगा सकता है।

ऐसा सुनते ही राजा आगबबूला होकर प्रहलाद को कोसने लगा। हिरण्याक्ष प्रहलाद को कुलनाशक बताते हुए कहने लगा कि ऐसे नालायक पुत्र का तो माँ के गर्भ में ही अंत हो जाना चाहिए था। क्रोधावेश में ही राजा ने प्रहलाद को पर्वत से नीचे गिराकर मार डालने का आदेश दे दिया।

दोहरा :

हुक्म मान राक्षस गए, गिरि पर दिया बिठाए।

कहने लगे प्रहलाद को, निहक ना जान गवांए।।

राजा का आदेश पाकर राक्षसों ने उनको पर्वत की चोटी पर जाकर बिठा दिया। फिर भी समझाते हुए कहने लगे कि तुम व्यर्थ ही अपनी जान क्यों गँवाना चाहते हो।

छन्द :

तू विष्ण जिष्ण का नाम छोड़ के, पिता के नाम का जप ले जाप।

संसार में तुम्हारा यश होवेगा, पिता तेरे का बड़ा प्रताप।।

राक्षस प्रहलाद को कह रहे हैं कि तुम उस विष्णु के नाम के जप को छोड़कर पिता के नाम को क्यों नहीं जपते, ऐसा करने से समस्त संसार में पिता की भाँति तुम्हारा भी यश फैलेगा।

दोहरा :

प्रहलाद जी तब कहने लगे, सुनो राव के दूत।

पिता का हुक्म जो कुटिल है, सो ना माने पूत।।

प्रहलाद जी पिता के दूतों को उत्तर देने लगे कि आपके कथनानुसार मैं पिता के नाम का

जाप नहीं करूँगा। पिता का आदेश कुटिल और अनुचित होने के कारण, उनका पुत्र होकर भी मैं उसका पालन नहीं करूँगा।

छन्द :

परमेश्वर से बेमुख होकर, लोक-परलोक बिगड़ा जाते।
यह खोटी शिक्षा नहीं मानूंगा, छोड़ राम को कष्ट पाते।।
इस झूठे तन की खातिर मैं तो, शुभ कर्मों का करूं ना त्याग।
करना कूच रहना जग नाहीं, इक दिन जंगल होना वास।।
नाम प्रभु का सत्संग करना, उभय जहाज कहाते हैं।
संसार समुद्र गहरा है, जो आसरा ले वो तर जाता है।।
राम का सिमरन कभी ना छोड़, कर लो जो तुम्हारी मर्जी।।
आखिर को तुम पछताओगे, अब तो बने है खुदगर्जी।।

प्रहलाद जी भयहीन होकर अपना निर्णय सुनाते हुए कहने लगे कि मैं राम नाम का त्याग किसी भी कारण से नहीं कर सकता। जो राम नाम नहीं भजते उनके लोक-परलोक दोनों बिगड़ जाते हैं और दोनों लोकों में ही वे अनेकों कष्ट पाते हैं। मृत्यु तो सनातन सत्य है। मृत्यु के भय से मैं कदापि पथभ्रष्ट नहीं होऊँगा।

प्रभु राम का नाम व उनके नाम का सत्संग/संकीर्तन दोनों ही ऐसे मजबूत जहाज हैं, जिन पर सवार होने वाला गहरे समुद्र रूपी संसार को बड़ी आसानी से पार कर लेता है।

अभी तो तुम मेरे पिता की संगति के करण स्वार्थवश मुझे ऐसा अनर्थ करने को कह रहे हो, किन्तु मैं अभी भी आपको सचेत कर रहा हूँ कि राम के नाम के बिना आपका कल्याण अन्य कोई और कदापि नहीं कर सकता। इसी कारण मृत्यु के भय से मैं आपकी ऐसी खोटी सलाह नहीं मान सकता।

भजन

टेक : बला से जान यह जाए,
ना कोई ऊजर लावांगा

1. हृदय में राम बसा है, कभी नहीं जो भुलाऊंगा
   किसी सूरत वचन नृप का तो मैं नहीं मान सकता हूँ
   बेशक जान चली जाए, प्रभु के गीत गावंगा

2. नसीहत आप की झूठी, खफा दिल होता सुनकर के
   ना मुझको लोड़ जीवन की, ना तन से प्रीत पावंगा

3. ये माना बाप के डर ने, भुलाए लोग बहुत भोले
   मगर उनकी तरह ना मैं, धर्म अपना गवावंगा

4. हरदम राम मेरे संग, वो रक्षा करने वाला है
   मैं दासन-दास बनकर के, उमर अपनी बितावंगा

दोहरा :

इतना सुन जल्लादों ने, गिरि से दिया गिराए।
देख लवांगे राम अब, तेरी करे सहाय।।
पवन देवता प्रभु ने भेजा, भगत के पास।
पुष्प की तरह संभालया, हुआ दुखी ना दास।।

प्रहलाद के ऐसे विचार सुनकर उन क्रूर राक्षसों ने प्रहलाद को पर्वत की चोटी से नीचे

गिरा दिया और साथ ही कहा, अब देखते हैं कि तुम्हारे राम तुम्हारी कैसे सहायता करते हैं।

प्रभु ने तत्काल अपने परम भक्त की सहायता के लिए पवन देवता को सहायक के रूप में भेज दिया। उन्होंने प्रहलाद जी को कुछ भी कष्ट ना होने पाए, इसके लिए फूलों की तरह संभाल की व प्राण रक्षा की।

छन्द :

नीचे जमी पर गिरे भगत जी, पवन ने गोद में रख लिया।
शर्मिंदे तो जाल्म हो गए, हाल राजा का बता दिया।।
हे महाराज हम हुक्म मानकर, गिरि ऊपर से दिया गिराए।
प्रहलाद गिरा है भूमि पर, जिस्म को लगी नहीं खरोंच।।
राम-राम के गुण गाता था, खौफ नहीं है कुछ खाया।
सुन राजा ने क्रोध किया है, राक्षस को फिर फरमाया।।
खुनी हाथी के आगे डालो, कर देगा इसका नाश।
क्लेश रोज का खत्म होगा, दूर होवे इसका विश्वास।।
हुक्म मानकर जल्लादों ने, हाथी के आगे डाला है।
प्रहलाद भगत को हाथी ने, अपना शीश झुकाया है।।
चीख मारकर भाग गया है, मन में दहशत खाता है।
नृप ने यह कौतुक देखा, दिल में बहुत घबराता है।।
ऐ दूतों तुम बांधो जल्दी, लोहे की डालो जंजरी।
बीच समुद्र गिरा दो तुम, होवे नाश इसका शरीर।।
हुक्म मानकर राक्षसों ने, समुद्र में दिया बहाए।

भगत जी ऐसे तैरते दिखे, जैसे मुरगाई कमल तैर रहा हो।।
दूतों ने आकर दिया संदेशा, डूबा नहीं वो तरता है।
हैरान हो गया सुनकर राजा, क्यों नहीं वो मरता है।।

पवन देव द्वारा प्रहलाद जी को बचाने का सारा वृतांत राक्षसों ने शर्मिन्दा होते हुए राजा को बता दिया। राक्षस बोले कि आपके आदेशानुसार हमने तो प्रहलाद को पर्वत की चोटी से गिरा दिया था, किन्तु निर्भय होकर मृत्यु को सामने देखकर भी प्रहलाद ने राम नाम का जाप नहीं छोड़ा। हम यह देखकर और भी आश्चर्यचकित रह गए कि इतनी ऊँचाई से गिरने पर भी प्रहलाद के तन पर एक खरोंच भी नहीं आई।

प्रभु भक्ति की ऐसी असाधारण महिमा देखकर भी राजा का क्रोध शांत नहीं हुआ। उसने अपने दूतों को आदेश दिया कि अब प्रहलाद को खूनी हाथी का शिकार बना डालो। खूनी हाथी द्वारा इसके शरीर का अन्त तो होगा ही साथ ही इसके विश्वास का भी अंत हो जाएगा।

फिर से आदेश पाकर उन जल्लादों ने प्रहलाद जी को खूनी हाथी के आगे डाल दिया। सभी को ये देखकर आश्यर्च हुआ कि ऐसा खूँखार हाथी भी प्रहलाद जी के समक्ष नतमस्तक होकर भयभीत होता हुआ वहाँ से भाग गया। ऐसा दृश्य देखकर घबराकर राजा चिल्लाकर बोला कि जल्दी से प्रहलाद को लोहे की जंजीरों से बाँध कर समुद्र में फेंक दो।

राक्षसों द्वारा समुद्र में फेंके जाने पर भी डूबने की बजाए प्रहलाद जी, जल में उन्हें कमल की भाँति तैरते दिखाई दिए। दूतों द्वारा ऐसा संदेश मिलने पर राजा आश्चर्यचकित होते हुए सोचने पर विवश हुआ, उसकी मृत्यु के लिए किए गए सभी उपाय निष्फल क्यों हो रहे हैं।

दोहरा :

गहरा गढ्ढा खोद के, इसको दो दबाए।
देख लूंगा राम जो, कैसे ले बचाए।।

हताश होकर पिता हिरण्याक्ष ने पुत्र प्रहलाद को गहरा गड्ढा खोदकर, उसमें दबा देने का आदेश दे दिया। अभिमानी राजा अभी भी देखना चाहते हैं कि प्रहलाद के राम अब उसकी रक्षा किस प्रकार से करते हैं।

छन्द :

गाढ़ दिया भूमि में भगत को, उसी समय भूमि गई फट।
सारे लोग जो देखते देखते, भगत जी बाहर आ गए झॅट।।
नृप ने जब यह कौतुक देखा, मन में हुआ बड़ा हैरान।
आंखों में तो क्रोध भरा है, दूत को लगाया फिर फरमान।।
लाखों मॅन ईंधन तुम जोड़ो, उनके बीच में दो बिठाए।
आग लगाओ, रहम न खावो, देखूं राम जो लेवे बचाए।।
हुक्म मानकर दूतों ने, लकड़ी कीनी तुरंत तैयार।
पोटली बाँध बीच भगत जी बिठाए, अग्नि लगाई खूब ध्यान से।।
लकड़ी तो जलकर राख हो गई, भगत जी को आंच नहीं आई।
उसको कोई मार ना सके, जिसका होवे राम सहाई।।

राजा की आज्ञानुसार प्रहलाद को भूमि में गाढ़ दिया गया। तभी सभी ने देखा कि तत्काल ही धरती के फट जाने से प्रहलाद जी तुरंत बाहर आ गए हैं। ऐसा दृश्य देखकर आश्चर्यचकित होने के साथ-साथ अहंकारवश उस अभिमानी हिरण्याक्ष ने, हार ना

मानते हुए दूतों को फिर से आदेश दे दिया।

आदेश दिया कि लाखों मॅन ईंधन जोड़कर, प्रहलाद को उसमें बिठाकर आग लगा दो, फिर देखते हैं इसके राम कैसे बचाएंगे।

आदेशानुसार आग लगा देने पर भी रामकृपा से प्रहलाद जी का बाल भी बाँका नहीं हुआ। भयंकर अग्नि भी उन्हें कोई हानि नहीं पहुँचा पाई।

भजन

टेक : जल डोबदा न अग्नि साणे,
जिन्हां तेरा नाम जपया।

1. पापी ने है जुल्म कमाया, अपना जोर बहुत लगाया
   कर गहरीयां अॅख ताणे, धन्य राम जी
2. पर्वतों नीच भगत गिराया, खूनी हस्ती अॅगे पाया
   देखो काम करे सब ही माड़े, धन्य राम जी
3. बीच समुद्र सुत बिठाया, भूमि दे विच फिर गढ़वाइयां
   ऐवें पीके गुस्से चाणे, धन्न राम जी
4. बीच अग्न दे भगत जलाया, अपने दिल से मार मुकायां
   नृप अंखियां नहीं उधाणें धन्य राम जी

दोहरा :

नृप ने जोर लगा दिया, भगत नहीं भय खाए।
दिल में अब सोचने लगा, करिए कौन उपाय।।

सभी उपायों को निष्फल होता देखकर राजा मन में सोचने लगा कि किसी भी प्रकार का भय प्रहलाद को अपने दृढ़ विश्वास से डिगा नहीं पाया है। अब मेरे द्वारा करने के लिए शेष कौन सा उपाय रह गया है।

छन्द :

कोई पेश अब चलती नहीं, क्रोध से है नृप भरा।
हे कुपुत्र अब-मैं समझ लिया है, मन्त्र-जन्त्र तुमने किया।।
छोड़ के नाम तू अब विष्णु का, मेरा नाम हृदय में धार।
प्राण तो तेरे तभी बचते हैं, नहीं तो देख ले यह तलवार।।
तेरे ऊपर रहम करता हूँ, फिर भी अपना पुत्र जान।
राम का नाम, ना भूल कर लेना, यह कहना तूं मेरा मान।।
अरे नीच तूं समझे नाही, देख मेरा कैसा प्रताप।
मेरे सम्मुख राम ना कोई, सब करते हैं मेरा जाप।।
विधि गणेश शेष खा सस जो, वर्ण कुबेर और देवी देव।
इंद्र तो है मुझसे डरता, पवन-अग्नि भी करते सेव।।
करते हैं सभी काम देवता, आज्ञा पाकर मेरी।
तूं पुत्तर क्यों हुकम ना माने, बुद्धि भ्रष्टि है तेरी।।
बिना कहे जो काम करे, उत्तम वो पुत्तर कहलाता है।
जो कहा हुआ भी काम करे, जो मध्यम ही रह जाता है।।
जो कहने पर भी ना काम करे, उसको कहते हैं कानिष्ट।
जो पिता के हुक्म को ना माने, वो इन तीनों से है भ्रष्ट।

जिस विष्णु के तूं गुण गावे, कंगले की तरह रहे वो दीन।।
बड़े राजे का पुत्र होकर, क्यों उसके तूं हुआ अधीन।।
सुन कंगले की बात सुनावां, कोई तंदुल कोई पुष्प देवे।।
कोई तुलसी दल पत्र देव, हाथ पसार के ले लेवे।।
साग अलूड़ा काढ़ी और खींचड़ी, बासी टुकड़े भी खाता।
हे पुत्र वो नीच के कर से, जुठे बेर भी खा जाता।।
बहुतेरे फिर छल कर मारे, कपटी है वो भारा।
निशदिन गुण गाए तूं उसके, भ्राता मेरा जिस मारा।।
ऐ मूर्ख तूं बेहया है, शर्म ना तुझको आती है।
दुश्मन का तू नाम छोड़ दे, फट रही मेरी छाती है।।

जब अन्य कोई उपाय समझ में नहीं आया तो अति क्रोधित होकर प्रहलाद को कुपुत्र संबोधित करते हुए कहने लगा कि तुमने अवश्य ही कोई जादू-टोना या मन्त्र-जन्त्र किए हैं। अभी भी समय है तुम विष्णु नाम के जाप को त्यागकर, मेरा नाम चिन्तन करो अन्यथा मेरी यह अचूक तलवार निश्चित ही तुम्हारा अब प्राणांत कर देगी।

मेरा पुत्र होने के कारण, प्रेमपूर्वक तुम्हें समझाना चाहता हूँ कि राम का नाम लेना छोड़कर, संसार में सबकी भाँति केवल मेरा ही यशोगान कर। मेरी शक्ति और मेरे यश के समक्ष उस राम का कोई आस्तित्व नहीं है। इसी कारण मेरा कहना मानने में ही तुम्हारी भलाई है।

हे पुत्र! तुम्हारी बुद्धि भ्रष्ट हो जाने के कारण ही तुम ऐसी अवज्ञा कर रहे हो। जबकि ब्रह्मा, गणेश, शेषनाग, वरुण, कुबेर, पवन, अग्नि आदि सभी देवता मेरी सेवा में रहते हैं। देवराज इन्द्र तो सदा ही मुझसे भयभीत रहता है। समस्त देवी-देवता मेरी आज्ञानुसार ही सभी कार्य करते हैं।

पिता, पुत्र को चार तरह के पुत्रों के बारे में बता रहा है:-

1. उत्तम पुत्र : वह है जो बिना बोले पिता की आज्ञा माने।
2. मध्यम पुत्र : वह है जो पिता द्वारा कही हर बात माने।
3. कनिष्ठ पुत्र : वह कहलाते हैं जो कहने पर भी बात को नहीं मानते हैं।
4. भ्रष्ट पुत्र : वह कहलाते हैं जो पिता के किसी भी आदेश को नहीं मानते।

इतने बड़े राजा के पुत्र होकर भी तुम उस दीन-हीन और दरिद्र विष्णु का गुणगान करके उसके आधीन क्यों रहते हो। वह तो इतना दरिद्र है कि कोई उसे चावल, फूल, फल, तुलसी पत्र जैसी छोटी-छोटी वस्तुएँ भी अर्पण करता है तो उन्हें भी वह खुशी-खुशी स्वीकार कर लेते हैं। बिना नमक का साग, कढ़ी, खिचड़ी, बासी भोजन तो खा ही लेता है, साथ ही छोटी जाति वालों के हाथ से उनके झूठे बेर भी खा लेता है।

तुम प्रतिदिन मेरे भाई का वध करने वाले कपटी का स्मरण करते हो। जिसने अनेकों प्रकार के छल-बल करके बहुतों को मारा है।

तुम सदा मेरे शत्रु का नाम लेकर मुझे बहुत आहत करते हो। ऐसा कर्म करते हुए तुम्हें तनिक भी शर्म या झिझक का अनुभव भी नहीं होता।

दोहरा :

इतना सुन प्रहलाद ने, मुख से कहा उच्चार।
राम कभी नहीं छोड़ना, राम जगत में सार।।

इतना सब सुनकर भी प्रहलाद ने अपना निर्णय नहीं बदला। स्वयं राम का नाम का उच्चारण करते रहे और पिता को भी राम नाम की महिमा समझाकर उन्हें भी राम गुण गाने के लिए कहने लगे।

गुरबाणी :

सोरठ भीषण जीउ

ऐसा नाम रत्न निरमोलक, पुण्य पदार्थ पाया।
अनिक यत्न कर हृदय राखया, रत्न न छिपे छुपाया।।

(पृ. 659)

गुरबाणी में प्रभु नाम की महिमा का गुणगान करते हुए कहा गया है कि राम नाम रूपी अमूल्य व अनमोल रत्न अनेकों पुण्यों के फलस्वरूप पाया है। अपने अंर्तहृदय में उसे छिपाकर रखना चाहा किन्तु ऐसा प्रयत्न सफल ना हो पाया। प्रभु नाम रूपी दिव्य सुगंध ाि न चाहते हुए भी सर्वत्र फैल जाती है। उसका ऐसा अनूठा प्रताप सीमित नहीं रखा जा सकता। वह तो अनन्त और अमरम्पार है।

छन्द :

अंतर्यामी सर्व व्यापक, सारे ही वो है भरपूर।
शुद्ध मन होकर जहां आराधो, देख लो हाजर-हजूर।।
रंचक सेवा करने करके, खुश हो जाता है भगवान।
अपनी शक्ति से बनवाया, यह जो दिखे सकल जहान।।
प्रेम भाव से पुष्प और पत्र, जो कोई दे देता है।
हाथ पसार कर मेरा प्रभु जी, शीघ्र ही ले लेता है।।
जिनमें पैदा हुआ ब्रह्मा, वहां से लीना वर।
राम का डर ना खाए मन में, बन बैठा तूं आज अमर।।

पिता को राम जी की अपार महिमा समझाते हुए प्रहलाद जी कह रहे हैं कि जिन राम का आप विरोध करते हो, वह राम तो सर्वव्यापक है, अंतर्यामी है। इस संसार के कण-कण

में वह राम जी विद्यमान हैं। इसी कारण शुद्ध और पवित्र भाव से जहाँ भी चाहे उनके दर्शन पा सकते हैं। उस सर्वशक्तिमान परमात्मा ने अपनी शक्ति से ही इस सृष्टि की रचना की है। इतने दयालु हैं कि थोड़ी सी सच्ची सेवा व प्रेम मात्र से ही उन्हें प्रसन्न किया जा सकता है। श्रद्धा, प्रेमभाव से चाहे कोई एक पुष्प ही अर्पण कर दे तो भी मेरे राम उसे भी सहर्ष स्वीकार कर लेते हैं। वह राम ही ब्रह्मा जी के भी उत्पति स्त्रोत हैं। जिनसे प्राप्त हुए वरदान के कारण आप अभिमान और अहंकार वश स्वयं को ही भगवान समझने लगे हैं।

दोहरा :

बात सुनी भूपत ने, जल बल हुआ छार।
अब तुमको नहीं छोड़ना, जान से दूँ मार।।
लोहे के खम्ब को तपाया जलाकर, जब वो हुआ लाल।
लोहे की जंजीर से बांध दिया, भगत जी उसके साथ।।

प्रहलाद द्वारा दिए गए ऐसे तर्क सुनकर हिरण्याक्ष जल भुन कर अत्यंत क्रोध के कारण अपनो आपा खो बैठा। जिस कारण उसे मारने का दृढ़ निश्चय करते हुऐ लोहे के खम्भे को खूब तपाकर लाल करके प्रहलाद को उस खम्भे के साथ लोहे की जंजीरों से बाँध दिया।

छन्द :

कुछ भी डर न लगा भक्त को, राम जी के गुण गाता है।
ऐसा शीतल खम्भा हुआ, बर्फ के सम बन जाता है।।
ऐसे पुत्र को निर्भय देखकर, तब नृप ने मुख से कहा उच्चार।
अरे दुष्ट तुझे अग्नि में बांधा, देखूं तेरा विष्णु मुरार।।

प्रहलाद जी द्वारा दृढ़ विश्वास के साथ एकाग्रचित्त होकर राम सिमरन करने से, राम कृपा के कारण वह तपा हुआ खम्भ भी बर्फ की भाँति शीतल हो गया।

तपे हुए खम्भे से बाँधने के बाद भी प्रहलाद को भय रहित, शांत चित्त देखकर हिरण्याक्ष विचलित होते हुए बोला कि देखते हैं इस इस स्थिति में तुम्हारे विष्णु मुरार किस प्रकार से तुम्हारी रक्षा करते हैं।

दोहरा :

नृप ने ऐसे कहते हुए, पकड़ ली तलवार।
बुला ले तूं राम को, लेवे तुम्हरी सार।।

अपने क्रोध को वश में ना रख पाने के कारण राजा ने अपनी तलवार निकाल कर प्रहलाद को ललकारते हुए कहा कि अब तुम अपने राम का अपनी रक्षा के लिए बुलाओ।

दोहरा :

प्रहलाद जी तब कहने लगे, राम नहीं है दूर।
सब में ही राम हैं, राम मेरा भरपूर।।

पिता की बात सुनकर प्रहलाद जी बोले, मेरे राम को बुलाने की कोई आवश्यकता ही नहीं है क्योंकि वह तो सर्वत्र ही विद्यमान हैं।

छन्द :

जल में, थल में, घट में, पट में, तेरे में और मेरे में।
जीव-जन्तु, आकाश-भूमि में, इस खम्भे के चारों तरफ।।
भक्तों की वो रक्षा करते, युगों-युगों से लेकर अवतार।

बाप उसका बोल उठा, घट-घट में है तो दे दीदार।।

राम तो युगों-युगों से भक्तों की रक्षा के लिए अवतरित होकर उन्हें प्रत्येक विपत्ति और कष्टों से सदा ही बचाते आए हैं। फिर चाहे कोई भी स्थिति या कोई भी स्थान हो, राम सच्ची पुकार सुनकर तुरंत ही आ जाते हैं। जल में, थल में, घट में, पट में, प्रत्येक कण-कण में, समस्त प्राणियों में, जीव-जन्तुओं में, आकाश और भूमि में तो वह सदा हैं ही, साथ ही खम्भे के चारों ओर भी मेरी रक्षा के लिए विद्यमान हैं।

ऐसा उत्तर सुनकर प्रहलाद से पिता बोले यदि सर्वत्र है तो फिर मेरे सामने भी आए।

दोहरा :

हिरण्याक्ष तभी बोला, सब में है तो निकाल।

फिर आकर वो क्या करेगा, मारूंगा तत्काल।।

जब राजा ने यह कहा, मुख अपने से बात।

खम्भा फोड़कर सिंघ जी, प्रभु आ खड़े हुए साक्षात।।

हिरण्याक्ष ने चुनौती देते हुए प्रहलाद से कहा कि यदि राम हर जगह विद्यमान हैं तो उन्हें मेरे सामने भी लेकर आओ। मैं तो शीघ्र ही तुम्हारा प्राणांत करने वाला हूँ उसके बाद उनके आने का क्या लाभ रह जाएगा।

राजा के ऐसे वचन कहते ही, खम्भा फोड़कर भगवान नरसिंह रूप में स्वय प्रकट हो गए।

बसन्त कबीर जीउ।।

प्रभु खम्भे से निकले ले विस्तार।।

हिरण्याक्ष छेदयों नख बिदार।।4।।

ओ परम पुरुष देवाधिदेव।।
भक्त हेतु नरसिंघ भेष।।

(गुरबाणी पृ. 1194)

गुरबाणी में नरसिंह रूप धारण कर अवतरित हुए भगवान विष्णु की महिमा का वर्णन इस प्रकार किया गया है –

भगवान अति विराट रूप लेकर नरसिंह के भेष में खम्भें से प्रकट हो गए। अपने तीक्ष्ण नाखूनों को अपना शस्त्र बनाकर हिरण्याक्ष पर प्रहार करके, उसका वध कर दिया।

वह सर्वशक्तिमान, भक्त शिरोमणि, पारब्रह्म, अकाल पुरख, परमपिता अपने सच्चे भक्त की रक्षा के लिए नरसिंह रूप धारण करके अवतरित हुए।

दोहरा :

नरसिंघ रूप को देखकर, नृप हुआ भय वान।
डरकर है भागा, लगा जान बचान।।

भगवान के ऐसे भयानक नरसिंह रूप को देखकर हिरण्याक्ष अति भयभीत होता हुए, अपने प्राणों की रक्षा के लिए वहाँ से भागने लगा।

छन्द :

पकड़ लिया केशों से प्रभु ने, कहाँ भाग अब जाना है।
भगत मेरे को कष्ट जो दिया, उस का फल दिखलाना है।।
जांघो के ऊपर लिए लिटा, भीतर बैठ गए द्वार।
सभी हाल अब जतलाते हैं, मुख अपने से वचन उच्चार।।
शस्त्र-अस्त्र नहीं चलाऊँ, नर ना ही और ना नारी मैं।

अग्नि देवता, जल ना पवन हूं, वन कोई स्थान न भारी मैं।
बाहर-घर आकाश-पृथ्वी, पशु-पक्षी, दिन-रात नहीं।
बारह मास और सब सृष्टि में, मेरी कोई जात नहीं।।
ब्रह्मा के वर सभी बतलाए, तभी सूर्य अस्त होने को है।
नख से पेट को फाड़ दिया है, हड्डी तोड़ दी बखूब।।

भागते हुए हिरण्याक्ष को केशों से पकड़कर, भगवान ने उसे रोक दिया और कहने लगे कि मेरे प्रिय भक्त प्रहलाद को जो भारी कष्ट पहुँचाए हैं, उसका फल अब तुम्हें भुगतना पड़ेगा।

अपनी जाँघों पर उसे लिटाते हुए दरवाज़े की दहलीज पर बैठ गए। ब्रह्मा जी के वरदान के अनुसार का सारा हाल बताने लगे कि - ना तो मैं नर हूँ और ना ही नारी हूँ। ना अग्नि, ना जल, ना पवन हूँ, ना पशु हूँ, ना पक्षी हूँ, ना ही वन में हूँ, ना घर में, ना ही कहीं घर से बाहर हूँ, ना ही यह दिन का समय है और ना ही रात्रि का। सम्पूर्ण सृष्टि और बारह मासों में मेरी कोई जाति भी नहीं है।

अभी सूर्यास्त का समय होने वाला है। ब्रह्मा जी के वरदान के अनुसार मैं कोई भी अस्त्र-शस्त्र का प्रयोग किए बिना केवल अपने तीक्ष्ण नाखूनों का ही प्रयोग करूँगा।

ऐसा कहते हुए भगवान नरसिंह ने अपने नाखूनों के प्रहार द्वारा ही हिरण्याक्ष का पेट चीर दिया और पूरी तरह से सभी हड्डियाँ तोड़ दी।

दोहरा :

पेट से आद्रें निकाल कर, गले में डाला हार।
भयानक रूप को देखकर, मच गया हाहाकार।।

हिरण्याक्ष के पेट की आँतड़ियों को निकालकर उन्हें माला के रूप में अपने गले में धारण कर लिया। भगवान के ऐसे भयानक रूप को देखकर सर्वत्र हाहाकार मच गया।

छन्द :

ऐसा भयानक रूप देखकर, देवता भी घबराते हैं।
नजदीक कोई डरता ना जावे, सब ही दहशत खाते हैं।।
श्री लक्ष्मी पास गए फिर, सारा हाल सुनाया है।
माताजी वासुदेव ने, नरसिंघ रूप सजाया है।

श्री हरि का ऐसा भयानक नरसिंह रूप देखकर सभी देवता भयभीत होने के कारण उनके निकट जाने का साहस नहीं कर पा रहे।

सभी ने जाकर माँ लक्ष्मी को भगवान के नरसिंह रूप को धारण करने के समस्त वृतांत से अवगत कराया।

दोहरा :

किरपा करके मात जी, चलो आप जरूर।
शांत कराओ प्रभु को, हो करके हाज़िर।।

सभी देवता विनयपूर्वक माँ लक्ष्मी जी से प्रार्थना करने लगे कि अब केवल आप ही श्री हरि के पास जाकर उन्हें शांत कर सकती हैं। अतः कृपा करके आप प्रभु जी के पास चलें।

छन्द :

लक्ष्मी ने जब दर्शन किया, प्रभु को देख हुई हैरान।
ऐसा रूप कभी नहीं देखा, पास ना जावे हुई भयवान।।
मात लक्ष्मी कहने लगी, जिसके हित हुआ अवतार।
दीनबन्धु के आगे कर दो, तब ही होगा क्रोध निवार।।

भगवान के ऐसे भयानक नरसिंह रूप को देखकर लक्ष्मी जी भी विस्मय और भय के कारण कहने लगी कि ऐसा रोद्र रूप तो प्रभु ने कभी भी धारण नहीं किया है। इन्हें तो शांत करने में अभी मैं भी असमर्थ हूँ। जिस भक्त के कारण से प्रभु ने ऐसा रूप धारण किया है, उसी भक्त के समक्ष आने पर ही वासुदेव शांत हो पाएँगे।

दोहरा :

देवता तब कहने लगे, सुनो भगत जी बात।
प्रभु सम्मुख तुम जाकर, दूर कराओ गात।।
इतना सुनकर भगत जी, प्रभु की शरण पड़ा।
गले लगाया आपने, कष्ट सभी मिट गया।।

लक्ष्मी जी के वचन मानकर सभी देवता भक्त प्रहलाद जी से विनती करने लगे कि अब आप स्वयं प्रभु के सम्मुख जाकर ही इस भय को दूर करवा सकते हैं।

ऐसी प्रार्थना सुनकर भक्त प्रहलाद प्रभु की शरण में जा पहुँचे। उन दीनदयालु प्रभु ने प्रहलाद जी को गले लगाते हुए, उनके सभी दु:ख और कष्ट मिटा दिए।

छन्द :

भगत का मस्तक चूम लिया, सर्व अंगों को चाटते हैं।
भगत जी ने कुछ खौफ ना खाया, सभी कष्टों को काटते हैं।।
जैसे सिंघ का पुत्तर सिंघ से, कभी नहीं भय खाता है।
मृग का बच्चा देख सिंघ को, दूर से ही भाग जाता है।।
प्रहलाद भगत-चरणों में बिछते, खौफ जरा नहीं खाता है।।
तैसे सर्व देवता भय कर, नजदीक नहीं कोई जाता है।।

नरसिंह रूप में प्रभु, भक्त प्रहलाद जी को बहुत प्यार करने लगे। कभी वह प्रहलाद जी का मस्तक चूमने लगते तो कभी सभी अंगों को चाटने लगते। ऐसा अनूठा प्रेम दर्शाते हुए भगवान अपने भक्त प्रहलाद के जीवन के सभी कष्टों और दुखों का निवारण करते हैं। जैसे सिंह का पुत्र अपने शेर पिता से कभी नहीं डरता, उसी प्रकार भक्त प्रहलाद भी नरसिंह जी से बिना भय के प्यार करवाते रहे।

हिरन का बच्चा तो शेर को देखकर दूर से ही भाग जाता है। इसी प्रकार सभी देवता भयभीत होकर प्रभु के निकट जाने का साहस नहीं कर पा रहे थे। जबकि प्रहलाद ही भली-भाँति जानते थे कि श्री हरि तो करूणानिधान हैं, दयालु हैं, भक्तवत्सल हैं।उनके नाम स्मरण मात्र से ही सभी प्रकार के भय दूर हो जाते हैं। तो उनके पावन दर्शन पाकर, उनको किसी भी रूप में देखकर भयभीत नहीं होना चाहिए। बल्कि निर्भय होकर प्रसन्नतापूर्वक उनके इस पावन दर्शन का स्पर्श व आनन्द लेना चाहिए।

दोहरा :

प्रहलाद भगत बिनती करे सुन देव के देव।
देव दीन बंधु सर्वात्मा, कोई ना जाने भेद।
किरपा करके हे प्रभो, चुर्तभुज रूप लो धार।
असली रूप दिखला दो, चरणों में बलिहार।।
तब ही चर्तुभुज हो गए, दीनानाथ लयाल।
पुष्पों की बारिश करी, देवताओं ने तत्काल।।
बहुत आज्ञा पाकर के गए, देव निजधाम।
प्रहलाद जी उपमा करते हैं, पतित पावन जो नाम।।

प्रहलाद जी भगवान से प्रार्थना करते हुए कह रहे हैं कि हे देवाधिदेव, दीनबन्धु, सर्वव्यापी! आपकी लीलाओं का भेद जानने में सभी असमर्थ हैं। यदि आप मुझ पर

वास्तव में प्रसन्न हैं तो हे प्रभु! मुझे आप कृपा करके अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन देने का सौभाग्य प्रदान कीजिए। प्रहलाद जी की करूणा भरी विनती सुनकर प्रभु ने तत्काल ही नरसिंह रूप को त्याग कर सभी को अपने चतुर्भुज रूप में दर्शन दिए। प्रसन्नतापूर्वक देवताओं ने पुष्पों की वर्षा की। प्रभु की आज्ञा पाकर सभी देवता अपने-अपने धाम को चले गए और भक्त प्रहलाद भावावेश होकर उन दीनदयालु, पतित-पावन श्री हरि की वन्दना करने लगे।

भजन

टेक : मेरे प्रभु जी स्वामी मैंनू दिया दीदार

1. भाग भरा दिन आया, दर्शन आप दिखाया
   असां शुक्र मनाया, हो गई मौज बहार

2. नरसिंघ रूप बनाए, धर्म दोखी गंवाए
   महिमा कही भी ना जाए, धार आए आप अवतार

3. पई देवता नूं भारी, दुनिया दुखी होई सारी
   मारा दैत्य बलकारी, हो गई सारे जै-जैकार

4. जावां चरणां तो बलिहारे, तूं ही भगता नूं तारे
   दास आपके सहारे, सुखी हुआ संसार

दोहरा :

किरपा प्रभु आपने बहू करी, दिया आप दीदार।
इतना कह चरणीं पड़ा, प्रभु ने किया प्यार।।

प्रभु कृपा और दर्शन को पाकर कृतार्थ होते हुए प्रहलाद जी, प्रभु के चरणों में निरंतर प्रणाम करते हुए यही कह रहे हैं कि मेरे अहोभाग्य हैं जो आपने मुझ जैसे दीन-हीन को अपने दुर्लभ दर्शन करवाए। प्रहलाद जी की सच्ची भक्ति से प्रसन्न होकर प्रभु ने उन पर अपने असीम प्रेम की वर्षा कर दी।

छन्द :

प्रहलाद भगत को वासुदेव ने, कंठ के साथ लगाया है।
अपनी हत्थी राज तिलक कर, तख्त ऊपर बिठलाया है।।
सांसारिक अब सुख कुछ भोगो, आखिर को होवे कल्याण।
वासुदेव जी इतना कहकर, आप तो हुए अंर्तध्यान।।
भगत ने वासुदेव का, प्रेम से किया है जो जाप।
संकट सारे दूर किए हैं, दर्शन दे दिया प्रभु ने आप।।
यदि तूं प्रहलाद की तरह, सच्चे दिल से प्रेम करे।
ऐ मन मेरे शंका नाहीं, इस संसार से तू भी तरे।।
अंतर्यामी सबका स्वामी की, यदि तूं शरण में जाएगा।
राम का नाम रटे जो निशदिन, संकट सब कट जाएगा।।

साथ ही साथ प्रेमपूर्वक प्रहलाद जी को अपने कण्ठ से लगाते हुए प्रभु ने उनका राज्याभिषेक भी स्वयं अपने कर कमलों द्वारा ही कर दिया। प्रभु जी, प्रहलाद जी को

आशीर्वाद देते हुए कहने लगे कि अब तुम सांसारिक सुख भी भोगो, अंत में तुम्हारा कल्याण होना निश्चित है। ऐसा आशीर्वाद देकर वासुदेव जी अंतर्ध्यान हो गए।

प्रहलाद जी ने सदा ही बड़े तन्मयता और सच्चे हृदय से निरंतर उन वासुदेव का नाम स्मरण किया। बड़े से बड़ा संकट भी उनको भक्ति मार्ग से किंचित मात्र भी हिला नहीं पाया। भगवान तो भक्तवत्सल हैं, इसी कारण अपने सच्चे भक्त के सभी संकट समय-समय पर दूर करते रहे। अंत में उनकी प्राण रक्षा के लिए स्वयं नरसिंह रूप में अवतरित होकर, हिरण्याक्ष का वध कर दिया। साथ ही अपने पावन और दुर्लभ दर्शन देकर उनका सब प्रकार से कल्याण भी कर दिया।

हम भी यदि प्रहलाद जी से प्रेरणा लेकर एकाग्रचित्त होकर उस परमपिता का निरंतर सिमरन करेंगे तो निसंदेह सब प्रकार से हमारा परम कल्याण होना निश्चित है।

सकल सृष्टि के स्वामी, उन अंतर्यामी श्री राम प्रभु का नाम नित्यप्रति जपते रहेंगे तो किसी प्रकार का कोई भी संकट हमारे जीवन की मुक्ति की राह में रुकावट नहीं बन पाएगा।

बैंत

मनां मेरया उम्र तां बीत चली, क्यों नहीं राम का नाम उच्चारदा तूं।
मनां मेरया उम्र तां बीत चली, क्यों नहीं राम का नाम उच्चारदा तूं।
सुंदर जन्म मिलया नाल भागां तैंनू, बदले कच्च दे नाल क्यों हरदा तूं।।
झूठी दुनिया दे नाल स्नेह पा के, क्यों अपने आप नूं खारदा तूं।
चप्पा लाई अभ्यास विचार वाला, डुबदी किश्ती नूं क्यों नहीं तारदा तूं।।
पाँच चोर तेरे पीछे लगे ने, गोली ज्ञान दी क्यों नहीं मारदा तूं।
सोहम् जाप अजपा जो होंवदा है, मतलब उसदा क्यों नहीं विचारदा तूं।।
गफ़लत छाई अविद्या देर दी जो, मिलके गुरां नूं क्यों नहीं टारदा तूं।

श्री गुरू हरनाम दयालु मूरत, दिल अपने क्यों नहीं धारदा तूं।
तेरी दुई दी आदत ने विरान कीता, ज्ञान अग्न से क्यों नहीं जागता तूं।
सतगुरां दा लेकर उपदेश सच्चा, भरम चुक के परे क्यों नहीं डालता तूं।।
दासन दास जो राम का नाम सुंदर, भला उसनूं क्यों बिसारदा तूं।।

बैंत

जिस ने तारया अजामल नूं, बालमीक नूं भी दिया तार भाई।
जिस ने तारया अजामल नूं, बालमीक नूं भी दिया तार भाई।
लाला चारज के यज्ञ विच आप आए, क्षण विच तार दित्ती गणिका नार भाई।।
हस्ती तार सुदामा दी विपद कटी, प्रहलाद तारा राम सार भाई।।

दोहरा :

गुरू दी किरपा हो गई, पूरा हुआ अध्याय।
पढ़े-सुने जो प्रेम से, प्रेम भक्ति वश आई।।
प्रहलाद भगत प्रसंग जो, सारा मतलब जान।
नाम जपो निश्चय करो, हो जावे कल्याण।।

सच्चे सद्गुरु की अपार कृपा और शुभाशीष के कारण यह अध्याय भी सम्पूर्ण हुआ। जो भी इस अध्याय को प्रेमपूर्वक और भक्तिभाव से पढ़गा या सुनेगा तो उसके हृदय में भी हरि कृपा से प्रेम और भक्ति का पवित्र अंकुर अवश्य फूटेगा।

प्रहलाद भक्त के इस प्रसंग का यही निष्कर्ष निकला है कि उस नारायण के चरण कमलों के प्रति अटूट आस्था, विश्वास और श्रद्धा रखते हुए पावन राम नाम का जाप निरंतर करते रहना चाहिए। किसी भी संकट के आने पर भी यदि हम डगमगायेंगे नहीं और

निरंतर उस प्रभु का आश्रय लेकर निर्भयतापूर्वक, दृढ़ निश्चय के साथ राम नाम जपते रहेंगे तो हमारा परम कल्याण होना सुनिश्चित है।

इति श्री भगत माल संगीत प्रहलाद जी का प्रसंग वर्णन

नाम तेरहवां अध्याय समाप्तम् ।।13।।

सति करतार

੧ੴ सतिगुरु प्रसादि ।

अथ द्रौपदा जी का प्रसंग

दोहरा :

सरद कमल सम नैन यह, बदन ससी परताप।
सो स्वरूप धर जीओ, गुरु-गुरु जप जाप।।
चरण वन्दना करत हूं, होवो आप सहाई।
द्रोपदा का प्रसंग जो, अब मैं कहा सुनाई।।

शरद ऋतु में खिले हुए अति सुन्दर कमल समान नेत्रों वाले एवं दिव्य कांतिपूर्ण चन्द्रमा के समान तेजस्वी मुखमण्डल वाले सच्चे सद्गुरु की ऐसी पावन मूरत को सदा अपने हृदय में बसाए रखकर निरंतर उनका ध्यान और जाप करते रहना चाहिए।

सच्चे सद्गुरु जी की चरण वन्दना करते हुए सदा की ही भाँति द्रोपदी का प्रसंग प्रारम्भ करने से पूर्व उनकी सहायता की याचना करता हूँ।

गुरबाणी

वस्त्र छीनत द्रोपदा रखी लाज

भाई गुरदास जी वास 10 पउड़ी 8

अन्दर सभा दु:शासनो मत्थे बाल द्रोपदा आंदी।
दूतां नूं फरमाया नंगी करो पंचाली बांदी।।

दु:शासन द्वारा केशों से खींचते हुए अपमानपूर्वक कौरव सभा में लाई गई महारानी द्रोपदी को दासी बताते हुए वस्त्रहीन कर देने का आदेश दिया गया।

दोहरा :

पाँचों पाण्डव जो बली बड़े युधिष्ठर आप।
जॅग राज-सु जब रचा दिया आडम्बर थाप।।

महापराक्रमी पाँचों पाण्डवों में से सबसे बड़े युधिष्ठर ने राजसु यज्ञ का आयोजन बड़ी धूमधाम से किया।

छन्द :

अन्धे का पुत्तर जो दुर्योधन, यज्ञ के बीच बुलाए लिया।
किशन जी के कहने पर उनको, मुख्तयार ठहराए लिया।।
दुर्योधन खुश हुआ मन में, अब मेरे काबू आए।
एक रुपया जहाँ खर्चना, दस रुपये पकड़ाए।।
पाण्डवों के साथ शत्रु भाव रखे, खर्च ज्यादा करता है।
उसके हाथ में पदम रेखा थी, कई गुणा खजाना भरता है।
दुर्योधन ने जोर लगाया, होवे हानि आ जाए तोट।
बाहर से हमदर्दी बना, भीतर दिल में भरा है खोट।।
भारी यज्ञ संपूर्ण हुआ, इज्जत अच्छी बन गई।
कमी कैसे आए वहां, जहां बंसी वाले बने सहाई।।
दुर्योधन घर वापिस आया, पाण्डवों का यश सुना अपार।
पेश तो कोई चलती नहीं है, जल-बल कर हो गया छार।।
शकुनी - दुःशासन पास बिठाए, मुझको कोई कहा विचार।
धन इनका सब काबू आवे, अपने देश से दूं निकाल।।

नेत्रहीन राजा धृतराष्ट्र के ज्येष्ठ पुत्र दुर्योधन को भगवान श्री कृष्ण के आदेश से उस राजसु यज्ञ का कर्त्ता-धर्त्ता बना दिया गया।

धूर्त दुर्योधन इस निर्णय से प्रसन्न हो गया और दिए गए उत्तरदायित्व का दुरुपयोग करने लगा। पाण्डवों के धन का अपव्यय करने लगा। उसने हर प्रकार से पाण्डवों

को आर्थिक रूप से हानि पहुँचाने के सभी प्रयत्न कर दिए किन्तु पाण्डवों के खजाने/राजकोष में फिर भी कोई कमी नहीं दिखाई दी।

उसकी खोटी नियत और शत्रुता भाव से किए भारी खर्च के बावजूद भी यज्ञ बहुत विधि-विधान से सफलतापूर्वक सम्पन्न हो गया।

जहाँ स्वयं भगवान श्री कृष्ण सहायक के रूप में विद्यमान हों वहाँ किसी भी प्रकार की कमी या त्रुटि का रहना असंभव है। पाण्डवों का यशोगान सुनकर मन में उनके प्रति अपार ईर्ष्या व द्वेष भाव साथ लिए हुए दुर्योधन वापिस लौट आया।

राजा दुर्योधन अपने भाई दुःशासन और मामा शकुनी को पास बुलाकर मंत्रणा करते हुए ऐसा कोई उपाय पूछने लगा जिसके द्वारा पाण्डवों का समस्त धन-वैभव और राज्य सभी हथिया लिया जाए।

दोहरा :

यह सुनकर कहने लगे, जुआ खेलो आप।
चौपड़ के पासे रचे, जिनमें भरागें पाप।।
कपट के पासे रच लिए, नृप को लिया बुलाए।
आके चौपड़ खेलिए, मेरे मन में चाव।।

शकुनी और दुःशासन ने दुर्योधन को द्युतक्रीड़ा आयोजित करते हुए पाण्डवों को निमन्त्रित करने का सुझाव दिया।

कपट और छलपूर्वक पासों की रचना करने के पश्चात् पाण्डवों को बुलावा भेजा गया।

छन्द :

युधिष्ठर जी ने समझ लिया, यह कोई फरेब बनाया है।
खेलने से इन्कार किया तो, शकुनी ने ताना मारा है।।

चौपड़, खेल की गति क्या जानो, इसलिए करते इन्कार।
तर्क सुनी युधिष्ठर जी ने, जुआ खेलने को हुए तैयार।।
इस भावी के आगे देखो, पेश ना किसी की जाती है।
चारों भ्राता बरज रहे हैं, बात ना समझ में आती है।।
बिछा ली चौपड़ खेलने लगे, राज समाज सब दिया हार।
चारों भाई हार गए हैं, और द्रोपदा हारी नार।।
जब सर्वस्व ही हार गए, भीष्म-द्रोण कहा उच्चार।
विदुर भगत जी कहने लगे, यु जुआ तो करे खुआर।।
हे राजन हम सब बरज रहे सी, आप ने कुछ ना किया विचार।
यह जुआ नहीं किसी का हुआ, हार दिया तुम सब घर-बार।।

कौरवों की छलपूर्वक की गई अनुचित मंशा को समझते हुए युधिष्ठर ने निमन्त्रण अस्वीकार कर दिया। दुष्ट शकुनी ने ताना मारते हुए कहा कि तुम चौपड़ खेलना नहीं जानते हो, अपनी इस कमी को छिपाने के लिए ही इन्कार कर रहे हो।

होनी बड़ी बलवान है। इसी कारण युधिष्ठर इन्कार नहीं कर पाए। चारों अनुजों के बहुत समझाने पर भी अपना भला-बुरा नहीं समझ पाए। भावी के वशीभूत होकर अपने दुर्भाग्य के कारण युधिष्ठिर अपना राज-पाट, चारों भाई और पत्नी द्रोपदी को भी दाँव पर लगाकर हार गए।

यह सब देखकर भीष्म पितामह, गुरू द्रोणाचार्य और विदुर जी बहुत ही हताश और निराश होकर युधिष्ठिर को उसके द्वारा की गई भारी भूल के लिए कोसने लगे।

विदुर जी भी उदास मन से यही कहने लगे कि इस भूल का परिणाम बहुत ही दुखदायी होने की आशंका है।

भजन

टेक : जुआ खेलो ना आ जाऊंगी हार, कर देंगी खुआर, सोचविचार मनों विसा

1. बुरा काम है जुआ खेलना, इह ता कर देंदी मिट्टी खुआर,
   पाण्डवां ने जुआ खेलया, ओ सी हार गए घर–बार
   पांचो आप भी हारे, नाले हारी द्रोपदा नार

2. राजा नल ने जुआ खेलया, उसदे उड गए ऐश–बहार
   जुआ नहीं खेलो साज्जनों, कहन्दे दासन–दास पुकार

दोहरा :

सब कुछ राजा हार के, बैठा करके मौन।
गरदन है झुका ली, धीर बंधावे कौन।।
तब दुर्योधन ने कहा, दु:शासन को उच्चार।
पकड़ ले आओ द्रोपदा, गुतनी करमें धार।।

अपना सर्वस्व जुए में हारने के पश्चात् राजा युधिष्ठिर गर्दन झुकाकर मौन बैठे रहे। ऐसी स्थिति में उनके सभी हितैषी इतने दुखी थे, तो भला उन्हें कौन धीरज बँधाता।

तभी दुर्योधन ने छोटे भाई दु:शासन को जुए में पाण्डवों द्वारा हारी गई रानी द्रोपदी को केशों से खींचते हुए राज्यसभा में ले आने का आदेश दिया।

छन्द :

विदुर द्रोणाचार्य जी आदि कहते, बात यह बड़ी अयोग्य।
ऐ दुर्योधन ऐसा ना कर, निन्दा करेंगे तेरी लोग।।
ऐसी बात किसी ने न कीनी, सोच समझ कुछ करो विचार।
भरी सभा दे अंदर जो तू, पकड़ मंगावे द्रोपदी नार।।
राजनीति का त्याग ना कर तूं, इस खोटे मार्ग ना चल।
बुरा नतीजा इसका निकलेगा, दूर हो जावेगा सब बल।।
सुखदाई बहुत वचन कहे, दुर्योधन नहीं सुनता कान।
जुआ जीत कर पीर हो बैठा, दूजा राज का है अभिमान।।

ऐसी अपमानजनक बात सुनकर सभा में उपस्थित विदुर और द्रोणाचार्य जी ने दुर्योधन को ऐसा घिनौना कृत्य ना करने को कहा। जिस कारण सारे जग में उसकी निन्दा होगी। भरी सभा में द्रोपदी का आना अच्छी बात नहीं है। ऐसे निंदनीय कर्म एक अच्छे राजा और व्यक्ति को शोभा नहीं देते। ऐसे कुकर्म का परिणाम बहुत ही बुरा होगा जो तुम्हारे बल और यश को क्षीण कर देगा। द्युतक्रीड़ा में छल द्वारा प्राप्त की गई विजय के मद और अभिमान में चूर हुआ दुर्योधन उनकी सच्ची और नेक सलाह को मानना तो दूर, सुनना भी पसन्द नहीं करता।

दोहरा :

दुष्ट दुःशासन जावंदा, पांचाली के पास।
चल दुर्योधन की सभा, कहता वचन कुबोल।।
तब यह सुनकर कहने लगी, उसको द्रोपदा नार।
जो सब कुछ हारयां, धर्म ना दीना हार।।

दुर्योधन की आज्ञानुसार दु:शासन पांचाली को अपमानपूर्वक राजसभा में ले जाने के लिए पहुँच गया। ऐसा सुनकर द्रोपदी कहने लगी कि पाण्डव भले ही सब कुछ हार गए हैं परन्तु फिर भी आप सबको धर्मनीति का मार्ग नहीं छोड़ना चाहिए।

छन्द :

ऐ अन्धे के पुत्र मुख संभाल तूं, क्यों अनर्थ को तोल रहा।
कुछ शर्म हया तूं कर मन में, बेहुदा क्यों बोल रहा।।
तब दु:शासन कहने लगा, तूं क्यों ऐंवे अब बकती है।
दुर्योधन की हुई दासी, पिछली रहीं नहीं शक्ति है।।
इतना कहकर पकड़ने लगा, तब ही बोली द्रोपदा नार।
अब तो मैं राज सुता हूँ, मुझको छुओ ना ओ गंवार।।
दु:शासन ने एक ना मानी, आखिर नारी का क्या जोर।
दुष्ट ने पकड़ कर घर से निकाला, आगे से खींचने लगा।
धृतराष्ट्र का गृह रस्ते में था, उसमें अड़ गई जो रानी।
करेगा रक्षा नृप तो मेरी, सुनकर दुखियारी बाणी।।
कष्ट हमारे ऊपर आया, होगा हित यदि लिया छुड़ाए।
दुष्ट ने भीतर जाने नहीं दिया, केशों से पकड़ लिया जाकर।।
इस समय फिर रोई पांचाली, सुनता नहीं फरियाद कोई।
बंसी वाले शाम जी आओ, बाँझ तेरे आज मैं हूं मोई।।

दु:शासन द्वारा अपमानपूर्ण वचन सुनकर रानी द्रोपदी क्रोधित होकर बोली कि तुम ऐसा अनर्थ क्यों करना चाहते हो। ऐसा धर्महीन और नीतिविहीन कार्य करना तुम्हें शोभा नहीं देता है।

द्रोपदी की किसी भी बात का उस दु:शासन पर कोई भी प्रभाव नहीं पड़ा। वह निर्लज्जता से द्रोपदी को दुर्योधन की दासी बताते हुए उसकी आज्ञापालन का आदेश देने लगा। द्रोपदी के लाख मना करने पर भी हठपूर्वक द्रोपदी को खींचते हुए घर से बाहर ले आया। दु:शासन द्वारा राजमहल में ले जाते हुए मार्ग में महाराज धृतराष्ट्र के महल के बाहर खड़े होकर करूणा भरी वाणी में दुखियारी द्रोपदी ने मदद के लिए पुकार की। दु:शासन ने उसे भीतर जाने से रोक दिया, केशों से खींचकर बाहर कर दिया।

कहीं से भी सहायता ना पाकर द्रोपदी मुरली मनोहर भगवान श्री कृष्ण को अपनी मदद के लिए पुकारने लगी। कहने लगी कि ऐसे विकट समय में केवल आप ही मुझे मृत्यु से भी अधिक कष्टदायक और अपमानजनक स्थिति से निकाल सकते हो।

भजन

टेक : आवो जी आकर शाम दर्श दिखावनां
तेरे बांझो धीर होर किसे ना धरावनां

1. दुष्टों ने धोखा किया, सब कुछ जीत लिया
   बाँध के ले चले मैंनू, आकर छुड़ावनां

2. जाल्म ने पकड़ मंगाई, सुनता नहीं कोई दुहाई
   दिल दा जो दुखड़ा होर, किसनूं सुनावनां

3. बन गई अब तो लाचारी, तुम को है लाज सारी
   डुबदी जो किश्ती, जल्दी पार लंघावणां

4. मेरी सुन लो अरजोही, दर्दी ना होर कोई
   देर नहीं करनी स्वामी, जल्दी फेरा पानां

5. भगता नूं तुसी ही तारदे, वसदे तेरे सहारे
लज्जा गिरधारी राखो, कष्ट हटावणां

6. है दासन-दास दी अर्जी, दर्शन आ देवो हरि जी
करो दूर जो खुदगर्जी, धर्म बचावणां

दोहरा :

रूदन करेंदी द्रोपदा, पेश कोई ना जाए।
बंसी वाले शाम जी, होवो आप सहाई।।

रोती बिलखती और सहायता के लिए पुकारती द्रोपदी की मदद के लिए कोई भी यहाँ उपस्थित नहीं है। हे प्रभु! अब आपका ही एकमात्र सहारा है। हे बंसीधर! इस विकट स्थिति में आप ही मेरे सहायक बनिए।

छन्द :

चिकने केश पांचाली के, गुदाइया शीश सुरीधी भर।
दुष्ट ने कर से खींच के, रानी व्याकुल दी है कर।।
जिस तरह मरे हुए जानवर को, कोई उठा ले जाता है।
बस इसी तरह वो ढो के ले जाई जाती, समझना जिसको बड़ा गंवार।

द्रोपदी के सुन्दर केशों को बलपूर्वक दुष्टता के साथ खींचता हुआ दुःशासन इस प्रकार ले जा रहा है जैसे कि किसी मृत जानवर को घृष्टतापूर्वक घसीटा जा रहा हो। द्रोपदी की पीड़ा और व्याकुलता भरी पुकार को वह दुष्ट गंवार अनसुना करता रहा।

दोहरा :

द्रोपदा की बेनती प्रभु आगे :-

बीच सभा में लाकर, कहता बात सुनाय।

पूछो जो कुछ पूछना, पानी मुख पर डाले।।

धृष्टतापूर्वक रानी द्रोपदी को अर्धमूर्च्छित अवस्था में दु:शासन ने सभा में लाकर उपस्थित कर दिया। मूर्च्छा दूर करने के लिए उसके मुख पर जल के छींटें मारता हुआ कहने लगा कि अब तुम जो भी पूछना चाहो, पूछ सकती हो।

छन्द :

कुछ देर बाद होश आई, करती रानी हाय-हाय।
ऐ धरती तूं खींच मुझे ले, जाऊ तुममे समाय।।
कोई परिवाद सुने जो मेरी, इस राक्षस से ले छुड़ाय।
पाँचो भाई देख रहे हैं, गरदन नीचे ली झुकाए।।
इस दुर्गति को देख नार, भीमसेन गया क्रोध से भर।
राजन अभी आज्ञा दे दो, पापी का दूं नाश मैं कर।।
सिर चढ़ाया जिस पाजी को, यह सब जुए की करतूत।
जरा इशारा चाहिए मुझको, अब ही कर देता हूँ सुत।।
धर्म तात तभी कहने लगे, ऐ भ्राता गुस्सा वर्जी
शांति करके बैठ जाओ, तुम ये कर रहे मन की मर्जी।।
अंतर्यामी वासुदेव का, खेल बड़ा ही न्यारा है।
तुमने जोर दिखा दिया तो, धर्म ना रहे हमारा है।।

सुना जब यह भीमसेन ने, क्रोध भरा मूर्छा गया खए।
बड़े भाई का वचन अमिट है, अब कैसे में करो सहाय।।

थोड़ी देर बाद मूर्च्छा खुल जाने पर अपमान की पीड़ा से व्याकुल रानी ने स्वयं को धरती में समा लेने के लिए पृथ्वी से प्रार्थना की।

उस दुष्ट दु:शासन के चंगुल से स्वयं को छुड़ाने के लिए की जा रही पुकार को सुनकर भी पाँचों पाण्डव गर्दन नीचे झुकाए बेबस होकर बैठे रहे।

द्रोपदी की ऐसी दुर्दशा देखकर भीमसेन आपे से बाहर होते हुए युधिष्ठिर से सभी कौरवों के वध की आज्ञा माँगने लगे। इस जुए में प्राप्त विजय ने इस पापी को ऐसा करने का बल ले दिया है। भीमसेन के क्रोध को शांत करते हुए धर्मराज युधिष्ठिर जुए में मिली हार के कारण स्वयं को असहाय बताने लगे। साथ ही इस विपत्ति से बचाने के लिए केवल वासुदेव की सहायता का ही भरोसा भी दिलाने लगे। बड़े भाई की आज्ञा का उल्लंघन ना कर पाने के कारण तथा अपनी बेबसी देखकर भीमसेन मूर्च्छित हो गया।

दोहरा :

केशों में पकड़ी द्रोपदा, कर रहे मंदा हाल।
दुष्टों को ना रहम कुछ, नेत्र करते लाल।।

दु:शासन द्वारा केशों से पकड़ी गई द्रोपदी के साथ वह पापी अमानवीय रूप से दुर्व्यवहार करते रहे।

छन्द :

भरी सभा में नारी को, पापी दे रहे बहुतां दुख।
राक्षस से जाए छुड़ाए, ऐसा नहीं कोई मनुख।।

पांचों भाई बैठे फिक्र में, उनकी तरफ रही है देख।
कोई छुड़ाए मुझको दर्दी, क्या विधना ने लिख दिया लेख।।
होते बल सभी निर्बल हो गए, कोई छुड़ावे नहीं नारी।
हाय-हाय कर रुदन है करती, पांचों की जो है प्यारी।।
गऊ न्याई अबला हुई, राक्षस रूप दुर्योधन का है।
डरता कोई छुड़ाता नहीं, पापी का देख खोटा मन है।
सब ही पीठ फेर कर बैठे, अपने और पराए हैं।
भीष्म विदुर द्रोण समझाते, पेश ना कोई जाए है।।
बहुतेरा समझाए रहे हैं, बात किसी ने धरी ना कान।
ऐसा नशा हंकार चढ़ा है, भूल गया है निज का ज्ञान।।
पांचों भर्ता नहीं सहाय, आस नार की टूट गई
ऐ भगवान अब होवो सहाय, माथे की तो फूट गई

भरी सभा में दुर्योधन द्रोपदी को दुखी और अपमानित करता रहा। किन्तु वहाँ उपस्थित किसी ने भी दुर्योधन का विरोध करने का साहस नहीं किया। द्रोपदी बहुत आशाभरी नज़रों से पाण्डवों को मदद के लिए देख रही है किन्तु वे वीर पति भी असहाय बने बैठे रहे। रुदन करती हुई वह ईश्वर से इस विडम्बना का कारण जानना चाहती है।

पाँचों पाण्डव अपनी प्रिय पत्नी को ऐसी दीन-हीन अवस्था में रुदन करते हुए विश्वविख्यात, महा पराक्रमी पाण्डव कायरों की भाँति देखते रहे। उस राक्षस और पापी दुर्योधन के समक्ष द्रोपदी की दशा एक असहाय और बलहीन गाय के समान हो गई थी। चाहकर भी कोई भी उपस्थित सभासद उसे पापी राक्षस के चंगुल से रानी द्रोपदी को छुड़ा पाने की हिम्मत नहीं कर पा रहा था।

उस अधर्मी और पापी दुर्योधन को भीष्म, द्रोणाचार्य और विदुर किसी के भी समझाने से

कोई प्रभाव नहीं पड़ रहा था। अपने अहंकार और अभिमान के नशे में चूर दुर्योधन को अपने इस कुकर्म या उससे होने वाले दुष्परिणाम का कुछ भी आभास नहीं रहा।

जब पाँचों पति द्रोपदी की रक्षा के लिए असमर्थ से होकर मौन बैठे रहे तो सब और से निराश होने के बाद द्रोपदी ने भगवान वासुदेव को ही अपनी मदद के लिए पुकारा।

दोहरा :

तब निरासरी होय के, लागी करन पुकार।

बंसी वाले जल्दी आ, मेरी सार लीजौ।।

सब ओर से हताश और निराश्रित द्रोपदी उस मुरली मनोहर वासुदेव को इस विकट परिस्थिति में अपना सच्चा सहायक मानकर अपनी लाज बचाने के लिए करुण पुकार करने लगी।

दोहरा :

सुनी पुकार भगवान ने जल्दी पहुंच आए।

ढेर लगाया साड़ियों का लज्जा लई बचाए।।

उसकी करुण पुकार सुनकर करूणानिधि भगवान ने उसका चीर बढ़ाकर उसकी लाज स्वयं बचाई

छन्द :

तार पहुंची जब शाम सुंदर को, सभा में दोड़े आए हैं।

गुप्त लाज रखी द्रोपदा की, साड़ियों के ढेर लगाए हैं।।

जोर लगाया दुष्टों ने, पर नग्न ना होने पाई है।

उन अंधों को क्या मालुम, पहुंचा श्री कृष्ण कन्हाई है।।

भगवान श्री कृष्ण अदृश्य रूप में उस सभा में जा पहुँचे। दुष्ट राक्षस चाह कर भी द्रोपदी को वस्त्रहीन नहीं कर पाए। वे मूर्ख तो जान ही नहीं पाए कि भगवान ने ही साड़ियों को ढेर लगाकर द्रोपदी की लाज बचाई है।

दोहरा :

इस अध्याय को सुनने का यही मतलब जान।
पुकार करेंगे दीन हो, पहुंचेंगे भगवान।।

इस अध्याय के माध्यम से हमें यही संदेश मिलता है। कि हमारे अंतर्मन से निकली सच्ची पुकार उस परमात्मा तक अवश्य पहुँचती है। किंतु इसके लिए हमारे मन का शुद्ध होना, दीनहीन बनकर अहंकार विहीन, शुभ और निर्मल भाव का होना अतिः आवश्यक है। हमारा उन पर किया एकमात्र विश्वास देखकर वह कृपालु, करूणानिधान, भक्तवत्सल प्रभु सब प्रकार के सांसारिक सुखों को देते हुए इस जीवन के उपरान्त भी हमारा कल्याण अवश्य कर देंगे।

इति श्री भगत माल संगीत द्रोपदी का प्रसंग वर्णन
नाम चोहदवां अध्याय समाप्तम् ।।14।।
सति करतार

जैसे गंगा ला भगीरथ ने,
किया था जगत उद्धार
कल्प वृक्ष सम झंडा साहिब लाकर
श्रद्धाराम जी ने किया उपकार

प्रिय साधसंगत जी

जय बापू दी जी

मैं, आपके सामने विनम्र भाव से अपना आभार प्रकट करती हूँ। यह मेरे लिए अत्यंत हर्ष और संतोष का विषय है कि "भगतमाल" ग्रंथ, जिसे हमारे पूजनीय श्री 1008 जगतस्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज ने अपनी दिव्य प्रेरणा और कृपा से पंजाबी भाषा में लिखा था, अब पुनः हिंदी अर्थों सहित प्रकाशित हो चुका है।

इस पुनः प्रकाशन में जिन-जिन सज्जनों, सेवादारों, गुरुभक्तों और सहयोगियों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से अपना श्रम, समय, विचार और सेवा दी है, उन सभी का मैं तहेदिल से धन्यवाद करती हूँ। उनकी यह सेवा वास्तव में गुरुभक्ति का अनुपम उदाहरण है।

"भगतमाल" कोई साधारण पुस्तक नहीं, बल्कि यह भक्ति, सदाचार, सेवा और ईश्वर-प्रेम का जीवंत मार्गदर्शक है। मेरी हार्दिक प्रार्थना है कि हर घर में यह ग्रंथ अवश्य स्थापित हो और इसका पाठ किया जाए। ऐसा करने से घर-आँगन में शांति, प्रेम, सदबुधि, सुख-समृद्धि और आध्यात्मिक उन्नति का संचार होगा।

आइए हम सब मिलकर इस ग्रंथ के माध्यम से अपने अंदर भक्ति की ज्योति प्रज्वलित रखें और सदैव बापू श्रद्धाराम जी महाराज के चरणों में जुड़े रहें। उनकी दिव्य दृष्टि और आशीर्वाद हम सभी पर सदैव बना रहे।

आशीर्वाद सहित

श्रीमती निर्मल जग्गा

(धर्मपत्नी- स्वर्गीय बापू हरभगवान जी महाराज)
(नाम दीक्षा श्री 1008 जगतस्वामी बापू श्रद्धाराम जी महाराज द्वारा)

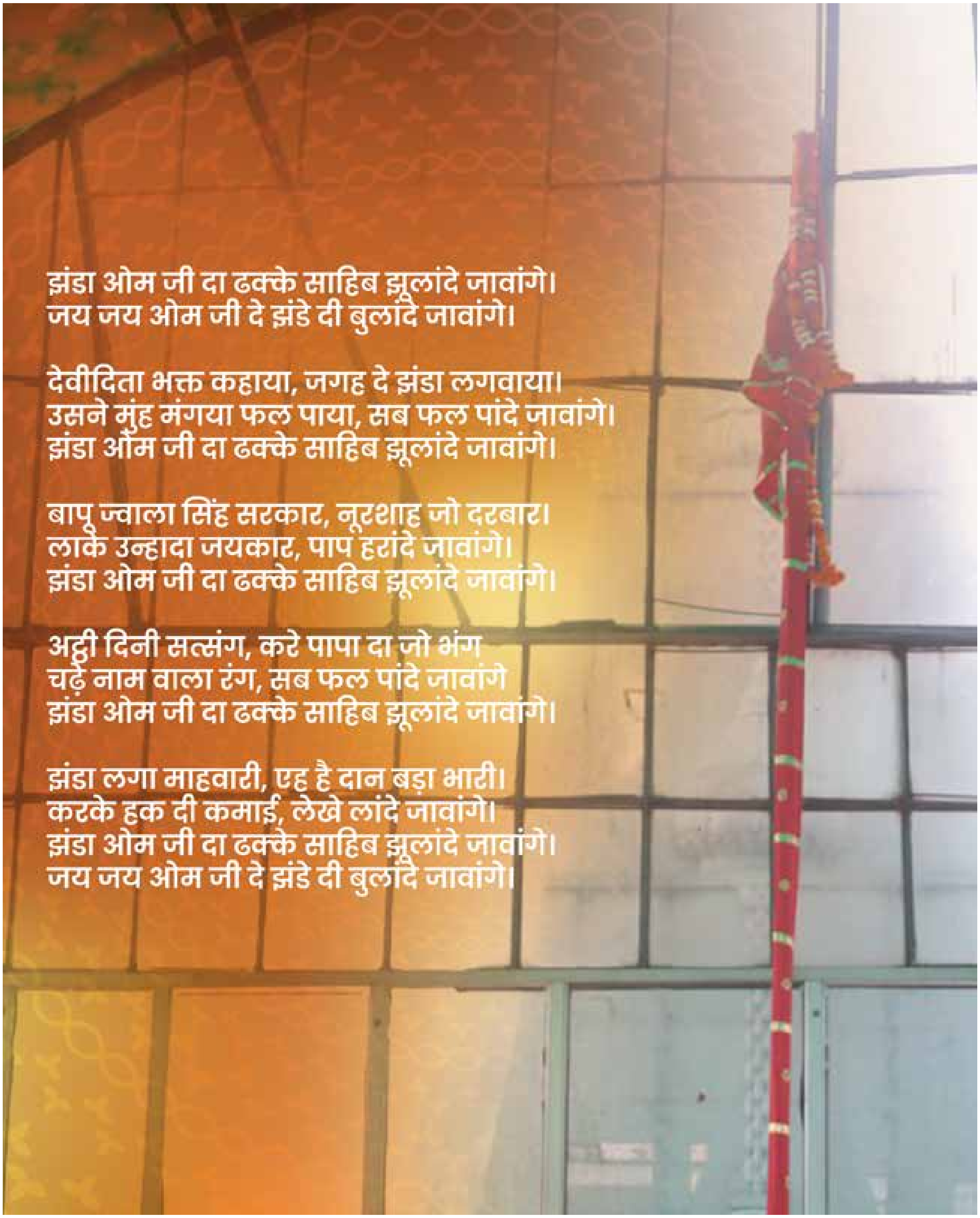

झंडा ओम जी दा ढक्के साहिब झूलांदे जावांगे।
जय जय ओम जी दे झंडे दी बुलांदे जावांगे।

देवीदिता भक्त कहाया, जगह दे झंडा लगवाया।
उसने मुंह मंगया फल पाया, सब फल पांदे जावांगे।
झंडा ओम जी दा ढक्के साहिब झूलांदे जावांगे।

बापू ज्वाला सिंह सरकार, नूरशाह जो दरबार।
लाके उन्हादा जयकार, पाप हरांदे जावांगे।
झंडा ओम जी दा ढक्के साहिब झूलांदे जावांगे।

अट्ठी दिनी सत्संग, करे पापा दा जो भंग
चढ़े नाम वाला रंग, सब फल पांदे जावांगे
झंडा ओम जी दा ढक्के साहिब झूलांदे जावांगे।

झंडा लगा माहवारी, एह है दान बड़ा भारी।
करके हक दी कमाई, लेखे लांदे जावांगे।
झंडा ओम जी दा ढक्के साहिब झूलांदे जावांगे।
जय जय ओम जी दे झंडे दी बुलांदे जावांगे।

ओम झंडे तेरे हम झुलाते रहेंगे
हम झंडे तले सिर झुकाते रहेंगे

यह है ओम शहंशाह का झंडा प्यारा
मैं झंडे को प्रणाम करूं बारंबरा
ओम दुखड़े सभी के मिटाते रहेंगे
ओम झंडे तेरे हम झुलाते रहेंगे।

यह झंडा है हरनाम जी का निशाना
जिन्हें ओम गद्दी का मालिक था माना
वह पूरण थे योगी यह जाने ज़माना
हम हरनाम जी को ध्याते रहेंगे
ओम झंडे तेरे हम झुलाते रहेंगे।

श्री श्रद्धाराम जी ने झंडा लगाया
फिर अपने मुखों सी उन्हा फरमाया
वो खाली ना जाएं जो श्रद्धा से आया
वो मन की मुरादें सब पाते रहेंगे
ओम झंडे तेरे हम झुलाते रहेंगे
हम झंडे तले सिर झुकाते रहेंगे
ओम झंडे तेरे हम झुलाते रहेंगे

यह भजन बापू श्री हरभगवान जी के पूज्य पिता श्री भगत जय गोपाल जग्गा जी द्वारा रचित है। दिल्ली दरबार ढक्का साहिब में जब झंडा साहिब चढ़ाया जाता है, उसके उपरांत इस भजन के गायन द्वारा झंडा साहिब जी की स्तुति की जाती है।

बापू हरभगवान जी के पूजनीय माता जी एवम् पिता जी

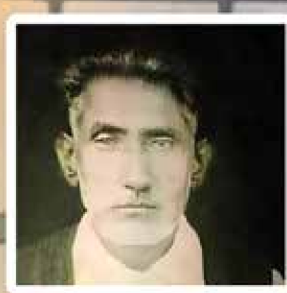

श्री भगत जय गोपाल जग्गा जी

श्रीमती जमना देवी जी

कापीराइट 2025 श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा, दिल्ली

सर्वाधिकार सुरक्षित

इस पुस्तक का कोई भी अंश किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से, जैसे छायाप्रति, ध्वनिमुद्रण, इलेक्ट्रानिक या यांत्रिक साधनों द्वारा, बिना प्रकाशक की लिखित अनुमति के पुनः प्रस्तुत, संग्रहित या प्रसारित नहीं किया जा सकता है। केवल समीक्षा अथवा शोध के उद्देश्य से संक्षिप्त उद्धरण की अनुमति है।

रचनाकार : बापू श्रद्धाराम जी महाराज जी

विमोचन : बापू रविन्द्र जी महाराज जी (श्री ओम दरबार नन्दाचौर)

संपादक : श्री ओम नारायण हरनाम जी सत्संग सभा, ढक्का, दिल्ली 110009

विमोचन तिथी : 26 सितम्बर 2025, 80वां महायज्ञ महाबली बापू हरनाम जी महाराज

सेवा : ₹100/- मात्र (भावनात्मक / पवित्रता हेतु)

जय बापू दी

प्रेरणास्रोत : बापू श्री हरभगवान जी महाराज

मंदिर श्री ओम नारायण हरनाम जी, सत्संग सभा,
ओम मंदिर मार्ग, ढक्का साहिब, दिल्ली :110009